व्यावहारिक
संस्कृत प्रशिक्षक
उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्
लखनऊ

व्यावहारिक संस्कृत प्रशिक्षक

प्रधान सम्पादक :
डॉ. सच्चिदानन्द पाठक

सम्पादक :
डॉ. विजय कुमार कर्ण

सहयोग :
डॉ. चन्द्रकान्त द्विवेदी श्री जगदानन्द झा

परामर्श :
डॉ. नागेन्द्र पाण्डेय

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्
लखनऊ

प्रकाशक :
डॉ. सच्चिदानन्द पाठक
निदेशक :
उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

प्राप्ति स्थान :
विक्रय विभाग
उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्
नया हैदराबाद, लखनऊ-२२६ ००७
फोन : २७८०२५१ फैक्स : २७८१३५२
वेबसाइट : www.upsanskritsansthanam.org
ई-मेल : nideshak@upsanskritsansthanam.org

प्रथम संस्करण :
वि०सं० २०६० (२००३ ई.)
प्रतियाँ : ४०००
मूल्य : रु. ८० (अस्सी रुपये)

सजिल्द मूल्य : १००.०० (एक सौ रुपये)

मूल्य (विदेशों में) : सजिल्द/डाक शुल्क
US $ 20 (Air Mail)
US $ 15 (Sea Mail)

मुद्रक : **शिवम् आर्ट्स**, निशातगंज, लखनऊ। दूरभाष : २७८२१७२, २७८२३४८

प्राक्कथन

किसी भी भाषा को सीखने के प्रयोजन कई प्रकार के हो सकते हैं जैसे बातचीत, काव्य, संगीत आदि में रसास्वाद, भाषा में निहित वाङ्मय का ज्ञानवर्धन परक अध्ययन, लेखन या रचनाओं में प्रयोग आदि। इसके लिये सम्बद्ध भाषा में संभाषण, अवबोधन (समझना) उच्चारण तथा लेखनादि प्रमुख अंग हैं, जो प्रयोजन की प्राथमिकता के अनुसार महत्वपूर्ण होते हैं।

जैसा कि 'भाषा' शब्द से ही स्पष्ट है कि इसका मुख्य प्रयोजन अभिव्यक्ति या संवाद के उद्देश्य से बोलने (सम्भाषण) हेतु होता है। इसी प्राथमिक उद्देश्य की पूर्ति के लिये भाषा का जो सबसे व्यावहारिक रूप है वह है संभाषण। वंस्तुतः संवाद या संभाषण ही भाषा की जीवन्तता को लोक व्यवहार में प्रकट करता है। भाषा सीखने के अन्य उद्देश्य जिनकी ऊपर चर्चा की जा चुकी है के पहले यह जानना आवश्यक है किसी भी जीवित या प्रयोगिक भाषा के इसी से जुड़े अनेक रूप होते हैं, जो उसके परिप्रेक्ष्य और फैलाव को प्रकट करते हैं। वास्तव में भाषा की समृद्धि के लिये ऐसा स्वभाविक भी है।

भाषा से जुड़े अनेक रूप जैसे बोली, जनभाषा/लोकभाषा, उपभाषा आदि इसी भाषा नैरन्तर्य की ओर संकेत करते हैं। भाषा के फैलाव में और प्रायोगिक प्रवाह में कोई भौगोलिक विभाजक रेखा नहीं होती है। भाषा मनुष्य जैसे उन्नत प्राणी के लिये प्रकृति प्रदत्त वरदान है, जो उसे जन्म से सहज रूप, में प्राप्त होता है। यही कारण है कि भौगोलिक क्षेत्र में समीपस्थ अलग अलग भाषायें भी एक दूसरे से जहां अनेक अंशों में मेल खाती हैं, वहीं एक ही भाषा के प्रायोगिक रूपों में क्षेत्रीय विकास के क्रम में अनेकरूपता भी दिखाई पड़ते हैं। इसीलिये कहा जाता है कि **"पानी के साथ बानी (बोली)"** भी क्षेत्रानुसार बदलती रहती है।

संस्कृत भाषा को सीखने समझने के क्रम में जनसामान्य को जहां उसके बोलने के स्वरूप को तात्कालिक समझना होता है वहीं इस भाषा के साहित्य, दर्शन तथा ज्ञान के क्षेत्र में वेद, उपनिषद, गीता एवं अन्य ग्रन्थों को समझने की लालसा रहती है। किन्तु संस्कृत भाषा के ज्ञान के अभाव में विषय प्रवेश भी ऐसे सामान्य जन के लिए दुरूह हो जाता है।

अत: इस संबंध में साहित्य, दर्शन आदि ही नहीं अपितु उसके सम्पूर्ण वाङ्मय के परिप्रेक्ष्य में परिचय अवश्य हो जाता है। इसलिये प्रस्तुत ग्रन्थ में न केवल व्यावहारिक रूप से संस्कृत बोलने की तकनीक है अपितु विशाल संस्कृत वाङ्मय के विस्तृत आयाम से परिचित होने के लिए संस्कृत व्याकरण के विशिष्ट संकेत जैसे सन्धि, समास, प्रत्यय, उपसर्ग का परिचय जिज्ञासुओं के लिये दिया गया है।

संस्कृत की संगीतात्मकता तथा काव्य-रसास्वद से परिचित होने के लिये इसके काव्यशास्त्र के अंगभूत रस, छंद, अलङ्कारों से भी परिचय कराया गया है। संस्कृत वाङ्मय का एक बहुत बड़ा परिक्षेत्र वैदिक वाङ्मय है जिसके मन्त्रों का अनेक लोक कृत्यों में तथा पौराहित्य उपक्रमों में संस्कृत के साथ साथ अभिन्न रूप में प्रयोग होता रहता है। वैदिक छंद तथा वैदिक स्वर संकेत भी प्रस्तुत ग्रन्थ में पाठ्य सामग्री के रूप में संक्षेप में दिये गये हैं।

यही नहीं किसी भी भाषा की समृद्धि के लिये बोलचाल एवं समझने की दृष्टि से कुछ प्रारम्भिक शब्द भण्डार भी आवश्यक होता है। ऐसे कुछ उपयोगी शब्दों को तथा प्रायोगिक विधाओं को शब्दकोष तथा परिशिष्ट के माध्यम से संकलित किया गया है।

संस्कृत की उच्चारण प्रक्रिया अत्यन्त ही वैज्ञानिक है। इसकी वर्णमाला पाणिनि की अष्टाध्यायी तथा उसमें निहित माहेश्वर सूत्रों के माध्यम से व्यवस्थित की गयी है। इसमें वर्णों की उच्चारण प्रक्रिया पूर्ण वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में सुव्यवस्थित रूप में उपस्थापित है जो **'यथा वाचन तथा लेखन'** के एकैक संबंध पर खरी उतरती है। देवनागरी की वर्णमाला इसकी सजीव वैज्ञानिक अभिव्यक्ति है। यही कारण है उच्चारण की शुद्धता पर सदैव विशेष बल दिया गया है।

संस्कृत भाषा में शब्द निर्माण की अद्भुत क्षमता है। धातुओं के साथ विभिन्न उपसर्गों एवं प्रत्ययों के प्रयोग के माध्यम से न केवल विभिन्न क्रियाओं को समेटने की इसकी क्षमता द्योतित होती है, अपितु अनेक शब्द रूपों के साथ साथ शब्दों के निर्माण की जो प्रक्रिया संस्कृत व्याकरण में है उससे यौगिक तथा रूढ़ शब्दों का एक अत्यन्त प्रायोगिक सामञ्जस्य बनकर भाषा को और भी समृद्ध कर देता है।

सच पूछा जाय तो हिन्दी की समृद्धि के पीछे मुख्यतया संस्कृत की शब्द साधना की भित्ति ही आधार में है।

किसी भी भाषा को सीखने के लिये उसके मातृभाषा भाषियों की भांति सीखना सबसे सहज एवं प्राकृतिक है क्योकि ऐसे में भाषा तक पहुंचने के लिये अनुवाद जन्य घुमाव के स्थान पर विचारों से सीधे जुड़ने की प्रक्रिया बन जाती है। तात्पर्य यह है कि ऐसे में विचारों की अभिव्यक्ति के लिये सीधे तत्संबंधी भाषा के आवश्यक शब्द विचारों में साक्षात उभरते हैं। यह बात अवश्यक है कि व्यवहार व सामान्य संवाद में भाषा ग्रन्थ भाषा के अपेक्षाकृत सरल होती है और व्यावहारिक निरन्तर अनुप्रयोग के माध्यम से बार बार गल्तियों कें सुधार करते करते हुये भाषा की शुद्धता की ओर बढ़ना होता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के संभाषण खंड में संवाद को सीखने हेतु श्रवण, भाषण, पठन तथा लेखन के प्राकृतिक क्रम को अपनाया गया है। जिसमें सरलता रूप से सीखने का क्रम, उपस्थापन, प्रयोग और अभ्यास होता है। सरलता से कठिनता की ओर गमन पद्धति जनसामान्य हेतु व्यावहारिक रूप में अधिक उपयुक्त पायी गयी है और इस पुस्तक में पाठों को भी उसी क्रम में व्यवस्थित किया गया है।

ऐतिहासिक क्रम में यदि किसी भी भाषा के सहज विकास को देखा जाय तो भाषा जिसे आज लोक प्रयोग में बोली भी कहा गया है व्याकरण के नियमों से अनुशासित नहीं होती है। **वास्तव में व्याकरण से भाषा नहीं बनती। भाषा को बाहर से समझने एवं संवारने के लिये व्याकरण बाद में बनाया जाता है।** जैसे समाज में पारस्परिक सम्बन्ध एवं व्यवहार पहले होते हैं बाद में व्यवहार के नियम। यह ठीक उसी तरह से जैसे काव्य रचना पहले होती है और काव्यशास्त्र बाद मे प्रणीत किया जाता है। यह इसलिये भी आवश्यक है कि भौगोलिक एवं ऐतिहासिक विस्तार में भाषा बिखर न जाय और दूसरे इसलिए भी जिससे उनमें तुलनात्मक मापदंडों को व्यवस्थित किया जा सके। वास्तव में विकास प्राकृतिक है लेकिन उनमें तकनीक की खोज और युक्तियों का समावेश उसे व्यवस्थित करने के लिये और व्यवस्थित रूप में समझने के लिये बाद में निर्मित होता है।

भाषा के साथ जुड़े उसके सजीव भौगोलिक एवं ऐतिहासिक आयामों जिन्हें विकास एवं प्रसार के रूप में देखा जाता है, के पूरे परिदृश्य-लिपि, भाषा, साहित्य

तथा वाङ्मय सभी को समझने से ही किसी भाषा की समग्रता का भान हो पाता है। किन्तु प्रारम्भिक रूप में (1) भाषा की संवादरूपता – सरल एवं व्यावहारिक रूप प्राथमिक आवश्यकता के रूप में तथा (2) इसके व्यापक परिप्रेक्ष्य – शास्त्रीय रूप में ज्ञानार्थक प्रयोजन से आवश्यक है।

कुछ इसी सहज प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए व्यावहारिक संस्कृत प्रशिक्षण हेतु सर्वप्रथम संभाषण को लिया गया है और इसके बाद व्याकरण के अंशों जैसे सन्धि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय आदि के नियमों का शास्त्रीय संकेत किया गया है।

संसार की किसी भी विकसित भाषा के मोटे तौर पर दो रूप होते हैं :-

1. **व्यावहारिक सरल रूप** जो बातचीत व सरल रूप में प्रयोग किया जाता है।
2. **प्रौढ़ रूप** जो साहित्य दर्शन या ज्ञान/विचार मूलक, बौद्धिक या भावपरक रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है।

भाषा के इसी द्वैत कों समझने के लिए हमने भाषा के साहित्यिक प्रौढ़ रूप में निहित सिद्धान्तों का समावेश किया है। भाषा के काव्यात्मक रूप की चमत्कृति एवं प्रवाह से परिचय के लिये रस, छंद अलङ्कारों का भी एक संक्षिप्त परिचयात्मक विवेचन प्रस्तुत पुस्तक के तृतीय भाग में है। जिससे भावग्राही सहृदय संस्कृत भाषा के साहित्यिक रूप का रसास्वादन कर सके। जैसा कि संस्कृत की अत्यन्त वैज्ञानिक उच्चारण प्रक्रिया का पहले ही संकेत किया जा चुका है, उसके शास्त्रीय अध्ययन के लिए प्रस्तुत ग्रन्थ में अलग से व्यवस्था की गयी है जिसमें स्वरों, व्यञ्जनों के उच्चारण स्थान के आधार पर वर्गीकृत वर्णक्रम को विशेष रूप से समझाने का प्रयास किया गया है। संस्कृत के श, ष, स के उच्चारणों के भेद क्ष, त्र, ज्ञ जैसे अनेक संयुक्त वर्णों को विश्लेषण पद्धति के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है जिससे उच्चारण की शुद्धता बनी रहे।

संस्कृत भाषा अपने मूल स्वरूप में वैदिक काल से ही संगीतमय रही है। इसकी यह विशेषता वेदों में स्वरांकन पद्धति से स्पष्ट है जिसमें वेदों के उच्चारण में वर्तमान संगीत जैसे स्वरों का उतार चढ़ा है। वेदों की विभिन्न शाखाओं के अलग-अलग गायन पद्धति और हस्तचालन उसके श्रुति रूप से ही देश में पहले से ही प्रचलित रही है जिन्हें आज तक इसी रूप में अक्षुण्ण बनाये रखने का श्रेय उच्चारण की गुरु शिष्य परम्परा की वैदिक परम्परा को जाता है। वैदिक छन्दों

के क्रम में विभिन्न प्रकार के लौकिक छन्दों का प्रयोग है जिसमें स्वरों के उतार चढ़ाव; लय और तालबद्धता हेतु यति तथा मात्राओं का संचित प्रयोग है। इस ग्रन्थ के तृतीय भाग में इन छंदों के लक्षण उदाहरण मात्राओं एवं यति के साथ दिये गये हैं। संस्कृत के उच्चारण की यह मौलिक विशेषता केवल उसके बाहरी रूप में नहीं है, अपितु काव्यात्मक आनन्द के लिये रस प्रवाह को अलग अलग रूपों में पहचानने एवं उसके काव्यशास्त्रीय विवेचन भी विपुल संस्कृत वाङ्मय में विशद रूप से विवेचित किये गये हैं। इनका भी एक परिचयात्मक विवरण पुस्तक के तृतीय भाग में छन्दों के साथ-साथ रस और अलङ्कारों के रूप में दिया गया है।

किसी भी भाषा की वास्तविक शक्ति उसकी अभिव्यक्ति क्षमता के रूप में होती है, जो उसके शब्द सामर्थ्य को द्योतित करती है। संस्कृत में शब्द निष्पत्ति, का अत्यन्त वैज्ञानिक माध्यम. है जो मूल क्रियारूपों (धातुओं) से शब्द निर्माण करने की अद्‌भुत क्षमता रखता है। विभिन्न शब्दरूप और धातु रूपों की अपनी बाहरी अभिव्यक्ति क्षमता से बढ़कर उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास के माध्यम से भावानुकूल अनेक शब्दों का गठन इसकी अपनी विशेषता हैं यही कारण है कि संस्कृत के शब्द भंडार की कोई सीमा नहीं, फिर भी ज्ञान संवर्धनं, एवं प्रयोग हेतु दैनिक जीवन के उपयोगी शब्दों को सम्मिलित करते हुए शब्दकोष परिशिष्ट आदि के माध्यम से प्रस्तुत ग्रंथ के चतुर्थ खण्ड में दिये गये हैं। इससे संस्कृत को सीखने, समझने में आवश्यक सहयोग मिल सकेगा। प्रस्तुत ग्रंथ के निर्माण की प्रेरणा व्यावहारिक संस्कृत प्रशिक्षण शिविरों के लिये पाठ्य सामग्री की तैयारी के क्रम में संस्कृत संस्थान को मिली। इस हेतु मानव संसाधन एवं विकास मन्त्रालय के अनुदान एवं उसे उपलब्ध कराने में उत्तर प्रदेश शासन का यह संस्थान ऋणी रहेगा। जनसामान्य में संस्कृत को जीवन्त भाषा के रूप में प्रयोग की ललक के साथ जनसामान्य में उसके विपुल ज्ञानराशि को सीधे समझने की जिज्ञासा बनी रहती है। इसलिये संस्कृत की आगाध ज्ञानराशि में से अपनी क्षमता के अनुसार कुछ अमृत बिन्दु सीधे ग्रहण करने की चेष्टा ऐसे अनेक लोगों में है, जो संस्कृत की भारी कठोरता से परिचित तो हैं किन्तु इसको भेदकर उसके भीतर का ज्ञान चख पाने से कतराते हैं।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में विशेष प्रेरणा देन हेतु संस्थान की सामान्यपरिषद् के सदस्यों विशेषकर कार्यकारिणी के सदस्यों का मैं संस्थान की ओर से अत्यन्त

आभारी हूँ। संस्थान के **अध्यक्ष डा. नागेन्द्र पाण्डेय** जी की प्रेरणा हमारे लिये सदैव उपादेय रही है और उनके द्वारा लिखित प्रोचना इस पुस्तक के तिलक की भांति है। संस्थान के उपाध्यक्षद्वय व प्रशिक्षण समिति के सम्मानित सदस्यों का मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने सामग्री के लिये अपने विशेष सुझाव दिये हैं।

ग्रन्थ के संपादन में प्रमुख रूप से भूमिका निभाने के लिये संस्थान की कार्यकारिणी के स्फूर्तिमान सदस्य **डा. विजय कुमार कर्ण** का मैं अत्यन्त आभारी हूँ। जिन्होंने संस्कृत संभाषण शिविरों के अपने अनुभवों को ग्रन्थ के प्रथम भाग में विशेष रूप से पिरोया है। किसी भी ग्रन्थ के प्रकाशन में पाठ्य सामग्री की व्यवस्था एवं प्रकाशन का संयोजन अत्यन्त दुष्कर है इसके लिये मैं संस्थान के सहायक निदेशक **डा. चन्द्रकान्त द्विवेदी** का हृदय से आभार हूँ। साथ ही संस्थान के उन सभी सहयोगियों को साधुवाद देता हूं जिन्होंने अल्पावधि में इस पुस्तक को मुद्रित कराने में समय की परवाह न करके अपना योगदान किया। पुस्तक की साजसज्जा तथा उसकी विशिष्ट प्रस्तुति हेतु **मेसर्स शिवम् आर्ट्स** एवं उनके सहयोगियों का आभारी हूँ जिन्होंने पर त्रुटियों का निदान करने में अपना यथाशक्य सहयोग देकर पुस्तक को शुद्ध रूप में रखने की चेष्टा में हमारा सहयोग किया।

अन्त में मैं इस ग्रन्थ की प्रस्तुति के निमित्त प्रेरक और नियन्ता परमपिता परमेश्वर को हृदय से भावाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

आशा है सुधीजन पुस्तक की उपादेयता पर विचार करते हुये समय के दबाव और मुद्रण की लिपि सीमाओं की सहज दृश्य त्रुटियों की उपेक्षा करते हुये अपने रचनात्मक सुझाव संस्थान के संपादक मंडल को देंगे जिससे अगले संस्करणों में पुस्तक की उपादेयता में वृद्धि की जा सके।

दिनाङ्क :- 29 दिसम्बर 2003
गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती

डॉ सच्चिदानन्द पाठक
निदेशक
उ.प्र. संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

प्ररोचना

स्वदेशे, स्वधर्मे, स्वभाषायाञ्च सर्वेषां जनानां स्वाभिमानभावः सर्वत्र समान एव दृश्यते। भारतदेशस्य प्राचीनता, तस्य स्वसंस्कृतेः परिव्याप्तिः, तस्य स्वभाषायाः संस्कृतस्य प्राचीनतमावस्थितिः नूनमेव बहुगौरवास्पादिका इत्यत्र नास्ति संशयलेशः। वेदोपनिषत्पुराणानि सर्वाणि च शास्त्राणि संस्कृतेनैव सुगुम्फितानीत्यस्मिन् विषये प्रमाणान्तराणां नास्ति प्रयोजनम्। एवं मानवसंस्कृतेर्ज्ञानविज्ञानस्य जीव-दर्शनस्य राजनीतेः धर्मनीतेः कलासाहित्येतिहासस्य चाधारभूतेयं भाषा साम्प्रतं स्वदेशे स्वजनैरेवानादृता कथं जाता, इत्यस्ति इदानीं चिन्तनस्य विषयश्चिन्तायाश्च।

संस्कृतक्षेत्रे कार्यरताः संस्कृतज्ञाश्च प्रायः स्वव्याख्याने वदन्ति, अभियाचन्ते च "संस्कृतं व्यवहारभाषा भवेत् शिक्षायां संस्कृतस्यानिवार्यस्थानं भवेत्, संस्कृतं भारतस्य सम्पर्कभाषा राजभाषा वा भवेदिति" एतदर्थं केन्द्रशासनं राज्यशासनं वा किमपि कुर्यादिति ते अपेक्षन्ते।अपेक्षायाः अनापूर्तौ तैः शासनं समाजो वा दोषाय स्वीक्रियते।

वस्तुतः प्राचीनभारते राजाश्रयः आसीत्। तस्मिन् काले ज्ञानार्जनाय ज्ञानप्रसाराय च राजावलम्बनं कृतम्। वर्तमानकाले संस्कृतस्य विकासः कथं भवेत् तस्य कृते प्रयत्नद्वयमावश्यकम्।

1. शासनद्वारा संस्कृतस्य अनिवार्यरूपेण शिक्षणम्, संस्कृतस्य संस्कृतोपयोगस्य च प्रोत्साहनाय विविधाः कार्यक्रमाः इति कार्यत्रयम् आवश्यकम्।
2. स्वयंसेविसंस्थाभिः जनमानसे संस्कृतसम्बन्धे अनुकूलभावनिर्माणम्। नगरे-नगरे, ग्रामे-ग्रामे संस्कृतशिक्षणाय समर्पितचित्तानां शिक्षकाणां निर्माणम्, पुस्तक-ध्वनिमुद्रिकाछायाध्वनिः (विडियो) आदिविविधिपाठनसाहित्यानां प्रकाशनम्। समग्रे देशे व्यापकरूपेण संस्कृतकक्षाणामायोजनम्। एतदर्थं जनमानसे परिवर्तनमावश्यकम्। यदा वयं संस्कृतज्ञाः स्वावलम्बनस्य, स्वाभिमानस्य, व्यवहारकुशलतायाः, त्यागस्य, परिश्रमस्य, पराक्रमस्य, कर्तृत्वदर्शनस्य मार्गमनुसरेम तदैव संस्कृतस्य व्यापकता भविष्यति। उदाहरणार्थं- तमिलनाडुप्रदेशीया डॉ. सरस्वतीवर्या अमेरिकादेशे स्यानोसनगरे चिन्मयकेन्द्रे संस्कृतस्य अध्यापिका अक्षरमालायुक्तायाः शाटिकायाः धारणं करोति। तस्याः वाहनस्य (कारयानस्य) फलके संख्यास्थाने "संस्कृतं" लिखितं भवति, अनेन वहवो जनाः उत्कण्ठिताः भवन्ति, संस्कृतस्य विषये पृच्छन्ति च।

एवमेव अमेरिकादेशे न्यूयार्कराज्यस्य मन्रो; (MONROE) नगरे केट्सकील (CATSKILL) पर्वतस्य मूलभागे ब्रह्मानन्दसरस्वतीद्वारा स्थापिते आनन्दाश्रमे शताधिकाः अमेरिकादेशीयाः जनाः संस्कृतं, सङ्गीतं, भरतनाट्यञ्च पठन्ति। एवमेव बहुषु वैदेशिकराज्येषु फ्रान्सब्रिटेनइटलीजापानादिषु संस्कृतशिक्षणस्य जनानां सार्थकप्रयत्नो दृश्यते।

संस्कृतभाषायाः उपयोगितायाः विषये संस्कृतायोगस्य प्रतिवेदने बहुविस्तृतं प्रतिपादितम्। आयोगेन संस्कृतस्य विकासाय बहुनि सूत्राण्यपि दत्तानि। इदानीं तस्य प्रतिवेदनस्य चर्चा अपि न श्रूयते। शासनेन प्रवर्तितस्य कार्यक्रमस्य नियमस्य च तदा एव लाभो भवति यदा सम्बद्धजनाः तदर्थं जागरुकाः भवन्ति। संस्कृतभाषायाः समुन्नतये सम्यक् प्रशिक्षणार्थं च यानि पुस्तकानि विगतपञ्चाशत्वर्षेषु लिखितानि सन्ति तेषां पुस्तकानां पाठकाः अपि न सन्ति, तेषाम् अभ्यासकर्तृणां का कथा ? उत्तर-प्रदेश-संस्कृतसंस्थानस्य स्थापनाकालात् इदानीं यावत् संस्कृतभाषायाः विकासार्थम् अष्टाविंशतिवर्षेषु किं किं कृतमिति विवरणदानस्य आवश्यकता नास्ति। राज्यशासनेन अर्थाभावस्य स्थितावपि संस्कृतभाषायाः उज्जीवनाय संस्थानस्य संरक्षणं क्रियते, इत्येव हर्षस्य विषयः। केन्द्रशासनेन समये-समये ग्रन्थप्रकाशनार्थं विविधकार्यक्रमाणां सञ्चालनार्थञ्च यत् साहाय्यं क्रियते तेनैव वयं धन्यतां स्वीकुर्मः। एषु एव क्रमेषु मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयेन उत्तर-प्रदेशे सरलसंस्कृतसम्भाषणार्थं शतकेन्द्राणां स्वीकृतिः प्रदत्ता तदर्थं सम्भाषणकेन्द्रसंचालनाय तथा सुयोग्यानां संस्कृतज्ञानां चयनंकृत्वा प्रशिक्षणान्तरं तेषु केन्द्रेषु नियुक्तिर्जाता। प्रशिक्षितानां शिक्षकाणां माध्यमेन उत्तर-प्रदेशस्य मन्ये न्यूनातिन्यूनं पञ्चसहस्रसामान्यजनानां संस्कृतभाषायाः अवगमने व्यवहारे च लाभः स्यात्।

पुस्तकस्य निर्माणे विद्यान्तहिन्दूमहाविद्यालयस्य संस्कृतप्राध्यापकः **डॉ. विजयकुमारकर्णस्यावदानं** महत्वपूर्णं विद्यते तदर्थमहं साधुवादं करोमि। संस्थानस्य निदेशकः **डॉ. सच्चिदानन्दपाठकमहोदयः** सहायकनिदेशकः **डॉ. चन्द्रकान्तदिवेदीमहोदयः** अपि च सावधानतया सम्यक् निष्ठया च प्रकाशनकार्यं कृतवन्तौ अनयोः कृते अपि अहं धन्यवादैः सत्करोमि। भारतीयशासनस्य मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयः तस्याधिकारिण अपि धन्यवादार्हाः सन्ति। मन्ये ग्रन्थोऽयं लोकोपकाराय भविष्यतीति शम्।

दिनाङ्कः- 23 दिसम्बर 2003 खृ.

नागेन्द्र पाण्डेयः
अध्यक्षः

ॐ

व्यावहारिक संस्कृत प्रशिक्षक

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ संख्या

प्रथम भाग - सम्भाषण

प्रथम भाग – सम्भाषण भाग

प्रथम : अध्याय

परिचय प्राप्त करना

1. किसी भी व्यक्ति से सम्भाषण करने का प्रारम्भ उस व्यक्ति के परिचय प्राप्त करने से होता है, अतः किसी भी भाषा में सम्भाषण हेतु परिचय प्राप्त करने का अपना महत्व होता है। इस दृष्टि से परिचय सम्पादन हेतु मुख्य अंश है :-

मम नाम गणेशः मेरा नाम गणेश (है)। (अपने को उद्देश्य कर/पुरुष

भवतः नाम किम् ? आपका (पुं) नाम क्या (है)? (अन्य को उद्देश्य कर (अन्य महिला को उद्देश्य कर)

भवत्याः नाम किम् ? आपका (स्त्री.) नाम क्या (है)?

मम नाम राजीवः मेरा नाम राजीव (है)। उत्तर (पुरुष के द्वारा)

भवतः नाम किम् ? आपका (पुं.) नाम क्या (है)? प्रश्न (पुरुष के द्वारा)

मम नाम सुरेशः मेरा नाम सुरेश (है)। उत्तर (पुरुष के द्वारा)

भवत्याः नाम किम् ? (प्रश्न) स्त्री. के लिए पु. के द्वारा तथा स्त्री. के द्वारा भवतः नाम किम् ? प्रश्न पुं. के लिए पुं. द्वारा तथा स्त्री. के द्वारा–

मम नाम राधा मेरा नाम राधा (है)।

मम नाम सीता मेरा नाम सीता है।

भवत्याः नाम किम् ? आपका (स्त्री) नाम क्या (है)?

मम नाम रमा मेरा नाम रमा (है)।

भवतः नाम किम्? आपका (पुं.) नाम क्या (है) ?

मम नाम गणेशः मेरा नाम गणेश (है)।

(यहाँ मम, भवतः भवत्याः षष्ठ्यन्त रूप हैं।)

☞ **(2) सर्वनाम शब्दों का ज्ञान**

सः	**सा**	**तत्**
वह (पुं.)	वह (स्त्री.)	वह (नपुं.)
कः	**का**	**किम्**
कौन (पुं.)	कौन (स्त्री.)	कौन (नपुं.)

दूर अवस्थित पुंल्लिङ्ग वस्तुओं के लिए **सः,** दूर अवस्थित स्त्री. के लिए **सा,** दूर अवस्थित नपुं. के लिए **तत्,** का प्रयोग होता है।

इसी क्रम में प्रश्न करने हेतु पुं., स्त्री. और नपुं. के लिए क्रमशः **कः, का** और **किम्** का प्रयोग होता है।

यथा –

सः कः?	**सः शिक्षकः।**
वह (पुं.) कौन (है)?	वह शिक्षक (है)।
सा का?	**सा बालिका।**
वह (स्त्री.) कौन है?	वह बालिका (है)।
तत् किम्?	**तत् पुष्पम्।**
वह (नपुं.) क्या (है)?	वह फूल (है)।

एषः	**एषा**	**एतत्**
(यह पुं.)	(यह स्त्री.)	(यह नंपु.)
कः	**का**	**किम्**
कौन (पुं.)	कौन (स्त्री.)	क्या (नंपु.)

समीप स्थित पुंल्लिङ्ग के लिए **एषः** का प्रयोग, स्त्री. के लिए **एषा** और नपुं. के लिए **एतत्** का प्रयोग होता है।

एषः कः?	**एषः पुरुषः।**
यह कौन (है)?	यह पुरुष (है)।
एषा का?	**एषा महिला।**
यह कौन (है)?	यह महिला (है)।
एतत् किम्?	**एतत् गृहम्।**
यह क्या (है)।	यह घर (है)।

एकः काकः। सः पिपासितः। कुत्रपि जलं नास्ति। सः भ्रमति। एकम् उद्यानम्। तत्र एकः घटः। घटे अल्पं जलम्। काकः शिलाखण्डम् आनयति। जलम् उपरि आगच्छति। काकः जलं पिबति। गच्छति।

☞ सर्वनाम द्विववचन

तौ	**ते**	**ते**
वे दोनों (पु.द्वि.)	वे दोनों (स्त्री. द्वि.)	वे दोनों (नपुं. द्वि.)

मूषकौ खादतः।
दो चूहे खाते हैं।

बालौ हसतः।
दो लड़के हंसते हैं।

अजे चरतः।
दो बकरियां चरती है।

महिले गायतः।
दो महिलायें गाती हैं।

वाहने चलतः।
दो वाहन जाते हैं।

पुष्पे विकसतः।
दो फूल खिलते हैं।

☞ **सर्वनाम बहुवचन**

ते
वे सब (पु.बहु.)

ताः
वे सब (स्त्री. बहु.)

तानि
वे सब (नपुं. बहु)

ते बालकाः गच्छन्ति।
वे लड़के जाते हैं।

ते पुरुषाः गच्छन्ति।
वे पुरुष जाते हैं।

ताः महिलाः गच्छन्ति।
वे महिलायें जाती हैं।

ताः बालिकाः गच्छन्ति।
वे लड़कियां जाती हैं।

तानि फलानि पतन्ति।
वे फल गिरते हैं।

तानि पुष्पाणि विकसन्ति।
वे फूल खिलते हैं।

एतौ
ये दोनों (पु. द्वि.)

एते
ये दोनों (स्त्री. द्वि.)

एते
ये दोनों (नपुं. द्वि.)

एतौ घटौ स्तः।
ये दोनों घड़े हैं।

एते बालिके स्तः।
ये दोनों बालिकाये हैं।

एते मन्दिरे स्तः।
ये दोनों मन्दिर हैं।

एते
ये सब (पु.बहु.)

एताः
ये सब (स्त्री. बहु.)

एतानि
ये सब (नपुं. बहु)

एते ग्रन्थाः सन्ति।
ये ग्रन्थ हैं।

एताः महिलाः सन्ति।
ये महिलायें हैं।

एतानि गृहाणि सन्ति।
ये घर है।

एतानि चित्राणि सन्ति।
ये चित्र हैं।

☞ **(3) परिचय-अन्य प्रकार से**

अहम्
मैं (पुं/स्त्री.)

भवान्
आप (पुं.)

भवती
आप (स्त्री.)

अहं के साथ अपना नाम जोड़कर परिचय देना चाहिए। यथा–

अहं रमेशः।
मैं रमेश (हूँ)।

अहं मोहनः।
मैं मोहन (हूँ)।

भवान् कः?
आप (पुं.) कौन हैं ?

अहं सुरेशः।
मैं सुरेश (हूँ)

☞ **गुणवाचक शब्दों को जोड़कर भी परिचय देते हैं।** यथा–

अहं धीरः।
मैं धीर (हूँ)।

अहं देशभक्तः ।
मैं देशभक्त (हूँ)।

भवान् कः?
आप (पुं.) कौन हैं?

अहं समाजसेवकः।
मैं समाजसेवक (हूँ)

स्त्री. के लिए

अहं रमा।
मैं रमा (हूँ) ।

अहं सुधा।
मैं सुधा (हूँ)।

भवती का?
आप (स्त्री) कौन (हैं) ?

अहं राधा।
मैं राधा (हूँ)।

अहं समाजसेविका।
मैं समाजसेविका।

अहं वीराङ्गना।
मैं वीर स्त्री।

त्वं कः?
तुम कौन (पुं.)?

अहं गणेशः
मैं गणेश।

त्वं का?
तुम कौन (स्त्री) ?

अहं शीला
मैं शीला।

अहं नायकः।
मैं नायक ।

अहं गायकः।
मैं गायक।

अहं चिकित्सिकः।
मैं चिकित्सिक।

अहं शिक्षिका।
मैं शिक्षिका।

अहं कर्मकरः।
मैं कर्मचारी।

अहं कर्मकरी।
मैं कर्मचारिणी।

अहं गृहस्थः।
मैं गृहस्थ ।

अहं गृहिणी।
मैं गृहिणी।

अहं पुरुषः।
मैं पुरुष।

अहं महिला।
मैं महिला।

भवान् युवकः	**भवन्तौ युवकौ**	**भवन्तः युवकाः**
आप युवक हैं।	आप दोनों युवक	आप सब युवक
भवान् सुशीलः	**भवन्तौ सुशीलौ**	**भवन्तः सुशीलाः**
आप सुशील	आप दोनों सुशील	आप सब सुशील्ल
भवान् गायकः	**भवन्तौ गायकौ**	**भवन्तः गायकाः**
आप गायक	आप दोनों गायक	आप सब गायक
भवान् शिक्षकः	**भवन्तौ शिक्षकौ**	**भवन्तः शिक्षकाः**
आप शिक्षक	आप दोनों शिक्षक	आप सब शिक्षक
भवान् कः?	**भवन्तौ कौ?**	**भवन्तः के ?**
आप ग्राहक	आप दोनों ग्राहक	आप सब ग्राहक

स्त्रीलिङ्ग

भवती का?	**भवत्यौ के?**	**भवत्यः काः?**
आप कौन?	आप दोनों कौन?	आप सब कौन?
भवती शिक्षिका	**भवत्यौ शिक्षिके**	**भवत्यः शिक्षिकाः**
आप शिक्षिका	आप दोनों शिक्षिकायें	आप सब शिक्षिकायें
भवती चतुरा	**भवत्यौ चतुरे**	**भवत्यः चतुराः**
आप चतुर (हैं)	आप दोनों चतुर (हैं)	आप सब चतुर (हैं)
भवती गायिका	**भवत्यौ गायिके**	**भवत्यः गायकाः**
आप गायिका	आप दोनों गायिका	आप सब गायिक्का
भवती ग्राहिका	**भवत्यौ ग्राहिके**	**भवत्यः ग्राहिकाः**
आप ग्राहिका (हैं)	आप दोनों ग्राहिका (हैं)	आप सब ग्राहिका (हैं)
भवती का ?	**भवत्यौ के ?**	**भवत्यः काः ?**
आप कौन ?	आप दोनों कौन ?	आप सब कौन ?
अहं छात्रः	**आवां छात्रौः**	**वंय छात्राः**
मैं छात्र	हम दोनों छात्र	हम सब छात्र
अहं रक्षकः	**आवां रक्षकौ**	**वयं रक्षकाः**
मैं रक्षक	हम दोनों रक्षक	हम सब रक्षक
अहं सेवकः	**आवां सेवकौ**	**वयं सेवकाः**
मैं सेवक	हम दोनों सेवक	हम सब सेवक

अहं कार्यकर्ता	**आवां कार्यकर्तारौ**	**वयं कार्यकर्तारः**
मैं कार्यकर्ता	हम दोनों कार्यकर्ता	हम सब कार्यकर्ता
अहं पाठकः	**आवां पाठकौ**	**वयं पाठकाः**
मैं पाठक	हम दोनों पाठक	हम सब पाठक
अहं भारतवासी	**आवां भारतवासिनौ**	**वयं भारतवासिनः**
मैं भारतवासी	हम दोनों भारतवासी	हम सब भारतवासी
अहं ग्रामवासी	**आवां ग्रामवासिनौ**	**वयं ग्रामवासिनः**
मैं ग्रामवासी	हम दोनों ग्रामवासी	हम सब ग्रामवासी

☞ षष्ठी पाठः

तस्य (पुं.)	**तस्याः (स्त्री.)**	**तस्य (नपुं.)**
उसका	उसकी	उसका
कस्य (पुं.)	**कस्याः (स्त्री.)**	**कस्य (नपुं.)**
किसका	किसकी	किसका
एतस्य (पुं.)	**एतस्याः (स्त्री.)**	**एतस्य (नपुं.)**
इसका	इसकी	इसका
बालकस्य	**बालिकायाः**	**फलस्य**
बालक का	बालिका का	फल का
मम पुं./स्त्री.	**भवतः (पुं.)**	**भवत्याः (स्त्री.)**
मेरा/मेरी	आप का	आप की

अकारान्त पुंल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग के षष्ठी विभक्ति एक वचन में **'स्य'** जोड़ा जाता है–

रामः	**रामस्य**	**फलम्**	**फलस्य**
राम	राम का	फल	फल का

आकारान्तस्त्रीलिङ्ग एक वचन में **'याः'** जोड़ा जाता है–

रमा	**रमायाः**	**सीता**	**सीतायाः**
रमा	रमा का	सीता	सीता का

ईकारान्तस्त्रीलिंङ्ग एक वचन में अन्त्य इकार को हटाकर **'याः'** जोड़ा जाता है–

नदी	**नद्याः**	**घटी**	**घट्याः।**
नदी	नदी का	घड़ी	घड़ी का

सामान्य सम्बन्ध को बताने हेतु षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

दशरथस्य पुत्रः रामः।
दशरथ का पुत्र राम

सीतायाः पतिः रामः।
सीता का पति राम

नद्याः नाम गङ्गा
नदी का नाम गङ्गा

फलस्य नाम आम्रम्।
फल का नाम आम

मम मातुलः चेन्नै नगरे वसति।
मेरे मामा चेन्नै नगर में रहते है।

रामस्य जननम् अयोध्यायाम् अभवत्।
राम का जन्म अयोध्या में हुआ।

भवतः गृहस्य नाम किम्?
आपके (पुं.) घर का नाम क्या है ?

मम गृहस्य नाम आकांक्षा।
मेरे घर का नाम आकांक्षा है।

मातुः सहोदरः मातुलः
माता का भाई मामा

मातुः सहोदरी मातृभगिनी
माता की बहन मासी

पितुः सहोदरः पितृव्यः
पिता का भाई चाचा

पितुः सहोदरी पितृभगिनी
पिता की बहन बुआ

पितुः पिता पितामहः
पिता का पिता दादा

पितुः माता पितामही
पिता की माँ दादी

सुभाषित-

अलसस्य कुतोविद्या अविद्यस्य कुतो धनम्
अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतः सुखम्।

द्वितीय : अध्याय

सम्भाषण में अव्यय पदों का प्रयोग

संस्कृत सम्भाषण में अव्यय पदों का प्रयोग विशेष महत्व रखता है। अव्यय पदों की प्रकृति अपरिवर्तनीय होती है। अर्थात् किसी भी पुरुष वचन तथा काल में इसके रूप में परिवर्तन नहीं आता। विभिन्न अव्यय पदों के पहले और पश्चात् निश्चित विभक्ति लगती है। अव्यय पदों के प्रयोग हेतु इस अध्याय में अनेकानेक उदाहरण एवं तकनीक वर्णित है।

स्थानवाचक अव्यय पदों का परिचय-

अस्ति
है

नास्ति
नहीं है

अत्र
यहाँ

तत्र
वहाँ

कुत्र
कहाँ

सर्वत्र
सभी जगह

अन्यत्र
अन्य स्थान पर

एकत्र
एक जगह

रामः अत्र पठति।
राम यहाँ पढ़ता है।

सुरेशः तत्र लिखति।
सुरेश वहाँ लिखता है।

मोहनः कुत्र गच्छति?
मोहन कहाँ जाता है।

मोहनः विद्यालयं गच्छति।
मोहन विद्यालय जाता है।

सीता कुत्र अस्ति ?
सीता कहाँ है ?

सीता अन्यत्र अस्ति।
सीता अन्य स्थान पर है।

छात्राः कुत्र सन्ति?
छात्र कहाँ हैं।

छात्राः एकत्र सन्ति।
छात्र एक जगह हैं।

सः रमेशः अस्ति सुरेशः नास्ति।
वह रमेश है, सुरेश नहीं है।

सा राधा अस्ति गीता नास्ति।
वह राधा है, गीता नहीं है।

तत् मन्दिरम् अस्ति वाचनालयः नास्ति।
वह मन्दिर है, वाचनालय नहीं है।

तत गृहम् अस्ति विद्यालयःनास्ति।
वह घर है, विद्यालय नहीं।

कालवाचक अव्यय पद -

अद्य = आज,
श्वः = आने वाला कल।
परश्वः = आने वाला परसो।
प्रपरश्वः = आने वाला नरसो।
ह्यः = बीता हुआ कल।
परह्यः = बीता हुंआ परसो।
प्रपरह्यः = बीता हुआ नरसो।

प्रयोग -

अद्य मंगलवासरः।
आज मंगलवार।

श्वः कः वासरः?
कल (आने वाला) कौन दिन ?

श्वः बुधवासरः।
कल बुधवार।

परश्वः कः वासरः?
परसों कौन दिन ?

परश्वः गुरुवासरः।
परसों गुरुवार।

प्रपरश्वः कः वासरः ?
नरसों कौन दिन ?

प्रपरश्वः शुक्रवासरः।
नरसो शुक्रवार।

ह्यः कः वासरः ?
कल (बीता हुआ) कौन दिन ?

ह्यः सोमवासरः।
कल सोमवार।

परह्यः कः वासरः ?
परसो कौन दिन?

परह्यः रविवासरः।
परसो रविवार।

प्रपरह्यः कः वासरः ?
नरसो कौन दिन ?

प्रपरह्यः शनिवासरः।
नरसो शनिवार।

☞ **दिशावाचक अव्यय पद-**

पुरतः	**पृष्ठतः**	**वामतः**	**दक्षिणतः**	**उपरि**	**अधः**
सामने	पीछे	बायें	दायें	ऊपर	नीचे

इन अव्ययों के पूर्व षष्ठी विभक्ति के शब्द प्रयुक्त होते हैं-

बालकस्य पुरतः शिक्षकः अस्ति।
बालक के सामने शिक्षक है।

बालकस्य पृष्ठतः बालिका अस्ति।
बालक के पीछे बालिका है।

बालकस्य वामतः आसन्दः अस्ति।
बालक के बायीं ओर कुर्सी है।

बालकस्य दक्षिणतः प्रयोगशाला अस्ति।
बालक के दायीं ओर प्रयोगशाला है।

बालिकायाः पुरतः उत्पीठिका अस्ति।
बालिका के सामने मेज है।

बालिकायाः पृष्ठतः चित्रम् अस्ति।
बालिका के पीछे चित्र है।

बालिकायाः वामतः सखी अस्ति।
बालिका के बायीं ओर सखी है।

बालिकायाः दक्षिणतः शिक्षिका अस्ति।
बालिका के दायीं ओर शिक्षिका है।

बालिकायाः उपरि दीपः अस्ति।
बालिका के ऊपर बल्व है।

बालिकायाः अधः कटः अस्ति।
बालिका के नीचे दरी है।

मम उपरि आकाशः अस्ति।
मेरे ऊपर आकाश है।

मम अधः भूमिः अस्ति।
मेरे नीचे भूमि है।

मम गृहस्य पुरतः मार्गः अस्ति।
मेरे घर के सामने रास्ता है।

मम गृहस्य पृष्ठतः सरोवरः अस्ति।
मेरे घर के पीछे सरोवर है।

मम गृहस्य वामतः मन्दिरम् अस्ति।
मेरे घर के बायीं ओर मन्दिर है।

मम गृहस्य दक्षिणतः वीथी अस्ति।
मेरे घर के दायीं ओर गली है।

ऊपर के सभी वाक्यों में पुरतः, पृष्ठतः, वामतः, दक्षिणतः, उपरि और अधः इन अव्ययों से पूर्व षष्ठी विभक्ति के शब्द प्रयुक्त हैं।

☞ **विरूद्धार्थक अव्यय पद-**

शीघ्रम् तेजी से	**मन्दम्** धीमे से	**उच्चैः** जोर से	**शनैः** धीमे
कथम् कैसे	**सम्यक्** ठीक	**किमर्थम्** किसलिए	**अपि** भी
च और	**एव** ही	**अतः** अतः	**इति** समाप्ति सूचक
यदि यदि	**तर्हि** तो	**यथा** जैसे	**तथा** वैसे
अद्य आरभ्य आज से	**श्वः आरभ्य** कल से	**यदा** जब	**तदा** तब
बहु अधिक	**किञ्चित्** थोड़ा	**इव** समान	**किन्तु** किन्तु
किल! निश्चय बोधक	**बहुशः** प्रायशः	**बहिः** बाहर	**अन्तः** अन्दर

इतोऽपि	**चेत्**	**नो चेत्**
और भी	हो तो	नहीं हो तो

उपर्युक्त अवधारणार्थक विरुद्धार्थक सम्बन्धज्ञापक अव्यय पदों के उदाहरण-

शशकः शीघ्रं गच्छति।
खरगोश शीघ्र जाता है।

कच्छपः मन्दं गच्छति।
कछुआ धीमे जाता है।

अहं शीघ्रं गच्छामि।
मैं शीघ्र जाता हूँ।

मम अनुजः मन्दं गच्छति।
मेरा भाई धीरे जाता है।

विमानं शीघ्रं गच्छति।
विमान तेजी से जाता है।

वृषभयानं मन्दं गच्छति।
बैलगाड़ी धीमे जाती है।

नीरजा शनैः गायति।
नीरजा धीरे गाती है।

दिलीपः उच्चैः पठति।
दिलीप जोड़ से पढ़ता है।

नोट :- *यहाँ शनैः की जगह नीचैः का भी प्रयोग सम्भव है।*

अहं शीघ्रं गच्छामि।
मैं शीघ्रता से जाता हूँ।

रमेशः मन्दं गच्छति।
रमेश धीरे-धीरे जाता है।

अश्वः कथं गच्छति?
घोड़ा कैसे जाता है?

अश्वः शीघ्रं गच्छति।
घोड़ा जल्दी जाता है।

सिंहः कथं गर्जति।
सिंह कैसे गर्जता है?

सिंहः उच्चैः गर्जति।
सिंह जोड़ से गर्जता है।

रमेशः-**भवतः स्वास्थ्यं कथम् अस्ति?**
रमेश-आपका स्वास्थ्य कैसा है ?

सुरेशः-**मम स्वास्थ्यं सम्यक् अस्ति।**
सुरेश-मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

रमेशः-**भोजनं कथम् अस्ति?**
रमेश-भोजन कैसा है।

सुरेशः-**भोजनं सम्यक् अस्ति।**
सुरेश-भोजन अच्छा है।

☞ *'किमर्थम्' इस अव्यय का प्रयोग-*

सः किमर्थं विद्यालयं गच्छति?
वह क्यों विद्यालय जाता है?

सः पठनार्थं विद्यालयं गच्छति।
वह पढ़ने के लिए विद्यालय जाता है।

सः किमर्थं पठति?
वह किसलिए पढ़ता है?

सः ज्ञानार्थं पठति।
वह ज्ञान के लिए पढ़ता है।

भवती किमर्थं मन्दिरं गच्छति?
आप (स्त्री.) किसलिए मन्दिर जाती है।

अहम् अर्चनार्थं मन्दिरं गच्छामि।
मैं पूजा करने के लिए मन्दिर जाती हूँ।

☞ *अपि - अव्यय पद का प्रयोग-*

रामः गीतं गायति नृत्यम् अपि करोति।
राम गीत गाता है नृत्य भी करता है।

सुधा रामायणं पठति गीताम् अपि पठति।
सुधा रामायण पढ़ती है गीता भी पढ़ती है।

देवदत्तः हिन्दीं जानाति संस्कृतम् अपि जानाति।
देवेदत्त हिन्दी जानता है संस्कृत भी जानता है।

☞ **च-अव्यय पद का प्रयोग**-सामान्यतः समुच्चय के अन्त में **च** का प्रयोग किया जाता है। यथा-

राजीवः रामायणं महाभारतं गीतां च पठति।
राजीव रामायण, महाभारत और गीता पढ़ता है।

अहं मथुरां काशीं वृन्दावनं च गच्छामि।
मैं मथुरा काशी और वृन्दावन जाता है।

अतः-अव्यय पद का प्रयोग-

वुभुक्षा भवति अतः भोजन करोमि।
भूख होती है अतः भोजनं करोमि।

अद्य वृष्टिः भवति अतः अहं बहिः न गच्छामि।
आज वृष्टि हो रही है अतः मैं बाहर नहीं जाता हूँ।

अद्य वृष्टिः भवति अतः वयं बहिः न गच्छामः।
आज वृष्टि हो रही है अतः हम लोग बाहर नहीं जाते हैं।

☞ **एव-अव्यय पद का प्रयोग-**

बकासुरः भोजनम् एव इच्छति स्म।
बकासुर भोजन ही चाहता था।

कुम्भकर्णः निद्राम् एव इच्छति स्म।
कुम्भकर्ण सोना ही चाहता था।

अहं संस्कृतमेव वदामि।
मैं संस्कृत ही बोलता हूँ।

अहं मधुरमेव इच्छामि।
मैं मधुर ही चाहता हूँ।

☞ **यदि-तर्हि अव्यय पद का प्रयोग**-जहाँ विशेषतः समय के विषय में ज्ञापन किया होता है वहाँ **यदा-तदा** का प्रयोग होता है तथा अन्यत्र **यदि-तर्हि** का प्रयोग होता है।

संस्कृतं पठति।
संस्कृत पढ़ता है।

आनन्दं प्राप्नोति।
आनन्द प्राप्त करता है।

यदि संस्कृतं पठति तर्हि आनन्दं प्राप्नोति।
यदि संस्कृत पढ़ता है तो आनन्द मिलता है।

मसि नास्ति।
मसि नहीं है।

लेखनी न लिखति।
लेखनी नहीं लिखती है।

यदि मसि नास्ति तर्हि लेखनी न लिखति।
यदि मसि नही हे तो लेखनी नहीं लिखती है।

☞ ***यथा-तथा अव्यय पद का प्रयोग-***

यथा रमा गायति तथा गीता न गायति।
जैसी रमा गाती है वैसी गीता नहीं गाती है।

यथा मोहनः अभिनयति तथा अभिषेकः न अभिनयति।
जैसा अभिनय मोहन करता है वैसा अभिषेक नहीं करता है।

यथा गुरुः तथा शिष्यः।
जैसा गुरु वैसा शिष्य।

यथा राजा तथा प्रजा।
जैसा राज वैसी प्रजा।

☞ *अद्य आरभ्य*

अहम् अद्य आरभ्य पाठं पठामि श्वः आरभ्य श्रावयिष्यामि।
मैं आज से पाठ पढ़ता हूँ, कल से सुनाऊँगा।

रमेशः अद्य आरम्भ योगासनं करोति, श्वः आरभ्य प्राणायामं करिष्यति।
रमेश आज से योगदान करता है, कल से प्राणायाम करेगा।

☞ *श्वः आरभ्य*

रामः श्वः आरभ्य योगासनं करिष्यति।
राम कल से योगासन करेगा।

सुनीता श्वः आरभ्य कलहं न करिष्यति।
सुनीता कल से कलह नहीं करेगी।

बालकाः श्वः आरभ्य रात्रिभ्रमणं न करिष्यन्ति।
लड़के कल से रात्रि में नहीं घूमेंगे।

सपना श्वः आरभ्य दरिद्रसेवां करिष्यति।
सपना कल से दरिद्र की सेवा करेगी।

यदा-तदा-अव्यय पद का प्रयोग-

यदा 10 वादनं भवति तदा विद्यालयस्य उद्घाटनं भवति।
जब 10 बजता है तब विद्यालय खुलता है।

यदा शिक्षकः आगच्छति तदा छात्राः पठन्ति।
जब शिक्षक आते हैं तब छात्र पढ़ते हैं।

यदा सुशीलः पठति तदा सरोजः अपि पठति।
जब सुशील पढ़ता है तब सरोज भी पढ़ता है।

आम्,	**वा,**	**किम्**	**न**
हाँ	विकल्प	क्या	नही

इन अव्यय पदों का प्रयोग-

भारतस्य राजधानी देहली वा?
क्या भारत की राजधानी दिल्ली है?

आम्, भारतस्य राजधानी देहली
हाँ, भारत की राजधानी दिल्ली है।

भारते लोकतन्त्रं वा?
क्या भारत में लोकतन्त्र है?

आम्, भारते लोकतन्त्रं अस्ति
हाँ भारत में लोकतन्त्र है।

भारते राजतन्त्रं वा?
भारत मे राजतन्त्र है?

न भारते राजतन्त्रं नास्ति।
नहीं, भारत में राजतन्त्र नहीं है।

☞ *बहु किञ्चित् अव्यय पद का प्रयोग-*

गजः बहु खादति अजा किञ्चित् खादति।
हाथी बहुत खाता है बकरी थोड़ी खाती है।

श्रमिकः बहु कार्यं करोति व्यवस्थापकः किञ्चित् कार्यं करोति।
मजदूर बहुत श्रम करता है मैनेजर थोड़ा काम करता है।

रमा बहु परिश्रमं करोति नीलम किञ्चत् परिश्रमं करोति।
रमा बहुत परिश्रम करती है नीलम थोड़ा परिश्रम करती है।

वायुयानं बहु ध्वनिं करोति कारयानं किञ्चित् ध्वनिं करोति।
हवाई जहाज बहुत ध्वनि करता है कार थोड़ी ध्वनि करती है।

☞ *इव अव्यय पद का प्रयोग-*

लता कोकिलः इव गायति।
लता कोकिल की तरह (भांति) गाती है।

प्रदीपः राजेन्द्रकुमारः इव अभिनयति।
प्रदीप राजेन्द्रकुमार की तरह अभिनय करता है।

राधवेन्द्रः कपिलदेवः इव क्रिकेट् क्रीडति।
राधवेन्द्र कपिलदेव की तरह क्रिकेट खेलता है।

सोहनः बालिका इव लज्जां करोति।
सोहन लड़की की तरह लज्जा करता है।

अर्जुनः दुर्बलः इव विलपति।
अर्जुन दुर्बल की भांति विलाप करता है।

भवन्तः विदेशीयाः इव वेषं धृतवन्तः।
आप लोग विदेशियों की तरह वेष धारण किये हुए हैं।

☞ *किन्तु अव्यय पद का प्रयोग- यह पूर्व वाक्य सम्बन्ध को बताने वाला अव्यय है।*

शीला लिखितुम् इच्छति, किन्तु लेखनी नास्ति।
शीला लिखना चाहती है, किन्तु कलम नहीं है।

दीपेन्द्रः चलनचित्रं द्रष्टुम् इच्छति, किन्तु चिटिका न प्राप्ता।
दीपेन्द्र सिनेमा देखना चाहता है, किन्तु टिकट नहीं मिली।

सः पठितुम् इच्छति, किन्तु मनः न रमते।
वह पढ़ना चाहता है, किन्तु मन नहीं लगता है।

☞ **'कृते' (लिए) = अव्यय पद का प्रयोग।** षष्ठी विभक्ति रूप के साथ इसके जोड़ने से सम्प्रदान अर्थ अथवा निमित्तार्थ को देता है।

रामस्य कृते - रामाय
देव्याः कृते - देव्यै
देवानां कृते - देवेभ्यः
मन्दिराणां कृते - मन्दिरेभ्यः

सीतायाः कृते - सीतायै
फलस्य कृते - फलाय
बालिकानां कृते - बालिकाभ्यः
गृहाणां कृते - गृहेभ्यः

☞ *विना-बिना*

ऋते = सिवाय
सह = साथ
पर्यन्तम् = तक
अत्रैव-यहीं

द्वारा = द्वारा
प्रभृति = लेकर
उभयत्र-दोनों ओर
तत्रैव-वहीं

यत्र-कुत्रापि-	जहां कहीं भी	**इतः**-	यहां से
ततः-	वहां से	**कुतः**-	कहां से
यतः-	क्योंकि	**इतस्ततः**-	इधर-उधर
सर्वतः-	सभी ओर से	**उभयतः**-	दोनों ओर से
उपर्यधः-	ऊपर नीचे		

इन अव्यय पदों के उदाहरण-

जलं विना मीनाः न जीवन्ति।
जल के बिना मछलियाँ नहीं जीवित रहती।

ऋते ज्ञानं न मुक्तिः।
ज्ञान के सिवाय मुक्ति के अन्य उपाय नहीं है।

रमा आकाशवाणीद्वारा समाचारं श्रृणोति।
रमा आकाशवाणी के द्वारा समाचार सुनती है।

रमाकान्तः बसद्वारा कार्यालयं गच्छति।
रमाकान्त बस से कार्यालय जाता है।

ग्रामात् प्रभृति नगरपर्यन्तं दूरभाषस्य प्रसारः अस्ति।
ग्राम से लेकर नगर तक दूरभाष टेलीफोन का प्रसार है।

उभयत्र वृक्षाः सन्ति।
दोनों ओर वृक्ष हैं।

अत्रैव गौतमऋषिः तपः आचरितवान्।
यहीं गौतम ऋषि ने तप किया था।

अत्रैव निषादरामयोः मेलनम् अभवत्।
यहीं निषाद और राम का मिलन हुआ था।

तत्रैव भवति मेलापकम्।
वहीं होता है मेला।

तत्रैव भवति अन्त्येष्टिसंस्कारः।
वहीं अन्त्येष्टि संस्कार होता है।

भारते यत्र कुत्रापि गन्तुं स्वातन्त्र्यम् अस्ति।
भारत में कहीं भी जाने की स्वतन्त्रता है।

यत्र कुत्रापि संस्कृतेन सम्भाषणं शक्यते।
कहीं भी संस्कृत में सम्भाषण सम्भव है।

इतः विश्वविद्यालयः पञ्चकिलोमीटरदूरमस्ति।
यहाँ से विश्वविद्यालय पाँच किलोमीटर दूर है।

इतः लखनऊमेलरेलयानं 10:00 वादने प्रस्थानं करोति।
यहाँ से लखनऊ मेल रेलगाड़ी 10:00 बजे छूटती है।

इतः मन्दिरं दूरं नास्ति।
यहाँ से मन्दिर दूर नहीं है।

मोहनः कुतः आगच्छति?
मोहन कहाँ से आते हो?

वरुणा रेलयानं कुतः प्रस्थानं करोति (आयाति) ?
वरुणा रेलयान कहाँ से आती है ?

वरुणारेलगाड़ी काशीतः आयाति।
वरूणा रेलगाड़ी काशी से आती है।

मानवाः जीवन्ति यतः प्राणवायुः अस्ति।
मानव जीवित है क्योंकि आक्सीजन है।

संस्कृतिः जीविता अस्ति यतो हि संस्कृतं जीवति।
संस्कृति जीवित है क्योंकि संस्कृत जीवित है।

परीक्षाकाले छात्राः इतस्ततः न भ्रमन्ति।
परीक्षा समय में छात्र इधर-उधर नहीं घूमते हैं।

स इतस्ततः अटित्वा आगतवान्।
वह इधर-उधर घूमकर आ गया।

अट्टालिकाषु जनाः उपर्यधः कुर्वन्ति।
अट्टालिकाओं में लोग उपर नीचे करते हैं।

बारं-बारं उपर्यधः गमनागमनेन शरीरं क्लान्तं भवति।
बार-बार ऊपर नीचे जाने-आने से शरीर थकता है।

इत्थम्, एवम् =	ऐसे	सर्वथा =	सब तरह से
अन्यथा =	नहीं तो	कथञ्चित्, कथमपि=	किसी प्रकार

यथा-यथा =	जैसे-जैसे	यथाकथमपि =	जिस किसी प्रकार
तथैव =	उसी प्रकार	बहुधा, प्रायः =	अक्सर
मिथः =	आपस में	अवश्यम् =	जरूर
स्वयम् =	खुद	वस्तुतः =	असल में
सहसा, अकस्मात्=अचानक		वृथां, मुधा =	व्यर्थ
समक्षम्=	सामने	मन्दं =	धीरे
इत्थम्, इदम् इत्थम्=यह ऐसा ही है।		कथञ्चित् =	किसी प्रकार
यथा-यथा =	जैसे-जैसे	तथा-तथा =	वैसे-वैसे
यथा कथञ्चित् = जिस किसी प्रकार		तथैव =	उसी प्रकार
मिथ =	आपस में	बहुधा =	अक्सर

इत्थं व्यवहारः उचितः नास्ति।
ऐसी व्यवहार उचित नहीं है।

भगवद्ध्यानं सर्वथा कल्याणकारकम्।
भगावान का ध्यान सब तरह से कल्याणकारक है।

परदेशे सर्वथा जागरूकता आवश्यकी।
पर देश में सब तरह से जागरूकता आवश्यक है।

वृक्षारोपणं करोतु अन्यथा जीवितुं न शक्यते।
वृक्षा रोपण करें नहीं तो जीवन नहीं जी सकेंगे।

दरिद्राः कथञ्चित् जीवनं यापयन्ति।
दरिद्र किसी भी प्रकार जीवन विताते हैं।

निर्धनाः कथमपि उदरं पालयन्ति।
गरीब किसी भी प्रकार पेट पालते हैं।

यथा-यथा वस्तुनां निर्माणं भवति तथा तथा आपूर्तिः भवति।
जैसे जैसे वस्तुओं को उत्पादन होता है वैसे वैसे आपूर्ति होती है।

रमेशः पादेन खञ्जः स यथाकथञ्चित् चलति।
रमेश पेरो से लंगड़ा है यह जिस किसी प्रकार चलता है।

यादृशः प्रश्नः आसीत् तथैव उत्तरमपि दत्तवान्।
जैसा प्रश्न था उसी प्रकार उत्तर भी दिया।

हिमाचलप्रदेशे बहुधा शैत्यं भवति।
हिमाचल प्रदेश में अक्सर ठंड़ी होती है।

पूर्वं बहुधा अनावृष्टिः भवति स्म।
पहले अक्सर सूखा पड़ता था।

☞ *निषेध वाचक अव्यय पद–*

न, नो, नहि = नहीं   मा = मत

अलम् = बस

इनके प्रयोग–

स हिन्दीं नहि जानाति।
वह हिन्दी नहीं जानता है।

अग्निस्पर्शं मा कुरु।
आग को मत छुओ।

कोलाहलं मा कुरु।
कोलाहल नहीं करो।

असत्यं मा वदतु।
झूठ मत बोलिए।

अलम् अधिककथनेन।
बस और अधिक न कहे।

अलं निद्रया।
बस करो सोना।

☞ स्वीकारवाचक अव्यय पद–

आम्, ओम् = हाँ   बाढम् = बहुत अच्छा

अथकिम् = और क्या

इनके प्रयोग–

छात्रस्य उत्तमं प्रदर्शनं दृष्ट्वा गुरुः बाढं बाढं इति वदति।
छात्र का उत्तम प्रदर्शन देखकर गुरु बहुत अच्छा बहुत अच्छा कहते हैं।

क्रीडाक्षेत्र उत्तमं प्रदर्शनं दृष्ट्वा दर्शकाः बाढं बाढं इति वदन्ति।
मैदान में अच्छा प्रदर्शन देखकर दर्शक बहुत अच्छा बहुत अच्छा बोलते है।

मोहनः – किम् मोदकं खादिष्यति?   **रमेश : – अथकिम्**
मोहन – क्या लडडू खाओगे?   रमेश – और क्या

☞ 'कति' शब्द नित्य बहुवचनान्त है। इस अव्यय के उदाहरण निम्नलिखित है–

हस्ते कति अंगुल्यः सन्ति ?   हाथ में कितने अँगूली हैं ?

हस्ते पञ्च अंगुल्यः सन्ति।   हाथ में पाँच अँगुलियाँ हैं।

भारते कति राज्यानि सन्ति ?   भारत में कितने राज्य हैं।

भारते अष्टाविंशति राज्यानि सन्ति। भारत में अट्ठाईस राज्य हैं।

कति जनाः। कति लेखन्यः। कति पुस्तकानि। कितने लोग। कितनी लेखनी। कितनी पुस्तकें।

☞ जहाँ गणना सम्भव है वहाँ 'कति' तथा जहाँ गणना सम्भव नहीं वहाँ **कियत्** अव्यय पद का प्रयोग होता है। जैसे-

सागरे कियत् जलम् अस्ति ? समुद्र में कितना जल है ?

तस्य पार्श्वे कियत् ज्ञानम् अस्ति ? उसके पास कितना ज्ञान है ?

तस्य मूल्यं कियत् अस्ति ? उसका मूल्य कितना है ?

पुस्तकं कियत् सुन्दरम् अस्ति ? पुस्तक कितना सुन्दर है ?

स्थानं कियत् मनोहरम् अस्ति ? स्थान कितना मनोहर है ?

☞ कदा (कब) यह प्रश्नार्थक अव्यय है और इसका उत्तर सर्वदा सप्तमी विभक्ति में अथवा सप्तम्यर्थ अव्यय प्रातः, सायं इत्यादि अव्ययों के द्वारा होता है।

कृषकः कदा क्षेत्रं गच्छति ? किसान कब खेत में जाता है ?

कृषकः प्रातः क्षेत्रं गच्छति। किसान प्रातः काल खेत में जाता है।

आकाशवाणीतः सायं समाचारः प्रसार्यते। आकाशवाणी से सायं समाचार प्रसारित होता है।

रमेशः कदा विद्यालयं गच्छति ? रमेश कब विद्यालय जाता है ?

रमेशः दसवादने विद्यालयं गच्छति। रमेश दस बजे विद्यालय जाता है।

भवान् कदा अल्पाहारं स्वीकरोति ? आप (पुं) कब नास्ता करते हो ?

भवती कदा पूजां करोति ? आप (स्त्री) कब पूजा करती है ?

छात्रः कदा पाठं स्मरति ? छात्र कब पाठ याद करता हैं ?

शिक्षकाः कदा पठन्ति ? शिक्षक कब पढ़ते हैं ?

☞ ***तः - पर्यन्तम् इस अव्यय पद का प्रयोग -***

रामः 5:00 वादनतः 6:00 वादनपर्यन्तं योगासनं करोति।
राम 5:00 बजे से 6:00 बजे तक योगासन करता है।

रामः 6.00 वादनतः 8.00 वादनपर्यन्तं नित्यक्रियां करोति।
राम 6 बजे से 8 बजे तक नित्यक्रिया सम्पादित करता है।

रामः 8.00 वादनतः 10.00 वादनपर्यन्तं स्वाध्यायं करोति।
राम 8 बजे से 10 बजे तक स्वाध्याय करता है।

रामः 10.00 वादनतः 4.00 वादनपर्यन्तं कक्षां करोति।
राम 10 बजे से 4 बजे तक कक्षा करता है।

रामः 4.00 वादनतः 6.00 वादनपर्यन्तं क्रीडां करोति।
रामः 4 बजे से 6 बजे तक खेलता है।

अहं रात्रिः 8.00 वादनतः 11.00 वादनपर्यन्तं पठामि।
मैं रात्रि 8 बजे से 11 बजे तक पढ़ता हूँ।

वयं 11.00 वादनतः 5.00 वादनपर्यन्तं निद्रां कुर्मः।
हम लोग 11 बजे से 5 बजे तक सोते हैं।

लखनऊमेलरेलयानं लखनऊतः देहलीपर्यन्तं गच्छति।
लखनऊ मेल रेलगाड़ी लखनऊ से दिल्ली तक जाती है।

पुरुषोत्तमरेलयानं पुरीतः देहलीपर्यन्तं गच्छति।
पुरुषोतम रेलगाड़ी पुरी से दिल्ली तक जाती है।

वरुणारेलयानं काशीतः, लखनऊपर्यन्तं गच्छति।
वरुणा रेलगाड़ी काशी से लखनऊ तक जाती है।

छात्राः गृहतः विद्यालयपर्यन्तं त्रिचक्रिकया गच्छन्ति।
छात्र घर से विद्यालय तक रिक्सा द्वारा जाते हैं।

अहं ग्रामतः नगरपर्यन्तं पद्भ्यां गच्छामि।
मैं गाँव से नगर तक पैदल जाता हूँ।

आनन्दः गृहतः कार्यालयपर्यन्तं मित्रेण सह गच्छति।
आनन्द घर से कार्यालय तक मित्र के साथ जाता है।

☞ **स्म**–*इस अव्यय पद का प्रयोग वर्तमान काल के क्रियापदों के आगे जोड़ने से वह क्रिया भूतकाल के अर्थ को देती है। जैसे–*

दिलीपः सेवां करोति।	दिलीप सेवा करता है।
दिलीपः सेवां करोति स्म।	दिलीप सेवा करता था।
सैनिकाः युद्धं कुर्वन्ति।	सैनिक युद्ध करते हैं।
सैनिकाः युद्ध कुर्वन्ति स्म।	सैनिक युद्ध करते थे।
अहं वाचनालयं गच्छामि।	मैं वाचनालय जाता हूँ।
अहं वाचनालयं गच्छामि स्म।	मैं वाचनालय जाता था।

☞ **अपेक्षया**–*इस अव्यय पद का प्रयोग दो की तुलना कर एक के विशेष कथन हेतु प्रयोग होता है। इच्छा अर्थ में तो अपेक्षा का प्रयोग होता है न कि अपेक्षया का। अपेक्षया के पूर्व षष्ठी विभक्ति होती है।*

गोपालः नरेन्द्रस्य अपेक्षया मेधावी।	गोपाल नरेन्द्र की अपेक्षा मेधावी है।
सुरजीतः कृष्णस्य अपेक्षया कृपणः।	सुरजीत कृष्ण की अपेक्षा कंजूस है।
लता राधायाः अपेक्षया उन्नता।	लता राधा की अपेक्षा लम्बी है।
गङ्गा यमुनायाः अपेक्षया दीर्घा।	गंगा यमुना की अपेक्षा लम्बी है।
चेन्नेनगरं भोपालस्य अपेक्षया वृहत्।	चैन्ने नगर भोपाल की अपेक्षा विशाल है।
दिनेशः मम अपेक्षया स्थूलः अस्ति।	दिनेश मेरे अपेक्षा मोटा है।
अन्याभाषायाः अपेक्षया संस्कृतं मधुरम्।	अन्य भाषा की अपेक्षा संस्कृत मधुर है।
लेखनस्य अपेक्षया भाषणं सुकरम्।	लेखन की अपेक्षा भाषण सुगम है।

☞ **इतः पूर्वम्-इतः परम्** *इस अव्यय पद के उदाहरण–*

सः इतः पूर्वं ब्रह्मचारी आसीत्। इतः परं गृहस्थः भविष्यति।
वह इससे पहले ब्रह्मचारी था। अब गृहस्थ होगा।

मनोजः इतः पूर्वं निरुद्योगी आसीत्। इतः परं उद्योगी भविष्यति।
मनोज पहले बेरोजगार था। अब उद्योगी होगा।

रविकान्तः इतः पूर्वं प्रवासं करोति स्म।
रविकान्त पहले प्रवास करता था।

श्यामला इतः पूर्वं संस्कृतकार्यं करोति स्म।
श्यामला इससे पहले संस्कृत कार्य करती थी।

पद्मजा इतः परं संस्कृतकार्यं करिष्यति।
पद्मजा अब संस्कृत कार्य करेगी।

वयं इतः परं संस्कृतेन सम्भाषणं करिष्यामः।
हमसब अब संस्कृत में सम्भाषण करेंगे।

वयं इतः परं समाजसेवां करिष्यामः।
हमसब अब समाजसेवा करेंगे।

अहं इतः पूर्वं काश्याम् आसम् इतः परं लखनऊनगरे भविष्यामि।
मैं इससे पहले काशी में था अब लखनऊ में रहूँगा।

बालकाः इतः पूर्वं वृक्षारोहणं कुर्वन्ति स्म इतः परं न करिष्यन्ति।
लड़के इससे पहले वृक्ष पर चढ़ते थे अब नहीं चढ़ेंगे।

☞ **यतः (चूंकि)**–*इस अव्यय पद के उदाहरण*–

सः विद्यालयं गच्छति यतः पठितुम् इच्छति।
वह विद्यालय जाता है चूंकि पढ़ना चाहता है।

देवेशः भारतीय - संस्कृतिं जानाति यतः संस्कृतं जानाति।
देवेश भारतीय संस्कृति को जानता है चूंकि संस्कृत जानता है।

अहं भोजनं करोमि यतः बुभुक्षा अस्ति।
मैं खाना खाता हूँ चूंकि भूख है।

वैदेशिकाः संस्कृतं पठन्ति यतः भारतं ज्ञातुम् इच्छन्ति।
विदेशी संस्कृत पढ़ते हैं चूंकि भारत को जानना चाहते हैं।

वयं मन्दिरं गच्छामः यतः श्रद्धा अस्ति।
हमलोग मन्दिर जाते हैं चूंकि श्रद्धा है।

भक्ताः तीर्थस्थानं गच्छन्ति यतः धर्मे आदरः अस्ति।
भक्त तीर्थस्थान जाते हैं चूंकि धर्म में आदर हैं।

देवव्रतः रुग्णसेवां करोति यतः सेवाभावः अस्ति।
देवव्रत रोगियों की सेवा करता है चूंकि सेवा भाव है।

यद्यपि तथापि – *इस अव्यय पद के उदाहरण*–

यद्यपि सुरेशः संस्कृतं जानाति तथापि सम्भाषणं न करोति।
यद्यपि सुरेश संस्कृत जानता है फिर भी संम्भाषण नहीं करता है

यद्यपि धनम् अस्ति तथापि दानं न करोति।
जबकि धन है फिर भी दान नहीं करता है।

यद्यपि आकाशे मेघाः सन्ति तथापि वृष्टिः न भवति।

आकाश में जबकि मेघ हैं फिर भी वर्षा नहीं हो रही है।

यद्यपि शिशिरऋतुः अस्ति तथापि शैत्यं न अनुभूयते।
जबकि शिशिर ऋतुः है फिर भी ठंडक का अनुभव नहीं हो रहा है।

नीरजः यद्यपि कृशकायः अस्ति तथापि शक्तिसम्पनः अस्ति।
नीरज जबकि दुबला है फिर भी शक्तिशाली है।

दीपिका यद्यपि बुद्धिमती अस्ति तथापि वंचनां प्राप्नोति।
दीपिका जबकि बुद्धिमती है फिर भी ठगी जाती है।

अग्रिम-वर्षे यद्यपि उत्पादनं भविष्यति तथापि मूल्यवर्द्धनं भविष्यति।
अगले वर्ष जबकि उत्पादन होंगे फिर भी मूल्य बढ़ेंगे।

यद्यपि कार्यं न जानाति तथापि प्रदर्शनं करोति।

काम करना जबकि नहीं जानता फिर भी दिखावा करता है।

☞ **इदानीम्, अधुना, सम्प्रति** *(इस समय) -इन अव्यय पदों के उदाहरण-*

इदानीं युगः एव तादृशः अस्ति।
इस समय युग ही ऐसा है।

इदानीं दूरदर्शने प्रतिदिनं संस्कृतसमाचारः प्रसार्यते।
इस समय प्रतिदिन संस्कृत में समाचार प्रसारित होता है।

अधुना कलियुगस्य प्रथमः चरणः प्रचलति।
इस समय कलियुग का प्रथम चरण चल रहा है।

सम्प्रति संक्रमण-कालः अस्ति।
इस समय संक्रमण काल है।

अधुना नैतिकं दारिद्रयं दृश्यते।
इस समय नैतिक दरिद्रता दिखती है।

अधुना सर्वाणि रेलयानानि बिलम्बेन चलन्ति।
इस समय सभी रेलगाड़ियां बिलम्ब से चल रही हैं।

☞ ***तदानीम् (उस समय), यदा (जब)*** *-इन अव्यय पदों के उदाहरण -*

यदा भारतं पराधीनम् आसीत् तदानींम् अभिव्यक्ति-स्वतन्त्रता नासीत्।
जब भारत गुलाम था उस समय अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रा नहीं थी।

यदा अनारोग्यं भवति तदानीं सुखकरी वार्ता अपि कष्टकरी भवति।
जब बीमार होता है उस समय अच्छी बात भी कष्ट देने वाली लगती है।

यदा अधिकारी आगच्छति तदानीं सर्वे कार्ये संलग्नाः भवन्ति।
जब अधिकारी आता है उस समय सभी कार्य में लग जाते हैं।

यदा भारतवर्षं जगद्गुरुः आसीत् तदानीं सर्वविधवैभवम् आसीत्।
जब भारत जगद्गुरु था उस समय सभी प्रकार की सम्पन्नता थी।

यदा विश्वं ज्ञानकेन्द्रितम् आसीत् तदानीं भारतस्य सर्वाधिकं माहात्म्यम् आसीत्।
जब विश्व ज्ञान केन्द्रित था उस समय भारत का सबसे अधिक महत्त्व था।

☞ ***एकदा*** *(एक समय, अथवा एक बार),* ***सर्वदा*** *(हमेशा) इन अव्यय पदों के उदाहरण–*

एकदा एकः सिंहः आगतवान्। — एक बार एक सिंह आया।

एकदा अहं देहली-नगरं गतवान्। — एक बार मैं दिल्ली नगर गया।

एकदा वयं वैष्णोमन्दिरं गमिष्यामः। — एक बार हम लोग वैष्णोमन्दिर जायेंगे।

एकदा मम मित्रं रुग्णः अभवत्। — एक समय मेरा मित्र बीमार हो गया।

सः सर्वदा अरण्य-रोदनं करोति। — वह हमेशा अरण्य-रोदन करता है।

रमेशः सर्वदा चाटुकारितां करोति। — रमेश हमेशा चाटुकारिता करता है।

रमा सर्वदा चिन्तनं करोति। — रमा हमेशा चिन्तन करती है।

दरिद्राः सर्वदा याचनां कुर्वन्ति। — दरिद्र हमेशा मांगते हैं।

कापुरुषाः सर्वदा भीताः भवन्ति। — कायर पुरुष हमेशा भयभीत रहते हैं।

श्रेष्ठाः सर्वदा स्तुत्याः भवन्ति। — श्रेष्ठ लोग हमेशा स्तुत्य होते हैं।

☞ ***कदाचित्*** *(कभी),* ***कदापि*** *(कभी भी) - इन अव्यय पदों के उदाहरण -*

कदाचित् मम गृहम् आगच्छतु। — कभी मेरे घर आइए।

कदाचित् भवता सह मेलनं जातम्। — कभी आपके साथ मिलना हुआ है।

कदाचित् अस्माकं कार्यालयं पश्यतु। — कभी हम लोगों का कार्यालय देखिए।

कदाचित् अस्माभिः सह भोजनं करोतु। — कभी हम लोगों के साथ भोजन करिए।

समयेन कार्यं करणीयं कदापि निरीक्षणं भवितुम् शक्नोति।
समय से काम करना चाहिए कभी भी निरीक्षण हो सकता है।

यानं मन्दं चालनीयं कदापि दुर्घटना भवितुं शक्नोति।
गाड़ी धीमी चलानी चाहिए कभी भी दुर्घटना हो सकती है।

कदापि भारतस्य संस्कृत्याः नाशः न भविष्यति।
कभी भी भारत की संस्कृति का नाश नहीं होगा।

कदापि ज्ञानपिपासायाः शमनं न भवति।
कभी भी ज्ञान रूपी प्यास बुझती नहीं है।

कदापि भारत-पाकिस्तानयोः उत्तम सम्बन्धः न भवति।
कभी भी भारत-पाकिस्तान का सम्बन्ध अच्छा नहीं होता है।

कदापि असत्यं न वक्तव्यम्।
कभी भी झूठ नहीं बोलनी चाहिए।

☞ ***यावत्*** *(जब तक),* ***तावत्*** *(तब तक) – इन अव्यय पदों के उदाहरण–*

यावत् विन्ध्यहिमालयः तावत् भारतीया संस्कृतिः।
जब तब विन्ध्य और हिमालय पर्वत है तब तक भारतीय संस्कृति है।

यावत् जीवेत् तावत् सुखं जीवेत्।
जब तक जीयें सुख से जीयें।

यावत् अहं रेलस्थानकं प्राप्तवान् तावत् रेलयानं प्रस्थितम्।
जब तक मैं रेलवे स्टेशन पहुंचा तब तक रेलगाड़ी प्रस्थान कर दी।

यावत् अधिकारिणः उपविशन्ति तावत् कर्मकराः उपविशन्ति।
जब तक अधिकारी बैठते हैं तब तक कर्मचारी बैठते हैं।

यावत् साफल्यं न मिलति तावत् परिश्रमं करोति।
जब तक सफलता नहीं मिलती तब तक परिश्रम करता है।

यावत् श्रद्धा न भवति तावत् फलं न लभ्यते।
जब तक श्रद्धा नहीं होती तब तक फल नहीं मिलता।

यावत् गुरुः न लभ्यते तावत् ज्ञानं न भवति।
जब तक गुरु नहीं मिलता तब तक ज्ञान नहीं होता है।

यावत् तपं न करोति तावत् मनोरथः न सिद्धयति।
जब तक तप नहीं करता है तब तक मनोकामना पूर्ण नहीं होती।

यावत् माता आगतवती तावत् पुत्रः सन्यासी अभवत्।
जब तक माता आयी तब तक पुत्र सन्यासी हो गया।

यावत् चिकित्सकः आगतवान् तावत् रोगीः मृतः।
जब तक चिकित्सक आया तब तक रोगी मर चुका।

उपर्युक्त अव्यय पदों के अतिरिक्त कुछ अन्य विभिन्न स्थितियों एवं सम्बन्धों को सूचित करने वाले प्रमुख अव्यय पद निम्नलिखित हैं–

- हा–1. – यह आश्चर्य या सन्तोष को प्रकट करता है।
- आह! 2. यह दुःख सूचक है।

- हा। हा हतास्मि। हाय मैं मर गया। यह प्रायः सम्बोधन के साथ आता है। कभी–कभी इसका प्रयोग द्वितीयान्त के साथ होता है – अफसोस है। इसके साथ कष्टम्, धिक, या हन्त का भी प्रायः प्रयोग होता है।
- आह! - आह ! वह वेदना।
- आह बहुत दर्द है।
- मुहुः 1. प्रतिपल, निरन्तर, बार–बार। इसका प्रायः द्विरूक्त 'मुहुर्मुहुः' प्रयुक्त होता है। 2. इसके विपरीत। मुहुः– मुहुः-अब ऐसा–अब ऐसा, कभी ऐसा–कभी ऐसा।
- ननु (न नु) नहीं 1. ऐसे प्रश्नवाचक वाक्य जिनके उत्तर की 'हाँ' में आशा की जाती हो। अवश्य, वस्तुतः। ननु अहं भवतः प्रियः। क्या मैं वस्तुतः आपका प्रिय हूँ।
- तु – (यह वाक्य के प्रारम्भ में नहीं आता) किन्तु, तथापि। यह कभी–कभी 'च' या 'वा' के अर्थ में आता है या केवल पाद की पूर्ति हेतु होता है। यह कभी–कभी उसी वाक्य में दो बार भी आता है। अपि तु = बल्कि। न तु = न कि। परन्तु = फिर भी, तु–तु= वस्तुतः।
- अथ -1. वाक्य का प्रारम्भ सूचक = तब, अब, बाद में।
  2. पुस्तक, अध्याय, परिच्छेद आदि के शीर्षक के आरम्भ में अर्थात् 'अब' या 'यहाँ' से प्रारम्भ होता है'।
- अये–यह सम्बोधनसूचक निपात है। मुख्यतया यह नाटको में आता है। अये, वसन्तसेना प्राप्ता। आह, वसन्तसेना आ गई। कभी–कभी इसका प्रयोग अपि के तुल्य सम्बोधनसूचक निपात के रूप में होता है।
- अरे–यह सम्बोधनसूचक निपात है। अरे = अरे, ओ, हे।
- अहह–यह आनन्दसूचक अव्यय है। दुःख या हाय का अर्थ प्रकट करता है। अहह महापङ्के पतितोऽस्मि्। हाय मैं गहरे कीचड़ में फंस गया हूँ।
- अहो – यह आश्चर्य, प्रसन्नता, दुःख, क्रोध, प्रशंसा या आक्षेप–सूचक अव्यय है। यह साधारणतया प्रथमान्त के साथ प्रयुक्त होता है। अहो गीतस्य माधुर्यम्। ओह, गीत की मधुरता ! अहो हिरण्यक श्लाध्योऽसि। ओह, हे हिरण्यक, तुम प्रशंसनीय हो।
- दिष्ट्या–भाग्य से, सौभाग्य से। इसका प्रायः वृध् धातु बढ़ना के साथ प्रयोग होता है। 'तुम समृद्ध हो रहे हो' अर्थात् 'प्रसन्नता की बात है' बधाई है। दिष्ट्या महाराजो विजयेन वर्धते, विजय के लिए महाराज को बधाई हैं।
- धिक् – यह असन्तोष, घृणा और खेदसूचक अव्यय है। धिक्कार है। हा धिक्। इसके साथ नियमित रूप से द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। प्रथमा,

सम्बोधन और षष्ठी भी इसके साथ मिलती है। धिक् त्वामस्तु, तुझे धिक्कार है।

- बत–यह आश्चर्य और खेद को सूचित करता है। इसी अर्थ में अन्य विस्मयसूचक अव्यय भी इसके साथ सम्बद्ध हो जाता है। बत रे, अपि बत।
- भोः –1. सामान्यतया किसी व्यक्ति को सम्बोधन करने का सूचक अव्यय है, 'हे', अरे। यह भवत् शब्द पुंल्लिग सम्बोधन एकवचन (भवस्) का संक्षिप्त रूप है। यह पुरुष और स्त्री दोनों को सम्बोधित करने में प्रयुक्त होता है :– भोः भोः पण्डिताः (ओ पण्डितों!) इसका कभी–कभी आत्मभाषण में भी 'ह़ाय' अर्थ में प्रयोग होता है।
- स़ाधु –1. बहुत अच्छा, शाबाश। 2. लोट् के साथ – 'आओ'। दमयन्त्याः पणः साधु वर्तताम्। आओ दमयन्ती को बाजी पर लगाओ। 3. अच्छा, इसके साथ लट् उत्तम पुरुष का प्रयोग होता है। साधु यामि। अच्छा, मैं अभी जा रहा है। 4. अवश्य, निश्चित रूप से। यदि जीवामि साध्वेनं पश्येयम्। यदि में जीवित रहा तो उसे अवश्य देखूँगा।
- स्वस्ति–1. कल्याण हो, शुभ हो। 2. जय हो।
- हन्त –1. उपदेशादि सुनने के लिए आह्वान–आओ "देखो" प्रार्थना करता हूँ। हन्त ते कथयिष्यामि। आओं मैं तुम्हें बताऊँगा।

तृतीय : अध्याय

विभक्ति ज्ञान

संस्कृत सम्भाषण हेतु कारक का ज्ञान परमावश्यक है। कारक के विभिन्न चिन्हों का सम्भाषण में शब्दों में विभक्ति जोड़कर कर्ता के साथ सम्बन्ध ज्ञात होता है। विभक्तियों को ध्यान में रखे बिना कर्ता की अभीष्ट प्राप्ति नहीं होती। विभक्ति ज्ञापक के बिना वाक्य रचना भी सम्भव नहीं है। यहां सातों विभक्तियों का क्रमशः परिचय प्रस्तुत है–

प्रथमा विभक्ति

कर्तृवाच्य में कर्ता प्रथमा विभक्ति की होती है।

राधा पाठशालां गच्छति।
राधा पाठशाला जाती है।

सुमन गीतं गायति।
सुमन गीत गाती है।

इन वाक्यों में राधा और सुमन प्रथमयन्त हैं। इनके योग में प्रथमा विभक्ति हुई है।

रामः इव सत्पुरुषः कः ?
राम के समान सत्पुरुष कौन है ?

विवेकानन्दः इव ज्ञानी कः ?
विवेकानन्द के समान ज्ञानी कौन है?

☞ कर्मवाच्य में **कर्म प्रथमा विभक्ति के प्रयुक्त होते हैं।**

मोहनेन ग्रन्थः पठ्यते।
मोहन ग्रन्थ पढ़ता है।

सीतया पत्रिका पठ्यते।
सीता पत्रिका पढ़ती है।

यहाँ कर्म ग्रन्थ व पत्रिका प्रथमा विभक्ति का है।

रमया चन्द्रः अवलोक्यते।
रमा चन्द्रमा देखती है।

मया ग्रन्थः लिख्यते।
मैं ग्रन्थ लिखता हूँ।

बालकैः विद्यालयः गम्यते
लड़के विद्यालय जाते हैं।

महिलाभिः गीतं गीयते।
महिलायें गीत गाती हैं।

अस्माभिः कार्यं क्रियते।
हम लोग कार्य करते हैं।

अष्माभिः फलं खाद्यते।
हम लोग फल खाते हैं।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में कर्मवाच्य के कारण कर्म प्रथमा विभक्ति का है। कतृवाच्य में कर्म कारक की द्वितीया विभक्ति होती है –

महिला ग्रामान् पश्यति।
महिला गांवों को देखता है।

छात्राः पत्रिकाः पठन्ति।
छात्रायें पत्रिकायें पढ़ती हैं।

शिशुः नदीं पश्यति।
शिशु नदियों को देखता है।

माता पुस्तकानि पठति।
माँ पुस्तकें पढ़ती हैं।

अहं रोटिकां खादामि।
मैं रोटी खाता हूँ।

अहं रोटिकाः खादामि।
मैं रोटियां खाता हूँ।

वयं अभ्यासं कुर्मः।
हम सब अभ्यास करते हैं।

वयं वित्तकोशं गच्छामः।
हम सब बैंक जाते हैं।

वयं फलानि आनयामः।
हम सब फल लाते हैं।

वयं दाडिमं खादामः।
हम सब अनार खाते हैं।

देवालयं परितः भक्ताः सन्ति
देवालय के चारों ओर भक्त हैं।

शर्करां परितः पिपीलिंकाः सन्ति
चीनी के चारों ओर चीटियां हैं

द्वितीया विभक्ति

कर्म कारक की द्वितीया विभक्ति होती है। कर्तृवाच्य में कर्म की द्वितीया विभक्ति होती है।

रामः ग्रन्थं पठति।
राम ग्रन्थ पढ़ता है।

बालकः नदीं पश्यति।
बालक नदी को देखता है।

बालकः मन्दिरं पश्यति।
बालक मन्दिर देखता है।

अहं शाकं खादामि।
मैं सब्जी खाता हूँ।

उभयतः के योग में द्वितीया विभक्ति होती है

राजमार्गं उभयतः वृक्षाः सन्ति।
सड़क के दोनों ओर वृक्ष हैं।

वाटिकां उभयतः लताः सन्ति।
वाटिका के दोनों ओर लतायें हैं।

यहाँ 'उभयतः' इस प्रयोग के कारण राजमार्गः व वाटिका की द्वितीयान्त रूप राजमार्गं व वाटिकां प्रयुक्त हुआ है।

सर्वतः के योग में द्वितीया विभक्ति होती है –

दुर्गं सर्वतः सैनिकाः सन्ति। किले के सभी ओर सैनिक हैं।

यहाँ सर्वतः के योग के कारण द्वितीयन्त रूप दुर्गं का प्रयोग हुआ है।

प्रति, अन्तरेण, परितः तथा अभितः के योग में और बिना के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

बालकाः गृहं प्रति गच्छन्ति। बालक घर की ओर जाते हैं। यहां प्रति शब्द के कारण गृहं द्वितीया विभक्ति में है।

ईश्वरम् अन्तरेण मम कः सहायः? ईश्वर के बिना मेरा सहायक कौन ?

ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति। गांव के चारों ओर क्षेत्र हैं।

ज्ञानं विना मुक्तिः न मिलति। ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती है।

☞ सर्वनाम शब्दों का प्रयोग द्वितीया विभक्ति के रूप में यथा –

अहं	माम्,	अस्मान्
कः	कम्,	कान्
सः	तम्	तान्
सा	ताम्	ताः
भवान्	भवन्तम्	भवतः
भवती	भवतीम्	भवतीः
एषः	एतम्	एतान्
एषा	एताम्	एताः

☞ *कालवाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है।*

परीक्षा सर्वाणि दिनानि। परीक्षा सभी दिन है।

☞ *द्विकर्मक धातुओं के गौणकर्म में द्वितीया होती है।*

शिष्यः गुरुं प्रश्नं पृच्छति। शिष्य गुरु से प्रश्न पूछता है।

☞ क्रियाविशेषण में द्वितीया विभक्ति होती है –

सः मन्दं मन्दं गच्छति। वह धीरे-धीरे जाता है।

☞ *पृथक् योग में द्वितीया विभक्ति होती है।*

रामं पृथक् सीता न वसति। राम से अलग सीता नहीं रहती है।

☞ *मांगी जाने वाली वस्तु कर्म के रूप में होती है अतः उसमें भी द्वितीया विभक्ति होती है।*

कृपया ग्रन्थं ददातु कृपया ग्रन्थ दें।

कृपया घटीं ददातु कृपया घड़ी दें।

कृपया पुस्तकं ददातु कृपया पुस्तक दें।

कृपया मापिकां ददातु। कृपया स्केल दें।

कृपया सञ्चिकां ददातु। कृपया फाइल दें।

कृपया उपनेत्रं ददातु। कृपया चश्मा दें।

सुभाषित-

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि

तृतीया विभक्ति

करण कारक की तृतीया विभक्ति होती है। सह के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा-

अहं मित्रेण सह कार्यं करोमि।	मैं मित्र के साथ काम करता हूँ।
अहं राधया सह सम्भाषणं करोमि।	मैं राधा से सम्भाषण करता हूँ।
सीता लतया सह आपणं गच्छति।	सीता लता के साथ दुकान जाती है।
रमा मात्रा सह मन्दिरं गतवती।	रमा माता के साथ मन्दिर गई।
पुत्रः पित्रा सह मेलापकं गच्छति।	पुत्र पिता के साथ मेला जाता है।
छात्राः अध्यापकेन सह प्रदर्शनीं पश्यन्ति।	छात्र अध्यापक के साथ प्रदर्शनी देखते हैं।
रामः केन सह वनं गतवान् ?	राम किसके साथ वन गये।
रामः लक्ष्मणेन सह वनं गतवान्।	राम लक्ष्मण के साथ वन गये।
रामः केन सह युद्धं कृतवान् ?	राम किसके साथ युद्ध किये ?
रामः रावणेन सह युद्धं कृतवान्।	राम रावण के साथ युद्ध किये।

इन सभी उदाहरणों में (सह= साथ) के योग में तृतीया विभक्ति प्रयुक्त हुई है। हिन्दी भाषा में तो सह प्रयोग के पूर्व षष्ठी विभक्ति प्राय: प्रयोग होता परन्तु संस्कृत में षष्ठी का प्रयोग सह के साथ नहीं होता है।

☞ ***साधन अर्थ में करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। यथा-***

मोहनः दण्डेन ताडयति। मोहन दण्डे पीटता है।

यहाँ पीटने का साधन दण्ड शब्द की तृतीया विभक्ति के रूप में प्रयुक्त है।

नृपः रथेन गच्छति। राजा रथ से जाता है।

साधन की तृतीया विभक्ति होती है।

वृद्धः दण्डेन चलति। वृद्ध दण्डें के सहारे चलता है।

यहाँ दण्ड वृद्ध के चलने की क्रिया में साधन हैं। अतः तृतीया दण्डेन प्रयुक्त है।

रमा छुरिकया शाकं कर्तयति। रमा चाकू से सब्जी काटती है।

यहाँ रमा के शाक काटने हेतु चाकू साधन है अतः तृतीयान्त छुरिकया का प्रयोग हुआ है।

☞ कर्मवाच्य में कर्ता की तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

रामेण पुस्तकं पठ्यते। *राम के द्वारा पुस्तक पढ़ा जा रहा है। इस उदाहरण में कर्ता राम पद में कर्मवाच्यके कारण तृतीय विभक्ति में है।*

☞ *विकारयुक्त (विकृत) अंग में तृतीया विभक्ति होती है।*

सः कर्णेन बधिरः। वह कान से बहरा है।

रमेशः पादेन खञ्जः। रमेश पैर से लंगड़ा है।

अक्ष्णा काणः। आंख से काना है।

शिरसा खल्वाटः। गंजा है।

यहाँ क्रमशः विकृत अंग कान, पैर, और व और शिर में तृतीया विभक्ति का रूप प्रयुक्त है।

☞ *अलं, प्रकृत्यादिबोधक, पृथक् शब्द के योग में तृतीया विभक्ति होती है।*

अलं विवादेन। विवाद करने से कोई लाभ नहीं।

रामः प्रकृत्या सरलः। राम प्रकृति से सरल है।

सीता प्रकृत्या सुकोमला। सीता स्वभाव से सुकोमल है।

रामेण पृथक् लक्ष्मणः न भवति। राम से पृथक् लक्ष्मण नहीं होते हैं।

रामेण पुस्तकं पठ्यते। राम पुस्तक पढ़ता है।

भाववाचक शब्दों की तृतीया विभक्ति होती है।

सः सन्तोषेण कार्यं करोति। वह सन्तोषपूर्वक काम करता है।

माता स्नेहेन लालयति। माता स्नेहपूर्वक लालन करती है।

इन वाक्यों में सन्तोष, स्नेह आदि भाववाचक शब्द होने के कारण तृतीयान्त हैं।
विना के योग में तृतीया विभक्ति होती है –

चन्द्रेण विना रात्रिः न शोभते। चन्द्र के बिना रात्रि की शोभा नहीं है।

अध्ययनेन विना छात्रः न शोभते। अध्ययन के बिना छात्र की शोभा नहीं है।

धर्मेण बिना सद्गतिः नास्ति। धर्म के बिना सद्गति नहीं हैं।

लवणेन विना भोजने रुचिः नास्ति। नमक के बिना भोजन में स्वाद नहीं है।

सुभाषित -

अङ्गेन गात्रं नयनेन वक्त्रं न्यायेन राज्यं लवणेन भोजनं।
धर्मेण हीनं खलु जीवितं च न याति चन्द्रेण विना च रात्रिः।।

चतुर्थी विभक्ति

सम्प्रदान कारक की चतुर्थी विभक्ति होती है। क्रोध आदि अर्थ को देने वाले धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। 'दा' (देने) धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

शिक्षकः रमेशाय मोदकं ददाति। शिक्षक रमेश को लड्डू देता है।

यहाँ दा धातु के प्रयोग के कारण रमेश शब्द का चतुर्थी विभक्ति का रूप रमेशाय प्रयोग हुआ है।

शिक्षकः छात्रेभ्यः मोदकं ददाति। शिक्षक छात्रें को लड्डू देते हैं।

☞ रुच (रुचि) धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

दुर्जनेभ्यः कलहः रोचते। दुर्जनों को कलह करना अच्छा लगता है।

मोहनाय मोदकं रोचते। मोहन को मिठाई अच्छी लगती है।

सज्जनाय युद्धं न रोचते। सज्जन को युद्ध अच्छा नहीं लगता। **यहाँ जिसको प्रिय लगती है उसकी चतुर्थी विभक्ति होने के कारण सज्जन और मोहन शब्द में चतुर्थी है।**

☞ ***नमः के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।***

श्री गणेशाय नमः श्री गणेश को नमस्कार, **देवाय नमः,** देव को नमस्कार, **देवेभ्यः नमः,** देवों को नमस्कार है।

देव्यै नमः देवी को नमस्कार।

सर्वेभ्यः नमः सभी को नमस्कार है।

भास्कराय नमः सूर्य को नमस्कार है।

☞ *'स्वाहा' के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।*

अग्नये स्वाहा। अग्नि को समिधा समर्पित है।

प्रधानाचार्यः बालकेभ्यः पारितोषिकं ददाति। प्रधानाचार्य बालकों को पारितोषिक देता है।

गुरुः बालकाय स्नेहं ददाति। गुरू बालक को स्नेह देता है।

रमा बालिकायै मालां ददाति। रमा बालिका को माला देती है।

समाजसेविका बालिकाभ्यः पुरस्कारं ददाति।	समाजसेविका बालिकाओं को पुरस्कार देती है।
शिक्षकः तस्मै मधुरं ददाति।	शिक्षक उसे मिठाई देता है।
रमा तेभ्यः पुस्तकं ददाति।	रमा उन लोगों को पुस्तक देती है।
माता मह्यं क्षीरं ददाति।	माता मुझे दूध देती है।
प्रबन्धकः अस्मभ्यं धनं ददाति।	प्रबन्धक हम लोगों को धन देता है।

☞ *चतुर्थी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति के साथ कृते शब्द का प्रयोग करने पर चतुर्थी विभक्ति के अर्थ का निर्माण होता है। जैसे–*

कर्णः ब्राह्मणस्य कृते कवचं दत्तवान्।	कर्ण ने ब्राह्मण को कवच दिये।
कर्णः ब्राह्मणाय कवचं दत्तवान्।	कर्ण ने ब्राह्मण को कवच दिये।
शिवः अर्जुनस्य कृते पाशुपतास्त्रं दत्तवान्।	शिव ने अर्जुन के लिए पाशुपतास्त्र दिये।
शिवः अर्जुनाय पाशुपतास्त्रं दत्तवान्।	शिव ने अर्जुन को पाशुपतास्त्र दिये।

सुभाषित–

परोपकाराय वहन्ति नद्यः, परोपकाराय दुहन्ति गावः।
परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकारार्थमिदं शरीरम्।।

पञ्चमी विभक्ति

अपादान कारक की पञ्चमी विभक्ति होती है। इस अवसर पर निश्चित की पञ्चमी होती है। अलगाव की स्थिति में स्थिर वस्तु की अपादान कारक होने से पञ्चमी विभक्ति होती है।

सेवकः ग्रामात् आगच्छति।	नौकर गांव से आता है।

☞ *प्रभृति, आरभ्य, बहिः व ऋते के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।*

वैद्यः नगरात् आगच्छति।	वैद्य नगर से आते हैं।
शिक्षकः नगरात् आगच्छति।	शिक्षक शहर से आते हैं।

कश्मीरेभ्यः प्रभृति कन्याकुमारीपर्यन्तं भारतस्य ऐक्यम् अस्ति।
कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारत एक है।

कश्मीरेभ्य आरभ्य कन्याकुमारीपर्यन्तं भारतस्य संस्कृतिः समाना अस्ति।
कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारत की संस्कृति समान है।

प्रकोष्ठात् बहिः वाहनानि सन्ति। प्रकोष्ठ के बाहर गाड़ियां हैं।

ग्रामात् बहिः अरण्यम् अस्ति। ग्राम के बाहर वन है।

ऋते परिश्रमात् साफल्यस्य अन्यः मार्गः न। परिश्रम के सिवाय सफलता का और मार्ग नहीं।

उत्पत्ति के हेतु में भी पञ्चमी विभक्ति होती है।

वृक्षात् फलानि उत्पद्यन्ते। वृक्ष से फल पैदा होते हैं।

यहां फल के उत्पत्ति भूत हेतु वृक्ष में पंचमी विभक्ति है।

जिससे पढ़ा और सुना जाय उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे-

छात्रः अध्यापकात् पठति। छात्र अध्यापक से पढ़ता है।

ग्रामः - ग्रामात् ग्रामेभ्यः नदी - नद्याः नदीभ्यः

फलम् - फलात् फलेभ्यः भवान्- भवतः भवद्भ्यः

भवती -भवत्याः भवतीभ्यः लेखिका- लेखिकायाः लेखिकाभ्यः

बालकः दूरदर्शनात् समाचारं श्रृणोति। बालक दूरदर्शन से समाचार सुनता है।

☞ *भय के हेतु में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे-*

रामः चौराद् विभेति। राम चोर से डरता है।

मोहनः लुण्ठकेभ्यः विभेति। मोहन लुटेरों से डरता है।

यहां भय का कारण चोर और लुटेरा है जिसमें पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

☞ *वारण के अर्थ में भी पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा-*

सः पापात् निवारयति। वह पाप से रोकता है।

☞ *आङ् के योग में, उत्कर्ष अपकर्ष के बोधन में पंचमी विभक्ति होती है।- जैसे-*

अहं आमूलात् श्रोतुम् इच्छामि। मैं मूल से सुनना चाहता हूँ।

सः आदिनात् पठितुम् इच्छिति। वह सम्पूर्ण दिवस पढ़ना चाहता है।

दुष्टात् सज्जनः श्रेष्ठः। दुष्ट से सज्जन श्रेष्ठ है।

☞ *त्राण (रक्षण) के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।*

असुरेभ्यः त्रायते। असुरों से रक्षा करता है।

देवः सङ्कटेभ्यः त्रायते। ईश्वर संकटों से रक्षा करता है।

☞ विना व पृथक् के योग में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे-

ज्ञानाद् विना मुक्तिः न मिलति।	ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती है।
परिश्रमाद् विना साफल्यं न प्राप्यते।	परिश्रम के बिना सफलता नहीं मिलती।
कृष्णात् पृथक् राधा न वसति।	कृष्ण से अलग राधा नहीं वास करती है।
तस्मात् पृथक् तस्य सत्ता नास्ति।	उससे अलग उसकी सत्ता नहीं है।
रामात् पृथक् लक्ष्मणः न भवति।	राम से अलग लक्ष्मण नहीं होता।

सुभाषित -

पादपानां भयं वातात् पद्मानां शिशिराद् भयम्।
पर्वतानां भयं वज्रात् साधूनां दुर्जनाद् भयम्।।

षष्ठी विभक्ति

षष्ठी विभक्ति सम्बन्ध का सूचक हैं जहाँ दो वस्तुओं या व्यक्तियों में सम्बन्ध या स्वामित्व सूचित करना अभिप्रेत हो वहाँ षष्ठी विभक्ति होती है। यथा –

रामस्य पुत्रः लवः।	राम का पुत्र लव है।
मातुः आज्ञा अस्ति।	माँ की आज्ञा है।
राज्ञः पुरुषः।	राजा का पुरुष।
पितुः चरणौ।	पिता के चरणौ में।

जब वाक्य में करण या उद्देश्य में दिखाने के लिये हेतु शब्द का प्रयोग किया जाये तो वहाँ हेतु सूचक शब्द में और उद्देश्य सूचक शब्द में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–

अन्नस्य हेतोः भिक्षुकः भिक्षाटनं करोति।
अन्न हेतु भिखारी भिक्षा मांगता है।

ज्ञानस्य हेतोः स्वाध्यायं करोति। ज्ञान हेतु पढ़ता है।

यहाँ उद्देश्यवाचक क्रमशः अन्न और ज्ञान शब्द के हेतु में षष्ठी विभक्ति शब्द का प्रयोग हुआ हैं।

☞ *जहाँ तुलना या सादृश्य सूचित करना हो वहाँ जिससे तुलना की जायें अथवा सादृश्य बताया जाये वहाँ षष्ठी विभक्ति होती है। यथा –*

श्रवणस्य सदृशः पुत्रः नाभूत्।	श्रवण के जैसा पुत्र नहीं हुआ।
हनुमतः सदृशः रामभक्तः नाभूत्।	हनुमान जैसा रामभक्त नहीं हुआ।

भवतः सदृशः भाग्यवान् नास्ति।	आप जैसा भाग्यवान नहीं है।
कृष्णस्य तुल्यः योगी दुर्लभः।	कृष्ण के जैसा योगी दुर्लभ है।

कृत् प्रत्यय के प्रयोग में कर्ता की षष्ठी या तृतीया विभक्ति होती है। यथा–

मया मम वा इदं पुस्तकं पठितव्यम्।	मेरे पढ़ने योग्य यह पुस्तक।
मया मम वा लोकहितं करणीयम्।	लोगों का हित मुझे करनी है।
मया मम वा परिश्रमः करणीयः।	परिश्रम मुझे करना चाहिए।

समूह से अलग यदि श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया जाय या विशेष परिचय दिया जाये उसमें षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है। उसमें षष्ठ्यन्त बहुवचन का ही प्रयोग होता है। यथा–

नदीनां नदीषु गङ्गा श्रेष्ठा।	नदियों में गङ्गा श्रेष्ठ है।
कवीनां कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है।

यहाँ क्रमशः नदीनां और कवीनां में जातिविशेष में विशिष्ट होने के कारण षष्ठी विभक्ति का बहुवचनान्त रूप क्रमशः प्रयुक्त है।

☞ *खेदपूर्वक स्मरण करने के अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा –*

शिशु मातुः स्मरति।	बच्चा माँ को याद करता है।
सैनिकः शस्त्रस्य स्मरति।	सैनिक शस्त्र को याद करता है।

यहाँ बच्चे का माँ का स्मरण तथा सैनिक का शस्त्र का स्मरण खेदपूर्वक अर्थ में प्रयुक्त होने के कारण षष्ठी विभक्ति को प्रयोग हुआ है अन्यथा सामान्य स्थिति में द्वितीया विभक्ति होती है।

☞ *काबू करने के योग में भी षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–*

सज्जनः क्रोधस्य प्रभवति।	सज्जन क्रोध पर काबू रखता है।

☞ उपकार करने के अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–

सज्जनः सर्वदा मानवानाम् उपकारं करोति।	सज्जन सदैव मनुष्यों को उपकार करता है।

☞ *कर्म पदों को ल्युङ्न्त योग में षष्ठी विभक्ति होता है। यथा –*

कार्यक्रमः उद्घाटनम्/कार्यक्रमस्य उद्घाटनम्।	कार्यक्रम का उद्घाटन।
वस्त्रं प्रक्षालनम्/वस्त्रस्य प्रक्षालनम्।	वस्त्र का प्रक्षालन।

पुस्तकं पठनम्/पुस्तकस्य पठनम्।	पुस्तक की पढ़ाई।
नदी सेवनम्/नद्याः सेवनम्।	नदी का सेवन।

यहाँ पठनम्, सेवनम्, उद्घाटनम् प्रक्षालनम् इत्यादि ल्युङ्न्त योग में प्रयुक्त होने के कारण कर्म पद में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ।

सप्तमी विभक्ति

अधिकरण कारक की सप्तमी विभक्ति होती है। साथ ही मार्ग परिमाण वाचक शब्द में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

पिता आसन्दे उपविशति।	पिता कुर्सी पर बैठते हैं।
विद्यालयात् गृहं एकस्मिन् क्रोशे अस्ति	विद्यालय से घर एक कोश है।
गृहात् कार्यालयः एकस्मिन् क्रोशे अस्ति।	घर से कार्यालय एक कोश है।

☞ *आधारवाचक शब्दों में सप्तमी विभक्ति होती है।*

ससंद्भवनं देहलीनगरे अस्ति।	संसद भवन दिल्ली नगर में है।
पिता काश्यां निवसति।	पिता काशी में बसते हैं।
अनुजः कालिकातायाम् अस्ति।	छोटा भाई कलकत्ता में है।
महाकालमन्दिरम् उज्जैन्याम् अस्ति।	महाकाल मन्दिर उज्जैन में है।
पत्रिकायां दस चित्राणि सन्ति।	पत्रिका में दस चित्र हैं।
वाटिकायां बहूनि पुष्पाणि सन्ति।	वाटिका में बहुत फूल हैं।
नगरे बहूनि उन्नतानि भवनानि सन्ति।	नगर में बहुत उन्नत भवन है।

☞ *साधु -असाधु प्रयोग के अवसर पर सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-*

दुर्जनः सज्जने असाधु।	दुर्जन सज्जन के प्रति असाधु है।
रावणः रामे असाधु।	रावण राम के प्रति असाधु है।
कंसः कृष्णे असाधु।	कंस कृष्ण के प्रति असाधु है।

☞ *क्रिया क्रियान्तर प्रतीति के लिए सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।*

चरित्रं गते सति सर्वं गतम्।	चरित्र के जाने पर सब कुछ गया।
धनं गते सति किञ्चित् गतम्।	धन के जाने पर थोड़ा जाता है।

☞ *आसक्तियों के आधार की सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-*

राजनस्य गणिते अभिरुचिः।	राजन की अभिरुचि गणित में है।

कमलस्य प्रवासे इच्छा।	कमल की इच्छा प्रवास में है।
राघवेन्द्रस्य व्याकरणे आसक्तिः।	राघवेन्द्र की व्याकरण में आसक्ति है।
सीतायाः तीर्थे श्रद्धा।	सीता की श्रद्धा तीर्थ में है।
मातुः मन्दिरे गौरवम्।	माता का मन्दिर के विषय में गौरव है।
तस्याः गीतश्रवणे प्रीतिः।	उसकी प्रीति गाना सुनने में है।
भक्तानां धर्मे आदरः।	भक्तों का धर्म में आदर है।

सुभाषित–

उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे।
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः।।
मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः।।

नोटः

उपसर्गात्मक शब्द चतुर्थी और सप्तमी विभक्ति को छोड़कर शेष सभी विभक्तियों के साथ प्रयुक्त होते है।

क. द्वितीया–अन्तरा (बीच में, बिना) अन्तरेण (बीच में, बिना, बारे में) निकषा (समीप) समया (समीप) अभितः (दोनों ओर), परितः (चारों ओर), सर्वतः (चारों ओर), समन्ततः (चारों ओर), उभयतः (दोनों ओर), परेण (परे) यावत् (तब तक, तक, इसके साथ पंचमी विभक्ति भी प्रयुक्त होता है।

ख. तृतीया–सह (साथ) समम् (साथ) साकम् (साथ), सार्द्धम् (साथ) विना (बिना, सिवाय), इसके साथ तृतीया और पंचमी विभक्ति का भी प्रयोग होता है।)

ग. पंचमी–पंचमी में आनेवाले सभी क्रिया विशेषण शब्द किसी न किसी रूप में पंचमी के मूल अर्थ विश्लेष (पृथक् होना) को प्रकट करते हैं –

1. अर्वाक्, पुरा, पूर्वम्, प्राक्, (समय की दृष्टि से पहले)
2. अनन्तरम् उर्ध्वम् परम्, परतः, परेण, प्रभृति (यह मूल रूप में प्रारम्भ अर्थ सूचक स्त्रीलिंग शब्द है) (समय की दृष्टि से बाद में)
3. बहिः (बाहर)
4. अन्यत्र (अतिरिक्त) ऋते (बिना, द्वितीया भी)

घ. षष्ठी–षष्ठी के साथ प्रयुक्त होने वाले प्रायः सभी क्रिया विशेषण शब्द स्थान

विषयक सम्बन्ध को सूचित करते है :

1. अग्रे, अग्रतः, पुरतः, पुरस्तात्, प्रत्यक्षम्, समक्षम् (आगे, सामने)
2. पश्चात् (बाद में)
3. परतः, परस्तात् (परे).
4. उपरि (द्वितीया विभक्ति भी), उपरिष्टात् (ऊपर, बारे में)
5. अधः, अधस्तात् (नीचे)

षष्ठी के साथ कृते (लिए) का भी प्रयोग होता है।

नोट– द्वितीया (को, ओर, किधर) पंचमी (से, स्थान से, कहाँ से) और सप्तमी (में, कहाँ) विभक्तियों के भाव प्रायः निकट अर्थ के सूचक अन्तिक, उपकण्ठ, निकट, सकाश, संनिधि, समीप और पाश्र्व आदि शब्दों से प्रकट किये जाते हैं। द्वितीया में ये शब्द 'ओर' 'को' 'समीप' अर्थ बताते हैं। पंचमी में 'से' अर्थ और सप्तमी में 'समीप' 'सामने' अर्थ बताते हैं। इनके साथ प्रत्येक स्थान पर षष्ठी होगी– जैसें–

राज्ञः अन्तिकं गच्छ।	राजा के पास जाओ।
रघोः सकाशाद् अपसरत।	वह रघु के पास से हट गया।
मम पार्श्वे।	मेरे पास।
तस्याः समीपे नलं प्रशशंसुः।	उन्होंने उसके सामने नल की प्रशंसा की।

चतुर्थ : अध्याय

सम्भाषण में प्रत्ययों का प्रयोग

मूल शब्द के पश्चात् प्रत्यय लगकर मूल-शब्द के स्वरूप में परिवर्तन ला देते हैं। यथा-राम शब्द से सु प्रत्यय होकर रामः शब्द सिद्ध होता है, इसी प्रकार पठ् शब्द से तिङ् प्रत्यय लगकर पठति शब्द सिद्ध होता है।

प्रत्यय मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं-

1. कृत् प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

1. **तुमुन्**-इस प्रत्यय का 'तुम्' शेष रहता है। इसका प्रयोग 'निमित्त (के लिए) अर्थ' में होता है। इस प्रत्यय से बने शब्दों का शक्, इष्, लग्, गम्, प्राप, ज्ञा, तथा दो धातु के साथ प्रयोग में प्रयुक्त होते हैं -

बालकाः कार्यं कर्तुं शक्नोति।	बालक कार्य कर सकता है।
बालकः कार्यं कर्तुं शक्नुवन्ति।	बालक कार्य कर सकते हैं।
बालिका पुस्तकं पठितुं शक्नोति।	बालिका पुस्तक पढ़ सकती है।
बालिकाः पुस्तकं पठितुं शक्नुवन्ति।	बालिकायें पुस्तक पढ़ सकती हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों में कर्तुं, पठितुं तुमुन् प्रत्यायन्त शब्द हैं।

धातु रूप	**तुमुन् प्रत्यान्त रूप**	**प्रेरणार्थक रूप**
भू	भवितुम् (हो, होना, होने)	भावयितुम्
कृ	कर्तुम् (कर, करना, करने)	कारयितुम्
पठ्	पठितुम् (पढ़, पढ़ना, पढ़ने)	पाठयितुम्
वद्	वदितुम, (बोल, बोलना, बोलने)	वादयितुम्
गम्	गन्तुम् (जा, जाना जाने)	गमयितुम्
स्था	स्थातुम् (रह, रहना, रहने)	स्थापयितुम्
पा	पातुम् (पी, पीना, पीने)	पाययितुम्
दृश्	द्रष्टुम् (देख, देखना, देखने)	दर्शयितुम्
नो	नेतुम् (लेजा, ले जाना, ले जाने)	नाययितुम्

लिख्	लिखितुम् (लिख, लिखना, लिखने)	लेखयितुम्
प्रच्छ्	प्रष्टुम् (पूछ, पूछना, पूछने)	प्रच्छयितुम्
कथ	कथयितुम् (कह, कहना, कहने)	कथयितुम्
ज्ञा	ज्ञातुम् (जान, जानना, जानने)	ज्ञापयितुम्
ग्रह	ग्रहीतुम् (ले, लेना, लेने)	ग्राहयितुम्
दा	दातुम् (दे, देना, देने)	दापयितुम्
श्रु	श्रोतुम्, (सुन, सुनना, सुनने)	श्रावयितुम्
प्राप्	प्राप्तुम् (पा, पाना, पाने)	प्रापयितुम्
जागृ	जागरितुम्, (जाग, जागना, जागने)	जागरयितुम्
शी	शयितुम् (सो, सोना, सोने)	शाययितुम्
याच्	याचितुम् (मांग, मांगना, मांगने)	याचयितुम्
मन्	मन्तुम् (मान, माननाा, मानने)	मानयितुम्

उदाहरण–कर्तुं शक्नोति (कर सकता है) कर्तुम् इच्छति (करना चाहता है) कर्तुं गच्छति (करने जाता है) कर्तुं जानाति (करना जानता है) कर्तुं ददाति)करने देता है) कर्तुं लगति (करने लगता है) इत्यादि।

क्त्वा–इस प्रत्यय का 'त्वा' शब्द शेष रहता है। यह प्रत्यय पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ में होता है। सामान्य धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय होता है। इस प्रत्यय द्वारा निर्मित शब्द अव्ययरूप में प्रयुक्त होता है। यथा–

बालकः विद्यालयं गत्वा पुस्तकं पठति।
बालक विद्यालय जाकर पुस्तक पढ़ता है।

बालिका पत्रं लिखित्वा प्रेषयति।
बालिका पत्र लिखकर भेजती है।

उपर्युक्त उदाहरणों में गत्वा, लिखित्वा क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द हैं।

ल्यप्–यह प्रत्यय भी पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ में होता है। इस प्रत्यय में 'य' शब्द शेष रहता है। जैसा कि सामान्य धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है परन्तु जब धातु से कोई उपसर्ग लग जाता है तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय हो जाता है। इस प्रत्यय द्वारा निर्मित शब्द अव्यय रूप में प्रयुक्त होते हैं। यथा–

बालकः गृहम् आगत्य भोजनं करोति।
बालक धर आकर भोजन करता है।

बालिका वस्त्रं प्रक्षाल्य शयनं करोति।
बालिका वस्त्र साफ कर सोती है।

इन उदाहरणों में आगत्य/प्रक्षाल्य ल्यप् प्रत्यायान्त शब्द हैं।

सामान्य रूप		प्रेरणार्थक रूप	
क्त्वा प्रत्यान्त रूप	ल्यप् प्रत्यान्त रूप	क्त्वा प्रत्यान्त रूप	ल्यप् प्रत्यान्त रूप
भूत्वा (होकर)	सम्भूय (मिलकर)	भावयित्वा	सम्भाव्य
कृत्वा (कर)	संस्कृत्य (साफ कर)	कारयित्वा	संस्कार्य
पठित्वा (पढ़कर)	सम्पठ्य (अच्छी तरह पढ़कर)	पाठयित्वा	सम्पाठ्य
वदित्वा (बोलकर)	अनूद्य (अनुवाद कर)	वादयित्वा	अनुवाद्य
गत्वा (जाकर)	आगत्य (आकर)	गमयित्वा	संगम्य
स्थित्वा (ठहरकर)	उत्थाय (उठकर)	स्थापयित्वा	उत्थाप्य
पीत्वा (पीकर)	निपीय (अच्छी तरह पीकर)	पाययित्वा	निपाय्य
दृष्ट्वा (देखकर)	सन्दृश्य (अच्छी तरह देखकर)	दर्शयित्वा	सन्दर्श्य
नीत्वा (लेजाकर)	आनीय (ले आकर)	नाययित्वा	आनाय्य
लिखित्वा (लिखकर)	उल्लिख्य (उल्लेख कर)	लेखयित्वा	आलेख्य
पृष्ट्वा (पूछकर)	आपृच्छ्य (अच्छी तरह पूछकर)	प्रच्छयित्वा	सम्प्रच्छ्य
कथयित्वा (कहकर)	संकथ्य (अच्छी तरह कहकर)	कथयित्वा	संकथाप्य
ज्ञात्वा (जानकर)	प्रतिज्ञाय (प्रतिज्ञा कर)	ज्ञापयित्वा	विज्ञाप्य
गृहीत्वा (लेकर)	संगृह्य (संग्रह कर)	ग्राहयित्वा	संग्राह्य
दत्वा (देकर)	आदाय (लेकर)	दापयित्वा	प्रदाप्य
श्रुत्वा (सुनकर)	प्रतिश्रुत्य (प्रतिज्ञा कर)	श्रावयित्वा	प्रतिश्राव्य
जागरित्वा (जानकर)	प्रजागर्य (जागकर)	जागरयित्वा	संजागर्य्य
शयित्वा (सोकर)	अतिशय्य (बढ़कर)	शाययित्वा	संशाय्य
याचित्वा (मांगकर)		याचयित्वा	संग्राच्य
मत्वा (मानकर)	अनुमत्य (अनुमोदन कर)	मानयित्वा	सम्मान्य

णमुल्–इस प्रत्यय में 'अम्' शब्द शेष रहता है। यह किसी क्रिया के बार-बार करने के अर्थ में होता है। इससे बने शब्द अव्यय होते है। यथा–

सः लेखं लेखं स्मरति।	वह लिख लिखकर स्मरण करता है।
सा स्मारं स्मारं हसति।	वह याद कर कर हँसती है।

उपर्युक्त उदाहरणों में लेखं लेखम्, स्मारं स्मारं णमुल् प्रत्ययान्त शब्द हैं।

भावं भावं	हो होकर	पाठं पाठम्	पढ़ पढ़कर
लेखं लेखम्	लिख लिख कर	गामं गामम्	जा-जा कर
स्थायं स्थायम्	रुक-रुक कर	पायं पायम्	पी-पीकर
गायं गायम्	गा-गाकर	श्रावं श्रावम्	सुन-सुनकर
प्रच्छं प्रच्छम्	पूछ-पूछकर	दर्शं दर्शम्	देख-देखकर
पाचं पाचम्	पका-पकाकर	खादं खादम्	खा-खाकर
घातं घातम्	मार-मारकर	धावं धावम्	दौड़-दौड़कर
शायं शायम्	सो-सोकर	हासं हासम्	हंस-हंसकर
स्मारं स्मारम्	याद कर कर	भ्रामं भ्रामम्	घूम-घूमकर
गर्जं गर्जम्	गरज-गरजकर	वर्षं वर्षम्	बरस-बरस कर

ऊपर "पढ़पढ़कर" आदि शब्दों के स्थान पर पढ़ते-पढ़ते, लिखते-लिखते, जाते-जाते आदि भी अर्थ होते हैं।

तव्यत्-इस प्रत्यय का 'तव्य' शब्द शेष रहता है। इसका प्रयोग चाहिये तथा योग्य अर्थ में होता है। यह सकर्मक धातु से कर्मवाच्य तथा अकर्मक धातु से भाववाच्य में होता है। इससे बने शब्दों का क्रिया तथा विशेषण के रूप में प्रयोग होता है। क्रिया होने पर केवल नपुंसकलिङ्ग के प्रथमा के एक वचन जैसा रूप होगा। पर विशेषण होने पर विशष्य के समान ही इनके लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन होगें। यथा-

क्रिया-मया गन्तव्यं-स्थातव्यम्।	मेरे द्वारा जाना चाहिए/रुकना चाहिये।
विशेषण-तेन ग्रन्थः पठितव्यः।	उसके द्वारा ग्रन्थ पढ़ा जाना चाहिये।
तेन भगवद्गीता पठितव्या।	उसके द्वारा भगवद्गीता पढ़ी जानी चाहिये।
तेन रामायणं पठितव्यम्।	उसके द्वारा रामायण पढ़ा जाना चाहिये।

इन उदाहरणों में गन्तव्यं/स्थातव्यम् आदि 'तव्यत्' प्रत्ययान्त शब्द है।

सामान्य रूप		**प्रेरणार्थ रूप**
धातु रूप	तव्यत् रूप	
भू	भवितव्य, होना चाहिये, होने योग्य	भावयितव्य

कृ	कर्तव्य, करना चाहिये, करने योग्य	कारयितव्य
पठ्	पठितव्य, पढ़ना चाहिये, पढ़ने योग्य	पाठयितव्य
वद्	वदितव्य, बोलना चाहिये, बोलने योग्य	वादयितव्य
गम्	गन्तव्य, जाना चाहिये, जाने योग्य	गमयितव्य
स्था	स्थातव्य, रहना चाहिये, रहने योग्य	स्थापयितव्य
पा	पातव्य, पीना चाहिये, पीने योग्य	पाययितव्य
दृश्	द्रष्टव्य, देखनाा चाहिये, देखने योग्य	दर्शयितव्य
नी	नेतव्य, ले जाना चाहिये, ले जाने	नाययितव्य
लिख्	लेखितव्य, लिखना चाहिये, लिखने योग्य	लेखयितव्य
प्रच्छ्	प्रष्टव्य,पूछना चाहिये, पूछने योग्य	प्रच्छयितव्य
कथ	कथयितव्य, कहना चाहिये, कहने योग्य	कथयितव्य
ज्ञा	ज्ञातव्य, जानना चाहिये, जानने योग्य	ज्ञापयितव्य
ग्रह	ग्रहीतव्य, लेना चाहिये, लेने योग्य	ग्राहयितव्य
दा	दातव्य, देना चाहिए, देने योग्य	दापयितव्य
श्रु	श्रोतव्य, सुनना चाहिये, सुनने योग्य	श्रावयितव्य
प्राप्	प्राप्तव्य, पाना चाहिये, पाने योग्य	प्रापयितव्य
जागृ	जागरितव्य, जागना चाहिये, जागने योग्य	जागरयितव्य
शी	शयितव्य, सोना चाहिये, सोने योग्य	शाययितव्य
याच्	याचितव्य, मांगना चाहिये, मागने योग्य	याचयितव्य
मन्	मन्तव्य, मानना चाहिये, मानने योग्य	मानयितव्य

क्रिया - त्वया, मया, भवता, सर्वैः-कर्त्तव्यम् गन्तव्यम्, चलितव्यम्, स्थातव्यम्।

विशेषण - पाठः कर्तव्यः, यात्रा कर्तव्या, भोजनं कर्तव्यम् इत्यादि।

अनीयर्-इस प्रत्यय का 'अनीय' शब्द शेष बचता है। इसका प्रयोग चाहिए तथा योग्य अर्थ में होता है। यह सकर्मक धातु से कर्मवाच्य तथा अकर्मक धातु से भाववाच्य में होता है। इससे बने शब्दों का क्रिया तथा विशेषण के रूप में प्रयोग होता है। क्रिया होने पर केवल नपुंसकलिङ्ग के प्रथमा एकवचन जैसा रूप होगा पर विशेषण होने पर विशेष्य के समान ही इनके लिंङ्ग, विभक्ति तथा वचन होंगे। यथा-

मया करणीयं/पठनीयं/वदनीयम् मेरे द्वारा करने योग्य/पढ़ने योग्य/बोलने योग्य।

तेन पाठः पठनीयः।	उसके द्वारा पाठ पढ़ा जाना चाहिये।
तेन यात्रा करणीया।	उसके द्वारा यात्रा किया जाना चाहिये।
तेन चित्रं दर्शनीयम्।	उसके द्वारा चित्र देखा जाना चाहिये।

ऊपर के उदाहरणों में /पठनीयः/ करणीया/दर्शनीयम् आदि अनीयर् प्रत्ययान्त शब्द है।

सामान्य रूप		**प्रेरणार्थक रूप**
धातु रूप	अनीयर् रूप	
भू	भवनीय, होना चाहिये, होने योग्य	भावनीय
कृ	करणीय, करना चाहिये, करने योग्य	कारणीय
पठ्	पठनीय, पढ़ना चाहिये, पढ़ने योग्य	पाठनीय
वद्	वदनीय, बोलना चाहिये, बोलने योग्य	वादनीय
गम्	गमनीय, जाना चाहिये, जाने योग्य	गमनीय
स्था	स्थानीय रहना चाहिये, रहने योग्य	स्थापनीय
पा	पानीय पीना चाहिये, पीने योग्य	पायनीय
दृश्	दर्शनीय, देखना चाहिये, देखने योग्य	दर्शनीय
नी	नयनीय, ले जाना चाहिये, ले जाने	नायनीय
लिख्	लेखनीय, लिखना चाहिये, लिखने योग्य	लेखनीय
प्रच्छ्	प्रश्नीय पूछना चाहिये, पूछने योग्य	प्रच्छनीय
कथ	कथनीय, कहना चाहिये, कहने योग्य	कथनीय
ज्ञा	ज्ञानीय जानना चाहिये, जानने योग्य	ज्ञापनीय
ग्रह	ग्रहणीय, लेना चाहिये, लेने योग्य	ग्राहणीय
दा	दानीय देना चाहिए, देने योग्य	दापनीय
श्रु	श्रवणीय, सुनना चाहिये, सुनने योग्य	श्रावणीय
प्राप्	प्रापणीय, पाना चाहिये, पाने योग्य	प्रापनीय
जाग्	जागरणीय जागना चाहिये, जागने योग्य	जागंरणीय
शी	शयनीय सोना चाहिये, सोने योग्य	शायनीय

याच्	याचनीय मांगना चाहिये, मागने योग्य	याचनीय
मन्	मननीय मानना चाहिये, मानने योग्य	माननीय

क्रिया - त्वया, मया, भवता, सर्वैः- करणीयः, गमनीयः, चलनीयः।

यत्- इस प्रत्यय का 'य' शब्द शेष बचता है। इसका प्रयोग भी चाहिये तथा योग्य अर्थ में होता है। तव्यत्। अनीयर् प्रत्यय सदृश स्थितियाँ इस प्रत्यय के साथ भी होती है। इसका प्रयोग अजन्त धातुओं से होता है। यथा-

तेन ग्रन्थः नेयः। उसके द्वारा ग्रन्थ ले जाना चाहिये।

तेन पुस्तिका नेया। उसके द्वारा पुस्तिका ले जानी चाहिये।

तेन पुस्तकं नेयम्। उसके द्वारा पुस्तक ले जाना चाहिये।

इसी प्रकार नेय, पेय, कार्य, ज्ञेय इत्यादि यत् प्रत्ययान्त शब्द हैं।

ण्यत्- इस प्रत्यय का भी 'य' शब्द शेष बचता है। इसका प्रयोग भी चाहिये तथा योग्य अर्थ में होता है। अन्य नियम तव्यत् अनीयर्वत् होते हैं। इसका प्रयोग हलन्त तथा ऋकारान्त धातुओं से होता है। यथा-

मया कृत्यं/गम्यं/कथ्यं।मेरे द्वारा करने योग्य/ जाने योग्य/कहने योग्य है।

तेन कार्यं कृत्यम्। उसके द्वारा कार्य करने योग्य है।

तेन वाटिका गम्या। उसके द्वारा वाटिका जाने योग्य है।

तेन विषयः कथ्यः। उसके द्वारा विषय कहने योग्य है।

उपर्युक्त उदाहरणों में कृत्य/गम्य/कथ्य आदि ण्यत् प्रत्ययान्त शब्द हैं।

धातु रूप	**सामान्य रूप**	**ण्यत्/यत् प्रत्ययान्त रूप**
भू	भाव्य,	होना चाहिये, होने योग्य
कृ	कार्य, कृत्य	करना चाहिये, करने योग्य
पठ्	पाठ्य,	पढ़ना चाहिये, पढ़ने योग्या
गम्	गम्य	जाना चाहिये, जाने योग्य
स्था	स्थेय	रहना चाहिये, रहने योग्य
पा	पेय	पीना चाहिये, पीने योग्य
दृश्	दृश्य	देखनाा चाहिये, देखने योग्य
नी	नेय	ले जाना चाहिये, ले जाने

लिख्	लेख्य	लिखना चाहिये, लिखने योग्य
कथ	कथ्य	कहना चाहिये, कहने योग्य
ज्ञा	ज्ञेय	जानना चाहिये, जानने योग्य
ग्रह	ग्राह्य	लेना चाहिये, लेने योग्य
दा	देय	देना चाहिए, देने योग्य
श्रु	श्रव्य	सुनना चाहिये, सुनने योग्य
प्राप्	प्राप्य	पाना चाहिये, पाने योग्य

क्त-इस प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल के अर्थ में होता है। इस प्रत्यय का 'त' शब्द शेष रहता है। क्त प्रत्यय का प्रयोग कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में होता है। किन्तु गम्, प्राप्, श्लिष्, शी, स्था, वस्, जन्, सह् आदि धातुओं से कर्तृवाच्य में क्त प्रत्यय होता है। इस प्रत्यय से बने शब्दों का क्रिया तथा विशेषण के रूप में प्रयोग होता है। विशेषण होने पर विशेष्य के समान लिङ्ग विभक्ति तथा वचन होंगे। यथा-

तेन कार्यं कृतम्।	उसके द्वारा कार्य किया गया।
सः गतः।	वह गया।
मया विषयः श्रुतः।	मेरे द्वारा विषय सुना गया।
सा प्राप्ता।	वह पहुँची।

उपर्युक्त उदाहरण में कृत/गत/श्रुत आदि क्त प्रत्ययान्त शब्द हैं।

सामान्य रूप	**क्त प्रत्ययान्त रूप**	**प्रेरणार्थक रूप**
भूत	हुआ गया	भावित
कृत	किया गया	कारित
पठित	पढ़ा गया	पाठित
उदित	बोला गया	वादित
गत	जाया गया	गमित
स्थित	ठहरा गया	स्थापित
पीत	पीया गया	पायित
दृष्ट	देखा गया	दर्शित
नीत	ले जाया गया	नायित
लिखित	लिखा गया	लेखित

पृष्ट	पूछा गया	प्रच्छित
कथित	बहा गया	कथित
ज्ञात	जाना गया	ज्ञापित
गृहीत	लिया गया	ग्राहित
दत्त	दिय गया	दापित
श्रुत	सुना गया	श्रावित
प्राप्त	पाया गया	प्रापित
जागृत	जाग गया	जागरित
शयित	सोया गया	शायित
याचित	मांगा गया	याचित
मत	माना गया	मानित

क्त-पुंल्लिङ्ग -	कृत:	कृतौ	कृता:।
स्त्रीलिंङ्ग -	कृता	कृते	कृता:।
नपुंसकलिंङ्ग -	कृतं	कृते	कृतानि।

क्तवतु-इस प्रत्यय का 'तवत्' शब्द शेष रहता है। यह भी भूतकाल के अर्थ में प्रयुक्त होता है। क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग कर्तृवाच्य में होता है। इस प्रत्यय से बने शब्द का क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयोग होता है। विशेषण होने पर विशेष्य के समान लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन होते हैं। यथा-

बालकः गतवान्।	बालक गया।
बालिका गतवती।	बालिका गयी।
यानं गतवत्।	गाड़ी गयी।

इसी प्रकार भूतवत्, कृतवत्, पठितवत्, गतवत् पीतवत् इत्यादि क्तवतु प्रत्ययान्त शब्द हैं।

सामान्य रूप	तवत् प्रत्ययान्त रूप	प्रेरणार्थक रूप
भूतवत्	हुआ	भावितवत्
कृतवत्	किया	कारितवत्
पठितवत्	पढ़ा	पाठितवत्

उदितवत्	बोला	वादितवत्
गतवत्	गया	गामितवत्
स्थितवत्	रहा, ठहरा	स्थापितवत्
पीतवत्	पीआ	पायितवत्
दृष्टवत्	देखा	दर्शितवत्
नीतवत्	ले गया	नायितवत्
लिखितवत्	लिखा	लेखितवत्
पृष्टवत्	पूछा	प्रच्छितवत्
कथितवत्	कहा	कथितवत्
ज्ञातवत्	जाना	ज्ञापितवत्
गृहीतवत्	लिया	ग्रहितवत्
दत्तवत्	दिया	दापितवत्
श्रुतवत्	सुना	श्रावितवत्
प्राप्तवत्	पाया	प्रापितवत्
जागृतवत्	जागा	जागरितवत्
शयितवत्	सोया	शायितवत्
याचितवत्	मांगा	याचितवत्
मतवत्	माना	मानितवत्

तवत्-पुंल्लिङ्ग -	कृतवान्	कृतवन्तौ	कृतवन्तः
स्त्रीलिंङ्ग -	कृतवती	कृतवत्यौ	कृतवत्यः
नपुंसकलिंङ्ग -	कृतवत्	कृतवती	कृतवन्ति।

शतृ-शानच् प्रत्यय-

शतृ प्रत्यय का 'अत्' शब्द शेष रहता है। इस प्रत्यय का प्रयोग वर्तमान काल के अर्थ में होता है तथा इससे बने शब्द विशेषण रूप में प्रयुक्त होते है। शतृ प्रत्यय का प्रयोग परस्मैपदी तथा उभयपदी धातुओं के साथ किया जाता है। **शानच्**-प्रत्यय भी

वर्तमान काल के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इस प्रत्यय का 'आन' शब्द शेष रहता है। इस प्रत्यय से निर्मित शब्द विशेषण रूप में प्रयुक्त होता है। आत्मनेपदी तथा उभयपदी धातुओं से शानच् प्रत्यय होता है। यथा –

सः पाठं पठन् गच्छति। वह पाठ पढ़ता हुआ जा रहा है।

सा पाठं पठन्ती गच्छति। वह पाठ पढ़ती हुई जा रही है।

यानं गच्छत् अस्ति। यान जा रहा है।

इसी प्रकार पठत् / लिखत् / भवत् इत्यादि शतृ प्रत्यान्त शब्द हैं।

सः याचमानः गच्छति। वह माँगता हुआ जाता है।

ते याचमन्तः गच्छन्ति। वे माँगते हुए जाते हैं।

'शानच् वर्तमान काल के अर्थ में सामान्य क्रिया से कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में शानच् प्रत्यय। विशेषण के रूप में तीनों लिङ्गों में प्रयोग होता है। यथा–

तेन कार्यं क्रियमाणम् अस्ति। उसके द्वारा कार्य किया जा रहा है।

तया पाठः पठ्यमानः। उसके द्वारा पाठ पढ़ा जा रहा है।

तेन गीतं श्रूयमाणम्। उसके द्वारा गीत सुना जा रहा है।

वर्तमान काल के अर्थ में प्रेरणार्थक क्रिया के कर्मवाच्य में शानच् प्रत्यय। विशेषण के रूप में तीनों लिङ्गो में प्रयोग होता है। यथा –

तेन बालकः पाठ्यमान अस्ति।
उसके द्वारा बालक पढ़ाया जा रहा है।

तया सह बालिका गम्यमाना अस्ति।
उसके द्वारा बालिका के साथ जाया जा रहा है।

तेन गीतं श्राव्यमाणम् अस्ति।
उसके द्वारा गीत सुनाया जा रहा है।

उपर्युक्त उदाहरणों में पाठ्यमान / गम्यमान / श्राव्यमाण / कार्य्यमाण / लेख्यमान इत्यादि प्रेरणार्थक शानच् प्रत्ययान्त शब्द है। इसी प्रकार याचमान / शयान / मन्यमान आदि शानच् प्रत्ययान्त शब्द हैं।

सामान्य रूप		प्रेरणार्थक रूप
भवत्	होता हुआ	भावयत्
कुर्वत्, कुर्वाण	करता हुआ	कारयत्

पठत्	पढ़ता हुआ	पाठयत्
वदत्	बोलता हुआा	वादयत्
गच्छत्	जाता हुआ	गमयत्
तिष्ठत्	ठहरता हुआ	स्थापयत्
पिबत्	पीता हुआ	पाययत्
पश्यत्	देखता हुआ	दर्शयत्
नयत्	ले जाता हुआ	नाययत्
लिखत्	लिखता हुआ	लेखयत्
पृच्छत्	पूछता हुआ	प्रच्छयत्
कथयत्	कहता हुआ	कथयत्
जानत्, जानान,	जानता हुआ	ज्ञापयत्
गृह्णत् गृह्णान	लेता हुआ	ग्राहयत्
ददत्, ददान	देता हुआ	दापयत्
श्रृण्वत्	सुनता हुआ	श्रावयत्
प्राप्नुवत्	पाता हुआ	प्रापयत्
जाग्रत्	जागता हुआ	जागरयत
शयान	सोता हुआ	शाययत्
याचमान	मांगता हुआ	याचयत्
मन्यमान	मानता हुआ	मानयत्
पुंल्लिङ्ग -कुर्वन,	कुर्वन्तौ,	कुर्वन्तः
स्त्रीलिंङ्ग-कुर्वती	कुर्वत्यौ	कुर्वत्यः

स्यतृ-स्यमान प्रत्यय

स्यतृ प्रत्यय भविष्यत् काल के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इससे बने शब्दों का विशेषण रूप में प्रयोग होता है। स्यतृ प्रत्यय परस्मैपदी तथा उभयपदी धातुओं के साथ प्रयुक्त किये जाते है। **स्यमान** प्रत्यय भी भविष्यत् काल के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इससे बने शब्द विशेषण रूप में प्रयोग किये जाते है। स्यमान प्रत्यय आत्मनेपदी तथा उभयपदी धातुओं के साथ प्रयुक्त होते है। यथा-

सः कार्यं करिष्यन् गमिष्यति। वह कार्य करता हुआ जायेगा।

सा कार्यं करिष्यन्ती गमिष्यति। वह कार्य करती हुई जायेगी।

यानं गमिष्यत् स्यात्। गाड़ी जाती होगी।

इसी प्रकार गमिष्यत् / करिष्यत् / नेष्यत् / पास्यत् इत्यादि स्यतृ प्रत्ययान्त शब्द होते है।

सः शयिष्यमाणः भविष्यति। वह सोने वाला होगा।

सः याचिष्यमाणः भविष्यति। वह माँगने वाला होगा।

सा याचिष्यमाणा भविष्यति। वह माँगने वाली होगी।

'स्यमान - भविष्यत् काल के अर्थ में सामान्य क्रिया से कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में स्यमान प्रत्यय होता है। यह विशेषण के रूप में तीनों लिङ्गों में प्रयोग होता है। यथा-

तेन कार्यं करिष्यमाणम् भविष्यति।
उसके द्वारा कार्य किया जाने वाला होगा।

तया पाठः पठिष्यमाणः भविष्यति।
उसके द्वारा पाठ पढ़ा जाने वाला होगा।

बालकेन पुस्तकं दास्यमानं भविष्यति।
बालक द्वारा पुस्तक दिया जाने वाला होगा।

भविष्यत् काल के अर्थ में प्रेरणार्थक क्रिया से कर्म वाच्य में स्यमान प्रत्यय होता है।

तेन बालकः जागरयिष्यमाणः भविष्यति।
उसके द्वारा बालक जगाया जाने वाला होगा।

तया पाठः पाठयिष्यमाणः भविष्यति।
उसके द्वारा पाठ पढ़ाया जाने वाला होगा।

तेन चित्रं दर्शयिष्यमाणम् भविष्यति।
उसके द्वारा चित्र दिखाया जाने वाला होगा।,

उपर्युक्त उदाहरणों में/जागरयिष्यमाण/पाठयिष्यमाण इत्यादि प्रेरणार्थक स्यमान प्रत्ययान्त शब्द है।

सामान्य रूप		**प्रेरणार्थक रूप**
भविष्यत्	होने वाला	भावयिष्यत्
करिष्यत्	करने वाला	कारयिष्यत्

पठिष्यत्	पढ़ने वाला	पाठयिष्यत्
वदिष्यत्	बोलने वाला	वादयिष्यत्
गमिष्यत्	जाने वाला	गमयिष्यत्
स्थास्यत्	रहने वाला	स्थापयिष्यत्
पास्यत्	पीने वाला	पाययिष्यत्
द्रक्ष्यत्	देखने वाला	दर्शयिष्यत्
नेष्यत्	ले जाने वाला	नाययिष्यत्
लेखिष्यत्	लिखने वाला	लेखयिष्यत्
प्रक्ष्यत्	पूछने वाला	प्रच्छयिष्यत्
कथयिष्यत्	कहने वाला	कथयिष्यत्
ज्ञास्यत्	जानने वाला	ज्ञापयिष्यत्
ग्रहीष्यत्	लेने वाला	ग्राहयिष्यत्
दास्यत्	देने वाला	दापयिष्यत्
श्रोष्यत्	सुनने वाला	श्रावयिष्यत्
प्राप्स्यत्	पाने वाला	प्रापयिष्यत्
जागरिष्यत्	जागने वाला	जागरयिष्यत्
शयिष्यमाण	सोने वालाा	शाययिष्यत्
याचिष्यमाण	मांगने वाला	याचयिष्यत्
मनस्यमान	मानने वाला	मानयिष्यत्
पुल्लिंङ्ग -करिष्यन्	करिष्यन्तौ	करिष्यन्तः
स्त्रीलिंङ्ग -करिष्यन्ती	करिष्यन्त्यौ	करिष्यन्त्यः

नोटः ये शब्द विशेषण, तथा संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

ण्वुल्, तृच् एवं णिनि प्रत्यय

ण्वुल् प्रत्यय का 'अक' शब्द प्रक्रिया से शेष रहता है। इस प्रत्यय से बने शब्द संज्ञा तथा विशेषण के रूप में प्रयोग किये जाते हैं। विशेषण होने पर इनके तीनों लिङ्गों में रूप चलते है। **तृच्** प्रत्यय का 'तृ' शब्द शेष रहता है। इससे बने शब्दों का प्रयोग संज्ञा तथा विशेषण के रूप में होता है। **णिनि** प्रत्यय का 'इन्' शब्द शेष रहता है।

इससे बने शब्दों का प्रयोग संज्ञा तथा विशेषण के रूप में होता है। – उदाहरण क्रमशः इस प्रकार है।

सः पाठकः अस्ति।	वह पाठक है।
सा नायिका अस्ति।	वह नायिका है।
सः ग्राहकः अस्ति।	वह ग्राहक है।
सा लेखिका अस्ति।	वह लेखिका है।

उपर्युक्त उदाहरणों में पाठक, नायिका, ग्राहक, लेखिका आदि ण्वुल् प्रत्ययान्त शब्द हैं।

पठिता (पठितृ) बालकः गच्छति।	पढ़ने वाला बालक जाता है।
पठितारः बालकाः गच्छन्ति।	पढ़ने वाले बालक जाते हैं।
पठित्री बालका गच्छति।	पढ़ने वाली बालिका जाती है।
पठित्र्यः बालिकाः गच्छन्ति।	पढ़ने वाली बालिकायें जाती है।

इसी प्रकार पठितृ। भवितृ / वदितृ / गन्तृ / नेतृ इत्यादि तृच् प्रत्ययान्त शब्द हैं।

पाठी (पाठिन्) बालकः गच्छति।	पढ़ने वाला बालक जाता है।
पाठिनः बालकाः गच्छन्ति।	पढ़ने वाले बालक जाते हैं।
पाठिनी बालिका गच्छति।	पढ़ने वाली बालिका जाती है।
पाठिन्यः बालिकाः गच्छन्ति।	पढ़ने वाली बालिकाये जाती हैं।

इसी प्रकार पाठिन्/भाविन्/वादिन्/गामिन् इत्यादि णिनि प्रत्ययान्त शब्द होते हैं।

सामान्य रूप		**प्रेरणार्थक रूप**
भावक भवितृ, भाविन्	होने वाला	भावयितृ
कारक, कर्तृ,, कारिन्	करने वाला	कारयितृ
पाठक, पठितृ, पाठिन्	पढ़ने वाला	पाठयितृ
वादक वदितृ, वादिन्	बोलने वाला	वादयितृ
गन्तृ, गामिन्	जाने वाला	गमयितृ
स्थातृ, स्थायिन्	रहने वाला	स्थापयितृ
पातृ, पायिन्	पीने वाला	पाययितृ
दर्शक, द्रष्ट, दर्शिन्	देखने वाला	दर्शयितृ

नायक, नेतृ,	ले जाने वाला	नाययितृ
लेखक,	लिखने वाला	लेखयितृ
प्रच्छक, प्रष्ट	पूछने वाला	प्रच्छयितृ
कथयितृ	कहने वाला	कथयितृ
ज्ञातृ	जानने वाला	ज्ञापयितृ
ग्राहक, ग्रहीतृ, ग्राहिन्	लेने वाला	ग्राहयितृ
दायक, दातृ, दायिन्	देने वाला	दापयितृ
श्रोतृ	सुनने वाला	श्रावयितृ
प्रापक, प्राप्तृ, प्रापिन्	पाने वाला	प्रापयितृ
जागरक, जागरितृ, जागरिन्	जागने वाला	जागरयितृ
शायक, शयितृ, शायिन्	सोने वालाा	शाययितृ
याचक, याचित्	मांगने वाला	याचयितृ
मन्तृ	मानने वाला	मानयितृ
पुल्लिङ्ग - पाठकः	पाठकौ	पाठकाः
स्त्रीलिंङ्ग -पाठिका	पाठिके	पाठिकाः:
पुल्लिङ्ग-पठिता	पठितारौ	पठितारः
स्त्रीलिंङ्ग-पठित्री	पठित्र्यौ	पठित्र्यः
पुंल्लिङ्ग-पाठी	पाठिनौ	पाठिनः
स्त्रीलिंङ्ग-पाठिनी	पाठिन्यौ	पाठिन्यः

ल्युट्, क्तिन् प्रत्यय

ल्युट् प्रत्यय का 'अन' शब्द शेष रहता है। ल्युट् प्रत्यय से बने शब्द नपुंसकलिङ्ग शब्द होते है। **क्तिन्** प्रत्यय का 'ति' शब्द शेष रहता है। क्तिन् प्रत्यय से बने शब्द स्त्रीलिङ्ग संज्ञक होते है।

अद्य मम गमनम् अस्ति। आज मुझे जाना है।

इसी प्रकार भवन/करण/पठन/वदन/गमन/ आदि ल्युट् प्रत्ययान्त शब्द हैं।

कृतिः अस्ति। कृति (रचना) है।

दृष्टिः गच्छति। दृष्ट जाती है।

इसी प्रकार भूति/कृति/गति/स्थिति/पीति/नीति/श्रुति/संस्कृति/मति आदि क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द है।

सामान्य रूप

ल्युट् प्रत्यय	क्तिन् प्रत्यय	अर्थ
भवन्	भूति	होना
करण	कृति	करना
पठन		पढ़ना
वदन		बोलना
गमन	गति	जाना
स्थान	स्थिति	रहना
पान	पीति	पीना
दर्शन	दृष्टि	देखना
नयन	नीति	ले जाना
लेखन		लिखना
प्रश्न (पुं)		पूछना
कथन		कहना
ज्ञान		समझना
ग्रहण		लेना
दान		देना
श्रवण	श्रुति	सुनना
प्रापण	प्राप्ति	पाना
जागरण	जागृति	जागना
शयन		सोना
याचन		मांगना
मनन	मति	मानना

तसिल् प्रत्यय का 'तः' शब्द शेष रहता है। इस प्रत्यय का प्रयोग प्रातिपदिक शब्द के साथ किया जाता है। इस प्रत्यय से पञ्चमी विभक्ति का बोध होता है। यथा –

बालकः गृहतः गच्छति। बालक धर से जाता है।

शिक्षकः पुस्तकालयतः आगच्छति। शिक्षक पुस्तकालय से आता है।

बालिका वाटिकातः आगच्छति। बालिका वाटिका से आती है।

उपर्युक्त उदाहरणों में गृहतः/पुस्तकालयतः/वाटिकातः तसिल् प्रत्यायान्त शब्द हैं। जैसा कि स्त्रीलिङ्ग शब्द रूप में पञ्चमी तथा षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप समान होता है वहाँ स्पष्ट भेद ज्ञापन में यह प्रत्यय महत्वपूर्ण कार्य करता है।

पञ्चम : अध्याय

लकारों का ज्ञान व क्रिया पदों का प्रयोग

क्रिया (व्यवसाय) का बोध कराने वाले पद क्रिया पद कहलाते है। यथा-बालकः पठति।

यहाँ पठति पद क्रिया पद हैं। किस काल में कौन सी क्रिया घटित हुई इसका ज्ञान संस्कृत में लकारों द्वारा होता है। वैसे तो संस्कृत में दश लकार है परन्तु सर्वाधिक प्रचलित पाँच लकारों का प्रयोग होता है -

1. लट् लकार (वर्तमान काल)
2. लङ् लकार (भूत काल)
3. लृट् लकार (भविष्यत् काल)
4. लोट् लकार (आज्ञा)
5. विधिलिङ् लकार। (चाहिये)

1. लट् लकार-वर्तमान काल क्रिया के सतत चलने को बताता है कब क्रिया का प्रारम्भ हुआ अथवा अन्त होगा इससे इसका सम्बन्ध नहीं है। आगे प्रथम पुरुष तथा उत्तम पुरुष के उदाहरण दिये जा रहे है। मध्यम पुरुष के स्थान पर भवान् (पुंल्लिङ्ग) भवती (स्त्रीलिङ्ग) शब्द का प्रयोग करें। यथा -

बालकः गच्छति।	बालक जाता है।
बालकौ गच्छतः।	दो बालक जाते हैं।
बालकाः गच्छन्ति।	बालक जाते हैं।
अहं गच्छामि।	मैं जाता हूँ।
आवां गच्छावः।	हम दोनों जाते हैं।
वयं गच्छामः।	हम सब जाते हैं।
बालकः ग्रन्थं पठति।	बालक ग्रन्थ पढ़ता है।
बालकौ ग्रन्थं पठतः।	दो बालक ग्रन्थ पढ़ते हैं।
बालकाः ग्रन्थं पठन्ति।	बालक ग्रन्थ पढ़ते हैं।
अहं ग्रन्थं पठामि।	मैं ग्रन्थ पढ़ता हूँ।
आवां ग्रन्थं पठावः।	हम दोनों ग्रन्थ पढ़ते हैं।
वयं ग्रन्थं पठामः।	हम सब ग्रन्थ पढ़ते हैं।

शिक्षकः सुधाखण्डेन लिखति।	शिक्षक चाक से लिखता है।
शिक्षकौ सुधाखण्डेन लिखतः।	दो शिक्षक चाक से लिखते हैं।
शिक्षकाः सुधाखण्डेन लिखन्ति।	शिक्षक चाक से लिखते हैं।
अहं सुधाखण्डेन लिखामि।	मैं चाक से लिखता हूँ।
आवां सुधाखण्डेन लिखावः।	हम दो चाक से लिखते हैं।
वयं सुधाखण्डेन लिखामः।	हम सब चाक से लिखते हैं।
छात्रः निर्धनाय धनं ददाति।	छात्र निर्धन को धन देता है।
छात्रौ निर्धनाय धनं ददतः।	दो छात्र निर्धन को धन देते हैं।
छात्राः निर्धनाय धनं ददति।	सब छात्र निर्धन को धन देते हैं।
अहं निर्धनाय धनं ददामि।	मैं निर्धन को धन देता हूँ।
आवां निर्धनाय धनं दद्वः।	हम दोनों निर्धन को धन देते हैं।
वयं निर्धनाय धनं दद्मः।	हम सब निर्धन को धन देते हैं।

बालिका पुस्तकालयात् पुस्तकं स्वीकरोति।
बालिका पुस्तकालय से पुस्तक लेती है।

बालिके पुस्तकालयात् पुस्तकं स्वीकुरुतः।
दो बालिकायें पुस्तकालय से पुस्तक लेती हैं।

बालिकाः पुस्तकालयात् पुस्तकं स्वीकुर्वन्ति।
सब बालिकायें पुस्तकालय से पुस्तक लेती हैं।

अहं पुस्तकालयात् पुस्तकं स्वीकरोमि।
मैं पुस्तकालय से पुस्तक लेता हूँ।

आवां पुस्तकालयात् पुस्तकं स्वीकुर्वः।
हम दोनों पुस्तकालय से पुस्तक लेते हैं।

वयं पुस्तकालयात् पुस्तकं स्वीकुर्मः।
हम सब पुस्तकालय से पुस्तक लेते हैं।

भवान् बालकस्य नाम जानाति।
आप बालक का नाम जानते हैं।

भवन्तौ बालकस्य नाम जानीतः।
आप दोनों बालक का नाम जानते हैं।

भवन्तः बालकस्य नाम जानन्ति।
आप सब बालक का नाम जानते हैं।

अहं बालकस्य नाम जानामि।
मैं बालक का नाम जानता हूँ।

आवां बालकस्य नाम जानीवः।
हम दोनों बालक का नाम जानते हैं।

वयं बालकस्य नाम जानीमः।
हम सब बालक का नाम जानते हैं।

सः भगवति रामे आसक्तिरतः अस्ति।
वह भगवान राम में आसक्तिरत है।

तौ भगवति रामे आसक्तिरतौ स्तः।
वे दोनों भगवान राम में आसक्तिरत हैं।

ते भगवति रामे आसक्तिरताः सन्ति।
वे सब भगवान राम में आसक्तिरत हैं।

अहं भगवति रामे आसक्तिरतः अस्मि।
मैं भगवान राम में आसक्तिरत हूँ।

आवां भगवति रामें आसक्तिरतौ स्वः।
हम दोनों भगवान राम में आसक्तिरत हैं।

वयं भगवति रामे असक्तिरताः स्मः।
हम सब भगवान राम में आसक्तिरत हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों में वर्तमानकालिक क्रिया पदों का प्रयोग हुआ है। प्रायशः इस लकार के प्रथम पुरुष के अन्त में ति, तः, न्ति तथा उत्तम पुरुष के अन्त मि, वः, मः सुनायी पड़ता है।

दशरथः नृपः आसीत्।	दशरथ राजा थे।
कृष्णरामौ द्वौ भ्रातरौ आस्ताम्।	कृष्ण राम दो भाई थे।
रामः चत्वारः भ्रातरः आसन्।	राम चार भाई थे।
अहं बालकः आसम्।	मै बालक था।
आवां बालकौ आस्व।	हम दोनों बालक थे।
वयं बालकाः आस्म।	हम सब बालक थे।

2. **लङ् लकार**-यह भूतकालिक क्रिया है। इस काल में क्रिया के समाप्त हो जाने की सूचना होती है। यथा - **सः अगच्छत्।** वह गया।

यहाँ जाने की क्रिया पूर्ण हो चुकी है। अगच्छत् पद भूतकालिक क्रिया पद है। प्रायशः इस लकार के प्रथम पुरुष के अन्त में अत्, आम्, अन् तथा उत्तम पुरुष के अन्त में अम्, आव, आम आता है। यथा -

बालकः अपठत्।	बालक ने पढ़ा।
बालकौ अपठताम्।	दो बालको ने पढ़ा।
बालकाः अपठन्।	सब बालको ने पढ़ा।
अहम् अपठम्।	मैनें पढ़ा।
आवाम् अपठाव।	हम दोनों ने पढ़ा।
वयम् अपठाम।	हम सब ने पढ़ा।

इन उदाहरणों में भूतकालिक क्रिया का प्रयोग हुआ है। सहजता व सरलता की दृष्टि से भूतकालिक क्रिया का बोध कराने के लिये 'क्तवतु' प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है। यथा -

बालकः गतवान्।	बालक गया।
बालकौ गतवन्तौ।	दो बालक गये।
बालकाः गतवन्तः।	बालक गये।
बालिका गतवती।	बालिका गयी।
बालिके गतवत्यौ।	दो बालिकायें गयी।
बालिकाः गतवत्यः।	सब बालिकायें गयी।

ऊपर तिङन्त लङ्लकार में लिङ्ग भेद नहीं था परन्तु 'क्तवतु' प्रत्यय लिङ्गाश्रित होता है। पुंल्लिङ्ग में भवान् सदृश रूप चलते है स्त्रीलिंग में भवती सदृश तथा नपुंसकलिङ्ग में जगत् सदृश रूप चलते है। सम्भाषण में 'क्तवतु' प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग सहजता से किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त लट्लकार के क्रिया पद के आगे **स्म** जोड़ने से क्रिया भूतकाल का द्योतक हो जाती है। जैसे-**रामः पुस्तकं पठति**-राम पुस्तक पढ़ता है। वहीं **रामः पुस्तकं पठति स्म** इसका अर्थ 'राम पुस्तक पढ़ता था' है।

3. **लृट् लकार** यह भविष्यत्कालिक लकार है। भविष्य में होने वाली क्रिया का ज्ञान लृट् लकार द्वारा होता है। प्रायशः इस प्रकार के प्रथम पुरुष के अन्त में ष्यति,

ष्यतः, ष्यन्ति तथा उत्तम पुरुष के अन्त में ष्यामि, ष्यावः, ष्यामः शब्द प्रयुक्त होते है। यथा – **बालकः गमिष्यति।** बालक जायेगा।

इस वाक्य में गमिष्यति लृट् लकार का क्रियापद हैं। अन्य उदाहरण–

भवान् देहलीं गमिष्यति। आप दिल्ली जायेगें।

भवन्तौ देहलीं गमिष्यतः। आप दोनों दिल्ली जायेगें।

भवन्तः देहलीं गमिष्यन्ति। आप सब दिल्ली जायेगें।

अहं कर्णपुरं गमिष्यामि। मैं कानपुर जाऊँगा।

आवां कर्णपुरं गमिष्यावः। हम दोनों कानपुर जायेगें।

वयं कर्णपुरं गमिष्यामः हम सब कानपुर जायेगें।

भवती चलचित्रं द्रक्ष्यति। आप चलचित्र (सिनेमा) देखेगीं।

भवत्यौ चलचित्रं द्रक्ष्यतः। आप दोनों चलचित्र देखेंगीं।

भवत्यः चलचित्रं द्रक्ष्यन्ति। आप सब चलचित्र देखेगीं।

अहं चलचित्रं द्रक्ष्यामि। मैं चलचित्र देखूँगा।

आवां चलचित्रं द्रक्ष्यावः। हम दोनों चलचित्र देखेगें।

वयं चलचित्रं द्रक्ष्यामः। हम सब चलचित्र देखेगें।

सः चषकेन दुग्धं पास्यति। वह गिलास से दूध पीयेगा।

तौ चषकेन दुग्धं पास्यतः। वे दोनों गिलास से दूध पीयेगें।

ते चषकेन दुग्धं पास्यन्ति। वे सब गिलास से दूध पीयेगें।

अहं चषकेन दुग्धं पास्यामि। मैं गिलास से दूध पीयूगाँ।

आवां चषकेन दुग्धं पास्यावः। हम दोनों गिलास से दूध पीयेगें।

वयं चषकेन दुग्धं पास्यामः। हम सब गिलास से दूध पीयेगें।

अहम् अग्रिममासे परीक्षां दास्यामि। मैं अगले माह परीक्षा दूँगा।

आवाम् अग्रिममासे परीक्षां दास्यावः। हम दोनों अगले माह परीक्षा देगें।

वयम् अग्रिममासे परीक्षां दास्यामः। हम सब अगले माह परीक्षा देगें।

4. **लोट् लकार (आज्ञा अर्थ)** प्रस्तुत लकार का प्रयोग आज्ञार्थक वाक्यों के निर्माण में होता है। यथा-**बालकः विद्यालयं गच्छतु।** बालक विद्यालय जाओ।

इस वाक्य में बालक को विद्यालय जाने की आज्ञा दी जा रही है अतः लोट् लकारयुक्त गच्छतु शब्द को प्रयोग किया गया हैं प्रायशः इस प्रकार लकार के प्रथम

पुरुष के अन्त में अतु, अताम्, अन्तु तथा उत्तम पुरुष के अन्त में आनि, आव, आम शब्द आते है। यथा –

भवान् सत्यवाक्यं वदतु।	आप सत्यवाक्य बोलिए।
भवन्तौ सत्यवाक्यं वदताम्।	आप दोनों सत्यवाक्य बोलों।
भवन्तः सत्यवाक्यं वदन्तु।	आप सब सत्यवाक्य बोलों।
अहं सत्यवाक्यं वदानि।	मैं सत्यवाक्य बोलूँ।
आवां सत्यवाक्यं वदाव।	हम दोनों सत्यवाक्य बोलें।
वयं सत्यवाक्यं वदाम।	हम सब सत्यवाक्य बोलें।

जलम् आनयतु।	पानी लाओ।	**धनं स्वीकरोतु।**	धन लो।
कार्यं करोतु।	कार्य करो।	**रमेशः न गच्छतु।**	रमेश न जाओ।
वनं गच्छतु।	वन जाओ।	**उमेशः न पठतु।**	उमेश न पढ़ो।
चित्रं पश्यतु।	चित्र देखो।	**दिनेशः न पिबतु।**	दिनेश न पीओ।
परीक्षां ददातु।	परीक्षा दो।	**सतीशः न खादतु।**	सतीश खाओ।
पुस्तकं क्रीणातु।	पुस्तक खरीदो।	**राकेशः तिष्ठतु।**	राकेश रुको।

इन उदाहरणों में लोट् लकार युक्त वाक्य हैं।

आत्मनेपदि लोटकार प्रयोग-

विधिलिङ् (चाहिए अर्थ में)-इस लकार का प्रयोग चाहिए अर्थ में किया जाता है। यथा –

बालकः मार्गं पश्येत्।	बालक को मार्ग देखना चाहिये।
भवान् भगवद्गीतां पठेत्।	आपको भगद्गीता पढ़नी चाहिये।

इन वाक्यों मे पश्येत्, पठेत् विधिलिङ् शब्द है। प्रायशः इस लकार के प्रथम पुरुष के अंत में एत्, एताम्, एयुः तथा उत्तम पुरुष के अंत में एयम्, एव, एम शब्द आते हैं यथा –

बालकः सत्यं वदेत्।	बालक को सत्य बोलना चाहिये।
बालकौ सत्यं वदेताम्।	दोनों बालकों को सत्य बोलना चाहिये।
बालकाः सत्यं वदेयुः।	बालकों को सत्य बोलना चाहिये।
अहं सत्यं वदेयम्।	मुझे सत्य बोलना चाहिये।

आवां सत्यं वदेव। हम दोनों को सत्य बोलना चाहिये।

वयं सत्यं वदेम। हमें सत्य बोलना चाहिए।

उपर्युक्त उदाहरणों में विधिलिङ्ग वाक्य हैं। चाहिए अर्थ में इसके अलावा तव्यत् अनीयर प्रत्यय को प्रयोग किया जा सकता है। सम्भाषण में इन प्रत्ययों के प्रयोग से सहजता तथा सरलता आ जाती है। तव्यत् अनीयर प्रत्यय के प्रयोग में कर्मवाच्य होता है कर्ता तृतीया विभक्ति में होता है। तव्यत् अनीयर, प्रत्यय युक्त क्रिया कर्मानुसारी होती है। यथा–

तेन ग्रन्थः पठितव्यः। उनके द्वारा ग्रन्थ पढ़ा जाना चाहिये।

तेन ग्रन्थाः पठितव्याः। उनके द्वारा ग्रन्थ पढ़े जाने चाहिये।

तेन भगवद्गीता पठितव्या। उनके द्वारा भगवद्गीतापढ़ी जानी चाहिये।

तेन कविताः पठितव्याः। उनके द्वारा कवितायें पढ़ी जानी चाहिये।

तेन पुस्तकं पठितव्यम्। उनके द्वारा पुस्तक पढ़ा जाना चाहिये।

तेन पुस्तकानि पठितव्यानि। उनके द्वारा पुस्तक पढ़े जाने चाहिये।

तेन काव्यप्रकाशः पठनीयः। उनके द्वारा काव्यप्रकाश पढ़ा जाना चाहिए।

तेन गङ्गालहरी पठनीया। उनके द्वारा गङ्गालहरी पढ़ी जानी चाहिए।

उपरोक्त उदाहरणों में क्रिया पद कर्मानुसारी है। प्रत्ययों के प्रयोग से भाषणाभ्यास में सरलता हो जाती हैं अतः सम्भाषण में अधिकाधिक प्रत्यययुक्त वाक्यों का प्रयोग करना चाहिये।

लृङ्लकार (हेतु हेतुमद्भूत)

लृङ्लकार का प्रयोग सम्भावना के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इस लकार के प्रयोग में एक ही वाक्य में दो क्रियाओं का प्रयोग होता है– यथा

यदि सः अपठिष्यत् तर्हि अवश्यम् उत्तीर्णः अभविष्यत्।

यदि वह पढ़ता तो अवश्य उत्तीर्ण होता।

उपर्युक्त वाक्य में दो क्रिया पदों (अपठिष्यत्, अभविष्यत्) का प्रयोग देखा जा सकता है। इस लकार में यदि-तर्हि अव्यय पद का भी प्रयोग होता है। प्रथम पुरुष में भवान् और भवती के साथ हिन्दी रूप में करते-करतीं, होते-होतीं, पढ़ते-पढ़तीं आदि रूप होंगे। यथा–

यदि भवती अगमिष्यत् तर्हि अहम् अवश्यम् अमेलिष्यम्।

अदि आप आती तो मैं अवश्य मिलता।

यदि सः प्रश्नम् अप्रक्ष्यत् तर्हि शिक्षकः उत्तरम् अवश्यम् अदास्यत्।

यदि वह प्रश्न पूछता तो शिक्षक उत्तर अवश्य देता।

यदि तौ प्रश्नम् अप्रक्ष्यतां तर्हि शिक्षकौ अवश्यम् उत्तरम् अदास्यताम्।

यदि दोनों प्रश्न पूछते तो दोनों शिक्षक उत्तर अवश्य देतें।

यदि ते प्रश्नम् अप्रक्ष्यन् तर्हि शिक्षकाः अवश्यम् उत्तरम् अदास्यन्।

यदि वे प्रश्न पूछते तो शिक्षक उत्तर अवश्य देते।

यदि पिता पत्रं अप्राप्स्यत् तर्हि सः अवश्यं गृहम् अगमिष्यत्।

यदि पिता (जी) पत्र पाते तो वह घर अवश्य आते।

यदि भ्रातरौ पुस्तकम् अग्रहीष्यतां तर्हि ते बालिके पुस्तकं न अनेष्यताम्।

यदि दोनों भाई पुस्तक लेते तो वे दोनों बालिकायें पुस्तक न ले जाती।

यदि नेतारः असत्यभाषणं न अकथयिष्यन् तर्हि जनाः मतं न अदास्यन्।

यदि नेता असत्यभाषण न करते तो लोग मत नहीं देते।

यदि अहम् अपठिष्यं तर्हि अवश्यम् उत्तीर्णः अभविष्यम्।

यदि मैं पढ़ता तो अवश्य उत्तीर्ण होता।

यदि आवाम् अपठिष्याव तर्हि अवश्यम् उत्तीर्णौ अभविष्याव।

यदि हम दोनों पढ़ते तो अवश्य उत्तीर्ण होते।

यदि वयम् अपठिष्याम तर्हि अवश्यम् उत्तीर्णाः अभविष्याम।

यदि हम पढ़ते तो अवश्य उत्तीर्ण होंगे।

णिजन्त (प्रेरणार्थक)

मूल धातु में णिच् (इ) प्रत्यय लगाने से प्रेरणार्थक क्रियायें बनती हैं। प्रत्यय लगाने पर मूल धातु में गुण, वृद्धि आदि विकार हो जाते हैं। इनके रूप कथ धातु के समान चलेंगे। णिजन्त क्रियायें प्रायः उभयपदी होती है। लकार क्रम में यहाँ उदाहरण दिये जा रहे है-

लट् -

सः कार्यं कारयति। वह कार्य कराता है।

माता पुत्रीं मन्दिरं प्रेषयति। मा बेटी को मन्दिर भेजती है।

गुरुः शिष्यं पाठयति। गुरु शिष्य को पढ़ाता है।

पिता पुत्रं चित्रं दर्शयति। पिता पुत्र को चित्र दिखाता है।

शिक्षकः सेवकेन स्यूतं नाययति।	शिक्षक नौकर से थैला लिवा जाताहै।
पितामहः पौत्रं पत्रं लेखयति	दादा पौत्र को पत्र लिखाता है।
माता पुत्र्या दीपं निर्वापयति।	मा बेटी से दीप बुझवाती है।
लङ् (भूत) -	
माता पुत्रेण कार्यम् अकारयत्।	माँ ने पुत्र से कार्य कराया।
पिता पुत्रं चित्रम् अदर्शयत्।	पिता ने पुत्र को चित्र दिखाया।
माता शिशुम् अशाययत्।	माँ ने शिशु को सुलाया।
गुरुः शिष्येन द्वारम् उदघाटयत्।	गुरु ने शिष्य से दरवाजा खुलवाया।
शिक्षकः शिष्येन पत्रम् अलेखयत्।	शिक्षक ने शिष्य से पत्र लिखाया।
लृट् (भविष्यत्) -	
सः बालकेन कार्यं कारयिष्यति।	वह बालक से कार्य करायेगा।
तौ बालकेन कार्यं कारयिष्यतः।	वे दोनों बालक से कार्य करायेंगे।
ते बालकेन कार्यं कारयिष्यन्ति।	वे बालक से कार्य करायेंगे।
लोट् (आज्ञा) -	
भवान् बालकेन कार्यं कारयतु।	आप बालक से काम कराओ।
पुत्रीं मन्दिरं प्रेषयतु।	पुत्री को मन्दिर भेजे।
पुत्रं शाययतु।	पुत्र को सुलाओ।
शिष्येन द्वारम् उद्घाटयतु।	शिष्य से दरवाजा खुलवाओ।
आपणिकेन पुस्तकं दापयतु।	दुकानदार से पुस्तक दिलाओ।
पुत्रेण व्यजनं स्थगयतु।	पुत्र से पंखा बन्द कराओ।
तेन स्यूतं नाययेत्।	उससे थैला ले जाना चाहिए।
पुत्रीं मन्दिरं प्रेषयेत्।	पुत्री को मन्दिर भेजना चाहिये।

लृङ् (हेतुहेतुमद) -

यदि शिक्षकः द्वारम् उदघाटयिष्यत् तर्हि सः अगमयिष्यत्।
यदि शिक्षक दरवाजा खुलवाता तो वह आता।

यदि सः दीपं निरवापयिष्यत् तर्हि रमेशः दीपम् अज्वालयिष्यत्।
यदि वह दीप बुझवाता तो रमेश दीप जलाता।

यदि माता पुत्रीं मन्दिरम् अप्रेषयिष्यत् तर्हि सः मन्दिरद्वारं उदघाटयिष्यत्।
यदि माँ बेटी को मन्दिर भेजती तो वह मन्दिर द्वार खुलवाता।

यदि सः पत्रम् अलेखयिष्यत् तर्हि बालकः अप्रेषयिष्यत्।
यदि वह पत्र लिखता तो बालक भिजवाता।

यदि भवान् धनम् अदापयिष्यत् तर्हि सुरेशः विषयं न अवदयिष्यत्।
यदि आप धन दिलाते तो सुरेश विषय नहीं बताता।

धातुरूपतालिका

	लट्	लृट्	लोट्	लङ्	ण्यन्ते लट्	क्तवतु	तुमुन्	क्त्वा	ल्यप्
अङ्क	अङ्कयति	अङ्कयिष्यति	अङ्कयतु	आङ्कयत्	अङ्कयति	अङ्कितवान्	अङ्कयितुम्	अङ्कयित्वा	समङ्क्य
अट्	अटति	अटिष्यति	अटतु	आटत्	आटयति	अटितवान्	अटितुम्	अटित्वा	पर्यट्य
अर्च्	अर्चति	अर्चिष्यति	अर्चतु	आर्चत्	अर्चयति	अर्चितवान्	अर्चितुम्	अर्चित्वा	समर्च्य
अर्ज्	अर्जति	अर्जिष्यति	अर्जतु	आर्जत्	अर्जयति	अर्जितवान्	अर्जितुम्	अर्जित्वा	समर्ज्य
अर्थ्	अर्थयते	अर्थयिष्यते	अर्थयताम्	आर्थयत	अर्थयति	अर्थितवान्	अर्थयितुम्	अर्थयित्वा	अभ्यर्थ्य
आप्	आप्नोति	आप्स्यति	आप्नोतु	आप्नोत्	आपयति	आप्तवान्	आप्तुम्	आप्त्वा	समाप्य
इङ्[1]	अधीते	अध्येष्यते	अधीताम्	अध्यैत	अध्यापयति	अधीतवान्	अध्येतुम्	अधीत्य	
इष्	इष्यति	एषिष्यति	इष्यतु	ऐष्यत्	एषयति	इषितवान्	एषितुम्	एषित्वा	प्रेष्य
इष्	इच्छति	एषिष्यति	इच्छतु	ऐच्छत्	एषयति	इष्टवान्	एषितुम्	इष्ट्वा	प्रेष्य
ईर्ष्य्	ईर्ष्यति	ईर्ष्यिष्यति	ईर्ष्यतु	ऐर्ष्यत्	ईर्ष्ययति	ईर्ष्यितवान्	ईर्ष्यितुम्	ईर्ष्यित्वा	समीर्ष्य
ऋ	ऋच्छति	अरिष्यति	ऋच्छतु	आर्च्छत्	अर्पयति	ऋतवान्	अर्तुम्	ऋत्वा	समृत्य
कथ	कथयति	कथयिष्यति	कथयतु	अकथयत्	कथयति	कथितवान्	कथयितुम्	कथयित्वा	प्रकथय्य
कम्प्	कम्पते	कम्पिष्यते	कम्पताम्	अकम्पत	कम्पयति	कम्पितवान्	कम्पितुम्	कम्पित्वा	विकम्प्य
कर्त्	कर्तयति	कर्तयिष्यति	कर्तयतु	अकर्तयत्	कर्तयति	कर्तितवान्	कर्तयितुम्	कर्तयित्वा	प्रकर्त्य
कस्[2]	विकसति	विकसिष्यति	विकसतु	व्यकसत्	विकासयति	विकसितवान्	विकसितुम्	कसित्वा	विकस्य

1. इसका 'अधि' उपसर्ग के साथ ही प्रयोग होता है।
2. अस्य 'वि' पूर्वक प्रयोग अधिक दिखता है।

	लट्	लृट्	लोट्	लङ्	ण्यन्ते लट्	क्तवतु	तुमुन्	क्त्वा	ल्यप्
काश्	काशते	काशिष्यते	काशताम्	अकाशत्	काशयति	काशितवान्	काशितुम्	काशित्वा	प्रकाश्य
कृ	करोति	करिष्यति	करोतु	अकरोत्	कारयति	कृतवान्	कर्तुम्	कृत्वा	उपकृत्य
कृष्	कर्षति	कर्क्ष्यति/ क्रक्ष्यति	कर्षतु	अकर्षत्	कर्षयति	कृष्टवान्	कृष्टुम्	कृष्ट्वा	आकृष्य
क्री	क्रीणाति	क्रेष्यति	क्रीणातु	अक्रीणात्	क्रापयति	क्रीतवान्	क्रेतुम्	क्रीत्वा	विक्रीय
क्षाल्	क्षालयति	क्षालयिष्यति	क्षालयतु	अक्षालयत्	क्षालयति	क्षालितवान्	क्षालयितुम्	क्षालयित्वा	प्रक्षाल्य
कास्	कासते	कासिष्यते	कासताम्	अकासत	कासयति	कासितवान्	कासितुम्	कासित्वा	विकास्य
खन्	खनति	खनिष्यति	खनतु	अखनत्	खानयति	खातवान्	खनितुम्	खनित्वा/ खात्वा	प्रखाय/ प्रखन्य
खाद्	खादति	खादिष्यति	खादतु	अखादत्	खादयति	खादितवान्	खादितुम्	खादित्वा	सङ्खाद्य
खेल्	खेलति	खेलिष्यति	खेलतु	अखेलत्	खेलयति	खेलितवान्	खेलितुम्	खेलित्वा	विखेल्य

गण	गणयति	गणयिष्यति	गणयतु	अगणयत्	गणयति	गणितवान्	गणयितुम्	गणयित्वा	विगणय्य
गम्	गच्छति	गमिष्यति	गच्छतु	अगच्छत्	गमयति	गतवान्	गन्तुम्	गत्वा	अवगम्य/ अवगत्य
गर्ज्	गर्जति	गर्जिष्यति	गर्जतु	अगर्जत्	गर्जयति	गर्जितवान्	गर्जितुम्	गर्जित्वा	सङ्गर्ज्य
गै	गायति	गास्यति	गायतु	अगायत्	गापयति	गीतवान्	गातुम्	गीत्वा	विगाय
ग्रह	गृह्णाति	गृहीष्यति	गृह्णातु	अगृह्णात्	ग्राहयति	गृहीतवान्	ग्रहीतुम्	गृहीत्वा	विगृह्य
घट्'	उद्घाटयति	उद्घाटयिष्यति	उदघाटयत्	उद्घाटयति	उद्घाटितवान्	उद्घाटयितुम्	घाटयित्वा	उद्घाट्य	

' इसका 'उत्' उपसर्गपूर्वक ही प्रयोग अधिक दिखता है।

घ्रा	जिघ्रति	घ्रास्यति	जिघ्रतु	अजिघ्रत्	घ्रापयति	घ्रातवान्	घ्रातुम्	घ्रात्वा	सामाघ्राय
चर्	चरति	चरिष्यति	चरतु	अचरत्	चारयति	चरितवान्	चरितुम्	चरित्वा	आचर्य
चर्च्	चर्चति	चर्चिष्यति	चर्चतु	अचर्चत्	चर्चयति	चर्चितवान्	चर्चितुम्	चर्चित्वा	प्रचर्च्य
चर्च्	चर्चयति	चर्चयिष्यति	चर्चयतु	अचर्चयत्	चर्चयति	चर्चितवान्	चर्चयितुम्	चर्चयित्वा	प्रचर्च्य
चर्व	चर्वति	चर्विष्यति	चर्वतु	अचर्वत्	चर्वयति	चर्वितवान्	चर्वितुम्	चर्वित्वा	प्रचर्व्य
चल्	चलति	चलिष्यति	चलतु	अचलत्	चलयति, चालयति	चलितवान्	चलितुम्	चलित्वा	प्रचल्य प्रचाल्य
चि	चिनोति	चेष्यति	चिनोतु	अचिनोत्	चाययति	चितवान्	चेतुम्	चित्वा	सञ्चित्य
चिन्त्	चिन्तयति	चिन्तयिष्यति	चिन्तयतु	अचिन्तयत्	चिन्तयति	चिन्तितवान्	चिन्तयितुम्	चिन्तयित्वा	विचिन्त्य
चुर्	चोरयति	चोरयिष्यति	चोरयतु	अचोरयत्	चोरयति	चोरितवान्	चोरयितुम्	चोरयित्वा	प्रचोर्य
छद्	छादयति	छादयिष्यति	छादयतु	अच्छादयत्	छादयति	छादितवान्	छादयितुम्	छादयित्वा	प्रच्छाद्य
छिद्	छिनति	छेत्स्यति	छिनत्तु	अच्छिनत्	छेदयति	छिन्नवान्	छेत्तुम्	छित्त्वा	प्रच्छिद्य
जन्	जायते	जनिष्यते	जायताम्	अजायत	जनयति	जातवान्	जनितुम्	जनित्वा	प्रजन्य प्रजाय
जप्	जपति	जपिष्यति	जपतु	अजपत्	जापयति	जपितवान्	जपितुम्	जपित्वा	सञ्जप्य
जल्प्	जल्पति	जल्पिष्यति	जल्पतु	अजल्पत्	जाल्यति	जल्पितवान्	जल्पितुम्	जल्पित्वा	प्रजल्प्य
जीव्	जीवति	जीविष्यति	जीवतु	अजीवत्	जीवयति	जीवितवान्	जीवितुम्	जीवित्वा	उपजीव्य
ज्ञा	जानाति	ज्ञास्यति	जानातु	अजानात्	ज्ञापयति	ज्ञातवान्	ज्ञातुम्	ज्ञात्वा	विज्ञाय
तर्ज्	तर्जति	तर्जिष्यति	तर्जतु	अतर्जत्	तर्जयति	तर्जितवान्	तर्जितुम्	तर्जित्वा.	प्रतर्ज्य
तड्	ताडयति	ताडयिष्यति	ताडयतु	अताडयत्	ताडयति	ताडितवान्	ताडयितुम्	ताडयित्वा	प्रताड्य
तुल्	तोलयति	तोलयिष्यति	तोयलतु	अतोलयत्	तोलयति	तोलितवान्	तोलयितुम्	तोलयित्वा	उत्तोल्य
तुष्	तुष्यति	तोक्ष्यति	तुष्यतु	अतुष्यत्	तोषयति	तुष्टवान्	तोष्टुम्	तुष्ट्वा	सन्तुष्य
तृ	तरति	तरिष्यति	तरतु	अतरत्	तारयति	तीर्णवान्	तरितुम्	तीर्त्वा	वितीर्य
त्यज्	त्यजति	त्यक्ष्यति	त्यजतु	अत्यजत्	त्याजयति	त्यक्तवान्	त्यक्तुम्	त्यक्त्वा	परित्यज्य
दंश्	दशति	दंक्ष्यति	दशातु	अदशात्	दंशयति	दष्टवान्	दंशयितुम्	दष्ट्वा	संदश्य
दण्ड्	दण्डयति	दण्डयिष्यति	दण्डयतु	अदण्डयत्	दण्डयति	दण्डितवान्	दण्डयितुम्	दण्डयित्वा	उद्दण्ड्य
दह्	दहति	धक्ष्यति	दहतु	अदहत्	दाहयति	दग्धवान्	दग्धुम्	दग्ध्वा	प्रदह्य
दा	ददाति	दास्यति	ददातु	अददात्	दापयति	दत्तवान्	दातुम्	दत्त्वा	प्रदाय
दा (दाण्) प्रणिदाय		यच्छति	दास्यति	यच्छतु	अयच्छत्	दापयति	दत्तवान्	दातुम्	दत्त्वा
द्रा'	निद्राति	निद्रास्यति	निद्रातु	न्यद्रात्	निद्रापयति	निद्रावान्	निद्रातुम्	द्रात्त्वा	निद्राय

दिश्	दिशति	देक्ष्यति	दिशतु	अदिशत्	देशयति	दिष्टवान्	देष्टुम्	दिष्ट्वा	अतिदिश्य उपदिश्य
दृश्	पश्यति	द्रक्ष्यति	पश्यतु	अपश्यत्	दर्शयति	दृष्टवान्	द्रष्टुम्	दृष्ट्वा	संदृश्य
द्रुह	द्रुह्यति	द्रोहिष्यति/ ध्रोक्ष्यति	द्रुह्यतु	अद्रुह्यत्	द्रोहयति	द्रुग्धवान्	द्रोहितुम् द्रोग्धुम्/द्रोढुम्	द्रुहित्वा द्रोहित्वा	विद्रुह्य
धाव्	धावति	धाविष्यति	धावतु	अधावत्	धावयति	धावितवान	धावितुम्	धावित्वा	प्रधाव्य
धृ	धरति	धरिष्यति	धरतु	अधरत्	धारयति	धृतवान्	धर्तुम्	धृत्वा	प्रधृत्य
ध्यै	ध्यायति	ध्यास्यति	ध्यायतु	अध्यायत्	ध्याययति	ध्यातवान्	ध्यातुम्	ध्यात्वा	आध्याय
नम्	नमति	नंस्यति	नमतु	अनमत्	नमयति	नतवान्		नत्वा	प्रणम्य
नश्	नश्यति	नंक्ष्यति	नश्यतु	अनश्यत्	नाशयति	नष्टवान्	नशितुम्/ नंष्टुम्	नशित्वा/ नंष्ट्वा नष्ट्वा	प्रणश्य
निन्द्	निन्दति	निन्दिष्यति	निन्दतु	अनिन्दत्	निन्दयति	निन्दितवान्	निन्दितुम्	निन्दित्वा	विनिन्द्य
नी	नयति	नेष्यति	नयतु	अनयत्	नाययति	नीतवान्	नेतुम्	नीत्वा	प्रणीय
नृत्	नृत्यति	नर्तिष्यति	नृत्यतु	अनृत्यत्	नर्तयति	नर्तितवान्	नर्तितुम्	नर्तित्वा	सन्नृत्य
पच्	पचति	पक्ष्यति	पचतु	अपचत्	पाचयति	पतवान्	पक्तुम्	पक्त्वा	प्रपच्य
पट्	पाटयति	पाटयिष्यति	पाटयतु	अपाटयत्	पाटयति	पाटितवान्	पाटयितुम्	पाटयित्वा	उत्पाट्य
पठ्	पठति	पठिष्यति	पठतु	अपठत्	पाठयति	पठितवान्	पठितुम्	पठित्वा	प्रपठ्य
पत्	पतति	पतिष्यति	पततु	अपतत्	पातयति	पतितवान्	पतितुम्	पतित्वा	विनिपत्य
पद्	पद्यते	पत्स्यते	पद्यताम्	अपद्यत	पादयति	पन्नवान्	पत्तुम्	पत्त्वा	सम्पद्य
पा	पिबति	पास्यति	पिबतु	अपिबत्	पाययति	पीतवान्	पातुम्	पीत्वा	निपीय
पाल्	पालयति	पालयिष्यति	पालयतु	अपालयत्	पालयति	पालितवान्	पालयितुम्	पालयित्वा	पारिपाल्य
पीड्	पीडयति	पीडयिष्यति	पीडयतु	अपीडयत्	पीडयति	पीडितवान्	पीडयितुम्	पीडयित्वा	निपीड्य
पूज्	पूजयति	पूजयिष्यति	पूजयतु	अपूजयत्	पूजयति	पूजितवान्	पूजयितुम्	पूजयित्वा	सम्पूज्य
पूर्	पूरयति	पूरयिष्यति	पूरयतु	अपूरयत्	पूरयति	पूरितवान्	पूरयितुम्	पूरयित्वा	प्रपूर्य
प्रच्छ्	पृच्छति	प्रक्ष्यति	पृच्छतु	अपृच्छत्	प्रच्छयति	पृष्टवान्	प्रष्टुम्	पृष्ट्वा	आपृच्छ्य
प्रेप	प्रेपते	प्रेपिष्यते	प्रेषताम्	अप्रेषत	प्रेषयति	प्रेषितवान्	प्रेपितुम्/ प्रेषयितुम्	प्रेपित्वा	सम्प्रेष्य
प्लु	प्लवते	प्लोष्यते	प्लवताम्	अप्लवत	प्लावयति	प्लुतवान्	प्लोतुम्	प्लुत्वा	उत्प्लुत्य
फल्	फलति	फलिष्यति	फलतु	अफलत्	फालयति	फलितवान्	फलितुम्	फलित्वा	सम्फल्य
बन्ध्	बध्नाति	भन्त्स्यति	बध्नातु	अबध्नात्	बन्धयति	बद्धवान्	बद्धुम्	बद्धवा	अनुवध्य
वुक्क्	बुक्कति	बुक्किष्यति	बुक्कतु	अबुक्कत्	वुक्कयति	बुक्कितवान्	बुक्कितुम्	बुक्कित्वा	अनुकुक्क्य
बुध्	बोधति	बोधिष्यति	बोधतु	अबोधत्	बोधयति	बुद्धवान्	बोद्धुम्	बुद्ध्वा	प्रबुद्ध्य
ब्रू	ब्रवीति	वक्ष्यति	ब्र[illegible]	अब्रवीत्	वाचयति	उक्तवान्	वक्तुम्	उक्त्वा	प्रोच्य
भज्	भजति	भक्ष्यति	भजतु	अभजत्	भाजयति	भक्तवान्	भक्तुम्	भक्त्वा	विभज्य
भष्	भषति	भषिष्यति	भषतु	अभषत्	भाषयति	भषितवान्	भषितुम्	भषित्वा	प्रभष्य
भी	बिभेति	भेष्यति	बिभेतु	अबिभेत्	भाययति	भीतवान्	भेतुम्	भीत्वा	प्रभीय
भू	भवति	भविष्यति	भवतु	अभवत्	भावयति	भूतवान्	भवितुम्	भूत्वा	अनुभूय
भुज्	भुङ्क्ते	भोक्ष्यते	भुङ्क्ताम्	अभुङ्क्त	भोजयति	भुक्तवान्	भोक्तुम्	भुक्त्वा	सम्भुज्य
भृज्	भर्जते	भर्जिष्यते	भर्जताम्	अभर्जत	भर्जयति	भर्जितवान्	भर्जितुम्	भर्जित्वा	सम्भृज्य

भ्रम्	भ्रमति	भ्रमिष्यति	भ्रमतु	अभ्रमत्	भ्रामयति	भ्रान्तवान्	भ्रमितुम्	भ्रमित्वा	सम्भ्रम्य
मन्	मन्यते	मंस्यते	मन्यताम्	अमन्यत	मानयति	मतवान्	मन्तुम्	मत्वा	अनुमत्य
मा	माति	मास्यति	मातु	अमात्	मापयति	मितवान्	मातुम्	मित्वा	परिमाय
मिल्	मिलति	मेलिष्यति	मिलतु	अमिलत्	मेलयति	मिलितवान्	मेलितुम्	मिलित्वा	सम्मिल्य
मृ	म्रियते	मरिष्यति	म्रियताम्	अम्रियत	मारयति	मृतवान्	मर्तुम्	मृत्वा	अनुमृत्य
मृज्	मार्जयति	मार्जयिष्यति	मार्जयतु	अमार्जयत्	मार्जयति	मार्जितवान्	मार्जयितुम्	मार्जयित्वा	सम्मार्ज्य
मृद्	मृद्नाति	मर्दिष्यति	मृद्नातु	अमृद्नात्	मर्दयति	मृदितवान्	मर्दितुम्	मृदित्वा	सम्मृद्य
या	याति	यास्यति	यातु	अयात्	यापयति	यातवान्	यातुम्	यात्वा	प्रयाय
याच्	याचते	याचिष्यते	याचताम्	अयाचत्	याचयति	याचितवान्	याचितुम्	याचित्वा	संयाच्य
जुज्	योजयति	योजयिष्यति	योजयतु	अयोजयत्	योजयति	योजितवान्	योजयितुम्	योजयित्वा	संयोज्य
रक्ष्	रक्षति	रक्षिष्यति	रक्षतु	अरक्षत्	रक्षयति	रक्षितवान्	रक्षितुम्	रक्षित्वा	संरक्ष्य
रच्	रचयति	रचयिष्यति	रचयतु	अरचयत्	रचयति	रचितवान्	रचयितुम्	रचयित्वा	विरचय्य
रभ्	रभते	रप्स्यते	रभताम्	अरभत	रम्भयति	रब्धवान्	रब्धुम्	रब्ध्वा	आरभ्य
रम्	रमते	रंस्यते	रमताम्	अरमत	रमयति	रतवान्	रन्तुम्	रत्वा	विरम्य/ विरत्य
रुच्	रोचते	रोचिष्यते	रोचताम्	अरोचत	रोचयते	रुचितवान्	रोचितुम्	रोचित्वा/ रुचित्वा	प्ररुच्य
रुद्	रोदिति	रोदिष्यति	रोदितु	अरोदत्	रोदयति	रुदितवान्	रोदितुम्	रुदित्वा/ रोदित्वा	प्ररुद्य
रुध्	रुणद्धि	रोत्स्यति	रुणद्धु	अरुणत्	रोधयति	रुद्धवान्	रोद्धुम्	रुद्ध्वा .	अनुरुध्य
लिख्	लिखति	लेखिष्यति	लिखतु	अलिखत्	लेखयति	लिखितवान्	लेखितुम्	लेखित्वा/	विलिख्य लिखित्वा
लुड्	लोडति	लोडिष्यति	लोडतु	अलोडत्	लोडयति	लुडितवान्	लोडितुम्	लुडित्वा/ लोडित्वा	संलुड्य
लू	लुनाति	लविष्यति	लुनातु	अलुनात्	लावयति	लूनवान्	लवितुम्	लूत्वा	अवलूय
वद्	वदति	वदिष्यति	वदतु	अवदत्	वादयति	उदितवान्	वदितुम्	उदित्वा	अनूद्य
वस्	वसति	वत्स्यति	वसतु	अवसत्	वासयति	उषितवान्	वस्तुम्	उषित्वा	प्रोष्य
वह्	वहति	वक्ष्यति	वहतु	अवहत्	वाहयति	ऊढवान्	वोढुम्	ऊढ्वा	प्रवह्य
विद्	वेदयते	वेदयिष्यते	वेदयताम्	अवेदयत	वेदयति	विदितवान्	वेदयितुम्	वेदयित्वा	निवेद्य
विश्	विशति	वेक्ष्यति	विशतु	अविशत्	वेशयति	विष्टवान्	वेष्टुम्	विष्ट्वा	प्रविश्य
शी	शेते	शयिष्यते	शेताम्	अशेत	शाययति	शायितवान्	शयितुम्	शयित्वा	उपशय्य
शील्	शीलयति	शीलयिष्यति	शीलयतु	अशीलयत्	शीलयति	शीलितवान्	शीलयितुम्	शीलयित्वा	परिशील्य
शुष्	शुष्यति	शोक्ष्यति	शुष्यतु	अशुष्यत्	शोषयति	शुष्कवान्	शोष्टुम्	शुष्ट्वा	संशुष्य
श्रि	श्रयति	श्रयिष्यति	श्रयतु	अश्रयत्	श्राययति	श्रितवान्	श्रयितुम्	श्रयित्वा	आश्रित्य
श्रु	शृणोति	श्रोष्यति	शृणोतु	अशृणोत्	श्रावयति	श्रुतवान्	श्रोतुम्	श्रुत्वा	आश्रुत्य
श्वस्	श्वसिति	श्वसिष्यति	श्वसितु	अश्वसत्	श्वासयति	श्वसितवान्	श्वसितुम्	श्वसित्वा	विश्वस्य
सद्	सीदति	सत्स्यति	सीदतु	असीदत्	सादयति	सन्नवान्	सत्तुम्	सत्त्वा	निषद्य
सह्	साहयति	साहयिष्यति	साहयतु	असाहयत्	साहयति	सोढवान्	सोढुम्	सोढ्वा	प्रसह्य
साध्	साध्नोति	सात्स्यति	साध्नोतु	असाध्नोत्	साध्यति	साद्धवान्	साद्धुम्	साद्ध्वा	संसाध्य

सिच्	सिञ्चति	सेक्ष्यति	सिञ्चतु	असिञ्चत्	सेचयति	सिक्तवान्	सेक्तुम्	सिक्त्वा	अभिषिच्य
सिव्	सीव्यति	सेविष्यति	सीव्यतु	असीव्यत्	सेवयति	स्यूतवान्	सेवितुम्	सेवित्वा/ स्यूत्वा	प्रसीव्य
सूच्	सूचयति	सूचयिष्यति	सूचयतु	असूचयत्	सूचयति	सूचितवान्	सूचयितुम्	सूचयित्वा	संसूच्य
सृ	सरति	सरिष्यति	सरतु	असरत्	सारयति	सृतवान्	सर्तुम्	सृत्वा	विसृत्य
स्था	तिष्ठति	स्थास्यति	तिष्ठतु	अतिष्ठत्	स्थापयति	स्थितवान्	स्थातुम्	स्थित्वा	प्रस्थाय
स्ना	स्नाति	स्नास्यति	स्नातु	अस्नात्	स्नापयति	स्नातवान्	स्नातुम्	स्नात्वा	संस्नाय
स्निह्	स्निह्यति	स्नेहिष्यति	स्निह्यतु	अस्निह्यत्	स्नेहयति	स्निग्धवान्	स्नेहितुम्	स्नेहित्वा/ स्निहित्वा	उपस्निह्य
स्पृश्	स्पृशति	स्प्रक्ष्यति/ स्पर्क्ष्यति	स्पृशतु	अस्पृशत्	स्पर्शति	स्पृष्टवान्	स्प्रष्टुम्/ स्पर्ष्टुम्	स्पृष्ट्वा	उपस्पृश्य
स्फुर्	स्फुरति	स्फुरिष्यति	स्फुरतु	अस्फुरत्	स्फोरयति	स्फुरितवान्	स्फोरितुम्	स्फुरित्वा	प्रस्फूर्य
स्मृ	स्मरति	स्मरिष्यति	स्मरतु	अस्मरत्	स्मारयति	स्मृतवान्	स्मर्तुम्	स्मृत्वा	विस्मृत्य
स्वप्	स्वपिति	स्वप्स्यति	स्वपितु	अस्वपत्	स्वापयति	सुप्तवान्	स्वप्तुम्	सुप्त्वा	प्रसुप्य
हन्	हन्ति	हनिष्यति	हन्तु	अहन्	घातयति	हतवान्	हन्तुम्	हत्वा	निहत्य
हस्	हसति	हसिष्यति	हसतु	अहसत्	हासयति	हसितवान्	हसितुम्	हसित्वा	विहस्य
हा	जहाति	हास्यति	जहातु	अजहात्	हययति	हीनवान्	हातुम्	हित्वा	विहाय
हृ	हरति	हरिष्यति	हरतु	अहरत्	हारयति	हृतवान्	हर्तुम्	हृत्वा	विहृत्य
ह्वे	ह्वयति	ह्वास्यति	ह्वयतु	अह्वयत्	ह्वाययति	हूतवान्	ह्वातुम्	हुत्वा	आहूय

षष्ठ : अध्याय

विशेष्य-विशेषण भाव परिचय

विशेष्य विशेषण भाव

विशेषण को धारण करने वाला विशेष्य कहलाता है अथवा जिसके लिए एक या एकाधिक विशेषणों के द्वारा विशिष्टता प्रदर्शित की जाती है वह विशेष्य पद कहलाता है तथा जिन पदों के द्वारा विशेष्य पद को विशिष्टता बताई जाती है वह विशेषण कहलाता है। संख्यावाचक शब्द भी विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते है।

मम गृहे एकः ग्रन्थः अस्ति।
मेरे घर में एक ग्रन्थ है।

मम गृहे एका पत्रिका अस्ति।
मेरे घर में एक पत्रिका है।

मम गृहे एकं दूरदर्शनम् अस्ति।
मेरे घर में एक दूरदर्शन है।

एकः बालकः अस्ति।
एक बालक है।

एका बालिका अस्ति।
एक लड़की है।

एकं गृहम् अस्ति।
एक घर है।

☞ **किमर्थम्** यह अव्यय पद है तथापि इसका प्रयोग विशेषण के रूप में होता है। जैसे-किमर्थः, किमर्था इति विशेषण रूप में प्रयुक्त होने वाले शब्द है।

विशेष्य और विशेषण पद समान विभक्ति, समान वचन और समान लिङ्गि में ही प्रयुक्त होते है। अर्थात् विशेष्य यदि प्रथमा विभक्ति एकवचन और पुंल्लिङ्ग का है तो विशेषण भी प्रथमा विभक्ति एकवचन और पुंल्लिङ्ग में प्रयोग होता है।

☞ सातों विभक्तियों में विशेषण विशेष्य भाव का प्रयोग होता है।

उत्तमः बालकः अस्ति।	उत्तम बालक है।
उत्तमं बालकं पश्यामि।	उत्तम बालक को देखता हूँ।
उत्तमेन बालकेन सह गच्छामि।	उत्तम बालक के साथ जाता हूँ।
उत्तमाय बालकाय मोदकं ददामि।	उत्तम बालक को लड्डू देता हूँ।
उत्तमात् बालकात् पुस्तकं स्वीकरोमि।	उत्तम बालक से पुस्तक लेता हूँ।
उत्तमस्य बालकस्य नाम राजीवः।	उत्तम बालक का नाम राजीव है।
उत्तमाः बालकाः सन्ति।	उत्तम बालक है।
उत्तमान् बालकान् पश्यामि।	उत्तम बालकों को देखता हूँ।
उत्तमैः बालकैः सह गच्छामि।	उत्तम बालकों के साथ जाता हूँ।

उत्तमेभ्यः बालकेभ्यः मोदकं ददामि।	उत्तम बालकों को लड्डू देता हूँ।
उत्तमेभ्यः बालकेभ्यः पुस्तकं स्वीकरोमि।	उत्तम बालकों से पुस्तक लेता हूँ।
उत्तमानां बालकानां समूहः अत्र अस्ति।	उत्तम बालकों को समूह यहाँ है।
उत्तमेषु बालकेषु गुणाः सन्ति।	उत्तम बालकों में गुण होते है।
उत्तमा बालिका अस्ति।	लड़की उत्तम है।
उत्तमां बालिकां पश्यामि।	उत्तम लड़की को देखता हूं।
उत्तमया बालिकया सह गच्छामि।	उत्तम लड़की के साथ जाता हूं
उत्तमायै बालिकायै पुरस्कारः दीयते।	उत्तम लड़की को पुरस्कार मिलता है।
उत्तमायाः बालिकायाः नाम राधा।	उत्तम लड़की का नाम राधा है।
उत्तमायां बालिकायां अनेकाः गुणाःसन्ति।	उत्तम लड़की में अनेक गुण हैं।

☞ *गुणवाचक शब्द भी विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते है।*

उत्तमः	उत्तमा	उत्तमम्	श्रेष्ठः	श्रेष्ठा	श्रेष्ठम्
शोभनः	शोभना	शोभनम्	सुन्दरः	सुन्दरी	सुन्दरम्

रामः श्रेष्ठः पुरुषः अस्ति।	राम श्रेष्ठ पुरुष है।
सीता श्रेष्ठा महिला अस्ति।	सीता श्रेष्ठ महिला है।
उर्मिलाउद्यानं श्रेष्ठम् उद्यानम् अस्ति।	उर्मिला उद्यान श्रेष्ठ उद्यान है।
हस्तः सुन्दरः अस्ति।	हाथ सुन्दर है।
नासिका सुन्दरी अस्ति।	नाक सुन्दर है।
मुखं सुन्दरम् अस्ति।	मुख सुन्दर है।

☞ *अद्यतन, श्वस्तन, ह्यस्तन, पूर्वतन, इदानीन्तन ये सभी विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते है।*

अद्यतनसमाचारः न ज्ञातः	आज का समाचार नहीं ज्ञात हुआ।
अद्यतनी पत्रिका अत्र नास्ति।	आज की पत्रिका यहां है।
अद्यतनं समाचारपत्रं पठति।	आज का समाचार पत्र पढता है।
ह्यस्तन विषयः उत्तमः नासीत्।	कल का विषय अच्छा नहीं था।
ह्यस्तनी वार्ता विस्मृतव्या।	कल की बात भूल जानी चाहिए।
ह्यस्तनं पुष्पं सुन्दरं न दृश्यते।	कल का फूल अच्छा नहीं दिखता।

श्वस्तनी पत्रिका पठनयोग्या भविष्यति। कल की पत्रिका पढ़ने योग्य होगी।

श्वस्तनं दिनं रमणीयं भविष्यति। कल का दिन रमणीय होगा।

गत *– आगामि ये भी विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते है।*

गतः मासः	**आगामि मासः**
गता रात्रिः	**आगामिनी तिथिः**
गतं वर्षम्	

पुरातनम् नूतनम्- ये दोनों शब्द भी विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

पुरातनः पुरातनी पुरातनम् नूतनः नूतना नूतनम्

पुरातनः वृक्षः अस्ति।	पुराना वृक्ष है।
नूतनः ग्रन्थः अस्ति।	नया ग्रन्थ है।
पुरातनी वाटिका अस्ति।	पुरानी वाटिका है।
नूतना लेखनी अस्ति।	नई लेखनी है।
पुरातनं पुष्पम् अस्ति।	पुराने फूल हैं।
नूतनं गृहम् अस्ति।	नया घर है।

(पुरातनं, नूतनं की जगह प्राचीनं, नवीनं का भी प्रयोग सम्भव है।)

☞ **दीर्घः -ह्रस्वः, स्थूलः, कृशः विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।**

बाहुः दीर्घः अस्ति।	बाहें लम्बे है।
पंक्तिः दीर्घा अस्ति।	पंक्ति लम्बी है।
स्थानं दीर्घम् अस्मि।	स्थान लम्बी है।
ह्रस्वः दण्डः अस्ति।	डंडा छोटा है।
ह्रस्वी रेखा अस्ति।	रेखा छोटी है।
व्यजनं ह्रस्वम् अस्ति।	पंखा छोटा है।
रामः स्थूलः अस्ति।	राम मोटा है।
सीता स्थूला अस्ति।	सीता मोटी है।
मार्गः कृशः अस्ति।	रास्ता संकरा है।
सञ्चिका कृशा अस्ति।	फाईल पतली है।
द्वारं कृशम् अस्ति।	द्वार संकरा है।

मोहनः कृशः अस्ति।	मोहन पतला है।
महिला कृशा अस्ति।	महिला पतली है।
शरीरं कृशम् अस्ति।	शरीर पतला है।

निश्चयेन -यह ततीयान्त शब्द है यह क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है। जहाँ निश्चय है वह 'निश्चयेन' को प्रयोग तथा जहाँ थोड़ा भी सन्देह है वहाँ बहुशः अथवा प्रायशः इस अव्ययपद को प्रयोग होता है।

अद्य निश्चयेन वृष्टिः भविष्यति।	आज निश्चित ही वर्षा होगी।
अद्य बहुशः वृष्टिः भविष्यति।	आज प्रायः वृष्टि होगी।

☞ *एतादृश, तादृश व कीदृश इन पदों का भी प्रयोग विशेषण के रूप में होता है।*

एतादृशः विद्यालयः अन्यत्र नास्ति।	ऐसा विद्यालया अन्यत्र नहीं है।
एतादृशी वाटिका अन्या नास्ति।	ऐसी वाटिका अन्य नहीं है।
एतादृशं मन्दिरं प्रायः न दृश्यते।	ऐसा मन्दिर प्रायः नहीं दिखता।
तादृशं ग्रन्थं कोऽपि न लिखति।	वैसा ग्रन्थ कोई भी नहीं लिखता है।
तादृशी पत्रिका पूर्वं न पठिता।	वैसी पत्रिका पहले नहीं पढ़ी।
तादृशं गृहं गमनयोग्यम्।	वैसा घर जाने योग्य है।
सः कीदृशः बालकः अस्ति?	वह कैसा लड़का है?
सा कीदृशी बालिका अस्ति?	वह कैसी लड़की है?
तत् कीदृशम् उद्यानम् अस्ति?	वह कैसा उद्यान है?

☞ *रिक्तम्-पूर्णम्-विशेषण के रूप में प्रयोग होते है।*

कोषः रिक्तः अस्ति।	जेब खाली है।
नदी रिक्ता अस्ति।	नदी खाली है।
गृहं रिक्तम् अस्ति।	घर खाली है।
चषकः पूर्णः अस्ति।	ग्लास भरा है।
द्रोणी पूर्णा अस्ति।	बाल्टी भरी है।
उद्यानं पूर्णम् अस्ति।	उद्यान भरा है।

☞ यः, या, यं ये विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

यः कार्यं करोति सः कार्यकर्ता।	जो कार्य करता है वह कार्यकर्ता।

यः गायति सः गायकः।	जो गाता है वह गायक।
यः पठति सः पाठकः।	जो पढ़ता है वह पाठक।
यः अध्यापयति सः अध्यापकः।	जो पढ़ाता है वह अध्यापक।
यः नृत्यति सः नर्तकः।	जो नाचता है वह नर्तक।
या गायति सा गायिका।	जो गाती है वह गायिका।
या अभिनयं करोति सा अभिनेत्री।	जो अभिनय करती है वह अभिनेत्री।
या नृत्यति सा नर्तकी।	जो नाचती है वह नर्तकी।
ये तीर्थं गच्छन्ति ते तीर्थयात्रिणः।	जो तीर्थ जाते हैं वे तीर्थयात्री।
याः प्रशिक्षणं ददति ताः प्रशिक्षिकाः।	जो प्रशिक्षण देती हैं वे प्रशिक्षिकायें।

विशेषण के रूप में पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसक लिंग में आवश्यकः, आवश्यकी एवं आवश्यकं प्रयुक्त होते हैं सरलता हेतु लिंगानुसार सूची –

आवश्यकः	**आवश्यकी**	**आवश्यकम्**
चाकलेहः	शाटिका	पुस्तकम्
अभ्यासः	श्रद्धा	औषधम्
तालः	छुरिका	तलम्
दीपः	पेटिका	आरोग्यम्
हस्तः	यवनिका	कार्यम्
शिरः	स्थालिका	भावचित्रम्
कूष्माण्डः	पुनः पूरणी	ताडनम्
मार्गः	निद्रा	मधुरम्
देवालयः	शक्तिः	कष्टम्
कटः	इच्छा	फेनकम्
दण्डः	कुञ्चिका	व्यजनम्
गुणः	वंशी	स्वेदकम्
आहारः	विनोदकणिका	रक्षणम्
कण्डोलः	चेष्टा	उरुकम्

चषकः	पादरक्षा	पुष्पम्
उत्साहः	मरीचिका	अन्नम्
ग्रन्थः	द्विचक्रिका	आच्छादकम्
कर्णः	शय्या	युतकम्
गर्वः	उत्पीठिका	फलम्
गुडः	क्रीडा	कङ्कणम्
कालः	द्रोणी	आनुकूल्यम्
विकासः	क्रान्तिः	क्वथितम्
पिञ्जः	यानपेटिका	भोजनम्
प्रोञ्छः	लेखनी	बीजम्
स्यूतः	कूपी	चक्रम्
समयः	अनुमतिः	मनोरंजनम्
चमसः	प्रवृत्तिः	पत्रम्
आनन्दः	सहना	चित्रम्
दर्पणः	शर्करा	भाषणम्
वृक्षः	घटी	धनम्
प्रकाशः	आशा	नयनम्
कुड्मलः	जिह्वा	समपत्रम्
दन्तः	प्रेरणा	द्वारम्
ललाटः	सञ्चिका	ज्ञानम्
अवकरः	वृद्धिः	स्थानम्
अवकाशः	चर्चा	वाहनम्

सप्तम् : अध्याय
उपसर्गों का परिचय

उपसर्ग एवं गतिसंज्ञक शब्द

संस्कृत में उपसर्गों का बड़ा महत्व है। इनके किसी धातु या शब्द के पहले लगने से अर्थ बदलते हैं। उपसर्गों की संख्या 22 है। प्रहार में प्र, संहार में सम्, विहार में वि, आहार में आ उपसर्ग है। उपसर्गों के लगाने से अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। यथा-

गच्छति = जाता है

उपसर्ग

आ + गच्छति	=	आगच्छति	=	आता है।
अनु + गच्छति	=	अनुगच्छति	=	पीछे जाता है।
प्रति + आगच्छति	=	प्रत्यागच्छति	=	लौट कर आता है।
अव + गच्छति	=	अवगच्छति	=	समझता है।
निः + गच्छति	=	निर्गच्छति	=	निकलता है।

भवति = होता है।

उपसर्ग

प्र + भवति	=	प्रभवति	=	कर सकता है।
अनु + भवति	=	अनुभवति	=	अनुभव करता है।
सम् + भवति	=	सम्भवति	=	सम्भव है।

करोति = करता है।

उपसर्ग

अनु + करोति	=	अनुकरोति	=	अनुकरण करता है।
पुरः + करोति	=	पुरस्करोति	=	आगे करता है। अथवा सामने करता है।
नमः + करोति	=	नमस्करोति	=	नमस्कार करता है।

यहाँ पुरः और नमः गति शब्द कहलाते है।

तिष्ठति = रुकता है अथवा ठहरता है।

उपसर्ग

उत् + तिष्ठति	=	उत्तिष्ठति		उठता है।
अनु + तिष्ठति	=	अनुतिष्ठति		पश्चात् बैठता है।
हरति	=	हरण करता है।		

उपसर्ग

प्र + हरति	=	प्रहरति		प्रहार करता है।
वि + हरति	=	विहरति	=	विहार करता है।
परि + हरति	=	परिहरति	=	परिहार समाधान करता है।

उपसर्गों की संख्या 22 है। ये हैं - प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, दुस्, निर्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि और उप।

1. **आ** आ + गम् (आना)
   शीघ्रम् आगच्छ, वयं गृहं गच्छामः।
   जल्दी आ, हम सब घर जाते हैं।
2. **प्रति** प्रति + आ + गम् (लौटना)
   दीपकः विद्यालयात् गृहं प्रत्यागच्छति।
   दीपक विद्याल से घर लौटता है।
3. **प्र** प्र + भू (सकना)
   अहं इदं कार्यं कर्तुं प्रभवामि।
   मैं इस कार्य को कर सकता हूँ।
   प्र विश् (प्रवेश करना)
   अध्यापकः कक्षं प्रविशति।
   अध्यापक कक्ष में प्रवेश करता है।
4. **वि** वि + स्मृ (भूल जाना)
   मन्दबुद्धिः छात्रः पाठं विस्मरति।
   मन्दबुद्धि छात्र पाठ भूलता है।
5. **उत्** उत् + स्था (उठना)
   उत्तिष्ठ; सूर्यः उदितः अस्ति।
   उठो, सूर्य निकल आया है।
6. **आ** आ + नी (लाना)
   रमेशः पितरम् आनयति।
   रमेश पिताजी को लाता है।

7. **प्र** प्र + हृ (प्रहार करना)
दुष्टः सज्जने अपि प्रहरति।
दुष्ट सज्जन पर भी प्रहार करता है।

8. **अनु** अनु + भू (अनुभव करना)
सज्जनः परोपकाराय कष्टं न अनुभवति।
सज्जन परोपकार के लिए कष्ट अनुभव नहीं करता।

9. **आ** आ + रुह (चढ़ना)
वानरः वृक्षम् आरोहति।
वानर वृक्ष पर चढ़ता है।

10. **वि** वि + हृ (विहार करना)
वृद्धः उपवने प्रातः विहरति।
वृद्ध बगीचे में प्रातः विहार करता है।

11. **उत्** उत् + पत् (उड़ना)
खगाः आकाशे उत्पतन्ति।
पक्षी आकाश में उड़ते हैं।

12. **अनु** अनु + गम् (पीछे चलना)
पुत्रः पितरम् अनुगच्छति।
पुत्र पिता के पीछे-पीछे जाता है।

13. **अप** अप + आ + कृ (दूर करना)
सत्संगतिः कुविचारान् अपाकरोति।
सत्संगति बुरे विचारों को दूर करती है।

14. **निस्** निस् + गम् (निकलना)
बालकः गृहात् निर्गच्छति।
बालक घर से निकलता है।

15. **अनु** अनु + ज्ञा (अनुमति देना)
माता पुत्रं पर्यटनाय अनुजानाति।
माता पुत्र को पर्यटन की अनुमति देती है।

16. **उप** उप + दिश् (उपदेश देना)
अध्यापकः छात्रं सद्विचारान् उपदिशति।
अध्यापक छात्र को अच्छे विचारों का उपदेश देता है।

कुछ उपसर्गों के लगने से कुछ परस्मैपदी धातु आत्मेनपदी बन जाते है। **यथा - जयति - विजयते, गच्छति - संगच्छते।**

इसी प्रकार उपसर्गों के लगने से कुछ आत्मनेपदी धातु परस्मैपदी भी बन जाते है। यथा- ***रमते - विरमति, तिष्ठति - प्रतिष्ठते, उपतिष्ठते*** *इत्यादि।*

कुछ शब्द गति कहलाते हैं। उनके भी लगने से धातुओं के अर्थ में परिवर्तन होता हैं गति ये हैं - सत्, नमः, साक्षात्, अन्तः, अस्तम्, अपि, प्रादुः, पुरः इत्यादि।

कतिपय क्त्वार्थक प्रत्यय सोपसर्ग होते हैं। प्रायः ल्यप् (य) प्रत्यय उपसर्ग के साथ प्रयुक्त होते हैं।

1. द्वितीया विभक्ति के साथ-उद्दिश्य (लक्ष्य में रखकर, ओर, बारे में वास्ते, पर), आदाय (लाकर), गृहीत्वा (लेकर), नीत्वा (लेकर, से), अधिष्ठाय, अवलम्ब्य, आश्रित्य, आस्थाय (ग्रहणकर, लेकर, द्वारा), मुक्त्वा, परित्यज्य, वर्जयित्वा (छोड़कर, सिवाय), अधिकृत्य (मुख्य स्थान पर रखकर अर्थात् विषय में, बारे में)।
2. पंचमी विभक्ति के साथ-आरभ्य (आरम्भ करके, तब से लेकर)।

अष्टम : अध्याय

वाच्य ज्ञान

वाच्य-वाच्य तीन प्रकार के होते है -

1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य, 3. भाववाच्य

1. **कर्तृवाच्य**-कर्तृ वाच्य में कर्ता क्रिया का सम्बन्ध होता है कर्म क्रिया का नहीं। इस वाच्य में कर्तृपद प्रथमा विभक्ति में तथा कर्मपद द्वितीया विभक्ति में होते है। क्रिया पद कर्तापद का अनुसरण करता है। अर्थात् कर्तृपद जिस लिङ्ग और वचन में होता है क्रिया पद भी उसी लिङ्ग और वचन में होगा। यथा - **रामः पाठं पठति।** राम पाठ पढ़ता है।

इस उदाहरण में राम कर्ता है। अतः वह कर्तृपद हुआ। 'पाठम्' यह कर्म होने के कारण कर्म पद हुआ। 'पठति' क्रिया पद है। **बालकाः पाठं पठन्ति।** बालक पाठ पढ़ते हैं।

बहुवचन कर्तृपद प्रयोग होने पर बहुवचन क्रिया का प्रयोग होता है।

सकर्मक धातुओं से कर्मवाच्य में धातु के आगे यक् (य) प्रत्यय होता है, और सदा आत्मनेपद का प्रयोग होता है। रूप मन् धातु के समान (मन्यते) चलते है। कर्मवाच्य में कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा तथा क्रिया कर्मानुसार होती है।

2. **कर्मवाच्य** - कर्म वाच्य में कर्ता को क्रिया से सम्बन्ध न होकर 'कर्म क्रिया सम्बन्ध' होता है। इस वाच्य में कर्तृपद तृतीया विभक्ति में तथा कर्मपद प्रथमा विभक्ति में होता है। क्रिया पद के अन्त में 'यते' इस प्रकार का शब्द प्रायशः उच्चरित होता है। यथा -कर्मवाच्य में सकर्मक धातु का प्रयोग होता है और सदा आत्मनेपदी का प्रयोग होता है।

***कर्तृवाच्य*- रामः पाठं पठति।** राम पाठ पढ़ता है।

***कर्मवाच्य*- रामेण पाठः पठ्यते।** राम के द्वारा पाठ पढ़ा जाता है।

***कर्तृवाच्य*- बालकाः पाठं पठन्ति।** बालक पाठ पढ़ते है।

***कर्मवाच्य* - बालकैः पाठः पठ्यते।** बालकों के द्वारा पाठ पढ़ा जाता है।

बालकैः पाठाः पठ्यन्ते। बालकों के द्वारा पाठ पढ़े जाते हैं।

मया कार्यं क्रियते। मेरे द्वारा कार्य किया जाता है।

मया कार्याणि क्रियन्ते। मेरे द्वारा कार्य किये जाते हैं।

अस्माभिः फलं खाद्यते।	हम लोगों द्वारा फल खाया जाता है।
अस्माभिः फलानि खाद्यन्ते।	हम लोगों द्वारा फल खाये जाते हैं।
तेन विद्यालयः गम्यते।	उसके द्वारा विद्यालय जाया जाता है।
तेन विद्यालयाः गम्यन्ते।	उसके द्वारा विद्यालय जाये जातें हैं।
तैः चलचित्रं दृश्यते।	उनके द्वारा चलचित्र देखा जाता है।
तैः चलचित्राणि दृश्यन्ते।	उनके द्वारा चलचित्र देखे जातें हैं।
तया वाटिका गम्यते।	उसके द्वारा वाटिका जाया जाता है।
तया वाटिकाः गम्यन्ते।	उसके द्वारा वाटिका जाया जाता है।
ताभिः पुस्तकं पठ्यते।	उनके द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती हैं।
ताभिः पुस्तकानि पठ्यन्ते।	उनके द्वारा पुस्तके पढ़ी जाती हैं।
केन दुग्धं पीयते?	किसके द्वारा दूध पीया जाता है?
कैः रसगोलकं आस्वाद्यते?	किनके द्वारा रसगुल्ला का स्वाद लिया जाता है ?
कैः रसगोलकानि आस्वद्यन्ते।	किनके द्वारा रसगुल्ले का स्वाद लिये जाते हैं।
कया पत्रं लिख्यते?	किसके द्वारा पत्र लिखा जाता है?
कया पत्राणि लिख्यन्ते?	किसके द्वारा पत्र लिखे जाते हैं?
त्वया ग्रन्थः पठ्यते।	तुम्हारे द्वारा ग्रन्थ पढ़ा जाता है।
त्वया ग्रन्थाः पठ्यन्ते।	तुम्हारे द्वारा ग्रन्थों को पढ़ा जाता है।
युष्माभिः गृहं गम्यते।	तुम लोगों द्वारा घर जाया जाता है।
युष्माभिः गृहाणि गम्यन्ते।	तुम लोगों द्वारा घरों को जाया जाता है।

इन उदाहरणों में कर्म की प्रथमा विभक्ति तथा कर्ता तृतीया विभक्ति में प्रयुक्त है।

3. **भाव वाच्य**-अकर्मक धातुओं से भाववाच्य में 'यक्' प्रत्यय होता है तथा कर्मवाच्य के समान ही आत्मनेपद का प्रयोग होता है, परन्तु भाववाच्य में केवल प्रथम पुरुष के एक वचन का ही प्रयोग होता है। प्रेरणार्थक क्रियायें संकर्मक होती है अतः उनके भाववाच्य रूप नहीं होते है। यथा –

मया शय्यते।	मेरे द्वारा सोया जाता है।
अस्माभिः शय्यते।	हमारे द्वारा सोया जाता है।
तेन जागर्य्यते।	उसके द्वारा जागा जाता है।
तैः जागर्य्यते।	उनके द्वारा जागा जाता है।
तया जीव्यते।	उसके द्वारा जीया जाता है।
ताभिः जीव्यते।	उनके द्वारा जीया जाता है।
बालकेन क्रीड्यते।	बालक के द्वारा खेला जाता है।
बालकैः क्रीड्यते।	बालकों के द्वारा खेला जाता है।

इन उदाहरणों में भाव के कर्ता की तृतीया विभक्ति है।

नवम : अध्याय

लिङ्ग ज्ञान

लिङ्ग की दृष्टि से संस्कृत के शब्द तीन प्रकार के होते है पुंल्लिङ्ग शब्द स्त्रीलिङ्ग शब्द और नपुंसक लिंग शब्द। अन्तिम वर्ण की दृष्टि से संस्कृत के शब्दों के दो भेद हैं –

1. स्वरान्त शब्द – वे शब्द जिन के अन्त में स्वर हो। यथा–देव, फल लता, मुनि, मति, वारि। ऐसे शब्द को अजन्त शब्द भी कहते हैं।
2. व्यञ्जनान्त शब्द–वे शब्द जिनके अन्त में व्यंजन हो। जैसे–वे शब्द जिनके अन्त में व्यंजन हो। जैसे –राजन्, शशिन्, बुद्धिमत्, बलवत् इत्यादि। इस विभाजन को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है –

☞ स्वरान्त शब्द	–	पुंल्लिङ्ग शब्द	–	देव, मुनि, साधु
	–	स्त्रीलिंङ्ग शब्द	–	लता, मुनि, धेनु
	–	नपुंसकलिंङ्ग शब्द	–	फल, वारि, मधु
☞ व्यञ्जनान्तशब्द	–	पुंल्लिङ्गशब्द	–	मरुत्, चन्द्रमस्, राजन्
	–	स्त्रीलिंङ्गशब्द	–	सरित्, दिक्, वाच्
	–	नपुंसकलिंङ्गशब्द	–	जगत्, मनस्, नामन्

संस्कृत में लिंङ्ग की दृष्टि से शब्दों को पहचान पाना सरल नहीं है। इसके लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है। जैसे मित्र शब्द पुरूष जाति का बोध कराता है पर इसे पुंल्लिङ्ग न मानकर नुपंसकलिंग में ही मित्रम्=दोस्त शब्द का प्रयोग होता है। पुंल्लिङ्ग में मित्रः प्रयोग करने पर सूर्य के अर्थ को देता है। विद्यालय निर्जीव होने पर भी उसे संस्कृत में पुंल्लिङ्ग माना जाता विद्यालयः। कारण यह है कि संस्कृत में सजीव और निर्जीव पुंल्लिङ्ग और नपुंसकलिंङ्ग का आधार नहीं होता अपितु शब्दों के लिंग निर्धारित है उन्हीं के अनुरूप प्रयोग करना शुद्ध प्रयोग है।

किस शब्द का क्या लिङ्ग है इसका परिज्ञान व्याकरण, कोश तथा व्यवहार से करना चाहिए।

पुंल्लिङ्ग शब्द

राम, कृष्ण, छात्र, अध्यापक, पण्डित, शिक्षक, ईश्वर, संसार, विचार, मुनि, ऋषि हरि, कवि, अग्नि, अतिथि, अंजलि, सारथि, कपि, सुधी, शुद्धघी, मूढधी, गुरू, वायु, पशु,

दयालु, शत्रु, भानु, दातृ (देनेवाला), वक्तृ (बोलने वाला), श्रोतृ (सुनने वाला), कर्तृ (जानने वाला), द्रष्ट्ट (देखने वाला), ज्ञातृ (जानने वाला), पितृ, भ्रातृ, वणिज् (बनिया), भिषज् (वैद्य), मरुत्, भूभृत् (राजा, पर्वत), विपश्चित् (विद्वान), मार्ग, श्रीमत्, बुद्धिमत्, भगवत्, बलवत्, भाग्यवत्, महत्, पठत्, लिखत्, ददत्, जाग्रत्, सुहृद्, सभासद्, कलाविद्, मर्मविद्, गुणिन्, विद्यार्थिन्, मन्त्रिन्, स्वामिन्, धनिन्, तपस्विन्, सदाचारिन्, महिमन्, आत्मन्, ब्रह्मन्, यज्वन्, पथिन्, राजन्, भवत्, वेधस (ब्रह्मा), चन्द्रमस्, महायशस् (बड़ा यशस्वी), विद्वस्, (विद्वान्) गरीयस् (अधिक बड़ा), लघीयस् (अधिक छोटा), वृक्ष इत्यादि।

स्त्रीलिंग

संस्कृत में स्त्रीलिङ्ग शब्द दो प्रकार के होते हैं-

प्रथम प्रकार के- वे शब्द जो मूल रूप में स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग में लाये जाते हैं। जैसे - लता, रमा, नदी, वधू इत्यादि।

दूसरे प्रकार के-वे हैं जो पुंल्लिङ्ग शब्दों से बना लिये जाते हैं। पुंल्लिग शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता हैं, उन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

व्याकरण में इस प्रकार के चार प्रत्यय है–आ, ई, ऊ तथा ति। इन चारों में आ तथा ई का प्रयोग अधिक होता है।

आ प्रत्यय

☞ 1. पुंल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए

अश्वः	अश्वा	अजः	अजा
निपुणः	निपुणा	बालः	बाला
अचलः	अचला	कोकिलः	कोकिला
चटकः	चटका		

☞ 2. यदि पुंल्लिङ्ग शब्द में अक हो तो इसे इका में बदल दिया जाता है।

गायकः	गायिका	पाठकः	पाठिका
बालकः	बालिका	चालकः	चालिका
नायकः	नायिका	पाचकः	पाचिका
कारकः	कारिका	साधकः	साधिका

ई प्रत्यय

☞ 1. पत्नीवाचक तथा जातिवाचक शब्दों के बाद ई प्रत्यय जोड़ा जाता है।

ब्राह्मणः	ब्राह्मणी	हंसः	हंसी

काक:	काकी	गोप:	गोपी
सिंह:	सिंही	वायस:	वायसी
हरिण:	हरिणी	मार्जार:	मार्जारी
नर:	नारी		

☞ 2. जिन शब्दों के अन्त में वत्, मत्, इन् हो, उनके बाद भी इ प्रत्यय जोड़ा जाता है।

गतवत्	गतवती	धनवत्	धनवती
हसितवत्	हसितवती	बुद्धिमत्	बुद्धिमती
बलवत्	बलवती	आयुष्मत्	आयुष्मती
मतिमत्	मतिमती	धनिन्	धनिनी
श्रीमत्	श्रीमती	परोपकारिन्	परोपकारिणी
गुणिन्	गुणिनी	मन्त्रिन्	मन्त्रिणी

☞ 3. जिस शब्द के अन्त में ऋ हो, उनके बाद भी ई प्रत्यय जोड़ा जाता है।

कर्तृ कर्त्री दातृ दात्री धातृ धात्री हन्तृ हन्त्री

☞ 4. जिन गुणवाचक शब्दों के अन्त में उ होता है, उनके बाद भी ई प्रत्यय जोड़ा जाता है।

लघु, लघ्वी, पटु:, पट्वी, साधु:, साध्वी, गुरु:, गुर्वी

☞ 5. कुछ शब्दों के अन्त में अ होता है उनके बाद भी ई प्रत्यय जोड़ा जाता है –
इन्द्र:–इन्द्राणी, हिम:–हिमानी, मातुल:–मातुलानी, कल्याण:–कल्याणी

☞ 6. संख्यावाचक शब्द

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
एक:	एका	एकम्
द्वौ	द्वे	द्वे
त्रय:	तिस्र:	त्रीणि
चत्वार:	चतस्र:	चत्वारि

पाँच संख्या से आगे तीनों लिङ्गों में समान ही प्रयोग होता है।

पञ्च बालका: सन्ति। पाँच बालक है।

पञ्च बालिका: सन्ति। पाँच बालिकायें हैं।

पञ्च फलानि सन्ति। पाँच फल है।

स्त्रीलिङ्ग शब्द

विद्या, पाठशाला, शोभा, लता, शिखा, माला, प्रजा, सम्पत्ति, विपत्ति, बुद्धि, शान्ति, नीति, जाति, उन्नति, मति, नदी, लेखनी, मसी, नारी, जननी, मार्जनी, बुद्धिमती, श्रीमती, विदुषी, गच्छन्ती, कुर्वती, लक्ष्मी, स्त्री, ह्री (लज्जा), भी (डर), धेनु, चञ्चु, रज्जु (रस्सी) तनु (शरीर), श्वश्रू (सास), पुत्रवधू, कण्डू (खुजली) मातृ, स्वसृ (बहेन), दुहितृ (लड़की), गो, वाच् (वाणी) त्वच् (चमड़ा, छाल), रूज् (रोग), सरित्, विद्युत्, तडित्, योषित् (स्त्री.) आपद्, सम्पद्, शरद्, संसद् सीमन्, शाखा इत्यादि।

नपुंसकलिङ्ग

पत्र, अन्न, जल, वस्त्र, फल, मूल, शास्त्र, मित्र, वारि (पानी), दधि, अस्थि, अक्षि, मधु, जानु (घुटना), तालु, दारु (लकड़ी), जगत्, कर्मन्, नामन् (नाम) धामन् (घर) व्योमन् (आकाश), मनस्, पयस् (दूध), वयस् (उम्र), शिरस् (शिर) इत्यादि।

दशम : अध्याय

सम्भाषण के सरल तकनीक

संस्कृत सम्भाषण हेतु जहां एक ओर व्याकरण अध्ययन की आवश्यकता है वहीं निरन्तर अभ्यास भी परमावश्यक है। इसके बावजूद कुछ ऐसी तकनीकी है जिनके जानने से संस्कृत सम्भाषण करना सरल हो जाता है। वे तकनीक हैं-

☞ **युष्मद् के स्थान पर भवत् सर्वनाम का प्रयोग**–युष्मद् मध्यम पुरुष का शब्द हैं इस शब्द का प्रयोग तुम अर्थ में होता हैं जो कि पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग में समान होता है। सरल–संस्कृत–सम्भाषण में प्रवाहता निमित्त पुल्लिङ्ग में भवत् तथा स्त्रीलिङ्ग में भवती सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है। संस्कृत साहित्य में भी अधिकाधिक इन्ही सर्वनामों को प्रयोग किया गया है। विशेष बात यह है कि इन सर्वनामों के साथ प्रथम पुरुष क्रिया का प्रयोग किया जाता है न कि मध्यम पुरुष क्रिया का जबकि ये मध्यम पुरुषस्थ युष्मद् के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। यथा–

त्वं गच्छसि।	तुम जाते हो।
युवां गच्छथः।	तुम दोनो जाते हो।
यूयं गच्छथ।	तुम सब जाते हो।

इनके स्थान पर भवत्/भवती शब्द का प्रयोग देखे जहाँ प्रथम पुरुष क्रिया का प्रयोग होगा –

भवान् गच्छति।	आप जाते है।
भवती गच्छति।	आप जाती है।
भवन्तौ गच्छतः।	आप दोनों जाते हैं।
भवत्यौ गच्छतः।	आप दोनों जाती हैं।
भवन्तः गच्छन्ति।	आप सब जाते हैं।
भवत्यः गच्छन्ति।	आप सब जाती हैं।

सामान्य जीवन में भी 'तुम' के स्थान पर 'आप' शब्द उचित प्रतीत होता है। अतः भवत्/भवती शब्द के प्रयोग से भाषा में सरलता के साथ शिष्टता भी आती है।

त्वं पठ।	तुम पढ़ो।
युवां पठतम्।	तुम दोनों पढ़ो।
भवान्/भवती पठतु।	आप पढ़ो।

भवन्तः/भवत्यः पठन्तु।	आप सब पढ़ें।
त्वं कार्यं करिष्यसि।	तुम काम करोगें।
युवां कार्यं करिष्यथः।	तुम दोनों काम करोगें।
यूयं कार्यं करिष्यथ।	तुम सब काम करोगें।
इसके स्थान पर –	
भवान् कार्यं करिष्यति।	आप काम करेंगे।
भवन्तौ कार्यं करिष्यतः।	आप दोनों काम करेंगे।
भवन्तः कार्यं करिष्यन्ति।	आप सब काम करेंगे।
भवती कार्यं करिष्यति।	आप काम करेगी।
भवत्यौ कार्यं करिष्यतः।	आप दोनों काम करेगी।

☞ **अव्यय पद प्रयोग द्वारा**–सम्भाषण में अव्यय पदों के प्रयोग से भी सहजता व सरलता आती है। यथा –

अहं कुशली अस्मि।	मै ठीक हूँ।
इसके स्थान पर–	
अहं सम्यक् अस्मि।	मैं ठीक हूँ।
बालकः कुशली अस्ति।	बालक ठीक है।
इसके स्थान पर–	
बालकः सम्यक् अस्ति।	बालक ठीक है।
बालिका कुशलिनी अस्ति।	बालिका ठीक है।
इसके स्थान पर–	
बालिका सम्यक् अस्ति।	बालिका ठीक है।
यानं शोभनम् अस्ति।	गाड़ी ठीक है।
यानं सम्यक् अस्ति।	गाड़ी ठीक है।
बालकाः कुशलिनः सन्ति।	लड़के ठीक है।
बालकाः सम्यक् सन्ति।	लड़के ठीक है।
बालिकाः कुशलिन्यः सन्ति।	लड़किया ठीक हैं।
बालिकाः सम्यक् सन्ति।	लड़किया ठीक है।
यानानि शोभनानि सन्ति।	गाड़ियां ठीक है।
यानानि सम्यक् सन्ति।	गाड़ियां ठीक है।

उपर्युक्त उदाहरणों में 'सम्यक्' अव्यय पद पर ध्यान दीजिये। इसके स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं होता चाहे इसका प्रयोग पुल्लिङ्ग में हो या स्त्रीलिङ्ग में या नपुंसकालिङ्ग में तथा चाहे एकवचन, द्विवचन व बहुवचन हों।

☞ **तसिल् प्रत्यय के प्रयोग द्वारा**–पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में इस प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। इस प्रत्यय का 'तः' शब्द मात्र शेष रहता है। इस प्रत्यय का प्रयोग मूल प्रातिपदिक शब्द के साथ किया जाना चाहिये। यथा –

सः बालकात् पुस्तकं स्वीकरोति। वह बालक से पुस्तक लेता है।

इसके स्थान पर–

सः बालकतः पुस्तकं स्वीकरोति। वह बालक से पुस्तक लेता है।

अहं विद्यालयात् आगच्छामि। मैं विद्यालय से आता हूं।

अहं विद्यालयतः आगच्छामि। मैं विद्यालय से आता हूं।

आवां विद्यालयतः आगच्छावः। हम दोनों विद्यालय से आते हैं।

वयं विद्यालयतः आगच्छामः। हम सब विद्यालय से आते हैं।

बालकः गृहतः उद्यानं गच्छति। लड़के घर से उद्यान जाते हैं।

इस प्रत्यय का प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि वहाँ पञ्चमी तथा षष्ठी विभक्ति समान होती है इस प्रत्यय के प्रयोग से पञ्चमी का स्पष्ट बोध हो जाता है। यथा –

सः बालिकायाः पुस्तकं स्वीकरोति। वह लड़की से पुस्तक लेता है।

सः बालिकातः पुस्तकं स्वीकरोति। वह लड़की से पुस्तक लेता है।

सः नद्याः जलम् आनयति। वह नदी से जल लाता है।

सः नदीतः जलम् आनयति। वह नदी से जल लाता है।

ऊपर के इन उदाहरणों में मूल विभक्ति शब्दों यथा बालिकायाः/नद्याः रूप पञ्चमी तथा षष्ठी में समान होता हैं। वह लड़की की पुस्तक लेता है। अथवा लड़की से पुस्तक लेता है स्पष्ट नहीं होता इसी प्रकार नदी का जल लाता है नदी से जल लाता है यह भी अस्पष्ट है इसीलिए तसिल् प्रत्यय का प्रयोग उपर्युक्त है इससे अपादान का ज्ञान होता है।

☞ **चतुर्थी विभक्ति के लिए कृते का प्रयोग**–यदि हम षष्ठी विभक्ति के आगे साथ 'कृते' शब्द का प्रयोग करें तो इसका अर्थ चतुर्थी विभक्ति में होता हैं। 'कृते' एक अव्यय पद है। यथा –

भक्तः गणेशाय मोदकं ददाति।	भक्त गणेश को लडडू देता है।

इसके स्थान पर–

भक्तः गणेशस्य कृते मोदकं ददाति।	भक्त गणेश के लिए लडडू देता है।
माता पुत्राय दुग्धं ददाति।	माता पुत्र के लिए दूध देती है।
माता पुत्रस्य कृते दुग्धं ददाति।	माता पुत्र के लिए दूध देती है।
सः तस्मै धनं ददाति।	वह उसके लिए धन देता है।
सः तस्य कृते धनं ददाति।	वह उसके लिए धन देता है।
शिक्षिका रमायै पुस्तकं ददाति।	शिक्षिका रमा के लिए पुस्तक देती है।
शिक्षिका रमायाः कृते पुस्तकं ददाति।	शिक्षका रमा के लिए पुस्तक देती है।
माता तस्यै वस्त्रं ददाति।	माँ उसके लिए कपड़े देती है।
माता तस्याः कृते वस्त्रं ददाति।	माँ उसके लिए कपड़े देती है।
पिता पुत्र्यै शाटिकां ददाति।	पिता पुत्री को साड़ी देता है।
पिता पुत्र्याः कृते शाटिकां ददाति।	पिता पुत्री के लिए साड़ी देता है।

☞ **सङ्ख्या का सरल प्रयोग**–संस्कृत में प्रारम्भिक एक से चार सङ्ख्या तक लिङ्ग भेद पाया जाता है तदनन्तर कोई भेद नही होता। यथा–

बालकः गच्छति।	लड़का जाता है।
बालिका गच्छति।	लड़की जाती है।
यानं गच्छति।	गाड़ी जाती है।
द्वौ बालकौ गच्छतः।	दो लड़के जाते है।
द्वे बालिके गच्छतः।	दो लड़कियां जाती है।
द्वे याने गच्छतः।	दो गाड़ियां जाती है।
त्रयः बालकाः गच्छन्ति।	तीन लड़के जाते हैं।
तिस्रः बालिकाः गच्छन्ति।	तीन लड़कियां जाती है।
त्रीणि यानानि गच्छन्ति।	तीन गाड़ियां जाती है।
चत्वारः बालकाः गच्छन्ति।	चार लड़के जाते हैं।
चतस्रः बालिकाः गच्छन्ति।	चार लड़कियां जाती है।
चत्वारि यानानि गच्छन्ति।	चार गाड़ियां जाती है।

इन वाक्यों में सङ्ख्याओं का लिङ्गभेद स्पष्ट है। सम्भाषण के प्राथमिक स्तर पर इस तरह के वाक्यों को बोलने में कठिनाई होती है। अतः यदि इसको सरल रूप में व्यवहार करे तो सम्भाषण में इस कठिनाई से छुटकारा पाया जा सकता है। सङ्ख्या पाँच से कोई लिङ्गभेद नही होता। यथा –

बालकः गच्छति।	लड़का जाता है।
बालिका गच्छति।	लड़की जाती है।
यानं गच्छति।	गाड़ी जाती है।
बालकद्वयं गच्छति।	दो लड़के जाते हैं।
बालिकाद्वयं गच्छति।	तीन लड़कियां जाती है।
यानत्रयं गच्छति।	चार गाड़ियां जाती है।
बालकचतुष्टयं गच्छति।	चार लड़के जाते है।
बालिकाचतुष्टयं गच्छति।	चार लड़कियां जाती है।
यानचतुष्यटयं गच्छति।	चार गाड़ियां जाती है।
पञ्च बालकाः सन्ति।	पाँच लड़के हैं।
पञ्च बालिकाः सन्ति।	पाँच लड़कियां है।
पञ्च यानानि सन्ति।	पाँच गाड़ियां है।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्रातिपदिक शब्द से द्वयं, त्रयं, चतुष्टयं योजित कर इस सङ्ख्या समस्या का सामाधान किया जा सकाता हैं। क्योंकि ये सङ्ख्यायें नपंसकलिङ्ग एक वचन में प्रयुक्त है अतः इनके साथ आने वाली क्रिया भी एक वचन की होती है।

☞ **शुद्ध हिन्दी शब्दों के ज्ञान से सरलता**–सम्भाषण में यदि हम शुद्ध हिन्दी शब्दों को ज्ञान रखें तो सरलता व सहजता आती हैं क्योंकि अधिकाधिक शुद्ध हिन्दी शब्द संस्कृतनिष्ठ होते है। यथा –

हिन्दी	**संस्कृतम्**	**हिन्दी**	**संस्कृतम्**
जल	जलम्	भोजन	भोजनम्
अन्न	अन्नम्	फल	फलम्
दुग्ध	दुग्धम्	शक्कर	शर्करा
रोटी	रोटिका	साँझ	सन्ध्या
रात	रात्रिः	भूमि	भूमिः

छाया	छाया	वर्षा	वर्षा
तिल	तिलः	शोक	शोकः
ताप	तापः	लाभ	लाभः
हानि	हानिः	पशु	पशुः
मित्र	मित्रम्	पुण्य	पुण्यम्
पाप	पापम्	आकाश	आकाशः

ऊपर निर्दिष्ट संस्कृतनिष्ठ हिन्दी शब्दों के ज्ञान से संस्कृत सम्भाषण में सहजता आती है।

☞ **शब्द रूप संरचना में सरलता द्वारा**—यदि हमें बहुत सारे शब्द रूप रटने के स्थान पर हमारा कार्य मात्र चार प्रकार के शब्दरूपों से चल जाये जो समय की बचत व सम्भाषण में प्रवाहता आ सकती हैं। हमें करना ये है कि पुल्लिङ्ग के सभी शब्दों को अकारान्त प्रयोग करें यथा—

रविः	रविमहोदयः	साधुः	साधुवरः
कविः	कविवरः	सुचेता गाँधी,	सुचेतागाँधीमहोदया
मुनिः	मुनिवरः		
राजन्	महाराजः		

ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि हम पुल्लिङ्ग के प्रातिपदिक अकारान्त भिन्न शब्दों के आगे महोदय/वर आदि शब्द लगाकर उन्हें अकारन्त बना सकते है और स्त्रीलिङ्ग के शब्दों में महोदया विशेषण को लगाकर आकारान्त शब्दों की संरचना कर सकते है। संक्षेप में निम्नलिखित लिङ्ग के निम्नलिखित अन्तशब्दों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

पुलिङ्ग	एकमात्र अकारान्त (यथा—राम)
स्त्रीलिङ्ग	दो आकारान्त व ईकारान्त (यथा—लता, लेखनी)
नपुंसकलिङ्ग	एकमात्र अकारान्त (यथा—फल, विश्व)

भिन्न शब्द से अन्त होने वाले शब्दों के पर्याय से भी सहायता मिलती है यथा नपुसंकलिङ्ग का जगह शब्द रूप भिन्न है अतः विश्व (विश्वम्) शब्द का चयन करें। ज्ञान तो सभी शब्द रूपों का हो तो बहुत अच्छा है परन्तु प्राथमिक स्तर पर इन तरीकों द्वारा सम्भाषण में दक्षता व प्रवाहता प्राप्त की जा सकती है।

☞ धातुरूपों में भी किसी एक धातु पद के आम्मनेपदी व परस्मैपदी धातु का ज्ञान आवश्यक है अन्य उससे मिलते जुलते धातु शब्दों को प्रयोग करना चाहिए क्योंकि उनका रूप उसी भाँति चलेगा। (यथा–पठ, लिख्, भू, गम्, खाद्, पिब् आदि) भिन्न धातु पद का विच्छेद क्रिया द्वारा प्रयोग करें। सरल संस्कृत सम्भाषण हेतु विभज्य प्रयोग एक उत्तम तकनीक है यथा- श्रृणोति शब्द श्रु धातु से तिङ् प्रत्यय करके बना है। यहाँ कदाचित् क्लिष्टता का अनुभव हो सकता है। इसको सरल करने हेतु *'श्रवणं करोति'* इस शब्द का प्रयोग कर सकते है। इसी प्रकार अन्य क्लिष्ट धातुओं को विभक्त कर हम सम्भाषण में प्रवाह ला सकते है। यथा -

सः पुस्तकं स्मरति। वह पुस्तक याद करता है।

यहाँ स्मृ धातु है। इसको विभज्य प्रयोग करते समय कर्म में षष्ठी विभक्ति लगा देते है।

सः पुस्तकं स्मरणं करोति। वह पुस्तक का स्मरण करता है।

शिष्यः गुरुं नमति। शिष्य गुरु को नमन करता है।

शिष्यः गुरोः नमनं करोति । शिष्य गुरु का नमन करता है।

शिष्यौ गुरुं नमतः। दो शिष्य गुरु को नमन करते हैं।

शिष्यौ गुरोः नमनं कुरुतः। दो शिष्य गुरु का नमन करते हैं।

शिष्याः गुरुं नमन्ति। शिष्य गुरु को नमन करते हैं।

शिष्याः गुरोः नमनं कुर्वन्ति। शिष्य गुरु का नमन करते हैं।

बालकेन गुरुः सेवते। बालक गुरु की सेवा करता है।

बालकेन गुरोः सेवनं क्रियते। बालक गुरु की सेवा करता है।

मृगः अटति। हिरण घूम रहा है।

मृगः अटनं करोति। हिरण घूम रहा है।

माता वस्त्रं क्रीणाति। माता वस्त्र खरीदती है।

माता वस्त्रस्य क्रयणं करोति। माता वस्त्र खरीदती है।

दुःशासनः द्रौपद्याः चीरं कर्षति। दुःशासन द्रौपदी का चीर खीचता है।

दुःशासनः द्रौपद्याः चीरस्य कर्षणं करोति। दुःशासन द्रौपदी का चीर खीचता है।

बालकः मोदकम् इच्छति। बालक लड्डू चाहता है।

बालकः मोदकस्य इच्छां करोति। बालक लड्डू चाहता है।

आपणिकः वस्तूनि गृहणाति।	दुकानदार समान लेता है।
आपणिकः वस्तूनि ग्रहणं करोति।	दुकानदार समान लेता है।
माता वस्त्रं कर्तयति।	माता कपड़े काटती है।
माता वस्त्रस्य कर्तनं करोति।	माता कपड़े की कटाई करती है।
पुष्पैः कम्प्यते।	फूल हिलते हैं।
पष्पैः कम्पनं क्रियते।	फूल हिलते हैं।
सः रोदिति।	वह रोता है।
सः रोदनं करोति।	वह रोता है।
सः क्रीणाति।	वह खरीदता है।
सः क्रयणं करोति।	वह खरीदता है।
सः निन्दति।	वह निन्दा करता है।
सः निन्दां करोति।	वह निन्दा करता है।

☞ **धातु पदों के स्थान पर प्रत्यय निर्मित पदों द्वारा**—भूतकाल के धातु रूप को रटने के स्थान पर 'क्तवतु' प्रत्यय द्वारा निर्मित शब्द का प्रयोग करने से भी सम्भाषण को सरल बनाया जा सकता है। यथा –

सः अगच्छत्।	वह गया।	**सः गतवान्।**	वह गया।
अहम् अगच्छम्।	मैं गया।	**अहं गतवान्।**	मैं गया।
बालिका अपठत्।	बालिका पढ़ी।	**बालिका पठितवती।**	बालिका पढ़ी।
तौ पुं. अपठताम्।	दोनों ने पढ़ा।	**तौ पुं. पठितवन्तौ।**	दोनों ने पढ़ा।
आवाम् अपठाव।	हम दोनों ने पढ़ा।	**आवां पठितवन्तौ।**	हम दोनों ने पढ़ा।
ते (स्त्री.) अपठताम्।	उन दोनों ने पढ़ा।	**ते (स्त्री.) पठितवत्यौ।**	उन दोनों ने पढ़ा।
ते (पुं.) अपठन्।	वे सब पढ़े।	**ते (पुं.) पठितवन्तः।**	वे सब पढ़े।
वयम् अपठाम।	हम लोग पढ़े।	**वयं पठितवन्तः।**	हम लोग पढ़े।
ताः (स्त्री.) अपठन्।	वे सब पढ़ी।	**ताः (स्त्री.) पठितवत्यः।**	वे सब पढ़ी।

☞ **इसी प्रकार विधिलिङ् (चाहिए अर्थ) में तव्यत्/अनीयर प्रत्यय प्रयोग द्वारा** सम्भाषण में सरलता लायी जा सकती है। यथा –

तेन ग्रन्थः पठियव्यः/पठनीयः।	उसके द्वारा ग्रन्थ पढ़ा जाना चाहिये।
मया पुस्तकं पठितव्यं/पठनीयम्।	मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी जानी चाहिये।

मया गृहं गन्तव्यं /गमनीयम्।	उसके द्वारा घर जाया जाना चाहिये।

अन्यथा सः पठेत्/अहं पठेयम्/सा गच्छेत् आदि का प्रयोग करना पड़ता। इस प्रकार प्रत्ययों के प्रयोग से शब्द निर्माण प्रक्रिया सरल होती है जिससे सहजतापूर्वक वाक्य बोले जा सकते है। उपर्युक्त भिन्न–भिन्न तरीकों को अपनाकर सम्भाषण में सहजता लायी जा सकती है।

☞ **समस्तपद निर्माण द्वारा सरलता –** समस्तपद निर्माण कर सम्भाषण में प्रयोग करने से सहजता आती है। सामान्यतः विशेषण शब्दों से शब्दों को जोड़ दिया जाता है। यथा –

पुरातनस्यूतः अस्ति।	पुराना थैला है।
पुरातनस्यूतौ स्तः।	दो पुराने थैले हैं।
पुरातनस्यूताः सन्ति।	पुराने थैले हैं।
पुरातनघटी अस्ति।	पुरानी घड़ी है।
पुरातनघट्यो स्तः।	दोनों पुरानी घड़ियाँ हैं।
पुरातनघट्यः सन्ति।	पुरानी घड़ियाँ हैं।
नूतनपुस्तकम् अस्ति।	नयी पुस्तक है।
नूतनपुस्तके स्तः।	दोनों नयी पुस्तकें हैं।
नूतनपुस्ताकानि सन्ति।	नयी पुस्तकें हैं।

ऊपर के उदाहरणों में लिंग भेद स्पष्ट होने पर भी विशेषण को समस्त पद बना देने से विशेषण के ऊपर कोई अन्तर नहीं आया। इस प्रकार के समस्तपदों से निर्मित वाक्यों को बोलने में सहजता होती है। अन्यथा ऊपर के वाक्यों के निम्न रूप बनते।

पुरातनः स्यूतः अस्ति।	थैला पुराना है।
पुरातनौ स्यूतौ स्तः।	दो थैले पुराने हैं।
पुरातनाः स्यूताः सन्ति।	थैले पुराने हैं।
पुरातनी घटी अस्ति।	घड़ी पुरानी है।
पुरातन्यौ घट्यौ स्तः।	दो घड़ियां पुरानी हैं।
पुरातन्यः घट्याः सन्ति।	घड़ियां पुरानी हैं।
नतूनं पुस्तकम् अस्ति।	पुस्तक नयी है।
नूतने पुस्तके स्तः।	दो पुस्तक नयी है।
नूतनानि पुस्तकानि सन्ति।	पुस्तकें नयी हैं।

इसी प्रकार समस्त पद में द्वितीय पद की जो विभक्ति होती है वही विभक्ति प्रथम पद की भी होती है परन्तु समस्त पद में वह दिखायी नहीं देती। यथा–

प्र.वि. **उत्तमगयिका अस्ति।** अच्छा गानेवाली है।

द्वि.वि. **उत्तमबालकं पश्यामि।** अच्छे बच्चे को देखता हूँ।

तृ.वि. **उत्तममित्रेण सह गच्छामि।** अच्छे मित्र के साथ जाता हूँ।

च.वि. **उत्तमबालकाय पारितोषिकं ददामि।** अच्छे बालक को पुरस्कार देता हूँ।

प.वि. **उत्तमवाटिकायाः पुष्पम् आनयामि।** अच्छी वाटिका से फूल लाता हूँ।

ष.वि. **उत्तमपुस्तकस्य नाम कामायनी।** अच्छी पुस्तक का नाम कामयनी है।

स.वि. **उत्तमबालके गुणाः सन्ति।** अच्छे बच्चें में गुण हैं।

इसी प्रकार सुन्दर, समीचीन, विशाल, पुरातन, नूतन, उत्तम, बहु, दीर्घ, ह्रस्व, स्थूल, कृश आदि विशेषण शब्दों का समस्त पद में प्रयोग कर अधिक परिश्रम से बचा जा सकता है और सम्भाषण में सहजता व सरलता भी आती है।

●●

प्रचलित पद्य–

कालस्य कुटिला गतिः–
समय की गति कुटिल है।

किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ! –
सुन्दर शरीर पर कौन सी वस्तु अच्छी नहीं लगती!

सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः–
विलकुल न होने से थोड़ा होना अच्छा है।

गुणा विनयेन शोभयन्ते–
गुणों की शोभा नम्रता से होती है।

म्हाजनो येन गतः सः पन्थाः–
बड़ों की राह अच्छी होती है।

प्रथम : अध्याय
सन्धि परिचय

जब दो समीपवर्ती वर्ण आपस में मिलते हैं तो कई बार इनमें परिवर्तन आ जाता है। दो समीपवर्ती वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को सन्धि कहते हैं। जैसे- विद्या + आलय: = विद्यालय:

यहाँ आ तथा आ-इन दो स्वरों के मेल से परिवर्तन हुआ है। अत: यहाँ सन्धि हुई है। सत् + जन: = सज्जन:

यहाँ त् और ज् इन दो व्यञ्जनों के मेल से त् के स्थान पर ज् हो गया है। अत: यहाँ भी सन्धि हुई है।

सन्धि वाले वर्णों को अलग-अलग करने को सन्धिविच्छेद कहते हैं। जैसे-

विद्यालय:	विद्या	+	आलय:
सज्जन:	सत्	+	जन:
निर्बल:	नि:	+	बल

प्रमुख सन्धि

सन्धि के तीन भेद हैं। (1) स्वर सन्धि (2) व्यञ्जन सन्धि (3) विसर्ग सन्धि।

(1) यण् सन्धि (इको यणचि) - इस संधि के अनुसार इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ को र् तथा लृ को ल् हो जाता है, यदि बाद में कोई स्वरवर्ण हो तो, समान स्वर होने पर नहीं। जैसे -

1. प्रति + एक: =प्रत्येक:
   इति + अत्र = इत्यत्र
   यदि + अपि = यद्यपि
2. अनु + अय: = अन्वय:
   मधु + अरि: = मध्वरि:
   गुरू + आज्ञा = गुर्वाज्ञा
3. भातृ + आ = भ्रात्रा
   पितृ + ए = पित्रे
4. लृ + आकृति: = लाकृति:

(2) अयादि सन्धि (एचोऽयवायाव:)-इस सन्धि के अनुसार ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् होता है, बाद मे यदि कोई स्वर हो तो। (पदान्त ए या ओ के बाद अ होगा तो उपर्युक्त परिवर्तन नहीं होगा।)

1. हरे + ए = हरये
2. भो + अति = भवति

जे + अः = जय　　　　पो + अनः = पवनः

शे + अनम् = शयनम्　　　　भो + अनम् = भवनम्

ने + अति = नयति　　　　गुरो + ए = गुरवे

3. गै + अकः = गायकः　　　　4. पौ + अकः = पावकः

नै + अकः = नायकः　　　　द्वौ + एतौ = द्वावेतौ

(3) गुण सन्धि (आद् गुणः) - इस सन्धि के अनुसार

1. अ या आ के बाद इ या ई हो तो दोनों का 'ए' होगा।
2. अ या आ के बाद उ या ऊ हो तो दोनों का 'ओ' होगा।
3. अ या आ के बाद ऋ ॠ हो तो दोनों का 'अर्' होगा।
4. अ या आ के बाद लृ हो तो दोनों को 'अल्' होगा।

1. गण + ईशः = गणेशः　　　　2. महा + उदयः = महोदयः

तथा + इति = तथेति　　　　पर + उपकारः = परोपकारः

रमा + ईशः = रमेशः　　　　महा + उत्सवः = महोत्सवः

न + इदम् = नेदम्　　　　सूर्य + उदयः = सूर्योदयः

3. महा + ऋषि = महर्षिः　　　　4. तव + लृकारः = तवल्लकारः

सप्त + ऋषिः = सप्तर्षिः

वर्षा + ऋतुः = वर्षर्तुः

(4) वृद्धि सन्धि (वृद्धिरेचि) - इस सन्धि के अनुसार

1. अ या आ के बाद ए या ऐ होगा तो दोनों को 'ऐ' होगा।
2. अ या आ के बाद ओ या औ होगा तो दोनों को 'औ' होगा।

अत्र + एकः = अत्रैकः　　　　जन + ओघः = जनौघः

न + एतत् = नैतत्　　　　वन + ओषधिः = वनौषधिः

छात्र + ऐक्यम् =छात्रैक्यम्　　　　कार्य + औचित्यम् = कार्यौचित्यम्

(5) दीर्घ सन्धि (अकः सवर्णे दीर्घः) - इस सन्धि के अनुसार अ इ उ ऋ के बाद कोई सवर्ण (सदृश) अक्षर हो तो दोनों के स्थान पर उसी का दीर्घ अक्षर हो जाता है। जैसे -

1. अ या आ + अ या आ = आ
2. इ या ई + इ या ई = ई
3. उ या ऊ + उ या ऊ = ऊ

4. ऋ + ॠ = ॠ

दया + आनन्दः = दयानन्दः	भानु + उदयः = भानूदयः
राम + अयनम् = रामायणम्	गुरु + उपदेशः = गुरुपदेशः
हरि + ईशः = हरीशः	लघु + उर्मिः = लघूर्मि
सती + ईशः = सतीशः	होतृ + ऋकारः = होतृकारः

(6) पूर्वरूप सन्धि (एङः पदान्तादति) - इस सन्धि के अनुसार पद (शब्दरूप या धातुरूप) के अन्तिम ए या ओ के बाद अ हो तो वह हट जाता है। अ पूर्व अक्षर के समान हुआ है इसके लिए अवग्रह चिन्ह (ऽ) लगा दिया जाता है।

हरे + अव = हरेऽव	बालको + अयम् = बालकोऽयम्
के + अत्र = केऽत्र	सो + अपि = सोऽपि

व्यञ्जन सन्धि

(7) श्चुत्व सन्धि (स्तोः श्चुना श्चुः)- स् या तवर्ग से पहले या बाद में श् या चवर्ग कोई भी हो तो स् को श् और तवर्ग का चवर्ग हो जाता है। अर्थात् त् को च, श को छ, द को ज्, ध को झ, न को ञ्।

कृष्णस् + च = कृष्णश्च	सद् + जनः = सज्जनः
रामस् + शेते = रामश्शेते	उद् + ज्वलः = उज्जवलः
सत् + चित् = सच्चित्	याच् + ना = याञ्चा
अन्यत् + च = अन्यच्च	शार्ङ्गिन् + जयः = शार्ङ्गिञ्जयः

(8) ष्टुत्व सन्धि (ष्टुना ष्टुः) - स् या तवर्ग से पहले या बाद में ष् या टवर्ग कोई भी हो तो स् को ष् और तवर्ग को टवर्ग होता है। अर्थात् स् को ष्, त् को ट्, द् को ड् और न् को ण्। जैसे -

रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः

दुष् + तः = दुष्टः	उद् + डयते = उड्डयते
पुष् + तः = पुष्टः	कृष् + नः = कृष्णः
इष् + तः = इष्टः	विष् + नुः = विष्णुः

(9) जश्त्व सन्धि (क) (झलां जशोऽन्ते) - इस सन्धि के नियमानुसार वर्ग के 1, 2, 3, 4 अक्षर (अर्थात् पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ण) को उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है, यदि वह पद (शब्द) का अन्तिम अक्षर हो तो। जैसे -

सत् + आचारः = सदाचारः   उत् + आहरणम् = उदाहरणम्

अच् + अन्तः = अजन्तः   सुप् + अन्तः = सुबन्तः

(10) जश्त्व संधि (ख) (झलां जश् झशि) - इस सन्धि के नियमानुसार वर्ग के 1, 2, 3, 4 वर्ण (पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ण) को अपने वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है, बाद में वर्ग के 3, 4 (तीसरा या चौथा वर्ण) हो तो। (यह नियम पद के बीच में लगता है और नियम 9 पद के अन्त में लगता है)

शुध् + धिः = शुद्धिः   दुघ् + धम् = दुग्धम्

बुध् + धिः = बुद्धिः   दघ् + धः = दग्धः

युध् + धः = युद्धः   क्षुभ् + धः = क्षुब्धः

(11) चर्त्व सन्धि (खरि च) - इस सन्धि के नियमानुसार वर्ग के 1, 2, 3, 4 वर्ण को उसी वर्ग को प्रथम अक्षर हो जाता है, बाद में वर्ग के 1, 2, 3, 4 वर्ण को उसी वर्ग का प्रथम अक्षर हो जाता है, बाद में वर्ग के 1, 2, 3 वर्ण एवं श ष स कोई हो तो।

उद् + साहः = उत्साह   सद् + कारः = सत्कारः

तद् + परः = तत्परः   उद् + पन्नः = उत्पन्नः

(12) अनुस्वार सन्धि (मोऽनुस्वारः) - इस सन्धि के नियमानुसार पद (शब्दरूप या धातुरूप) के अन्तिम म् को अनुस्वार (ं) हो जाता है, बाद में कोई व्यंजन हो तो। बाद में कोई स्वर होगा तो नहीं ।

चिरम् + जीव = चिरंजीव   भोजनम् + खाद = भोजनं खाद

सत्यम् + वद = सत्यं वद   पुस्तकम् + पठ = पुस्तकं पठ

कार्यम् + कुरु = कार्यं कुरु   गुरुम् + नमति = गुरुं नमति

विसर्ग सन्धि

(13) (विसर्जनीयस्य सः) -इस सन्धि के नियमानुसार विसर्ग (:) के बाद वर्ग के 1, 2, 3 वर्ण एवं श ष स कोई हों तो विसर्ग के स् हो जाता है। (श् या चवर्ग बाद में हो तो संधिनियम 7 से स् को श् हो जायगा।

कः + चित् =कश्चित्   पशुः + चरति = पशुश्चरति

रामः + तिष्ठति = रामस्तिष्ठति   पुत्रः + च = पुत्रश्च

हरिः + तरति = हरिस्तरति   हरिः + शेते = हरिश्शेते

(14) रुत्व सन्धि (ससजुषो रुः) - इस सन्धि के नियमानुसार शब्द के अन्तिम स् को रु (र्) हो जाता है। (सूचना - प्रथमा के एकवचन में इसी र् का विसर्ग रहता है।)

गुरुः + अवदत् = गुरुरवदत् हरेः + एव = हरेरेव

मुनिः + अस्ति = मुनिरस्ति भानोः + अयम् = भानोरयम्

मातुः + इच्छा = मातुरिच्छा वधूः + इयम् = वधूरियम्

(15) उत्व सन्धि (क) (अतो रोरप्लुतादप्लुते) - अः को ओ हो जाता है, बाद में अ हो तो। बाद के अ को पूर्वरूप होने से ऽ (अवग्रह) हो जाता है। अर्थात् अः अ = ओऽ। (ऽ) को अवग्रह चिह्न कहते हैं। इसका उच्चारण नहीं होता है।

रामः + अपि = रामोऽपि कृष्णः + अवदत् = कृष्णोऽवदत्

सः + अयम् = सोऽयम् अन्यतः + अपि = अन्यतोऽपि

सः + अपठत् = सोऽपठत् जनः + अयम् = जनोऽयम्

(ख) (हशि च) - इस सन्धि के अनुसार अः को ओ हो जाता है, बाद में वर्ग के 3, 4, 5 (तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण), ह य व र ल कोई हों तो।

बालः + गच्छति = बालो गच्छति देवः + हसति = देवो हसति

पुत्रः + लिखति = पुत्रो लिखति नृपः + मोदते = नृपो मोदते

नृपः + जयति = नृपो जयति रामः + वन्द्यः = रामो वन्द्यः

(16) यत्व सन्धि (भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि) - इस सन्धि के अनुसार भोः, भगोः, अघोः शब्द और अ या आ के बाद र् को य् होता है, यदि बाद में स्वर वर्ण ह, य, व, ल, वर्ग के तृतीय चतुर्थ एवं पंचम अक्षर हो तो-

भोः + देवाः = भोदेवाः नराः + गच्छन्ति = नरागच्छन्ति

देवाः + नम्याः = देवानम्याः देवाः + इह = देवाइह

नराः + यान्ति = नरायान्ति सुतः + आगच्छति = सुतआगच्छति

भगोः + नमस्ते = भगोनमस्ते अघोः + याही = अघोयाही

(17) सुलोप सन्धि (एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ् समासे हलि) -इस सन्धि के अनुसार सः और एषः के विसर्ग का लोप हो जाता है, बाद में कोई व्यञ्जन हो तो।

सः + पठति = स पठति एषः + वदति = एष वदति

सः + लिखति = स लिखति एषः + हसति = एष हसति

सः + गच्छति = स गच्छति एषः + करोति = एष करोति

द्वितीय : अध्याय

समास परिचय

समास का सामान्य अर्थ है संक्षेप। जब दो या दो से अधिक शब्दों को एक साथ मिलाते हैं तो उनमें विभक्ति का लोप आदि हो जाने के कारण ऐसे शब्दों से बना शब्द या पद संक्षिप्त हो जाता है जैसे नराणां पतिः = नरपतिः या सभायाः पतिः = सभापतिः।

जब इस प्रकार से बने पदों में निहित शब्दों को विभक्ति अथवा व्याख्या के साथ अलग-अलग कर दिया जाता है तो उसे विग्रह कहते है।

समास के कुल 6 भेद है जो इस श्लोक में है

द्वन्द्व द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः।
तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः॥

1. अव्ययीभाव 2. तत्पुरुष 3. कर्मधारय (तत्पुरुष का भेद)

4. द्विगु (तत्पुरुष का भेद) 5. वहुव्रीहि 6. द्वन्द्व।

अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव समास में पहला शब्द अव्यय (उपसर्ग या निपात) रहता है और दूसरा शब्द संज्ञा दोनों मिलकर अव्यय हो जाते हैं। अव्ययीभाव समास वाले शब्द के रूप नहीं चलते, और नपुंसकलिङ्ग के एकवचन ही इस समास में पूर्व पद का अर्थ प्रधान रहता है, यथा-

(यथाकामम्) कामम् अनतिक्रम्य इति यथाकामम् (जितनी इच्छा हो उतना), शक्तिमनतिक्रम्य = यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार), कृष्णस्य समीपे = उपकृष्णम् (कृष्ण के पास), गोः समीपे = उपगु (गाय के पास), वध्वाः समीपे = उपवधु। निर्विघ्नम् (विघ्न का अभाव), अनुरथम् (रथ के पीछे), सहरि (हरि के सदृश), आसमुद्रम् (समुद्र तक), अधिगृहम् (घर में), परोक्षम् (आँख से परे), ग्रामाद् बहिः - बहिर्ग्रामम् (गाँव से बाहर), उपशरदम् (शरद् ऋतु के पास), उपगिरम् (वाणी के पास), यथेच्छम्, सचक्रम, आबालवृद्धम्, अनुकूलम्, प्रतिकूलम् आदि।

तत्पुरुष समास

जिन दो या दो से अधिक शब्दों के बीच द्वितीय, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी षष्ठी और सप्तमी विभक्तियाँ छिपी रहती हैं उनमें तत्पुरुष समास होता है। इसमें उत्तर पद का अर्थ प्रधान होता है, यथा - 'राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः' इसमें 'पुरुष' पद प्रधान है।

विभक्ति के भेद के अनुसार यह समास निम्न उपभेदो के रूप में समझा जा सकता है :

1. **द्वितीय तत्पुरुष**-इसमें द्वितीया विभक्ति का लोप होता है। यथा – रामम् – आश्रितः =रामाश्रितः। दुखं श्रितः = दुःखश्रितः। विस्मयम् आपन्नः = विस्मयापन्नः। भयं प्राप्तः=भयप्राप्तः। शिवम् आश्रितः = शिवाश्रितः। शरणं प्राप्तः= शरणप्राप्तः। गृहं गतः=गृहगतः आदि।
2. **तृतीया तत्पुरुष** – इसमें तृतीया विभक्ति का लोप होता है यथा – सुखेन युतः = सुखयुतः। खड्गेन हतः = खड्गहतः। अग्निना दग्धः = अग्निदग्धः। हरिणा त्रातः = हरित्रातः। मदेन शून्यः = मदशून्यः। विद्यया हीनः = विद्याहीनः, मात्रा सदृशः = मातृसदृशः, वाचा कलहः = वाक्कलहः।
3. **चतुर्थी तत्पुरुष** – इसमें चतुर्थी विभक्ति का लोप होता है। यथा – धनाय लोभः = धनलोभः। भूताय बलिः = भूतबलिः। गवे हितम् गोहितम्। स्नानाय इदम् = स्नानार्थम्। भोजनाय इदम् = भोजनार्थम् आदि।
4. **पञ्चमी तत्पुरुष** – इसमें पञ्चमी विभक्ति का लोप होता है। यथा –चौरांद् भयम् = चौरभयम्। वृक्षात् पतितः = वृक्षपतितः। रोगात् मुक्तः = रोगमुक्तः। पापात् मुक्तः = पापमुक्तः आदि।
5. **षष्ठी तत्पुरुष** – इसमें षष्ठी विभक्ति का लोप होता है। यथा –राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः। रजतस्य पत्रम् = रजतपत्रम्। देवस्य पूजा = देवपूजा। सुखस्य भोगः = सुखभोगः। देवस्य मन्दिरम् = देवमन्दिरम् आदि।
6. **सप्तमी तत्पुरुष** – इसमें सप्तमी विभक्ति का लोप होता है। यथा – युद्धे निपुणः = युद्धनिपुणः। जले मग्नः = जलमग्नः। आतपे शुष्कः = आतपशुष्कः। कार्ये दक्षः = कार्यदक्षः आदि।

अन्य समास

नञ् समास – 'नहीं' अर्थ वाले नञ् का जब दूसरे शब्द के साथ समास होता है तब उसे नञ् समास कहते हैं। नञ् समास सुवन्त पद के साथ होता है। व्यञ्यजन परे रहने पर नञ् को 'अ' और स्वर परे होने पर 'अन्' हो जाता है, यथा – न प्रियः= अप्रियः, न सुखम् = असुखम्। न उपकारः = अनुपकारः आदि।

उपपद तत्पुरुष – जब तत्पुरुष का प्रथम शब्द कोई संज्ञा या अव्यय हो जिसके न रहने से उस समास के द्वितीय शब्द का वह रूप नहीं रह सकता, तब वह उपपद कहलाता है, यथा – कुम्भं करोतीति कुम्भकारः, चर्मकारः, स्वर्णकारः, सामगः, धनदः, उच्चैः कृत्य (समास न होने पर उच्चैः कृत्वा), एकधाभूय।

अलुक् तत्पुरुष - जिस समास में बीच की विभक्ति का लोप न हो यथा - मनसाकृतम्, आत्मनेपदम्, परस्मैपदम्, देवानांप्रिय: (मूर्ख), पश्यतोहर: (सुनार या डाकू), दूरादागत:, युधिष्ठिर:, वाचोयुक्ति:, अन्तेवासी (शिष्य), पङ्केरुहम्, सरसिजम् (कमल), खेचर: (पक्षी, सिद्ध) आदि।

समासान्त

जब तत्पुरुष समास के अन्त में राजन्, अहन् वा सखि शब्द आयें तब इनमें समासान्त टच् लगता है और इनका रूप राज, अह तथा सख हो जाता है, यथा- महान् राजा=महाराज:। उत्तमम् अह:=उत्तमाह:। कृष्णस्य सखा=कृष्णसख:।

अह: सर्व, एकदेशसूचक शब्द, संख्यात एवं पुण्य के साथ रात्रि का समास होने पर समासान्त अच् प्रत्यय लगता है। संख्या और अव्यय के साथ भी ऐसा ही है, जैसे-अहश्च रात्रिश्च अहोरात्र:, सर्वरात्र:, संख्यातरात्र:, पुण्यरात्र:।

कर्मधारय समास

(तत्पुरुष: समानाधिकरण: कर्मधारय:) विशेषण और विशेष्य का जो समास होता है उसे कर्मधारय कहते हैं इसमें विशेषण पूर्व में रहता है, यथा - कुत्सित: पुरुष:= कुपुरुष: (बुरा आदमी)। कुत्सित: छात्र: = कुच्छात्र: (बुरा विद्यार्थी)। दीर्घम् नयनम् = दीर्घनयनम्। नीलम् उत्पलम् = नीलोत्पलम्। सुन्दर: पुरुष: = सुन्दरपुरुष:। भूषित: बालक: = भूषितबालक:। सुन्दरी-नारी = सुन्दरनारी। महान् देव: = महादेव:। महत् फलम् = महाफलम्। दु:खमेव समुद्र: = दु:खसमुद्र:। कमलमेव मुखम् = कमलमुखम्। घन इन श्याम: = घनश्याम:। नवनीतमिव कोमलम् = नवनीतकोमलम्। पुरुष: व्याघ्र इव = पुरुषव्याघ्र:, नरशार्दूल:, अधरपल्लव:, नृसिंह:। चन्द्रसदृशं मुखम् = चन्द्रमुखम्। कमलचरणम् आदि।

मध्यमपदलोपी समास - यह कर्मधारय या बहुव्रीहि में होता है। कर्मधारय में यथा - सिंहचिह्नितम् आसनम् = सिंहासनम्। देवपूजको ब्राह्मण: = देवब्राह्मण:। बहुव्रीहि में - चन्द्र इव आननं यस्या: सा = चन्द्रानना। कण्ठे स्थित: कालो यस्य स:= कण्ठकाल:।

मयूरव्यंसकादि तत्पुरुष-कुछ ऐसे तत्पुरुष समास हैं, जिनमें नियमों का उल्लंघन है उन्हें मयूरव्यंसकादि तत्पुरुष कहते है, यथा- व्यंसक: मयूर: =मयूर-व्यंसक: (धूर्त मोर), यहाँ व्यंसक शब्द पहले आना चाहिए था और मयूर पश्चात्। इसी प्रकार- अन्यो राजा = राजान्तरम्, अन्यो ग्राम: ग्रामान्तरम्, उदक् च अवाक् चेति = उच्चावचम्।

द्विगु समास

(संख्यापूर्वो द्विगु:) यदि कर्मधारय समास के पूर्व कोई संख्यावाचक शब्द हो तो उसे द्विगु कहते हैं, यथा -

समाहार में – पञ्चानां गवा समाहारः = पञ्चगवम्। पञ्चाना पात्राणां समाहारः = पञ्चपात्रम्। त्रयाणां लोकाना समाहारः = त्रिलोकी। त्रयाणां भुवनानां समाहारः = त्रिभुवनम्। शतानाम् अब्दानां समाहारः = शताब्दी। (*तद्धितार्थ में* –) पञ्चभिज: गोभिः व्रीतः = पञ्चगुः। पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः = पञ्चकपालः। (*उत्तरपद में*–) पञ्च हस्ताः प्रमाणमस्य = पञ्चहस्तप्रमाणः द्वाभ्यां मासाभ्यां जातः = द्विमासजातः।

समाहार अर्थ में समास में एकवचन ही रहता है। समास होने पर नपुंसकलिङ्ग शब्द बन जाते हैं, यथा – त्रिभुवनम्, चतुर्युगम्। किन्तु आकारान्त या अन् अन्त द्विगु स्त्रीलिङ्ग में भी होते है : पञ्चखट्वी पञ्चखट्वा, पञ्चतक्षी पञ्चतक्षम्।

(अन्यपदार्थप्रधानो वहुव्रीहिः) जिस समास में अन्य पद के अर्थ की प्रधानता हो अर्थात् जो-जो पद समस्त हो वे अपने अर्थ का बोध कराने के साथ-साथ अन्य किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हुए विशेषण की तरह काम करते हो तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे-

अहं च त्वञ्च राजेन्द्र लोकनाथवुभावपि।
बहुव्रीहिरहं राजन् षष्ठीतत्पुरुषो भवान् ॥

(राजन्, हम दोनों लोकनाथ हैं। मैं बहुव्रीहि समास हूँ और आप षष्ठी तत्पुरुष हैं अर्थात् (लोकनाथः-लोकाः प्रजाः नाथाः पालकाः यस्य सः) मेरा सभी पालन करते हैं, और आप संसार भर के स्वामी हैं (लोकस्य नाथः)। यहां 'लोकनाथः' इस शब्द को विग्रह दो प्रकार से हुआ है।

बहुव्रीहि के चार भेद है। – (1) *समानाधिकरण* (2) *तुल्ययोग* (3) *व्यधिकरण और* (4) *व्यतिहार*।

1. **समानाधिकरण** – जहाँ दोनों या सभी शब्दों की समान विभक्ति हो, यथा – निर्गतं भयं यस्मात् सः = निर्गतभयः (पुरुषः)। हता शत्रवो येन सः = हतशत्रुः। दत्तं धनं यस्मै सः = दत्तधनः (भिक्षुः)। आरूढः कपिः यं सः = आरूढकपिः (वृक्षः)। पतितं पर्ण यस्मात् सः = पतितपर्णः (वृक्षः)। महान् आशयो यस्य सः = महाशयः (सत्पुरुषः)। निर्मलाः आपो यस्मिन् तत् = निर्मलापम् (सरः)।
2. **तुल्ययोग** – इसमें सह शब्द का तृतीयान्त पद से समास होता है, यथा-बान्धवैः सह = सबान्धवः या सहबान्धवः। अनुजेन सह = सानुजः या सहानुजः। विनयेन सह = सविनयम्। इसी प्रकार सानुरोधम्, सादरम् आदि।
3. **व्यधिकरण** – जिसमें भिन्न विभक्तिवाले शब्दों का समास हो, यथा-चक्रं पाणौ यस्य सः = चक्रपाणिः। धनुः पाणौ यस्य स': = धनुष्पाणिः। कुम्भात् जन्म यस्य सः = कुम्भजन्मा। इसी प्रकार चन्द्रशेखरः, चन्द्रकान्तिः आदि।
4. **व्यतिहार**-यह समास तृतीयान्त और सप्तम्यन्त शब्दों के साथ होता है और युद्ध का बोधक है, यथा-केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम्=केशाकेशि। दण्डैः

दण्डैः प्रहृत्येदं युद्धं प्रवृत्तम्=दण्डादण्डि। मुष्टिभिः मुष्टिभिः प्रहृत्येदं युद्ध प्रवृत्तम् =मुष्टामुष्टि।

विशेष-समस्त पद का प्रथम शब्द यदि पुल्लिङ्ग से बना हुआ स्त्रीलिङ्ग हो तो समास होने पर पुंल्लिङ्ग रूप हो जाता है, यथा-रूपवती भार्या यस्य सः रूपवद्भर्यः (रूपवतीभार्यः नहीं)। कही-कही समस्त शब्द के साथ कप् (क) प्रत्यय लगता है, यथा-ईश्वरः कर्त्ता यस्य सः ईश्वरकर्तृकः।

द्वन्द्व समास

(उभयपदार्थ प्रधानो द्वन्द्वः) जब दो या दो से अधिक संज्ञाएँ इस तरह जुड़ी रहती हैं कि उनके बीच में 'च' छिपा रहे तब उनमें 'द्वन्द्व समास' होता है। द्वन्द्व समास में दोनों पदों के अर्थ प्रधान रहते हैं।

द्वन्द समास तीन प्रकार का है-(1) *इतरेतर* (2) *समाहार* (3) *एकशेष*।

1. **इतरेतर**-इसमें शब्दों की संख्या के अनुसार अन्त में वचन होता है और प्रत्येक शब्द के बाद विग्रह में 'च' लगता है, यथा-दिनञ्च यामिनी च दिनयामिन्यौ। कन्दश्च मूलं च फलं च=कन्दमूलफलानि। माता च पिता च=मातापितरौ। सूर्यश्च चन्द्रमाश्च=सूर्याचन्द्रमसौ।
2. **समाहार**-इसमें अनेक पदों के समाहार (एकत्र उपस्थिति) का बोध होता है। समस्त पद में नपुंसकलिङ्ग एकवचन होता है, यथा-पाणी च पादौ च एषां समाहारः=पाणिपादम्। भेरी च पटहश्च अनयोः समाहारः=भेरीपटहम्। हस्तिनश्च अश्वाश्च एषां समाहारः=हस्त्यश्वम्। मथुरा च पाटलिपुत्रश्च अनयोः समाहारः =मथुरापाटलिपुत्रम्। यूका च लिक्षा च (जुएँ और लीखें) अनयोः समाहारः यूकालिक्षम्। दधि च घृतं च अनयोः समाहारः दधिघृतम्। गौश्च महिषी च गोमहिषम्। अहश्च दिवा च=अहर्दिवम्। सर्पश्च नकुलश्च=सर्पनकुलम्। अहिश्च नकुलश्च अहिनकुलम्। अहश्च रात्रिश्च=अहोरात्रम्। किन्तु 'अहोरात्रः' भी है। वृक्ष, मृग, तृण, धान्य, व्यञ्यन, पशु आदि अर्थ के वाचक शब्दों का विकल्प से समाहार द्वन्द होता है। यथा-प्लक्षन्यग्रोधम्, प्लक्षन्यग्रोधाः। रुरुपृषतम्। रुरुपृषताः। कुशकाशम्, कुशकाशाः। व्रीहियवम्, व्रीहिंयवः। दधिघृतम्, दधिघृते। गोमहिषम्, गोमहिषाः। शुकबकम्, शुकबकाः। अश्ववडवम्, अश्ववडवे आदि।
3. **एकशेष**-एक विभक्ति वाले अनेक समस्त समानाकार पदों में जहाँ एक ही पद शेष रह जाय और अर्थ के अनुसार उसमें द्विवचन या बहुवचन हो वहाँ एकशेष समास होता है, यथा-स च स च=तौ। वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च=वृक्षाः। ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च=ब्राह्मणौ। हंसी च हंसश्च=हंसौ। पुत्रश्च दुहिता च=पुत्रौ। माता च पिता च=पितरौ। श्वश्रूश्च श्वशुरश्च=श्वशुरौ आदि।

तृतीय : अध्याय
कारक/विभक्ति परिचय

1. प्रथमा विभक्ति

1. **'प्रतिपदिकार्थ-लिंग-परिमाण-वचनमात्रे प्रथमा।'** अर्थात् प्रातिपदिकार्थमात्र, लिंगमात्र, परिमाणमात्र तथा वचनमात्र में प्रथमा-विभक्ति होती है।
2. **'सम्बोधने च।'** अर्थात्, सम्बोधन के अर्थ में भी प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

2. द्वितीया विभक्ति

1. **'कारके।'** यह अधिकार सूत्र है। आगे आने वाले सूत्रों के साथ 'कारके' का अन्वय करके अर्थ को समझना चाहिए।
   'कारक' का अर्थ होता है -'करोतीति कारकम्' अर्थात् क्रिया को करने वाला या क्रिया के साथ सम्बन्ध स्थापित करने वाला 'कारक' कहा जाता है। इन कारकों को कुल छः वर्गों में वर्गीकृत किया गया है-

   कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
   अपादानाधिकरणमित्येवं कारकाणि षट्।।
2. **'कर्तुरीप्सिततमं कर्म।'** अर्थात् कर्ता अपनी क्रिया द्वारा जिसे विशेषरूप से प्राप्त करना चाहता हो; उसकी कर्मसंज्ञा होती है। जैसे- 'सः ग्रामं गच्छति' इस प्रयोग में कर्ता का ईप्सिततम ग्राम है; अतः ग्राम की कर्मसंज्ञा होगी।
3. **'अनभिहिते।'** अर्थात्, जहाँ पर 'कर्म' अनभिहित (अनुक्त) हो, वहाँ पर भी कर्मकारक का विधान होता है।
4. **'कर्मणि द्वितीया।'** अनभिहित कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।
5. **'तथायुक्तं चानीप्सितम्।'** जब कोई पदार्थ कर्ता द्वारा ईप्सिततम नहीं होता है, फिर भी क्रिया के साथ ईप्सित के समान जुड़ा रहता है; तो उस पदार्थ में भी कर्मकारक होता है।
6. **'अकथितं च।'** इस सूत्र के अनुसार, अपादानादि कारकों से जो अविवक्षित होता है; उसकी कर्मसंज्ञा होती है। उदाहरणतया - बलिं याचते वसुधाम्।

   दुह्याच्पच्दण्ड्रुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमथ्मुषाम्।
   कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम्।।

दुह् (दुहना), याच् (मांगना), पच् (पकाना), दण्ड् (दण्ड देना), रुध् (रोकना, रुँधना), प्रच्छ (पूछना), चि (इकट्ठा करना), ब्रू (कहना, बोलना), शास् (शासन करना), जि

(जीतना), मन्थ् (मथना), मुष् (चुराना), नी (ले जाना), हृ (हरना), कृष् (खींचना), वह् (ढ़ोना) एवं इन धातुओं के समान अर्थ रखने वाली धातुएं द्विकर्मक होती है। इनसे द्वितीया विभक्ति होती है। यथा - गां दोग्धि पयः - गाय से दूध दुहता है।

7. **'अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम्।'** अर्थात्, अकर्मक धातुओं के योग में देश, समय, भाव, या दशा तथा चलकर पार करने योग्य मार्ग की कर्मसंज्ञा होती है। उदाहरणतया-'कुरून् स्वपिति।' (कुरुदेश में सोता है।)
8. **'गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ।'** अर्थात्, गति, बुद्धि तथा प्रत्यवसान अर्थ वाली धातुओं का तथा शब्दकर्मक एवं अकर्मक धातुओं का जो अण्यन्त (अप्रेरणार्थक) अवस्था में कर्ता होता है; उसे जब इन क्रियाओं से प्रेरणार्थक बनाते हैं, तो कर्मकारक हो जाता है। उदाहरणतया- वेदार्थं स्वान् अवेदयत् (अपनों को वेद पढ़ाया)।
9. **'हृक्रोरन्यतस्याम्।'** अर्थात्, 'हृ' तथा 'कृ' धातुओं के अप्रेरणार्थक कर्ता को जब इन क्रियाओं से प्रेरणार्थक बनाते हैं, तो विकल्प से कर्म होता है। उदाहरणतया- 'हरति भारं भृत्यः' से प्रेरणा अर्थ में 'हारयति भारं भृत्यं भृत्येन वा।'
10. **'अधिशीङ्स्थासां कर्म।'** अर्थात् 'अधि' उपसर्ग से युक्त 'शीङ्' (सोना), 'स्था' तथा 'आस्' (बैठना) धातुओं के आधार की कर्मसंज्ञा होती है। यथा - 'अधिशेते बैकुण्ठं हरिः।' (हरि बैकुण्ठ में सोते हैं।)
11. **'अभिनिविशश्च।'** अर्थात्, 'अभि' एवं 'नि' उपसर्ग जब एक साथ 'विश्' धातु के साथ आते हैं, तो उस धातु के आधार की कर्मसंज्ञा होती है। यथा - अभिनिविशते सन्मार्गम् (सन्मार्ग में मन लगाता है।)
12. **'उपान्वध्याङ्वसः।'** अर्थात्, यदि 'वस्' (रहना) धातु के पहले उप, अनु, अधि, आङ् में से कोई भी उपसर्ग हो, तो क्रिया का आधार कर्मसंज्ञक होता है। यथा - उपवसति बैकुण्ठं हरिः।

उपपद द्वितीया विभक्ति

13. **'उभसर्वतसोः कार्याधिगुपर्यादिषु त्रिषु।**
    द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रपि दृश्यते।।'
    प्रस्तुत वार्तिक से उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अधोऽधः, अध्यधि, तीनों आम्रेडितान्त शब्दों तथा इनसें भिन्न दूसरे शब्दों के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है। यथा - उभयतः कृष्णं गोपाः।
14. **'अभितः परितः समया-निकषा-हा-प्रतियोगेऽपि।'** इस वार्तिक के अनुसार, अभितः, परितः, समया (निकट) निकषा (समीप), हा (शोक अर्थ में) तथा प्रति

शब्दों के साथ जिस शब्द की निकटता पायी जाती है; उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। यथा-अभितः कृष्णम्।

15. **'अन्तराऽन्तरेण युक्ते'** अर्थात्, अन्तरा (बीच में), अन्तरेण (बिना) के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा - अन्तरेण हरिं न सुखम्।
16. **'कर्मप्रवचनीयाः।'** यह अधिकार सूत्र है। इसके बाद 'कर्मप्रवचनीयों' पर विचार किया गया है। ध्यातव्य है कि कर्मप्रवचनीय उन पदों को कहा जाता है, जो न तो किसी विशेष क्रिया के द्योतक होते है और न ही किसी क्रियापद की अपेक्षा रखते हैं। ये सम्बन्ध की विशेषता को प्रकट करते है; जो उपसर्ग तथा गति से भिन्न होते हैं-

    'क्रियायाः द्योतको नायं सम्बन्धस्य न वाचकः।
    नापि क्रियापदापेक्षी सम्बन्धस्य तु भेदकः।।
17. **'अनुर्लक्षणे।'** लक्षण बताने के अर्थ में 'अनु' कर्मप्रवचनीय होता है। यथा-जपमनु प्रावर्षत्। (जप के कारण प्रचुर वर्षा हुई।)
18. **'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया।'** अर्थात्, जिसके साथ कर्मप्रवचनीय का योग हो; उसमें द्वितीया विभक्ति होती है।
19. **'तृतीयार्थे।'** अर्थात्, जब 'अनु' से तृतीया का अर्थ निकलता हो, तो 'अनु' की 'कर्मप्रवचनीय संज्ञा' होती है। यथा - नदीमन्वसिता सेना। (सेना नदी के साथ (किनारे) है।)
20. **'हीने।'** अर्थात्, 'अनु' से हीन अर्थ द्योतित होने पर 'अनु' कर्मप्रवचनीय होता है। यथा- अनु हरिं सुराः। (देवता हरि से निम्न हैं)।
21. **'उपोधिके च।'** अर्थात् 'उप' से जब हीन, या बड़ा अर्थ द्योतित हो रहा हो, तो 'उप' कर्म कर्मप्रवचनीय होता है। यथा-उप हरिं सुराः।
22. **'लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः।'** अर्थात्, प्रति, परि, अनु कर्म प्रवचनीय होते हैं, यदि इनका अर्थ लक्षण, इत्थम्भूताख्यान, भाग और वीप्सा हो। यथा-वृक्षं-वृक्षं प्रति परि अनु वा विद्योतते विद्युत्।
23. **'अभिरभागे।'** अर्थात्, भाग या हिस्सा के अतिरिक्त किसी अन्य अर्थ में प्रयुक्त होने पर 'अभि' कर्मप्रवचनीय होता है। यथा - हरिं अभिवर्तते।
24. **'सुः पूजायाम्।'** प्रशंसा या आदर के अर्थ में 'सु' कर्मप्रवचनीय होता है। यथा-अति सुसिक्तम्, अथवा सुस्तुतम्।
25. **'अतिरतिक्रमणे च।'** अतिक्रमण तथा पूजा के अर्थ में 'अति' कर्मप्रवचनीय होता है। यथा - अति देवान् कृष्णः। (कृष्ण देवताओं से बढ़कर हैं)।
26. **'कालध्वनोरत्यन्तसंयोगे।'** अर्थात्, अत्यन्तसंयोग होने पर काल और गन्तव्य

मार्ग को बतलाने वाले शब्द में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा–मासाधीते। क्रोशं कुटिला नदी। क्रोशं गिरिः। इत्यादि।

3. तृतीया विभक्ति

1. **'स्वतन्त्रः कर्ता।'** क्रिया करने में जिसकी स्वतन्त्रता विवक्षित हो; उसे 'कर्ता' कहते है।
2. **'साधकतमं करणम्।'** अर्थात्, क्रिया की सिद्धि में कर्ता को जो सर्वाधिक सहायता पहुँचाता है; उसे करणकारक' कहते हैं।
3. **'कर्तृकरणयोस्तृतीया।'** कर्ता तथा करण में तृतीया विभक्ति होती है। यथा–रामेण बाणेन हतो बाली।
4. **'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानाम्।'** प्रस्तुत वार्तिक से 'प्रकृति' इत्यादि शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है। यथा–प्रकृत्या चारु (स्वभाव से सुन्दर)।
5. **'दिवः कर्म च।'** अर्थात्, दिव् जुआ खेलना क्रिया का जो अत्यधिक सहायक होता है; उसमें कर्म, या करणकारक होता है। यथा–अक्षैः अक्षान् वा दीव्यति।
6. **'अपवर्गे तृतीया।'** अर्थात्, अपवर्ग अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है। यथा–अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः।
7. **'सहयुक्तेऽ प्रधाने।'** अर्थात्, सह (साथ) का अर्थ बतलाने वाले शब्दों के योग तृतीया विभक्ति होती है। यथा–पुत्रेण सहागतः पिता।
8. **'येनाङ्गविकारः।'** अर्थात्, जिस अंग के विकारयुक्त होने से व्यक्ति के सम्पूर्ण शरीर का विकार बतलाया जाय; उस अंगवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। यथा–अक्ष्णा काणः।
9. **'इत्थम्भूतलक्षणे।'** किसी वस्तु, या व्यक्ति के किसी अवस्था विशेष को प्राप्त करने की जो सूचना देता है; उसमें तृतीया विभक्ति होती है। यथा– जटाभिस्तापसः।
10. **'हेतौ।'** अर्थात्, हेतुवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। यथा–पुण्येन गौरवर्णः।
11. ***'गम्यमानाऽपि क्रिया कारकविभक्तौ प्रयोजिका। अलं श्रमेण।'*** अर्थात्, जब क्रिया वाक्य में स्पष्टतः उक्त न हो, फिर भी यदि अर्थ मात्र से प्रतीत हो रही हो; तो वह क्रिया भी कारकविभक्ति की हेतु होती है। यथा - अलं श्रमेण।
12. ***'अशिष्ट व्यवहारे दाणाः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया।'*** इस वार्तिक के अनुसार, अशिष्टों के व्यवहार के सन्दर्भ में 'दाण्' धातु का प्रयोग होने पर चतुर्थी के अर्थ में (सम्प्रदान में) तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा - दास्या संयच्छते कामुकः।

4. *चतुर्थी विभक्ति*

1. **'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्।'** अर्थात्, दान क्रिया के द्वारा कर्म जिसकी ओर विशेष रूप से जाय; उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है।
2. **'चतुर्थी सम्प्रदाने।'** सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा- विप्राय गां ददाति।
3. **'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।'** अर्थात्, 'रुच्' तथा इस अर्थ वाली धातुओं के योग में प्रीयमाण की सम्प्रदान-संज्ञा होती है। यथा-हरये रोचते भक्तिः।
4. **'धारेरुत्तमर्णः।'** अर्थात्, धारि (उधार लेना) धातु के योग में उत्तमर्ण (कर्जा देने वाले महाजन) में सम्प्रदान कारक होता है। यथा - भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः।
5. **'स्पृहेरीप्सितः।'** अर्थात्, 'स्पृह्' धातु के योग में जिसके लिये स्पृहा की जाय, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथा- पुष्पेभ्यः स्पृहयति।
6. **'क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति क्रोधः।'** अर्थात् क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्या, या असूया अर्थ वाली धातुओं के योग में, जिसके ऊपर क्रोधादि किया जाय; उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथा- हरये क्रुद्ध्याति।
7. **'परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्।'** अर्थात्, परिक्रयण (मजदूरी पर रखना) अर्थ में विकल्प से सम्प्रदान होता है। यथा - शतेन शताय वा परिक्रीतः। (सौ पर रखा हुआ।)
8. **'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या।'** इस वार्तिक के अनुसार, प्रयोजन के अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा - मुक्तये हरिं भजति।
9. ***'हितयोगे च।'*** इस वार्तिक के अनुसार, हित के योग में, जिसका हित हो; उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा - ब्राह्मणाय हितम्।
10. **'नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलं वषड्योगाच्च।'** अर्थात्, नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं तथा वषट् के योग में चतुर्थी होती है। यथा- हरये नमः। प्रजाभ्यः स्वस्ति। अग्नये स्वाहा। पितृभ्यः स्वधा।
11. **'गत्यर्थकर्मणि द्वितीया-चतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि।'** अर्थात्, गति अर्थ वाली धातुओं के कर्म में विकल्प से द्वितीया, या चतुर्थी विभक्ति होती है; जब कर्म मार्ग बतलाने वाला शब्द न हो तथा गति में शरीर के चलने की क्रिया का तात्पर्य हो। यथा - ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति। (गाँव को जाता है।)
    यहाँ पर 'ग्राम' मार्ग का बोधक नहीं है; अतः विकल्प से द्वितीया, या चतुर्थी का प्रयोग हुआ है।

5. पञ्चमी विभक्ति

1. **'ध्रुवमपायेऽपादनम्।'** अर्थात्, जहाँ पर अपाय, या विश्लेश (अलग होना) हो, वहाँ ध्रुव या अवधिभूत कारक को अपादान कहते हैं।
2. **'अपादाने पञ्चमी।'** अर्थात् अपादान-कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा - ग्रामादायति।
3. *'जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्।'* अर्थात्, जुगुप्सा, विराम तथा प्रमाद अर्थ की क्रिया के योग में, जिसके, प्रति जुगुप्सा आदि हो; उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा - पापाज्जुगुप्सते विरमति वा।
4. **'भीत्रार्थानां भयहेतुः।'** अर्थात्, भी (भय) तथा त्रै (रक्षा करना) अर्थ की धातुओं का प्रयोग होने पर 'भय' के हेतु में पञ्चमी-विभक्ति होती है। यथा - चौराद् बिभेति।
5. **'आख्यानोपयोगे।'** जब किसी व्यक्ति या गुरु से नियमपूर्वक कुछ पढ़ा जाता है; तो पढ़ाने वाले वक्ता, या गुरु की अपादान संज्ञा होती है। यथा- उपाध्यायादधीते।
6. **'जनिकर्तुः प्रकृतिः।'** सूत्र के अनुसार, जन् (उत्पन्न होना) क्रिया के कर्ता का जो प्रधान और आदि कारण होता है; उसकी अपादान-संज्ञा होती है। यथा-ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।
7. **'भुवः प्रभवः।'** अर्थात्, प्रकट होने के कर्ता का जो प्रकट होने का स्थान है; वह अपादान-संज्ञक होता है। यथा - हिमवतो गंगा प्रभवति।
8. ***'अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते।'*** अर्थात्, अन्य, आरात् इतर, ऋते, दिशा बताने वाले शब्द, अन्य, 'अञ्चु' उत्तरपदवाले, दिग्वाचक समस्त शब्द (प्राक्, प्रत्यक् आदि) आच् या आहि प्रत्ययान्त दिग्वाची शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा - आरात् वनात्। ऋते कृष्णात्।
9. **'पञ्चम्यपाङ्परिभिः।'** अर्थात्, कर्मप्रवचनीय अप, आङ्, परि के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा - आमुक्तेः संसारः। आसकलाद् ब्रह्म।
10. **'अकर्तयृणे पञ्चमी।'** अर्थात् कर्तृसंज्ञा-रहित ऋण यदि हेतु हो, तो उस ऋण से पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा -शताद् बद्धः। (सौ के कर्ज से बाँधा गया।)
11. **'पृथग्विनानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्।'** अर्थात्, पृथक्, बिना और नाना के योग में तृतीया, पञ्चमी तथा द्वितीया होती है। यथा - पृथग्रामेण रामात् रामं वा।
12. **'करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्ववचनस्य।'** अर्थात्, स्तोक, अल्प, कृच्छ्र तथा कतिपयः, इन चार शब्दों से तृतीया, पञ्चमी तथा द्वितीया होती है। यथा - अल्पात् अल्पेन वा मुक्तः।

13. **'दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च।'** अर्थात्, दूर तथा अन्तिक अर्थ वाले शब्दों से पञ्चमी, तृतीया या द्वितीया होती है। यथा – ग्रामस्य दूरं दूरात् दूरेण वा।

6. षष्ठी विभक्ति

1. **'षष्ठी शेषे।'** अर्थात् जहाँ दूसरी विभक्तियों के नियम लागू नहीं होते; वहाँ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा – राज्ञः पुरुषः।
2. **'षष्ठी हेतुप्रयोगे।'** अर्थात्, जब कोई संज्ञा किसी क्रिया का हेतु बताती हो और वह हेतु, 'हेतु' शब्द के द्वारा ही द्योतित हो रहा हो, तो उस हेतु में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा – अन्नस्य हेतोः वसति।
3. **'एनपा द्वितीया।'** 'एनप्' प्रत्ययान्त शब्दों के योग में द्वितीया तथा षष्ठी दोनों विभक्तियों का प्रयोग होता है। यथा – दक्षिणेन ग्रामं ग्रामस्य वा।
4. **'दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्।'** अर्थात् दूर, अन्तिक तथा इसके पर्यायवाची शब्दों के योग में पञ्चमी या षष्ठी विभक्ति होती है। यथा – दूरं ग्रामस्य ग्रामाद्वा।
5. **'आशिषि नाथः।'** अर्थात् 'नाथ' धातु के अशीष, या आशा रखने के अर्थ में होने पर शेषत्व विवक्षा में कर्म में षष्ठी होती है। यथा – सर्पिषो नाथनम्।
6. **'व्यवहृपणोः समर्थयोः।'** अर्थात्, वि, अव उपसर्ग-पूर्वक 'हृ' धातु तथा 'पण' धातु जब समानार्थक होती है, तो उनके कर्म में शेषत्व -विवक्षा में षष्ठी-विभक्ति होती है। यथा – शतस्य व्यवहरणं पणनं वा (सौ की बिक्री या दाँव।)
7. **'दिवस्तदर्थस्य।'** अर्थात्, 'दिव्' धातु जब जुआ खेलने, या क्रय-विक्रय के अर्थ में प्रयुक्त हो, तो उसके कर्म में षष्ठी होती है। यथा – शतस्य दीव्यति।
8. **'कर्तृकर्मणोः कृतिः।'** अर्थात्, कृत्-प्रत्यय का प्रयोग होने पर, कृत्-प्रत्यय से युक्त अनुक्त कर्ता में तथा कर्म में षष्ठी होती है। यथा – कृष्णस्य कृतिः।
9. **'क्तस्य व वर्तमाने।'** यदि भूतकालिक 'क्त' प्रत्यय वर्तमान के अर्थ में प्रयुक्त हो, तो अनुक्त कर्ता में षष्ठी होती है। यथा – राज्ञां मतो बुद्धः पूजितो वा।
10. **'चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः।'** अर्थात्, आर्शीवाद अर्थ में प्रयुक्त आयुष्य, मद्र, भद्र, कुशल, सुख तथा हित आदि शब्दों के योग में चतुर्थी या षष्ठी विभक्ति होती है। यथा – आयुष्यं, चिरंजीवितं कृष्णाय वा।

7. सप्तमी विभक्ति

1. **'आधारोऽधिकरणम्'** – कर्ता और कर्म द्वारा अपनी विद्यमान क्रिया का जो आधार होता है उसकी अधिकरण संज्ञा होती है। यथा – स्थाल्यां पचति।
2. **'सप्तम्याधिकरणे च।'** अर्थात्- अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा- कटे आस्ते। यहाँ 'कट' अधिकरण है।

3. **'साध्वसाधु प्रयोगे च।'** अर्थात् साधु और असाधु शब्दों के साथ जिसके प्रति साधुता, या असाधुता बतलायी जाय, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। यथा-**साधुः कृष्णो मातरि।**
4. ***'निमित्तात्कर्मयोगे।'*** इस वार्तिक के अनुसार, निर्मित या क्रिया के फल के वाचक शब्दों से सप्तमी विभक्ति होती है, यदि फल का क्रिया के कर्म के साथ संयोग या समवाय-सम्बन्ध हो। यथा-

   चर्मणि द्वीपिनं हन्ति, दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम्।
   केशेषु चमरीं हन्ति, सीम्नि पुष्कलो हतः।।
5. **'यस्य च भावेन भावलक्षणम्।'** अर्थात्, जिसकी क्रिया से कोई दूसरी क्रिया लक्षित होती है, उसमें सप्तमी का प्रयोग होता है। यथा गोषु दुह्यमानासु गतः।
6. **'स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च।'** अर्थात् स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद्, साक्षिन्, प्रतिभू तथा प्रसूत; इन सात शब्दों के योग में षष्ठी तथा सप्तमी विभक्ति होतीं है। यथा- गवां गोषु या स्वामी (गायों का स्वामी)।
7. **'यतश्च निर्धारणम्'।** अर्थात् जहां पर किसी समुदाय से किसी व्यक्ति विशेष को जाति, गुण, क्रिया, या संज्ञा के आधार पर अलग किया जाय, वहां समुदाय, वाचक शब्द से षष्ठी, या सप्तमी विभक्ति होती है। यथा- नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः।
8. ***'प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च'।*** अर्थात् प्रसित् तथा उत्सुक शब्दों के योग में तृतीया और सप्तमी दोनों विभक्तियां होती हैं। यथा-प्रसित उत्सुको व हरिणा हरौ वा।
9. **'नक्षत्रे च लुपि।'** अर्थात्, यदि 'मूल' शब्द नक्षत्रार्थक हो तथा उसके प्रत्यय का लोप हुआ हो, तो उस नक्षत्रवाचक शब्द से अधिकरण अर्थ में तृतीया, या सप्तमी होती है। यथा- मूलेनावाहयेद् देवीं श्रवणेन वियर्जयेत्।
10. **'सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये।'** अर्थात् दो कारक शक्तियों के बीच में जो काल, या अध्व (मार्ग की दूरी) होती है, उसके वाचक शब्दों में सप्तमी, या पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा- इहस्थोऽयं क्रोशे क्रोशाद्वा लक्ष्यं विध्येत्।

    नोट-इनके विशद उदाहरण प्रथम भाग सम्भाषण के तृतीय अध्याय (विभक्ति ज्ञान) में देखे जा सकते हैं, जिससे इनका प्रायोगिक रूप भी स्पष्ट होगा।

जब उद्देश्य के रूप में प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष में से दो या तीन एकत्र हो जाते हैं तब क्रिया का रूप इस प्रकार होगा-

(1) प्रथम पुरुष और प्रथम पुरुष के कर्तृवाचक पदों के साथ क्रिया प्रथम पुरुष की होगी और वचन कर्ता की सामूहिक संख्या के अनुसार, यथा-(रमेश, गोपाल और

सुरेश पढ़ते हैं) रमेशः, गोपालः सुरेशश्च पठन्ति; देवः सुशीला च पठतः।

(2) प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष के कर्तृवाचक पदों के साथ क्रिया मध्यम पुरुष की होगी और वचन कर्त्ता की सामूहिक संख्या के अनुसार, यथा (वह और तू लिखता है) स च त्वं च लिखथः। स च यूयं लिखथ।

(3) अन्य पुरुषों के साथ जब उत्तम पुरुष का कर्तृवाचक पद होगा तब क्रिया उत्तम पुरुष की ही रहेगी और वचन कर्त्ता की सामूहिक संख्या के अनुसार, यथा-(तू और मैं पढ़ते हैं) त्वमहं च पठावः, स त्वमहं च पठामः, अहं युवां च पठामः।

कारक (एक दृष्टि में)

प्रथमा-

1. कर्त्ता में - शिशुः रोदिति। अहं पुष्पं पश्यामि।
2. कर्मवाच्य के कर्म में - वटुभिः पठ्यते वेदः, पशुभिः पीयते जलम्।
3. सम्बोधन में - भो गुरो ! क्षमस्व।
4. अव्यय के साथ - अशोक इति विख्यातः राजा सर्वजनप्रियः।
5. नाम मात्र में - आसीत् राजा विक्रमादित्यो नाम।

द्वितीया-

1. कर्म में - प्रजा संरक्षति नृपः, सा वर्धयति पार्थिवम्।
2. ऋते अन्तरेण, विना के साथ- विद्यामन्तरेण, विना, ऋते वा नैव सुखम्।
3. एनप् के साथ - तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणस्मदीयम्।
4. अभितः के साथ - अभितो भवनं वाटिका।
5. परितः के साथ - परितो ज्ञानिनं भक्ताः।
6. सर्वतः के साथ - सर्वतः पर्वतं वृक्षाः।
7. उभयतः के साथ - गोमतीमुभयतस्तरवः।
8. अन्तरा (बीच में) के साथ - अन्तरा त्वां च मां च सः।
9. समया, निकषा (समीप) के साथ - ग्रामं समया निकषा वा नदी।
10. व्याप्ति के अर्थ में - मासमधीते क्रोशं कुटिला नदी।
11. अनु के साथ - गुरुमनु शिष्यो गच्छेत्।
12. प्रति के साथ - दीनं प्रति दयां कुरु।
13. धिक् के साथ - धिक् पापं मूर्खजीवनम्।
14. अधिशीङ् के साथ - चन्द्रापीडः मुक्ताशिलापट्टमधिशेते।
15. अधिस्था के साथ - रमेशः गृहमधितिष्ठति (अथवा रमेशः गृहे तिष्ठति)।
16. अध्यास् के साथ - नृपः सिंहासनमध्यास्ते (नृपः सिंहासने आस्ते)।
17. अनु, उप पूर्वक वस् के साथ - हरिः वैकुण्ठमुपवसति, अनुवसति वा।

18. आवस् एवं अधिवस् के साथ - अधिवसति काशीं विश्वनाथः। भक्तः देवमन्दिरम् आवसति।
19. अभि-नि-पूर्वक विश् के साथ - मनो धर्मम् अभिनिविशते।
20. क्रियाविशेषण में - सत्वरं धावति मृगः। सयत्नं धर्ममाचरेत्।

तृतीया-

1. करण में - सः जलेन मुखं प्रक्षालयति। हस्तेन भुङ्क्ते।
2. कर्मवाच्य कर्ता में - रामेण रावणो हतः।
3. स्वभावादि अर्थों में - रामः प्रकृत्या साधुः। नाम्ना गोपालोऽयम्।
4. सह, साकम्, सार्धम् के साथ - शशिना सह यति कौमुदी।
5. सदृश के अर्थ में - धर्मेण सदृशो नास्ति बन्धुरन्यो महीतले।
6. हेतु के अर्थ में - केन हेतुना अत्र वससि?
7. हीन के साथ - विद्यया तु विहीनस्य किं वृथा जीवितेन ते।
8. विना के साथ - श्रमेण हि विना विद्या लभ्यते न।
9. अलं के साथ - अलं महीपाल तव श्रमेण।
10. प्रयोजन के अर्थ में - धनेन किं यो न ददाति नाश्नुते।
11. लक्षण-बोध में - जटाभिस्तापसोऽयं प्रतीयते।
12. फलप्राप्ति (अपवर्ग) में - पञ्चभिर्वर्षैर्न्यायमधीतम्। पञ्चभिर्दिनैः नीरोगो जातः।
13. विकृत अंग में - बालकश्चक्षुषा काणः कर्णाभ्यां बधिरश्च सः।
    पादेन खञ्जः वृद्धोऽसौ कुब्जा पृष्ठेन मन्थरा।।

चतुर्थी-

1. सम्प्रदान में - राजा ब्राह्मणाय धनं ददाति।
2. निमित्त के अर्थ में - धनं सुखाय, विद्या ज्ञानाय।
3. रुचि के अर्थ में - शिशवे क्रीडनकं रोचते।
4. धारय् (ऋणी होना) के अर्थ में - स मह्यं शतं धारयति।
5. स्पृह् के साथ - अहं यशसे स्पृहयामि।
6. नमः, स्वस्ति के साथ - गुरवे नमः। नृपाय स्वस्ति।
7. समर्थ अर्थवाली धातुओं के साथ - प्रभवति मल्लो मल्लाय।
8. कल्प् (होना, बनाने में समर्थ होना) के साथ - ज्ञानं सुखाय कल्पते।
9. तुम् के अर्थ में - ब्राह्मणः स्नानाय (स्नातुं) याति।
10. क्रुद्ध अर्थवाली धातुओं के साथ - गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।
11. द्रुह् अर्थवाली धातुओं के साथ - मूर्खः पण्डिताय द्रुह्यति।
12. असूय (निन्दा) अर्थवाली धातुओं के साथ - दुर्जनः सज्जनाय असूयति।

पञ्चमी-

1. पृथक् अर्थ में - वृक्षात् फलानि पतन्ति। स ग्रामाद् आगच्छति।
2. भय के अर्थ में - असज्जनात् कस्य भयं न जायते?
3. ग्रहण करने के अर्थ में - कूपात् जलं गृह्णाति।
4. पूर्वादि के योग में - स्नानात् पूर्वं न भुञ्जीत न धावेत् भोजनात् परम्।
5. अन्यार्थ के योग में - ईश्वरादन्यः कः रक्षितुं समर्थः?
6. उत्कर्ष-बोध में - जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
7. विना, ऋते के योग में - परिश्रमाद् विना (ऋते) विद्या न भवति।
8. आरात् (दूर या समीप) के योग में - ग्रामाद् आरात् सुन्दरमुपवनम्।
9. प्रभृति के योग में - शैशवात्प्रभृति सोऽतीव चतुरः।
10. आङ् के साथ - आमूलात् रहस्यमिदं श्रोतुमिच्छामि।
11. विरामार्थक शब्दों के साथ - न नवः प्रभुराफलोदयात् स्थिरकर्मा विरराम कर्मणः।
12. काल और मार्ग की अवधि में - विवाहात् नवमे दिने।
13. जायते आदि अर्थ में - बीजेभ्यः अङ्कुरा जायन्ते।
14. उद्भवति, प्रभवति, निलीयते प्रतियच्छति के साथ - हिमालयात् गंगा प्रभवति, उद्गच्छति वा। नृपात् चोरः निलीयते। तिलेभ्यः माषान् प्रतियच्छति।
15. जुगुप्सते, प्रमाद्यति के साथ - स पापात् जुगुप्सते। त्वं धर्मात् प्रमाद्यसि।
16. निवारण अर्थ में - मित्रं पापात् निवारयति।
17. जिससे कोई विद्या सीखी जाय उसमें - छात्रोऽध्यापकात् अधीते।

षष्ठी-

1. सम्बन्ध में - मूर्खस्य बहवो दोषाः सतां च बहवो गुणः।
2. कृदन्त कर्ता में - अञ्जनस्य क्षयं दृष्टवा वल्मीकस्य च संचयम्।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्यात् दानाध्ययनकर्मभिः ॥
3. तुल्यार्थ के साथ - रामस्य तुल्यो भुवि नास्ति राजा।
4. कृदन्त कर्म में - अन्नस्य पाकः, धनस्य दानम्।
5. स्मरणर्थक धातुओं के साथ - स मातुः स्मरति।
6. दूर एवं समीपवाची शब्दों के साथ - नगरस्य दूरं, (नगराद् वा दूरम्) समीपम् सकाशम् वा।
7. कृते, समक्षम्, मध्ये, अन्तरे, अन्तः के साथ - पठनस्य कृते, आचार्यस्य समक्षम् बालानां मध्ये, गृहस्य अन्तरे अन्तः वा।
8. अतस् प्रत्यय वाले शब्दों के साथ - नगरस्य दक्षिणतः, उत्तरतः।
9. अनादर में - रुदतः शिशोः माता ययौ।

10. हेतु शब्द के प्रयोग में – अन्नस्य हेतोर्वसति। निवासस्य हेतोर्याति।

सप्तमी-

1. अधिकरण में – सभायां शोभते बुधः। आसने शोभते गुरुः।
2. भाव में – यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः?
3. अनादर में – रुदति शिशौ (रुदतः शिशोः वा) गता माता।
4. निर्धारण में – जीवेषु मानवाः श्रेष्ठाः, मानवेषु च पण्डिताः।
5. एक क्रिया के पश्चात् दूसरी क्रिया होने पर – सूर्ये उदिते विकसति कमलम्।
6. विषय में – मोक्षे इच्छाऽस्ति। दिने, प्रातःकाले, मध्याह्ने, सायंकाले वा कार्यं करोति।
7. संलग्नार्थक शब्दों और चतुरार्थक शब्दों के साथ – कार्ये लग्नः, तत्परः। शास्त्रे निपुणः, प्रवीणः, दक्षः आदि।

चतुर्थ : अध्याय
उपसर्ग परिचय

साधारण धातुओं के प्रयोग की अपेक्षा सोपसर्ग धातुओं के प्रयोग से भाषा मँजी हुई और परिष्कृत लगती है। साथ ही साथ छात्र धातुओं के अर्थ और रूपावली को कण्ठस्थ करने के परिश्रम से बच जाते हैं। उपसर्ग लगाने से धातुओं का अर्थ बदल जाता है, जैसे – 'हृ' का अर्थ 'हरण करना' है, 'प्र' उपसर्ग लगने से उसका अर्थ 'प्रहार करना' हो जाता है, 'आ' उपसर्ग लगने से 'भोजन करना' तथा 'सम्' उपसर्ग लगने से 'नाश करना' हो जाता है। अत: कहा गया है–

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहारवत् ॥

उपसर्ग लगाने से कहीं अकर्मक धातुएँ सकर्मक हो जाती हैं और उनके अर्थ में विलक्षणता आ जाती है। यथा – अकर्मक 'भू' का अर्थ है, 'होना' किन्तु 'अनु' उपसर्ग लगाने से यह सकर्मक हो जाती है। इसका अर्थ 'अनुभव करना' हो जाता है, जैसे– पातकी दु:खमनुभवति (पापी दु:ख भोगता है)। मुख्य उपसर्ग निम्न है

प्र (अधिक), पर (उल्टा पीछे), अप (दूर), सम् (अच्छी तरह), अनु (पीछे), अव (नीचे, दूर), निस् (बिना, बाहर), दुस् (कठिन), दुर् (बुरा), वि (बिना, अलग), आङ् (तक, कम), नि (नीचे), अधि (ऊपर), अपि (निकट), अति (बहुत), सु (सुंदर), उद् (ऊपर), अभि (ओर), प्रति (ओर, उल्टा), परि (चारों ओर), उप (निकट)।

धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते।
तमेव विशिनष्टयन्य उपसर्गगतिस्त्रिधा ॥

धातु के साथ उपसर्ग लगाने से तीन परिवर्तन होते हैं–

(1) क्रिया का अर्थ बिलकुल बदल जाता है, जैसे – विजय: – पराजय:, उपकार: – अपकार:, आहार: – प्रहार:, (2) क्रिया के अर्थ में विशिष्टता आ जाती है, जैसे– गमनम् – अनुगमनम्, (3) क्रिया के ही अर्थ का अनुवर्तन हो जाता है, वसति– अधिवसति, उच्यते – प्रोच्यते।

अय् (जाना)

परा + अय् (भागना) अश्वारोह: पलायते।

अर्थ् (माँगना)

प्र + अर्थ् (प्रार्थना करना) स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते। (गीतायाम्)

अभि + अर्थ् (इच्छा करना) यदि सा तापसकन्यका अभ्यर्थनीया। (शाकुंतले)

अभि + अर्थ् (प्रार्थना करना) माम् अनभ्यर्थनीयमभ्यर्थयते। (मालवि.)

निर् + अस् (हटाना) सः धूर्तं निरस्यति।

आप् (पाना) -

वि + आप् (फैलना) रजः आकाशं व्याप्नोति।

सम् + आप् (पूरा होना) यावत्तेषां समाप्येरन् यज्ञाः पर्याप्तदक्षिणः। (रघु.)

आस् (बैठना) -

अधि + आस् (बैठना) स राजसिंहासनमध्यास्ते।

उप + आस् (पूजा करना) भक्तः शिवमुपास्ते।

अनु + आस् (सेवा करना) सखीभ्यामन्वास्यते। (शाकुन्तले)

इ (जाना) -

अव + इ (जानना) अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः। (रघुवंशे)

प्रति + इ (विश्वास करना) सः मयि न प्रत्येति।

उत् + इ (उदय होना) उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च।

उप + इ (प्राप्त करना) उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः। (पञ्चतन्त्रे)

अभि + इ (सामने आना) स स्वामिनामभ्येति।

अनु + इ (पीछे जाना) सेवकः स्वामिनमन्वेति।

अप + इ (दूर होना) सूर्योदयेऽन्धकारोऽपैति।

अभि + उप + इ (प्राप्त होना) व्यतीतकालस्त्वहमभ्युपेतस्त्वामर्थिभावादिति मे विषादः । (रघुवंशे)

ईक्ष् (देखना) -

अप + ईक्ष् (ध्यान रखना) किमपेक्ष्य फलं परोधरान्ध्वनतः प्रार्थयते मृगाधिपः।

उप + ईक्ष् (ध्यान न रखना) अलसः कर्त्तव्यमुपेक्षते।

परि + ईक्ष् (परीक्षा लेना) अग्न परीक्ष्यते स्वर्ण काव्यं सदसि तद्विदाम्।

प्रति + ईक्ष् (प्रतीक्षा करना) क्षणं प्रतीक्षस्व यावदागच्छामि।

निर् + ईक्ष् (देखना) सा साग्रहं त्वां निरैक्षत।

अव + ईक्ष् (आदर करना, ध्यान रखना) त्रिदिवोत्सुकयाप्यवेक्ष्य माम्।

अव + ईक्ष् (देख भाल करना) स कदाचिदवेक्षितप्रजः। (रघुवंशे)

कृ (करना)-

अनु + कृ (नकल करना) सर्वाभिरन्याभिः कलाभिरनुचकार तं वैशम्पायनः।

अधि + कृ (अधिकार करना) ते नाम जयिनो ये शरीरस्थान् रिपूनधिकुर्वत।

अप + कृ (बुराई करना) अथवा सैनिकाः केचिदपकुर्युर्युधिष्ठिरम्। (महा.)

प्र + कृ (कथा करना) यो रामायणं प्रकुरुते स खलु साधिष्ठमुपकरोति लोकस्य।

उत् + आ + कृ (डराना) श्येनो वर्तिकामुदाकुरुते।

तिरस् + कृ (अनादर करना) किमर्थं तिरस्करोषि माम्?

नमस् + कृ (नमस्कार करना) देवदेवं नमस्कुरु।

प्रति + कृ (उपाय करना) आगतं तु भयं वीक्ष्य प्रतिकुर्याद् यथोचितम्।

उप + कृ (सेवा करना) भक्तः शिवमुपकुरुते।

उप + कृ (उपकार करना) किं ते भूयः प्रियमुपकरोतु पाकशासनः?

सा लक्ष्मीरुपकुरुते यया परेषाम्। (किरात.)

वि + कृ (विकार पैदा करना) चित्तं विकरोति कामः।

मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः। (रघु.)

परि + (ष्) + कृ (सजाना) रथो हेमपरिष्कृतः। (महाभारते)

अलम् + कृ (शोभा बढ+ाना) रामचन्द्रः वनमिदं पुनरलङ्कृयिष्यति?

आविष् + कृ (प्रकट करना) वायुयानमिदं केन धीमताऽऽविष्कृतं भुवि।

निर् + आ + कृ (हटाना) स निराकरोति दोषान्।

च्विप्रत्ययान्त कृ –

1. अङ्कीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति।
2. वीरवरः देव्यै स्वपुत्रमुपहारीकरोति।
3. सफलीकृतं भवता मम जीवितं शुभागमनेन।
4. स्थिरीकरोमि ते वासस्थानम्।
5. कदा रामभद्रो वनमिदं सनाथीकरिष्यति?
6. विरहकथाऽऽकुलीकरोति मे हृदयम्।

गम् (जाना) –

गम् – (जाना) काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्। (हितोपदेशे)

अनु + गम् (पीछा करना) वत्स मामनुगच्छ।

अव + गम् (जानना) नावगच्छामि ते मतिम्।

अधि + गम् (प्राप्त करना) अधिगच्छति महिमानं चन्द्रोऽपि निशापरि-गृहीतः।

(मालविकाग्निमित्रे)

तेभ्योऽधिगन्तुं निगमान्तविद्यां वाल्मीकिपार्श्वादिह पर्यटामि। (उत्तर.)

अभि + उप + गम् (स्वीकार करना) अपीमं प्रस्तावमभ्युपगच्छसि?

अभि + आ + गम् (आना) अस्मद्गृहानद्यैकोऽभ्यागतोऽभ्यागम्।

आ + गम् (आना) स्नानार्थं स नदीमागच्छेत्।

प्रति + गम् (लौटना) कदा स प्रतिगमिष्यति?

प्रति + आ + गम् (लौटना) माणवकः कुटीरं प्रत्यागच्छति।

निर् + गम् (बाहर जाना) स गृहान्निर्गतः।

सम् + गम् (मिलना) (क) संगत्य कलं क्वणन्ति पक्षिणः।
(ख) प्रयागे यमुना गङ्गां संगच्छति।
उत् + गम् (ऊपर जाना, उड़ना) पक्षी आकाशमुदागच्छत्।
प्रति + उद् + गम् (अगवानी के लिये जाना) लङ्कातो निवर्तमानं श्रीरामं भरतः प्रत्युज्जगाम।

ग्रह् (लेना) -

नि + ग्रह् (दंड देना) शीघ्रमयं दुष्टवणिक् निगृह्यताम्।
अनु + ग्रह् (कृपा करना) गुरो मामनुगृहाण।
वि + ग्रह् (लड़ाई करना) विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा बली य इत्थमस्वास्थ्यमहर्दिवं दिवः। (शिशुपालवधे)
प्रति + ग्रह् (स्वीकार करना) तथेति प्रतिजग्राह प्रीतिमान्सपरिग्रहः।
आदेशं देशकालज्ञः शिष्यः शासितुरानतः ॥ (रघुवंशे)

चर् (चलना)-

अति + चर् (विरुद्ध आचरण करना) पुत्रः पितृनत्यचरन् नार्यश्चात्यचरन् पतीन्।
आ + चर् (व्यवहार करना) प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्।
अनु + चर् (पीछा करना) सत्यमार्गमनुचरेः।
उत् + चर् (कहना) स धर्मोपदेशं नोच्चरते।
परि + चर् (सेवा करना)
सम् + चर् (आना जाना) भूयांसो जना मार्गेणानेन सञ्चरन्ते।
प्र + चर् (प्रचार होना) यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीत ले।
तावद्रामायण्कथा लोकेषु प्रचरिष्यति ॥
उप + चर् (सेवा करना) पार्वती अहोरात्रं शिवमुपचचार।

चि (चुनना)-

उप + चि (बढ़ाना) अधोऽधः पश्यतः कस्य महिमा नोपचीयते।
अप + चि (घटना) राजहंस तव सैव शुभ्रता चीयते न च न चापचीयते।
अव + चि (चुनना) सा उद्याने लताभ्यो बहूनि कुसुमान्यवाचिनोत्।
निस् + चि (निश्चय करना) वयं निश्चिनुमः न वयं विश्रमिष्यामो यावन्न स्वातन्त्र्य लभामहे।
अभि + उद् + चि (इकट्ठा करना) अभ्युच्चितास्तर्काः प्रभावुका भवन्ति।
आ + चि (बिछाना) भृत्यः शय्यां प्रच्छदेनाचिनोति।
उप + चि (बढ़ाना) मासांशिनो मांसमेवोपचिन्वन्ति न प्रज्ञाम्।
विनिस् + चि (निश्चय करना) निश्चेतुं शक्यो न सुखमिति वा दुःखमिति वा। (उत्तर.)

सम् + चि (इकट्ठा करना) रक्षायोगादयमपि तपः प्रत्यहं संचिनोति (शाकु.)

प्र + चि (पुष्ट होना) स पुष्टिप्रदमन्नं भुङ्क्ते तस्मात्प्रचीयन्ते तस्य गात्राणि।

ज्ञा (जानना) -

अनु + ज्ञा (आज्ञा देना) तत् अनुजानीहि मां गमनाय। (उत्तररामचरिते)

प्रति + ज्ञा (प्रतिज्ञा करना) हरचापारोपणेन कन्यादानं प्रतिजानीते।

अव + ज्ञा (अनादर करना) अवजानासि मां यस्मादतस्ते न भविष्यति।

मत्प्रसूतिमनारभ्य प्रजेति त्वां शशाप सा ॥ (रघु.)

अप + ज्ञा (इनकार करना) शतमपजानीते।

सम् + ज्ञा (आशा करना) शतं सञ्जानीते।

तॄ (तैरना)-

अव + तॄ (उतरना) अवतरति आकाशाद् वायुयानम्।

उत् + तॄ (पार करना) स अनायासं गङ्गामुदतरत्।

वि + तॄ (देना) वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्याम्। (उत्तररामचरिते)

सम् + तॄ (तैरना) स हि घटिकाप्रायं नद्यां सन्तरेत्।

दिश् (देना)-

आ + दिश् (आज्ञा देना) गुरुः शिष्यान् आदिशाति।

उप + दिश् (उपदेश देना) उपदिशतु भवान् धर्मशास्त्रम्।

सम् + दिश् (सन्देश देना) किं सन्दिशति स्वामी?

निर् + दिश् (बताना) यथाभिलषितं स्थानं निर्दिशेत्।

दा (देना) -

आ + दा (ग्रहण करना) नृपतिः प्रकृतीरवेक्षितुं व्यवहारसनमाददे युवा।

नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्। (शाकु.)

आ + दा (कहना शुरू करना) अर्थ्यामर्थपतिर्वाचमाददे वदतां वरः। (रघु.)

*** धा (धारण करना) -**

अभि + धा (कहना) पयोऽपि शौण्डिकीहस्ते वारणीत्यभिधीयते। (हितोपदेशे)।

अपि + धा (बन्द करना) द्वारं पिधेहि अतिकालमागतास्ते मा प्राविक्षन्निति।

अव + धा (ध्यान देना) गोपालः स्वाध्याये नावधत्ते।

सम् + धा (सन्धि करना) बलीयसा शत्रुणा सन्दध्यात्, विगृह्वानो हि ध्रुवमुत्सीदेत्।

सम् + धा (कार्य करना) सहसा विदधीत न क्रियाम्। (किराते)

वि + परि + धा (बदलना) विपरिधेहि वासांसि, मलिनानि तानि जातानि।

आ + धा (गिरवी रखना) धनमिच्छामि, तन्मया साधवे स्वं गृहमाधात व्यम्भविष्यति।

परि + धा (पहनना) उत्सवे नरः नव वस्त्रं परिदधाति।

नि + धा (विश्वास रखना) निदधे विजयाशंसा चापे सीतां च लक्ष्मणे।

नि + धा (नीचे रखना, समाप्त करना आदि) सलिलैर्निहितं रजः क्षितौ।
पादं निदधाति।

नि +धा (अमानत रखना) काशीं गच्छामि, अवशिष्टं धनं विश्वस्ते ग्रामवणिजि निधास्यामि।

नी (ले जाना)-

अनु + नी (मनाना) अनुनय मित्रं कुपितम्।

विपूर्वो धा करोत्यर्थे अभिपूर्वस्तु भाषणे।
मेलने चापि सम्पूर्वो निपूर्वः स्थापने मतः।।

अभि + नी (अभिनय करना) गोपालः सीतायाः भूमिकामभिनयेत्।

आ + नी (लाना) आनय जलं पूजायै।

उप + नी (उपनयन करना) माणवकमुपनयते।

उप + नी (काम में लाना) कर्मकरानुपनयते।

उप + नी (समर्पण करना) स न्यस्तशस्त्रो हरये स्वदेहमुपानयत्पिण्डमिवामिषस्य। (रघु.)

परि + नी (ब्याह करना) नलो दमयन्तीं परिणिनाय।

प्र + नी (ग्रन्थ की रचना करना) वाल्मीकिः रामायणं प्रणिनाय।

(वि + अप + नी (दूर करना) सन्मार्गालोकनाय व्यपनयुत स वस्तामसीं वृत्तिमीशः। (मालविका.)

अप + नी (हटाना) अपनेष्यामि ते दर्पम्।

उत् + नी (ऊँचा उठाना) अवदातेनानेन चरितेन कुलमुन्नेष्यसि।

निर् + नी (निर्णय करना) कलहस्य मूलं निर्णयति।

वि + नी (कर चुकाना) करं विनयते।

वि + नी (भली भाँति खच करना) शतं विनयते।

पत् (गिरना) -

आ + पत् (आ पड़ना) अहो कष्टमापतितम्।

उत् + पत् (उड़ना) प्रभते पक्षिणः उत्पतन्ति।

प्र + ना + पत् (प्रमाण करना) उपाध्यायचरणयोः प्रणिपतति शिष्यः।

नि + पत् (गिरना) क्षते प्रहारा निपतन्त्यभीक्ष्णम्। (पञ्चतन्त्रे)

सम् + नि + पत् (इकट्ठा होना) नानादेशस्था नयज्ञा इह सन्निपतिष्यन्ति।

सम् + नि + पत् (टूट पड़ना) अभिमन्युः शत्रुसैन्ये संन्यपतत्, शतधां च तद् व्यदलयत्।

वि + नि + पत् (पतन होना) विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।

पद् (जाना) –

प्र + पद् (प्राप्त होना, आश्रय लेना, समीप आना) ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। (गीतायाम्)

उत् + पद् (उत्पन्न होना) दुग्धात् नवनीतम् उत्पद्यते।

वि + पद् (कष्ट में पड़ना) स विपद्यते (विपन्नो भवति)।

उप + पद् (योग्य होना) नैतत् त्वय्युपपद्यते। (गीतायाम्)

भू (होना) –

अनु + भू (अनुभव करना) सन्तः सुखम् अनुभवन्ति।

आविः + भू (प्रकट होना) आविर्भूते शशिनि तमो विलीयते।

अभि + भू (तिरस्कार करना) कस्त्वामभिभवितुमिच्छति बलात्?

परा + भू (हराना) बलवान् दुबलान् पराभवति।

प्रादुः + भू (प्रकट होना) प्रादुर्भवति भगवान् विपदि।

परि + भू (तिरस्कार करना) रावणः विभीषणं परिबभूव।

प्र + भू (समर्थ होना) प्रभवति शुचिर्बिमबोद्ग्राहे मणिः। (उत्तररामचरिते)

कुसुमान्यपि गात्रसंगमात् प्रभवन्त्यायुरपोहितुं यदि।
न भविष्यति हन्त साधनं किमिवान्यत्प्रहरिष्यतो विधेः। (रघुवंशे)

उद् + भू (उत्पन्न होना) हिमवतो गङ्गा उद्भवति।

सम् + भू (जन्म लेना) सम्भवामि युगे युगे। (गीतायाम्)

सम् + भू (मिलना) सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा। (शिशु.)

अनु + भू (मालूम करना, अनुभव करना) अनुभवामि एतत्।

वि + भावि (विचार करके भली भाँति जानना, अनुभव करना, कल्पना करना) नाहं ते तर्के दोषं विभावयामि।

परि + भावि (भली भाँति विचार करना) गुरोर्भाषितं मुहुर्मुहः परिभावय।

च्विप्रत्यान्त भू के प्रयोग –

1. भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः? 2. दृढीभवति शरीरं व्यायामेन।
3. भवतां शुभागमनेन पवित्रीभूतं मे गृहम्। 4. तपसा भगवान् प्रत्यक्षीभवति।

विश् (प्रवेश करना) –

नि + विश् (प्रवेश करना) निविशते यदि शूकशिखा पदे। (नैषधे)

अभि + निविश् (घुसना) भयं तावत्सेव्यादभिनिविशते सेवकजनम्। (मुद्रा.)

उप + विश् (बैठना) आसने उपविशतु भवान्

प्र + विश् (प्रवेश करना) संन्यासी वनान्तरं प्राविशत्।

मन् (सोचना)-

अव + मन् (अनादर करना) नावमन्येत निर्धनम् ।

अनु + मन् (आज्ञा या सलाह देना) राजन्यान्स्वपुरनिवृत्तयेऽनुमेने। (रघुवंशे)

सम् + मन् (आदर करना) कच्चिदग्निमिवानाय्यं काले संमन्यसेऽतिथिम्। (भट्टिकाव्ये)

मन्त्र् (सलाह करना) -

अभि + मन्त्र् (संस्कार करना) जलम् अभिमन्त्र्य ददौ।

आ + मन्त्र् (विदा होना) तात, लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदाममन्त्रये।

आ + मन्त्र् (बुलाना) आमन्त्रयध्वं राष्ट्रेषु ब्राह्मणान्। (महाभारते)

नि + मन्त्र् (न्यौता देना) ब्राह्मणन् निमन्त्रयस्व।

रञ्ज् (खुश होना) -

अनु + रञ्ज् (अनुराग होना) देवे चन्द्रगुप्ते दृढमनुरक्ता: प्रकृतय:। (मुद्रा.)

रम् (क्रीड़ा करना) -

वि + रम् (हटना) विरम विरम पापात्।

उप + रम् (मरना) स शोकेन उपरत:।

उप + रम् (लगाना) यत्रोपरमते चित्तम् (भगवद्गीतायाम्)।

वद् (कहना) -

अप + वद् (निन्दा करना) दुर्जन: सज्जनमपवदति। लोकापवादो बलवान् मतो मे। (रघुवंशे)

उप + वद् (प्रशंसा करना) दातारमुपवदन्ते।

वि + वद् (झगड़ा करना) कृषका: क्षेत्रे विवदन्ते।

अनु + वद् (उत्तर देना) तान् प्रत्यवादीदथ राघवोऽपि।

लप् (बोलना) -

अप + लप् (छिपाना) दुष्ट: सत्यमपलपति।

आ + लप् (बातचीत करना) साधु: साधुना सह आलपत्।

प्र + लप् (बकवाद करना) उन्मत्ता: सदा प्रलपन्ति।

वि + लप् (रोना) विललाप स वाष्पगद्गदं सहजामप्यपहाय धीरताम्। (रघु.)

सम् + लप् (बातचीत करना) संलापितानां मधुरै: वचोभि:।

वह् (ले जाना) -

उद् + वह् (व्याह करना) इति शिरसि स वामं पादमाधाय राज्ञामुदवहदनवद्यां तामवद्यादपेत:। (रघुवंशे)

अति + वह् (बिताना) किंवा मयापि न दिनान्यतिवाहितानि। (मालतीमा.)

आ + वह् (लाना, पैदा करना) महदपि राज्यं सुखं नावहति।

आ + वह् (धारण करना) मा रोदीर्धैर्यमावह। (मार्कण्डेयपुराणे)
मण्डनमावहन्तीम्। (चौरपञ्चाशिकायाम्)
निः + वह् (कार्य चलाना, पूरा करना आदि) स कार्यमेतत् निर्वहति।
प्र + वह् (बहना) अनेन मार्गेण गङ्गा प्रावहत्।

वृत् (होना) -

अनु + वृत् (अनुसरण करना) साधवः साधुमनुवर्तन्ते।
आ + वृत् (वापस आना) अनिंद्या नन्दिनी नाम धेनुराववृते वनात् (रंघु.)
आ + वृत्-णिच् (माला फेरना) अक्षवलयमावर्तयन्तं तापसकुमारमदर्शयम्।
परि + वृत् (घूमना) चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च। (मेघ.)
नि + वृत् (विरत होना, रुकना) प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्वमांसस्य भक्षणत्। (मनुस्मृतौ)
नि + वृत् (लौटना) न च निम्नादिव सलिलं निवर्तते मे ततो हृदयम्। (शाकु.)
यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परं मम। (भगवद्गीतायाम्)
प्र + वृत् (प्रवृत्त होना, लगना) प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः। (शाकु.)
अपि स्वशक्त्या तपसि प्रवर्तसे? (कुमारसंभवे)
प्र + वृत् (शुरू होना) ततः प्रववृते युद्धम्।

वस् (रहना) -

अधि + वस् (रहना) रामः अयोध्यामध्यवसत्।
उप + वस् (उपवास करना) स एकादश्यामुपवसति।
उप + वस् (समीप रहना) ब्राह्मणः ग्रामम् उपवसति।
नि + वस् (रहना) स कुत्र निवसति?
प्र + वस् (परदेश में रहना) विधाय वृतिं भार्यायाः प्रवसेत्कार्यवान्नरः। (मुन.)

सद् (जाना) -

अव + सद् (हिम्मत हारना) प्रतिहतप्रयत्नाः क्षुदा अवसीदन्ति।
उत् + सद् (नाश होना) उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्।
उत् + सद् (णिजन्त) (नष्ट करना) अयमसत्येऽभिनिवेशो नियतमुत्सादयिप्यति वः।
आ + सद् (पाना) पान्थः कूपमेकमाससाद।
प्र + सद् (प्रसन्न होना) प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वम्। (दुर्गासप्तशत्याम्)
वि + सद् (दुःखी होना) यूयं मा विषीदत।
नि + सद् (बैठना) यल्लघु तदुत्प्लवते यद् गुरु तन्निषीदति।
उप+सद् (सेवा में जाना) उपसेदिवान् कौत्सः पाणिनि चिरं ततो
व्याकरणमधिजग्मिवान्।
प्रति + आ + सद् (अतिसमीप आना) प्रत्यासीदति परीक्षा त्वं च पाठेऽनवहितः।

सृ (जाना) -

अप + सृ (हटना) इतो दूरमपसर।

निः + सृ (निकलना) क्षतात् रक्तं निःसरति।

अनु + सृ (अनुकरण करना) वनं यावदनुसरति।

प्र + सृ (फैलना) प्रससार यशस्तव।

अभि + सृ (प्रेमी के पास जाना) सा अभिसरति।

स्था (ठहरना) -

अधि + स्था (स्थिर रहना) साधवः साधुतामधितिष्ठन्ति।

आ + स्था (किसी सिद्धान्त की स्थापना) शब्दं नित्यम् आतिष्ठते।

अनु + स्था (करना) मनसापि पापं नानुतिष्ठेत्।

अव + स्था (ठहरना) नावतिष्ठतां भवानत्र।

उत् + स्था (उठना) उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते।

प्र + स्था (रवाना होना) प्रीतः प्रतस्थे मुनिराश्रमाय।

प्रति + अव + स्था (विरोध करना) अत्र प्रत्यवतिष्ठामहे वयम्।

उप + स्था (जाना, समीप जाना, उपस्थित होना) पन्थाः काशीमुपतिष्ठते।

उप + स्था (पूजा करना) स्तुत्यं स्तुतिभिरर्थ्याभिरुपतरथे सरस्वती। (रघुवंशे)

उप + स्था (मिलना) गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते।

हृ (चुरा ले जाना) -

अनु + हृ (सदृश गणों को धारण करना) पैतृकमश्वा गतमनुहरन्ते।

अप + हृ (चुराना) चौरः धनमपहरति।

अप + हृ (दूर करना) अपह्रिये खलु परिश्रमजनितया निद्रया (उत्तरराम.)

आ + हृ (लाना) वित्तस्य विद्यापरिसंख्यया मे कोटीश्चतस्रो दश चाहरेति।

उत् + हृ (उद्धार करना) मां तावदुद्धर शुचो दयिताप्रवृत्त्या (विक्रमोर्वशीये)

उत् + आ + हृ (उदाहरण देना) त्वां कामिनां मदनदूतिमुदाहरन्ति (विक्र.)

अभ्यव + हृ (खाना) सक्तून् पिब धानां खादेतत्यभ्यवहरति।

परि + हृ (छोड़ना) स्त्रीसन्निकर्षपरिहर्तुमिच्छन्नन्तर्दधे भूतपतिः संभूतः।

उप + हृ (भेंट देना) देवेभ्यः बलिमुपहरेत्।

प्र + हृ (मारना) कृष्णः कसं शिरसि प्राहरत्।

वि + हृ (क्रीड़ा करना, विहार करना) विहरति हरिरिह सरसवसन्ते (गीत.)।

• स कदाचिदवेक्षितप्रजः सह देव्या विजहार सुप्रजः। रघुवंशे)

सम् + हृ (हटाना) न हि संहरते ज्योत्स्नां चन्द्रश्चाण्डालवेश्मनः।

सं + हृ (रोकना) क्रोधं प्रभो संहर संहरेति यावद् गिरः खे सरतां चरन्ति।

तावत्स वह्निर्भवनेत्रजन्मा भस्मावशेषं मदनं चकार ॥ (कुमारसंभवे)

क्रम् (चलना) -

अति + क्रम् (गुजराना) यथा यथा यौवनमतिचकाम। (कादम्बर्याम्)

अति + क्रम् (उल्लङ्घन करना) कथमतिकान्तमगस्त्याश्रमपदम्। (महावीरचरिते)

अप + क्रम् (दूर करना) नगरादपक्रान्तः। (मुद्राराक्षसे)

आ + क्रम् (आक्रमण करना) पौरस्त्यानेवमाकामंस्तास्तांञ्जनपदाञ्जयी। (रघुवंशे)

आ + क्रम् (नक्षत्र का उदित होना) आक्रमते सूर्यः। (महाभारते)

निस् + क्रम् (बाहर जाना, निकलना) इति निष्क्रान्ताः सर्वे।

उप + क्रम् (आरम्भ करना) वक्तुं मिथः प्राकमतैवमेनम्। (कुमारसंभवे)

परि + क्रम् (परिक्रमा करना) स परिक्रामति।

वि + क्रम् (कदम रखना, आगे बढ+ना) विष्णुस्त्रेधा विचक्रमे।

सम् + क्रम् (संक्रमण करना) कालो ह्यायं संक्रमितुं द्वितीयं सर्वोपकारक्षममाश्रमं ते। (रघुवंशे)

द्रु (पिघलना)

द्रवति च हिमरश्मावुद्गते चन्द्रान्तः। (मालतीमाधवे)

उप + द्रु (आकरण करना) प्राग्ज्योतिषमुपाद्रवत्। (महाभारते)

वि + द्रु (भागना) जलसङ्घात इवासि विद्रुतः। (कुमारसम्भवे)

क्षिप् (फेंकना) -

किं कूर्मस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येष यत्। (मुद्रा.)

अव + क्षिप् (निन्दा करना) मदलेखामवक्षिप्य। (कादम्बर्याम्)

आ + क्षिप् (अपमान करना) अरे रे राधागर्भभारभूत ! किमेवमाक्षिपसि। (वेणी.)

उत् + क्षिप् (ऊपर फेंकना) बलिमाकाश उत्क्षिपेत्। (मनुस्मृतौ)

सम् + क्षिप् (संक्षिप्त करना) संक्षिप्येत क्षण इव कथं दीर्घयामा त्रियामा।

बन्ध् (बाँधना, पहनना) न हि चूडामणिः पादे प्रभवामीति बध्यते।

उत् + बन्ध् (बाँधना) पादपे आत्मानमुद्बध्य व्यापारदयामि। (रत्नावल्याम्)

निर् + बन्ध् (आग्रह करना, हठ करना, जोरदार माँग करना) निर्बन्धपृष्टः च जगाद सर्वम्। (रघुवंशे)

सम् + बन्ध् (मेल होना) सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः। (रघुवंशे)

रुध् (ढाँकना) -

अनु + रुध् (आज्ञा मानना) अनुरुध्यस्व भगवति वसिष्ठस्यादेशम्। उत्तररामचरिते)

वि + रुध् (विरोध करना) विपरीतार्थधीर्यस्मात् विरुद्धमतिकृन्मतम्।

पञ्चम : अध्याय
सम्भाषण के कतिपय नमूने

सब्जी की दुकान

आपणिकः – **आगच्छतु ! किम् आवश्यकम् ?** आइए! क्या आवश्यक है ?

महिला – **एतस्य कूष्माण्डस्य एककिलोपरिमितस्य कति रूप्यकाणि?**-इस एक कीलो कद्दू के कितने रुपये ?

आपणिकः – **तस्य किलोपरिमितस्य अष्टरूप्यकाणि।** इसके एक किलो के आठ रुपये।

महिला – **अर्धकिलोपरिमितम् आलुकं ददातु।** आधा किलो आलू दीजिए।

आपणिकः – **कूष्माण्डः मास्तु वा ?** कद्दू नहीं क्या ?

महिला – **किलोद्वयमितं कूष्माण्डं, एककिलोपरिमितं गृञ्जनकम्, अर्धकिलो महामरीचिकां च ददातु। वृन्ताकम् अपि एककिलोपरिमितम्। विण्डीनकानि नष्टानि खलु ? उत्तमानि न आनीतवान् किम् ?** दो किलो कद्दू, एक किलो गाजर, आधा किलो शिमला मिर्च दीजिए। बैगन भी एक किलो। भिण्डी तो खराब ही रखी है न ? अच्छी नहीं लाए क्या ?

आपणिकः – **उत्तमानि विण्डीनकानि स्यूते एव सन्ति। आवश्यकं किम् ?** अच्छी भिण्डी तो थैले में ही है। (चाहिए क्या) आवश्यकता है क्या ?

महिला – **किलोमात्रपरिमितं ददातु। आहत्य कतिरूप्यकाणि इति वदतु शीघ्रं गन्तव्यम्**-एक किलो तक दीजिए। कुल कितने रुपये हुए ? जल्दी जाना है बताओ।

आपणिकः – **आहत्य पञ्चसप्ततिरूप्यकाणि। कारवेल्लं मास्तु वा ?** कुल मिलाकर पचहत्तर रुपये। करेले नहीं चाहिए क्या ?

महिला – **तिक्तम् इत्यतः कारवेल्लं मम गृहे न खादन्ति। पर्याप्तम्। अस्मिन् स्यूते सर्वाणि स्थापयतु। धनं स्वीकरोतु।** कड़वे होने के कारण करेले मेरे घर में नहीं खाते हैं। बस। इस झोले (बैग) में सब रख दो। पैसे लीजिए।

आपणिकः – **परिवर्तः नास्ति किम् ? अस्तु स्वीकरोतु।** खुले नहीं हैं क्या ? अच्छा लीजिए।

आचार्य शिष्य संवाद

आचार्य: - **एषः क ?** यह कौन ?
शिष्य: - **एषः कुम्भकारः।** यह कुम्हार।
आचार्य: - **एषः किं करोति ?** यह क्या करता है ?
शिष्य: - **सः घटं करोति।** वह घड़ा बनाता है।
आचार्य: - **सः कीदृशं घटं करोति ?** वह कैसा घड़ा बनाता है ?
शिष्य: - **सः स्थूलं घटं करोति ?** वह मोटा घड़ा बनाता है।
आचार्य: - **सः कया घटं करोति ?** वह किससे घड़ा बनाता है ?
शिष्य: - **सः मृत्तिकया घटं करोति।** वह मिट्टी से घड़ा बनाता है।
आचार्य: - **एतौ कौ ?** यह दो कौन ?
शिष्य: - **एतौ तन्तुवायौ।** ये दो जुलाहे।
आचार्य: - **एतौ किं कुरुतः ?** ये दो क्या करते हैं ?
शिष्य: - **एतौ वस्त्राणि वयतः।** ये दो कपड़े बुनते हैं।
आचार्य: - **तौ कीदृशानि वस्त्राणि वयतः ?** वे दोनों कैसे कपड़े बुनते हैं?
शिष्य: - **तौ अमूल्यानि वस्त्राणि वयतः।** वे दोनों अमूल्य वस्त्र बुनते हैं।
आचार्य: - **तव कानि वस्त्राणि प्रियाणि ?** तुम्हें कैसे वस्त्र प्रिय हैं ?
शिष्य: - **कार्पासीयानि वस्त्राणि मम प्रियाणि। मम मित्रस्य और्णं वस्त्रं प्रियम्।** सूतीवस्त्र मेरे प्रिय वस्त्र हैं। मेरे मित्र को ऊनी वस्त्र प्रिय हैं (अच्छे लगते हैं)
आचार्य: - **एते के ?** ये कौन ?
शिष्य: - **एते चित्रकाराः।** ये चित्रकार है।
आचार्य: - **एते किं कुर्वन्ति ?** ये क्या करते हैं ?
शिष्य: - **एते सुन्दराणि चित्राणि लिखन्ति।** ये सुन्दर चित्र बनाते हैं।
आचार्य: - **ते के ?** वे कौन ?
शिष्य: - **ते हरिणाः।** वे हरिण हैं।
आचार्य: - **ते किं कुर्वन्ति ?** वे क्या करते हैं ?
शिष्य: - **ते हरितानि तृणानि खादन्ति।** ये हरी घास खाते हैं।
आचार्य - **त्वं किं करोषि ?** तुम क्या करते हो ?
शिष्य: - **अहं साहित्यं पठामि।** मैं साहित्य पढ़ता हूँ।
आचार्य: - **युवां किं कुरुथः?** तुम दोनों क्या करते हो ?
शिष्य: - **आवां गीतं गायावः।** हम दोनों गीत गाते हैं।

आचार्यः – **यूयम् अद्य पठितान् शब्दान् स्मरत।** तुम सब आज पढ़े शब्दों को स्मरण करो।

शिष्यः – **तथैव श्रीमन्।** वैसा ही! श्रीमन्।

दो गृहणियों का सम्भाषण

मालती – **शारदे ! किं करोति भवती ?** शारदा! क्या कर रही हो आप?

शारदा – **अहो मालति! आगच्छतु, उपविशतु। कुशलिनी किम् ?** अहो मालती ! आओ बैठो, ठीक हो ?

मालती – **आम् सर्वं कुशलम्। भवती स्वकार्यं करोतु। अहं तत्रैव अन्तः आगच्छामि।** हां, सब ठीक है आप अपना काम करो। मैं वहीं अन्दर आती हूँ।

शारदा – **मम पाकः न समाप्तः। अद्य भोजनार्थं बान्धवाः आगच्छन्ति। अतः विशेषपाकः।** मेरा खाना नहीं बना। आज भोजन पर बन्धुजन आ रहे हैं। अतः विशेष भोजन है।

मालती – **तर्हि किं किं करोति ?** तो क्या-क्या बना रही हो ?

शारदा – **आलुकेन क्वथितं करोमि। कूष्माडेन तेमनं करोमि।** आलू से साम्बर बना रही हूँ। कोहड़े की कढ़ी बना रही हूँ।

मालती – **बहुमरीचिकाः सन्ति खलु ? मरीचिकया किं करोति ?** बहुत मिर्च है ? मिर्च से क्या कर रही हो ?

शारदा – **लघुमरीचिका कटुः, महामरीचिकया भर्जं करोमि।** छोटी मिर्च तो कड़वी, शिमला मिर्च से भुजिया बनाती हूँ।

मालती – **कैः व्यञ्जनं करोति ?** किसकी सब्जी बना रही हो ?

शारदा – **विण्डीनकैः व्यञ्जनं करोमि। उर्वारुकेण 'किं करोमि' इति चिन्तयामि।** भिण्डी की सब्जी बना रही हूँ ककड़ी से क्या बनाऊँ सोच रही हूँ।

मालती – **उर्वारुकं गृञ्जनकं च योजयित्वा कोषम्भरीं करोतु भोः। बहु स्वादिष्टं भवति।** गाजर तथा ककड़ी को मिलाकर भरुआ (भरकर) बनाओ न ! बहुत स्वादिष्ट होता है।

शारदा – **तथैव करोमि। पायसमपि पचामि। पर्पटान् अपि भर्जयामि। मम पतिः बहु इच्छति।** वही बनाती हूँ। खीर भी बनाती हूँ। पापड़ भी भूनती हूँ। मेरे पति को बहुत पसन्द हैं।

मालती – **अहमपि किञ्चित् साहाय्यं करोमि।** मैं भी थोड़ी सहायता करती हूँ।

शारदा – **मास्तु भो! भवती उपविशतु मया सह सम्भाषणं करोतु।**

अहं सर्वं करोमि। नहीं, आप बैठिए मेरे साथ बातें करिये। मैं सब करती हूँ।

मालती - **तर्हि अहं सर्वेषां रुचिं पश्यामि। सर्वं भवती करोतु।** तो मैं सभी का स्वाद देखती हूँ। तुम सब बनाओ।

माता पुत्र के बीच सम्भाषण

माता - **गोविन्द ! किं करोषि त्वम् ?** गोविन्द ! क्या कर रहा है तू ?

गोविन्दः - **पाठं पठामि अम्ब !** मैं पढ़ रहा हूं माँ।

माता - **वत्स ! आपणं गत्वा आगच्छसि किम् ?** वत्स ! दुकान जाकर आयेगा ?

गोविन्दः - **अम्ब ! शीघ्रं लिखित्वा गच्छामि। किम् आनयामि ततः ?** माँ जल्दी लिखकर जाता हूँ। वहां से क्या लाऊँ ?

माता - **वत्स ! आपणं गत्वा लवणं, शर्करां, तण्डुलं गुडं द्विदलञ्च आनय।** बेटे ! दुकान जाकर नमक, चीनी, चावल गुड़ और दाल ला।

गोविन्दः - **भगिनीं वदतु अम्ब! सा किं करोति ?** बहिन को बोलो माँ ! वह क्या कर रही है ?

माता - **सा अवकरं क्षिप्त्वा पात्रं प्रक्षालयति। द्रोण्यां जलं पूरयति। भूमिं वस्त्रेण मार्जयति। पुष्पाणि आनीय मालां करोति। एवं तस्याः बहूनि कार्याणि सन्ति भोः।** वह कूड़ा फेंककर बर्तन धो रही है। बाल्टी से पानी भर रही है। भूमि कपड़े से पोंछ रही है। फूल लाकर माला बना रही है। ऐसे उसके बहुत से काम हैं।

गोविन्दः - **ममापि पठनं बहु अस्ति।** मुझे भी बहुत पढ़ना है।

माता - **दशनिमेषाभ्यन्तरे आपणं गत्वा आगच्छ। अनन्तरं पाठान् पठ।** दश मिनट में ही दुकान जाकर आ। बाद में पाठ पढ़।

गोविन्दः - **तर्हि शीघ्रं धनं स्यूतं च ददातु अम्ब !** तो जल्दी से रुपये और थैला दो माँ।

माता - **आगमनसमये द्वौ कूर्चौ, अग्निपेटिकां, संमार्जन्यौ च आनय।** आते समय दो ब्रश, दो माचिस, दो झाड़ू ले आना।

गोविन्दः - **द्वौ स्यूतौ ददातु, धनम् अधिकं ददातु, चाकलेहान् अपि आनयामि...?** दो थैले दो, पैसे अधिक दो, टाफियाँ भी लाऊँगा ?

माता - **अतः एव भवान् शीघ्रं गन्तुम् उद्युक्तः। स्वीकुरु...।** इसीलिए तुम शीघ्र तैयार हो गये ? लो.....।

अध्यापक व मित्र सम्भाषण

प्रमोदः – **नमस्ते श्रीकान्त ! आगच्छतु उपविशतु।** नमस्ते श्रीकान्त ! आओ बैठो।

श्रीकान्तः – **संस्कृतपाठः प्रचलति किम् ? एताः किं कुर्वन्ति ?** संस्कृत पाठ चल रहा है क्या ? ये क्या कर रही हैं ?

प्रमोदः – **एताः चित्रं दृष्ट्वा प्रश्नान् लिखन्ति। ते अर्धकथां पूर्णां कुर्वन्ति।** ये चित्र देखकर प्रश्न लिख रही हैं। वे दोनों अधूरी कथा को पूरी कर रही हैं।

श्रीकान्तः – **एतौ कौ ?** ये दो कौन ?

प्रमोदः – **एतौ मम साहाय्यं कुरुतः। एते बालिके सुन्दरतया लिखतः।** ये दोनों मेरी सहायता कर रहे हैं। ये दोनों बालिकाएं सुन्दर लेख लिखती हैं।

श्रीकान्तः – **भोः बालकाः, सुन्दरं लिखन्तु। त्वरा मास्तु।** अरे बालकों ! सुन्दर लिखिये। जल्दी मत करो। (जल्दी नहीं है)

प्रमोदः – **ते चित्रं दृष्ट्वा सम्भाषणं लिखतः। तौ एकां कथां लिखतः। ताः बालिकाः पदबन्धान् रचयन्ति। एते बालकाः प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखन्ति।** वे दोनों चित्रों को देखकर सम्भाषण लिख रही हैं। वे दोनों एक कथा लिख रहे हैं। वे बालिकायें पदबन्ध रच रही हैं। ये बालक प्रश्नों के उत्तर लिख रहे हैं।

श्रीकान्तः – **अन्ते उपविष्टवन्तौ तौ किं कुरुतः ? युवां किं कुरुथः ?** अन्त में बैठे वे दोनों क्या कर रहे हैं ? तुम दोनों क्या कर रहे हो ?

छात्रै – **आवां चित्रे वर्णं योजयावः।** हम दोनों चित्र में रंग लगा रहे हैं।

प्रमोदः – **भोः छात्रः ! यूयं शीघ्रं समापयथ। इदानीं क्रीडा अस्ति।** अरे छात्रों ! तुम दोनों शीघ्र समाप्त करो। अब खेल है।

छात्रः – **वयं शीघ्रं-शीघ्रं लिखामः आचार्य !** हम लोग जल्दी-जल्दी लिखते हैं आचार्य।

मित्र-मित्र सम्भाषण

शिशिरः – **अखिल ! कोऽपि नास्ति किं गृहे ?** अखिल ! घर में कोई नहीं है क्या ?

अखिलः – **अहम् एकः एव अस्मि। पिता अम्बया सह सङ्गीतकार्यक्रमं गतवान्। अग्रजा अरुणया सह चित्रमन्दिरं गतवती। अनुजः**

बालैः सह क्रीडति। मैं अकेले ही हूँ। पिता जी माताजी के साथ सङ्गीत कार्यक्रम में गये हैं। बड़ी बहन अरुणा के साथ सिनेमा गयी है। छोटा भाई बालकों के साथ खेल रहा है।

शिशिरः - **भवन्तं विना सर्वेऽपि गतवन्तः। भवान् मया सह आगच्छतु। मम माता आपणं गत्वा पुष्पाणि आनयतु इति उक्तवती। अहं स्यूतेन विना एव आगतवान्।** आपको छोड़ सभी चले गये। आप मेरे साथ आइए। मेरी माता ने कहा दुकान जाकर फूल लाओ। मैं थैले के बिना ही आ गया।

अखिलः - **चिन्ता मास्तु। अहं स्यूतं ददामि। धनेन विना आगतम् वा इति पश्यतु।** कोई बात नहीं। थैला मैं देता हूँ। धन लिए बिना ही आ गये क्या यह तो देख लो।

शिशिरः - **तिष्ठतु। प्रथमं धनमस्ति वा इति पश्यामि। किञ्चित् जलं ददातु भोः।** रुको, पहले धन है कि नहीं, देख लूँ। अरे ! थोड़ा पानी दो।

अखिलः - **स्वीकरोतु, तिष्ठतु काफीं करोमि। भवान् शर्करया विना काफीं पिबति उत शर्करया सह ?** लो, ठहरो काफी बनाता हूँ। तुम चीनी के विना काफी पीते हो या चीनी के साथ ?

शिशिरः - **अहं शर्करया सह एव पिबामि। किन्तु मास्तु, इदानीं भवतः किमर्थं क्लेशः ?** मैं चीनी के साथ ही पीता हूँ। किन्तु नहीं, इस समय तुम्हें किसलिए कष्ट दूँ ?

अखिलः - **क्लेशः नास्ति। ममापि काफीपानसमयः एषः। तिष्ठतु, मया सह काफीं पिबतु।** कष्ट नहीं है। मेरा भी काफी पीने का समय है रुको, मेरे साथ काफी पीओ।

दूरभाष पर मित्र सम्भाषण

गिरीशः - **हरिः ओम्।** हरि ओम्।

अनन्तः - **हरिओम् ! कः वदति ?** हरिओम्! कौन बोल रहा है ?

गिरीशः - **अहं गिरीशः वदामि। मित्र ! गृहे कोऽपि नास्ति किम् ?** मैं गिरीश बोल रहा हूँ। मित्र ! घर में कोई नहीं है क्या ?

अनन्तः - **सर्वे सन्ति। पिता जपति। अम्बा पूजयति। अनुजः खादति। अग्रजा मालां करोति। पितामहः दूरदर्शनं पश्यति। पितामही स्नानं करोति। सभी हैं।** पिताजी जपकर रहे हैं। माता जी पूजा

कर रही हैं। छोटा भाई खा रहा है। बड़ी बहन माला बना रही है। दादा जी दूरदर्शन देख रहे हैं। दादी जी स्नान कर रही हैं।

गिरीशः - **त्वं किं करोषि ? क्रीडसि वा ?** तुम क्या कर रहे हो ? खेल रहे हो क्या ?

अनन्तः - **अहं पठामि। उत्तरं लिखामि। तव अनुजौ किं कुरुतः ?** मैं पढ़ रहा हूं। उत्तर लिख रहा हूं। तुम्हारे दोनों छोटे भाई क्या कर रहे हैं ?

गिरीशः - **मम् अनुजौ शालां गच्छतः। अहं पिता च विद्यालयं गच्छावः।** मेरा छोटा भाई पाठशाला जा रहा है। मैं और पिताजी विद्यालय जा रहा हूँ।

अनन्तः - **अद्य त्वमपि विद्यालयं न गच्छ ? अहमपि न गच्छामि। वयं सर्वे अद्य मैसूरनगरं गच्छामः। मम बान्धवाः अपि आगच्छन्ति।** आज तुम भी विद्यालय न जाओ। मैं भी नहीं जा रहा हूँ। हम सब आज मैसूर जा रहे हैं। मेरे बन्धू (रिश्तेदार) भी आ रहे हैं।

गिरीशः - **भवतः पिता कार्यालयं न गच्छति किम् ?** आपके पिता कार्यालय नहीं जा रहे हैं क्या ?

अनन्तः - **अद्य मम पिता विरामं स्वीकरोति।** आज पिताजी छुट्टी ले रहे हैं।

गिरीशः - **अनन्तः नहि भोः। अहम् आगन्तुं न शक्नोमि। भवान् गच्छतु।** नहीं अनन्त, मैं नहीं आ सकता। आप जाइए।

अनन्तः - **पुनः मिलामः धन्यवादः।** फिर मिलते हैं। धन्यवाद।

अधिकारी कर्मचारी सम्भाषण

अधिकारी - **सुधाकर ! शीघ्रं लिपिकारम् आह्वयतु।** सुधाकर ! लिपिक को शीघ्र बुलाओ।

सुधाकरः - **अद्य लिपिकारः नागतवान्। 'सः हरिद्वारं गतवान्' इति।** आज लिपिक नहीं आया। वह हरिद्वार गया है।

अधिकारी - **ह्यः वित्तकोषतः धनम् आनीतवान् किम् ?** कल बैंक से धन लाये हो क्या ?

सुधाकरः - **आम्। ह्यः अहं रमेशः च वित्तकोषं गतवन्तौ। धनम् आनीतवन्तौ अपि।** हां ! कल मैं और रमेश बैंक गया था। धन भी लाया हूँ।

अधिकारी - **ह्यः सर्वे किं किं कार्यं कृतवन्तः ?** कल सभी ने क्या क्या कार्य किया ?

सुधाकरः - **ह्यः रामगोपालः गणनां समापितवान् 'गीता पत्राणि लिखितवती' गौरीशः कार्याणि परिशीलितवान्। ह्यः चन्नम्मा नागतवती। मुकुन्दः स्वच्छीकृतवान्।** कल रामगोपाल ने गणना समाप्त की है। गीता ने पत्र लिखे। गौरीश ने कार्यों का परिशीलन किया। कल चनन्मा नहीं आयी। मुकुन्द ने सफाई की।

अधिकारी - **चन्नम्मा कुत्र गतवती इति किं कोऽपि जानाति ?** चन्नम्मा कहां गई कोई जानता है क्या ?

सुधाकरः - **चन्नम्मा तीव्रम् अस्वस्था इति शृणुमः।** चन्नम्मा काफी अस्वस्थ है ऐसा सुना है।

अधिकारी - **सा औषधं स्वीकृतवती स्यात् खलु ?** उसने दवाई तो ली होगी न ?

सुधाकरः - **वैद्यः सूच्यौषधं दत्तवान् इति श्रुतम। ह्यः निवेदिता विद्यालयस्य शिक्षिकाः आगतवत्यः। भवान् न आसीत्। ताः एकं पत्रं दत्तवत्यः।** वैद्य ने सुई लगाई है ऐसा सुना है। कल निवेदिता विद्यालय की शिक्षिकायें आयी थीं। आप नहीं थे। वे एक पत्र दे गयीं।

अधिकारी - **प्राचार्य मुख्याध्यापिका च किम् आगतवत्यौ ?** प्राचार्या और मुख्य अध्यापिका आयी थीं क्या ?

सुधाकरः - **नैव, केवलं प्राचार्या आगतवती। 'भवान् दूरवाणीं करोतु' इति उक्तवती।** नहीं, केवल प्राचार्या आयी थीं। आप फोन कर लें ऐसा कही थीं।

अधिकारी - **भवतु, भवान् गच्छतु।** ठीक है, तुम जाओ।

माता पुत्री सम्भाषण

पुत्री - **अम्ब ! महती बुभुक्षा अस्ति।** माँजी ! बहुत भूख लगी है।

माता - **सुधे ! किमर्थ त्वरा ?** सुधा ! जल्दी क्या है ?

पुत्री - **मम विद्यालये वार्षिकोत्सवः अस्ति। तत्र नाटकं, गीतं, नृत्यं भाषणम् इत्यादि कार्यक्रमाः सन्ति।** मेरे विद्यालय में वार्षिकोत्सव हैं। वहाँ नाटक, गीत, नृत्य, भाषण आदि कार्यक्रम हैं।

माता - **भवती वार्षिकोत्सवे किं करोति ?** तुम वार्षिकोत्सव में क्या कर रही हो ?

पुत्री - **वृन्दगाने अहम् अस्मि। मम सखी नृत्ये अस्ति। बालकाः केवलं नाटके सन्ति। वयं बालिकाः पुनः यष्टिक्रीडायाम् अपि स्मः। द्वौ बालकौ विनोदनाटके स्तः।** वृन्दगान में मैं हूं। मेरी सखी नृत्य में है। लड़के केवल नाटक में हैं। हम लड़कियां फिर डांडी क्रीडा (डांडी खेल) में भी हैं। दो लड़के हास्य नाटक में हैं।

माता - **निपुणा खलु मम पुत्री।** मेरी पुत्री तो निपुण है।

सखी - **सुधे ! कुत्र असि ?** सुधा! कहां हो ?

पुत्री - **अत्र अस्मि। किम् वदतु।** यहां हूं। कहो क्या ?

सखी - **भवती अद्य कदा विद्यालयं गच्छति।** तुम आज कब विद्यालय जा रही हो ?

पुत्री - **किमर्थम् ? भवती अपि आगच्छति वा ?** क्यों तुम भी आ रही हो क्या ?

माता - **युवां मिलित्वां कस्मिन्नपि कार्यक्रमे न स्थः वा ?** तुम दोनों मिलकर किसी भी कार्यक्रम में नहीं हो क्या ?

पुत्री - **आवां द्वे अपि वृन्दगाने यष्टिक्रीडायाम् च स्वः।** हम दोनों वृन्दगान और डांडीक्रीडा में हैं।

पिता - **पुत्री ! किं कुर्वन्ति मिलित्वा ?** पुत्री ! मिलकर क्या करती हो?

माता - **अद्य पुत्रयाः विद्यालये वार्षिकोत्सवः अस्ति। वयं शीघ्रं गत्वा पुरतः उपविशामः।** आज बेटी के विद्यालय में वार्षिकोत्सव है। हम लोग जल्दी जाकर आगे बैंठते हैं।

दिल्ली जायेंगे

गिरिजा - **विरामसमये कुत्रापि प्रवासं करिष्यामः।** छुट्टियों में कहीं प्रवास करेंगे।

पतिः - **आगामिसप्ताहे मम कार्यालयतः पञ्चजनाः नवदेहलीं गमिष्यन्ति इति श्रूयते। वयमपि तैः सह गमिष्यामः।** अगले सप्ताह मेरे कार्यालय से पांच लोग दिल्ली जायेंगे ऐसा सुना है। हम भी उनके साथ चलेंगे।

गिरिजा - **देहल्यां कुत्र वासं करिष्यामः ?** दिल्ली में कहां रहेंगे ?

पतिः - **ते सर्वेऽपि धर्मशालायां वासं करिष्यन्ति। भोजनम् उपाहारमन्दिरे करिष्यामः।** वे सभी धर्मशाला में रहेंगे। भोजन होटल में करेंगे।

अजितः – **तात ! श्वः आरभ्य मासं यावत् विरामः अस्ति। वयमपि प्रवासार्थं गमिष्यामः।** पिताजी ! कल से एक महीने का अवकाश है। हम लोग भी प्रवास के लिए चलेंगे।

पतिः – **आगामिसप्ताहे प्रवासः भविष्यति। चिन्ता मास्तु।** आगामी सप्ताह में प्रवास होगा। चिन्ता की कोई बात नहीं ?

माता – **पुत्रौ उष्णजलं पास्यतः। तत् कथं नेष्यामः।** माता दोनों बेटे गरम जल पीयेंगे। वो कैसे ले जायेंगे ?

पिता – **समीचीनं जलं मार्गे अपि भविष्यति, तत्रैव वयं क्रेष्यामः।** ठीक पानी रास्ते में भी होगा वहीं खरीदेंगे।

माता – **खाद्यानि वयं प्रथमम् एव क्रेष्यामः। देहल्याम् अतिशैत्यम्। अतः अधिकानि वस्त्राणि स्वीकरोतु।** खाने की वस्तुऐं पहले ही खरीद लेंगे। दिल्ली में बहुत सर्दी है। अतः अधिक कपड़े ले लो।

पुत्री – **तत्र गन्तुं कः चिटिकाः क्रेष्यति ?** वहां जाने के लिए टिकट कौन खरीदेगा ?

पिता – मैं टिकट ले आऊँगा ?

पुत्री – **अग्रज ! त्वं कुत्र उपवेक्ष्यसि ?** भाई ! तुम कहां बैठोगे ?

अजित – **अहं वातायनपार्श्वे उपवेक्ष्यामि।** मैं खिड़की के पास बैठूंगा।

माता – **युवां मम पार्श्वे उपवेष्यथः। गमनसमये निद्रां करिष्यथः।** तुम दोनों मेरे पास बैठोंगे। जाते समय सोयेंगे।

पुत्री – **एवं समीचीनम्। तथैव उपवेक्ष्यावः।** ये ठीक है। वैसे ही बैठेंगे।

संस्कृत कक्षा

छात्रः – **अहो ! किम् अद्य कक्ष्यायां बहूनि चित्राणि सन्ति। गजाः सन्ति। वृषभाः सन्ति। वृक्षाः सन्ति। पर्वताः सन्ति। फलानि सन्ति। पुष्पाणि सन्ति। नद्यः सन्ति। बालिकाः नृत्यन्ति।** अहो ! क्यों आज कक्षा में बहुत से चित्र हैं। हाथी हैं। बैल हैं। बृक्ष हैं। पर्वत हैं। फल हैं। फूल हैं। नदियां हैं। बालिकायें नाचती हैं।

आचार्या – **सर्वे आगतवन्तो वा ?** सभी आ गये क्या ?

छात्र – **आम् सर्वे आगतवन्तः।** हां सभी आ गये।

आचार्या – **अद्य एतानि चित्राणि सन्ति खलु। अहं सर्वेभ्यः ददामि। यस्य नाम वदामि सः उत्तिष्ठतु। फलचित्रं प्रभाकराय ददामि। नदीचित्रं लतायै ददामि। वृक्षचित्रं एतस्मै बालकाय ददामि।**

पर्वतचित्रं भारत्यै ददामि। आज ये चित्र हैं न ? मैं सभी को दूंगी। जिसका नाम बोलूँ वह उठ जाय। फल चित्र प्रभाकर को देती हूँ। नदी चित्र लता को देती हूँ। वृक्ष का चित्र इस बालक को देती हूँ। पर्वत का चित्र भारती को देती हूँ।

रञ्जिता – **मान्ये ! मह्यं गजचित्रं ददातु।** मान्ये। मुझे हाथी का चित्र दीजिए।

दिनेश: – **तस्यै वृभषचित्रं ददातु। गणेश ! तुभ्यं बालिकाचित्रं आचार्या दत्तवती वा ? मान्ये ! मह्यं फलचित्रं मास्तु फलमेव ददातु।** उसे बैल का चित्र दीजिए। गणेश! तुझे बालिका का चित्र आचार्या ने दिया क्या ? मान्ये! मुझे फल का चित्र नहीं फल ही दीजिए।

आचार्या – **चित्रायै किमपि न ददामि। सा कोलाहलं करोति।** चित्रा को कुछ भी नहीं देती हूँ। वह कोलाहल (हल्ला) करती है।

चित्रा – **अहं कोलाहलं न करोमि।** मैं कोलाहल नहीं करती हूँ।

आचार्या – **अस्तु ! स्वीकरोतु। भवन्तः सर्वे स्व-स्व चित्राणि पश्यन्तु। पञ्च-पञ्च वाक्यानि संस्कृतभाषया लिखन्तु।** ठीक है। लीजिए। आप सभी अपने-अपने चित्रों को देखें। पांच-पांच वाक्य संस्कृत भाषा में लिखें।

'अनुमति'

प्रकाश: – **अम्ब! मम विद्यालये प्रवासः अस्ति। 150 रुप्यकाणि एकस्य। अहम् अपि गच्छामि वा ?** अम्ब ! मेरे विद्यालय में घूमने का कार्यक्रम है। 150 रु. एक का। मैं भी जाऊँ क्या ?

माता – **अहं कथं वदामि ? पिता खलु धनं ददाति ?** मैं कैसे कहूं ? पिता ही तो धन देते हैं।

प्रकाश: – **भवती एव वदतु तातम्।** आप ही पिताजी से कहिए

माता – **कुत्र प्रवासः ?** कहां प्रवास है ?

प्रकाश: – **प्रथमं विद्यालयतः पक्षिधाम गत्वा वस्तुप्रदर्शनालयं गच्छन्ति। तत्रैव उपाहारं खादित्वा उद्यानं गच्छन्ति। उद्याने क्रीडित्वा मन्दिरं गच्छन्ति। मन्दिरे श्लोकम् उक्त्वा भोजनालयं गच्छन्ति।** पहले विद्यालय से चिड़ियाघर जाकर संग्रहालय जाते हैं। वहां नाश्ता खाकर उद्यान को जाते हैं। उद्यान में खेलकर मन्दिर जाते हैं। मन्दिर में श्लोक का उच्चारण करके भोजनालय जाते हैं।

माता – **कति छात्राः गच्छन्ति भो ?** कितने छात्र जा रहे हैं ?

प्रकाशः – **मम कक्ष्यायां सर्वेऽपि गच्छन्ति। ते सर्वे धनमपि दत्तवन्त। इतः परम् अहम् एकाकी तातं पृष्ट्वा धनं ददामि।** मेरी कक्षा के सभी छात्र जा रहे हैं। उन सभी ने धन भी दे दिया हैं इसके पश्चात् केवल मैं पिताजी से पूछकर धन देता हूँ।

माता – **श्वः एव तातं पृष्ट्वा धनं नयतु।** कल ही पिताजी से धन ले लो।

प्रकाशः – **अम्बायाः अनुमतिः प्राप्ता। अर्धं कार्यं समाप्तम्।** मां की अनुमति प्राप्त हो गई। आधा कार्य समाप्त।

माता – **वत्स ! कस्मिन् विषये अनुमतिः ?** बेटा! किस विषय की अनुमति ?

प्रकाशः – **तात! मंम विद्यालये प्रवासार्थं पक्षिधाम गच्छन्ति। अतः 150 रुप्यकाणि एकस्य।** पिताजी ! मेरे विद्यालय से घूमने के लिए चिड़ियाघर सभी जायेंगे। अतः 150 रु. एक का।

पिता – **सर्वे गच्छन्ति खलु। सर्वैः सह मिलित्वा गच्छतु। वस्तुप्रदर्शनालयं सम्यक् पश्यतु।** सभी जा रहे हैं न ! सभी के साथ मिलकर जाओ। संग्रहालय को ठीक से देखना।

प्रकाश – **धन्यवादः तात! श्वः धनं नेष्यामि।** धन्यवाद पिताजी। कल धन ले जाऊँगा।

"सहेली का आगमन"

सुनीता – **अहो ! चिरात् दर्शनम् ? आगच्छतु उपविशतु।** अहो ! बहुत दिनों बाद दिखीं। आइये बैठिए।

सुशीला – **किं भगिनि ! बहुदिनेभ्यः आगच्छामि इति चिन्तितवती। रघुवीरः नास्ति किम् ?** क्यों बहन बहुत दिनों से आने को सोच रही थी। रघुवीर नही है क्या ?

सुनीता – **रमा अपि आगववती किम् ? कुशलं वा ? पातुं किं ददामि?** रमा भी आयी है क्या ? कुशल तो है ? पीने को क्या दूं ?

सुशीला – **मास्तु भगिनि ! विवाह गृहात् आगतवती अहम्। कथमस्ति भवत्याः स्वास्थ्यम् ?** कुछ नहीं बहन। विवाह के घर से मैं आ रही हूँ। आपका स्वास्थ्य कैसा है ?

सुनीता - **चिन्ता नास्ति। इदानीं किञ्चित् उत्तमम् अस्ति।** चिन्ता नहीं है। इस समय कुछ ठीक है।

रघुवीरः - **कदा आगतवती भवती ? रमा कुशलिनी वा ?** आप कब आयीं ? रमा तो ठीक है ?

सुशीला - **दशनिमेषेभ्यः पूर्वम् आगतवती। रमा कुशलिनी अस्ति। भवान् कुतः आगतवान् ?** दस मिनट पहले आयी। रमा ठीक हैं। आप कहां से आये ?

रघुवीरः - **अद्य अस्माकं कार्यालये कश्चन कार्यक्रमः आसीत्। ततः आगतवान्! किम् आदित्यः नागतवान् ? कुत्र गतवान् ?** आज हमारे कार्यालय में कोई कार्यक्रम था। वहीं से आया। क्यों आदित्य नहीं आया ? कहां गया ?

सुशीला - **सः किञ्चित् विलम्बेन आगच्छति। तस्य कार्यालयकार्यं बहु अस्ति इति।** वह कुछ देर से आते हैं। उसके कार्यालय में बहुत काम हैं।

सुनीता - **भगिनी ! भवती पूजादिने किमर्थं नागतवती ?** बहन ! आप पूजा के दिन क्यों नहीं आयीं।

सुशीला - **तस्मिन् दिने पुत्र्याः बहु अस्वास्थ्यम् आसीत्। अतः नागतवती। तद्दिने कति जनाः आगतवन्तः ?** उस दिन बेटी का स्वास्थ्य बहुत खराब था। इसीलिए नहीं आयी। उस दिन कितने लोग आये थे ?

सुनीता - **प्रायः 30 जनाः आगतवन्तः।** प्रायः 30 लोग आये थे।

रघुवीरः - **सुनीते! केवल वचनेन एव समापयति उत किञ्चित् किमपि ददाति ?** सुनीता ! केवल बातों में खत्म करोगी अथवा कुछ देती भी हो ?

सुनीता - **अहम् इदानीमेव आनयामि। भवन्तः सम्भाषणं कुर्वन्तु।** मैं अभी लाती हूं। आप लोग बातचीत करें।

बाल्यकाल स्मरण

विजयः - **विनय ! सप्ताहात् पूर्वं परीक्षिताचार्यः स्वर्गस्थः इति वार्ता।** विनय! सप्ताह पूर्व परीक्षिताचार्य दिवंगत हो गये ऐसा समाचार है।

विनय - **एवं वा ? बहु वृद्धः आसीत् सः। बहु शास्त्राणि जानाति स्म। सम्यक् पाठयति स्म आचार्यः।** ऐसा ? वह बहुत बूढे थे। बहुत शास्त्रों को जानते थे। आचार्य अच्छा पढ़ाते थे।

विजयः - **किन्तु भवान् तु न पठति स्म।** परन्तु आप तो नहीं पढ़ते थे।

विनयः - **तदा तु बाल्ये वयं विद्यालयं न गच्छामः स्म। त्वमपि आम्रफलं खादसि स्म सदा। मम मित्रणि अपि अटन्ति स्म।** तब तो वालावस्था में हम विद्यालय नहीं जाते थे। तुम भी सदा आम खाते थे। मेरे मित्र भी घूमते थे।

विजयः - **सत्यम्। मम गृहे अपि भगिन्यौ अम्बां वदतः स्म। माता तर्जयति स्म। पिता तु कोपेन ताडयति स्म।** सत्य। दोनों बहनें मेरे घर में मां से बोलती थी। माता डांटती थी। पिता तो क्रोध से मारते थे।

विनयः - **किन्तु मम गृहे बहु न तर्जयन्ति स्म। अहं तु रात्रौ पठामि स्म। प्रथमां श्रेणीं प्राप्नोमि स्म।** किन्तु मेरे घर में बहुत डांट नहीं पड़ती थी। मैं तो रात में पढ़ता था। प्रथम श्रेणी प्राप्त करता था।

विजयः - **विनय ! ते प्रियङ्का मालविका च सदा कलहं कुरुतः स्म। स्मरति वा? बहु विनोदः भवति स्म।** विनय ! वे दोनों प्रियंका और मालविका हमेशा झगड़ती रहती थी। स्मरण है क्या ? बहुत विनोद होता था।

विनयः - **एवम् आवां ते द्वे अपि पीडयावः स्म। ते द्वे रोदनं कुरुतः स्म।** इस प्रकार उन दोनों को हम दोनों ने भी पीड़ित किया था। वे दोनों रोतीं थी।

विजयः - **भोः इदानीं पठावः, श्वः एव परीक्षा। बाल्याकालस्य दिनानि अतिमधुराणि। सर्वदा स्मरणयोग्यानि।** अरे, इस समय (हम दोनों) पढ़ते हैं, कल ही परीक्षा है। बाल्यकाल के दिन बहुत अच्छे थे। सदा स्मरणयोग्य।

मां का दो बेटों के साथ बातचीत

पुत्रः - **अम्ब ! कोऽपि भिक्षुकः आगतवान्।** मां ! कोई भिखारी आया।

माता - **भवान् एव तस्मै एकं नाणकं ददातु।** आप ही उसको एक सिक्का दे दो।

पुत्रः - **अहं पठामि भोः, भवती एव भिक्षुकाय ददातु।** अरे मैं पढ़ रहा हूँ आप ही भिखारी को दे दो।

माता - **भवते कार्यं न रोचते। अहमेव करोमि सर्वं कार्यम्।** आपको कार्य नहीं अच्छा लगता। मैं ही सब काम करती हूँ।

पुत्रः – **भिक्षुकः नाणकं नेच्छति। ओदनम् इच्छति।** भिखारी सिक्का नहीं चाहता, भात चाहता है।

माता – **अहं भिक्षुकाय ददामि। भवान् जलं पूरयतु।** मैं भिखारी को देती हूं। आप पानी भरो।

पुत्रः – **जलं पूरयामि। खादितुं मह्यमपि किमपि ददातु।** जल भरता हूं। मुझे भी खाने को कुछ दो।

माता – **भवते भोजनमेव ददामि। पञ्चनिमेषान् तिष्ठतु।** आपको भोजन ही दूँगी। पांच मिनट ठहरिए।

पुत्रः – **भोजनम् अनन्तरम्। प्रातः भगिन्यै भवती यत् दत्तवती तत् मह्यम् अपि ददातु।** भोजन बाद में। प्रातः बहन को जो आपने दिया था वही मुझे भी दो।

माता – **भवान् केवलं खादति, न पठति, न वा कार्यं करोति।** आप केवल खाते हैं, न पढ़ते हैं न कोई कार्य करते हैं ?

पुत्रः – **अम्ब ! भवती भोजनं कृत्वा कुत्र गच्छति ?** मां आप भोजन करके कहां जा रही हैं ?

माता – **अहं सार्वजनिकपुस्तकालयं गच्छामि।** मैं सार्वजनिक पुस्तकालय जा रही हूं।

दीप्तिः – **अम्ब! माम् अपि पुस्तकालयं नयतु। अहं द्रष्टुम् इच्छामि।** मां! मुझे भी पुस्तकालय ले चलो। मैं देखना चाहता हूं।

माता – **अस्तु अद्य दशवादने गच्छामः।** अच्छा आज दश बजे चलते हैं।

दीप्तिः – **अम्ब ! एतानि पुस्तकानि किमर्थम् अत्र स्थापितवन्तः ?** मां ये पुस्तकें यहां क्यों रखीं हैं ?

माता – **केचन पुस्तकानि द्रष्टुम् इच्छन्ति। केचन क्रेतुम् इच्छन्ति। क्रेतुं ये इच्छन्ति ते केवलं बहिः पुस्तकानि पश्यन्ति।** कुछ लोग पुस्तक देखना चाहते हैं। कुछ लोग खरीदना चाहते हैं। जो खरीदना चाहते हैं वो केवल बाहर पुस्तक देखते हैं।

दीप्तिः – **प्रबन्धं लेखितुम् अपि इतः पुस्तकानि नयन्ति किम् ?** प्रबन्ध लिखने के लिए भी यहां से पुस्तक ले जाते हैं क्या ?

माता – **अत्र सर्वविधानि अपि पुस्तकानि भवन्ति। केचन कथापुस्तकं पठितुम् इच्छन्ति। केचन भाषणं सज्जीकर्तुम् इच्छन्ति। अन्ये केचन बालकेभ्यः सङ्ग्रहीतुं शक्नुवन्ति। अतः सर्वाणि अपि पृथक् स्थापयन्ति।** यहां सभी प्रकार की पुस्तकें होती हैं।

कुछ कथा पुस्तक पढ़ना चाहते हैं। कुछ भाषण सिद्ध करना चाहते हैं। अन्य कुछ बालकों के लिए संग्रह कर सकते हैं। इसीलिए सभी अलग रखी हैं।

दीप्तिः - **अत्र पुस्तकानि स्वीकर्तुं किम् सदस्याः आगच्छन्ति ?** यहां पुस्तक लेने क्या सदस्य आते हैं ?

माता - **आम् ! अत्र सा व्यवस्था समीचीना अस्ति। नूतनानि स्वीकर्तुं पुरातनानि पुस्तकानि प्रत्यर्पयितुं सदस्याः आगच्छन्ति।** हां! यहां वही व्यवस्था ठीक है। नयी लेने पुरानी वापस करने सदस्य आते हैं।

दीप्तिः - **तर्हि वयं सख्यः मिलित्वा अत्र आगच्छामः। अधिकान् विषयान् सङ्ग्रहीतुं शक्नुमः।** तो हम सभी सखियां मिलकर यहां आती हूँ। अधिक विषयों का संग्रह कर सकते हैं।

माता - **अनुजमपि आनयतु। सोऽपि पुस्तकपठनाभ्यासं करिष्यति।** छोटे भाई को भी लाओ। वह भी पुस्तक पढ़ने का अभ्यास करेगा।

पढ़ाना अच्छा लगता है

मनोरमा - **शिक्षिकायाः आगमनपर्यन्तं किञ्चित् पाठविषये एव चिन्तयामः। वदन्तु कस्मै/कस्यै किं रोचते ? इति।** शिक्षिका के आने तक पाठ विषय में थोड़ा चिन्ता करते है। बोलो किसको क्या अच्छा लगता है ?

शकुन्तला - **मह्यं फलं रोचते। लता वदतु भोः।** मुझे फल अच्छे लगते है अपि ! बोलो लता।

रागिणी - **मह्यम् आनन्दस्य नृत्यं रोचते। तुभ्यं किं रोचते वदतु कार्तिक!** मुझे आनन्द का नाच अच्छा लगता है। कार्तिक ! तुम्हें क्या अच्छा लगता है ?

कार्तिकः - **कार्तिकाय नाटकवीक्षणं रोचते।** कार्तिक को नाटक देखना अच्छा लगता है।

प्रशान्तः - **मालत्यै सर्वदा निद्रा रोचते। न वा मालति ?** मालती को सदा सोना अच्छा लगता है। है न मालती?

चूड़ामणि - **मह्यं संस्कृतगीतं रोचते। भोः आर्ये ! भवत्यै किं रोचते इति प्रथमं वदतु।** मुझे संस्कृत गीत अच्छा लगता है। अरे आर्य ! आप को क्या अच्छा लगता है। पहले बताओ।

मनोरमा - **एतस्यै किं रोचते इति कुतूहलं वा ? शृण्वन्तु मह्यं भाषणं रोचते।** इसे क्या अच्छा लगता है कौतूहल है तो सुनो मुझे भाषण अच्छा लगता है।

चेतनः - **न सर्वे मौनेन उपविशन्तु। शिक्षिका आगतवती।** सभी चुपचाप नहीं बैठो। शिक्षिका आ गयी।

मदनः - **आगच्छतु तस्यै किं रोचते इति पृच्छामः। मान्य ! भवत्यै किं रोचते इति वदति वा ?** आओ उन्हें क्या अच्छा लगता है पूछते है। महोदया ! आप को क्या अच्छा लगता है बतायेगी क्या?

शिक्षिका - **मह्यं भवतां पाठनं रोचते।** मुझे आप लोगों को पढ़ाना अच्छा लगता है।

जैसे कहे वैसा करे

अध्यापकः - **अखिलभारत-शिक्षक-सम्मेलनं भविष्यति। तत्र मनोरञ्जन कार्यक्रमान् कर्तुम् अवसरः अस्ति।** अखिलभारत-शिक्षक-सम्मेलन होगा। वहाँ मनोरञ्जन कार्यक्रम करने का अवसर है।

दीपकः - **तर्हि वयम् एकं लघुनाटकं कुर्मः।** तो हम एक छोटा नाटक करते है।

अर्चना - **वयं सामूहिकगीतं गायामः।** हम लोग सामूहिक गीत गाते है।

अरुणः **अहम् एकपात्रभिनयं करोमि।** मैं एकल पात्र अभिनय करता हूँ।

चेतनः - **प्रदर्शिनी-आयोजनम् अस्ति वा ?** प्रदर्शिनी आयोजित है क्या?

अध्यापकः - **महती प्रदर्शिनी भविष्यति। के तस्य कार्यं कुर्वन्ति ?** विशाल प्रदर्शिनी होगी। कौन उसका कार्य करते है?

अरविन्दः - **वयं प्रदर्शिनीकार्यं कुर्मः। नूतनानि फलकानि लिखामः। बहूनि वस्तूनि सङ्गृह्णीमः। यन्त्रादीनि योजयामः। नवीनानि उपकरणानि रचयामः।** हम प्रदर्शिनी कार्य करते है। नये फलक लिखते है। बहुत सारी वस्तुओं को सङग्रह करते हैं। मन्त्रादि योजित करते है। नवीन उपकरणों की रचना करते हैं।

पल्लवी - **आवां प्रार्थनां गायावः।** हम दोनों प्रार्थना करते है।

अध्यापकः - **प्रबन्धकार्यं के निर्वहन्ति ?** प्रबन्ध कार्य का निर्वहन कौन करते हैं?

श्रीनिधिः - **अस्माकं गणः प्रबन्धकार्यं निर्वहति। आसनस्थापनम् अन्ते निष्कासनकार्याणि अपि अस्मदीयाः एव कुर्वन्ति।** हमारा गण प्रबन्धकार्य का निर्वहन करता है। कुर्सी रखने और अन्त में निकालने का कार्य भी हमारे लोग ही करते है।

अध्यापकः - **कार्यक्रमस्यानन्तरं तथैव मौनं गच्छन्ति चेत् ?**
- कार्यक्रम के बाद वैसे चुपचाप चल दिये तो।

चिन्मयः - **तथा न कुर्मः। यथा वदसि तथैव कार्यं कुर्मः।** - वैसा नहीं करेंगे। जैसा कहेंगे वैसा ही कार्य करते है।

पूजा

श्रद्धा - **लते ! लते ! किं करोति भवती ?** लता-लता ! क्या कर रही हो आप?

लता - **आगच्छतु, आगच्छतु कः विशेषः ? नूतनवस्त्रं धृतवती भवती।** आओ, आओ, क्या विशेष है? नये कपड़े धारण कर रक्खा है आपने।

श्रद्धा - **मम गृहे श्वः पूजा अस्ति। भवती आगच्छतु। भोजनार्थम् आगच्छतु।** कल मेरे घर में पूजा है। आप आओ। भोजन के लिए आओ।

लता - **अहमपि कार्ये साहाय्यं करोमि वस्तूनि कुतः आनयति ?** मैं भी कार्य में सहयोग करती है सामान कहाँ से लाती हों?

श्रद्धा - **मधुराणि आपणतः आनयामि। पुष्पाणि फलानि च मम आर्यपुत्रः विपणितः आनयति। बान्धवा कदली-पत्रणि ग्रामतः प्रेषयन्ति। पूजावस्तूनि अर्चकः गृहतः एव आनयति।** मिठाई दुकान से लाती हूँ। फूल-फल मेरे आर्यपुत्र (पति) दुकान से लाते हैं। बन्धु केले के पत्ते गाँव से भेजते हैं। पूजा की सामग्री पुजारी घर से ही लाते है।

लता - **तिष्ठतु, नलिकातः जलं स्रवति। आगच्छामि ?** ठहरो नल से जल बहता है। आ रही हूँ?

श्रद्धा - **भवत्याः गृहे जवनिकाः नूतनाः वा ? कुतः आनतवती भोः?** क्या आप के घर में पर्दे नये है ? कहाँ से ले आयी?

लता - **मम पतिः प्रयागं गतवान् आसीत्। ततः जवनिकाः**

आनीतवान्। भवतु अहं किं कार्यं करोमि ? गृहतः शीघ्रम् आगच्छामि। मेरे पति प्रयाग गये थे वहाँ से पर्दे लाये। अच्छा, मैं क्या काम करूँ घर से जल्दी आती हूँ।

श्रद्धा – **भवती शीघ्रम् आगच्छतु। तत्र किं कार्यम् इति पश्यामः। भवतु आगच्छामि।** आप शीघ्र आओ। वहाँ क्या काम है देखते हैं। अच्छा आती हूँ।

लता – **इतः कुत्र गच्छति ?** यहाँ से कहाँ जाती हैं ?

श्रद्धा – **इतः मम गृहमेव गच्छामि। मम पतिः इदानीं कार्यालयतः आगच्छति। पुत्रः विद्यालयतः आगच्छति। विलम्बः अभवत्, गच्छामि।** यहाँ से अपने घर ही जाती हूँ। मेरे पति इस समय कार्यालय से आते है। बेटा विद्यालय से आता हैं। देर हो गयी, जाती हूँ।

रोग औषधि

अखिलः – **राजेशः किमर्थम् अद्य कार्यालयं नागतवान् ?**-राजेश आज कार्यालय क्यों नहीं आया?

माधुरी – **अद्य प्रातः आरभ्य तस्य महान् ज्वरः अस्ति भोः। अतः सः शयनं कृतवान् ?** आज प्रातः से उसे बहुत बुखार है। इसीलिये वह सो रहा है?

अखिलः – **किं सः निद्रां कृतवान् ? तस्मै भवती औषधं दत्तवती खलु?** क्या वह सो रहा? उसे आप ने दवा दिया क्या ?

माधुरी – **इदानीं सः औषधं पीत्वा निद्रां कृतवान्। यदा षड्वादनं भवति तदा पुनः औषधं दास्यामि।** इस समय वह दवा पीकर सोया। जब छः बजेगें तब फिर दवा दूँगी।

अखिलः – **यदा उत्तिष्ठति तदा 'अहम् आगतवान्' इति वदतु।** जब उठे तब 'मैं आया था' बोलिये।

माधुरी – **उपविशतु। काफीं ददामि। श्वः यदि ज्वरः न्यूनः भविष्यति तर्हि सः कार्यालयम् आगमिष्यति।** बैठिए। काफी देती हूँ । यदि कल बुखार कम होगा तो वह कार्यालय जायेगा।

अखिलः – **मास्तु यदि विश्रान्तिः आवश्यकी तर्हि स्वीकरोतु। अहं**

कार्यालये वदामि। नहीं यदि आराम आवश्यक है तो आराम करें। मैं कार्यालय में बताता हूँ।

माधुरी – **यदा ज्वरः भवति, तदा किमपि सः न स्वीकरोति। अतः निःशक्तिः भवति।** जब बुखार होता है तो वह कुछ भी नहीं लेते। इसलिये शक्ति हीन होते हैं ।

अखिलः – **अहम् आगच्छामि। तं सूचयतु।** मैं आता हूँ। उन्हे सूचित करिए।

राजेश – **माधुरि ! इदानीं ज्वरः अधिकः अस्ति इति चिन्तयामि, पश्यतु। वैद्यः किम् उक्तवान् ?** माधुरी! इस समय बुखार ज्यादा हैं ऐसा सोचता हूँ, देखें डाक्टर ने क्या कहा?

माधुरी – **यदि ज्वरः अधिकः अस्ति तर्हि गुलिकां ददातु इति उक्तवान्। भवान् शयनं करोतु अहं जलम् आनयामि।** यदि बुखार ज्यादा हो तो गोली देना ऐसा कहा आप शयन करें, मैं जल लाती हूँ।

संस्कृत सम्भाषण

शिल्पा – **भोः ! भवान् सङ्गणकज्ञानं कुतः प्राप्तवान् ?** हे ! आपने कम्प्यूटर का ज्ञान कहाँ से प्राप्त किया?

नरेन्द्रः – **अहम् अमेरिकायां सङ्गणकज्ञानं प्राप्तवान्।** मैं अमैरिका में कम्प्यूटर ज्ञान प्राप्त किया।

शिल्पा – **भवान् किमर्थं भरतम् आगतवान् ? भवतः जननीजनकौ कुत्र स्तः ?** आप भारत किसलिये आये? आपके माता पिता कहाँ हैं ?

नरेन्द्रः – **मम जननीजनकौ अमेरिकादेशे स्तः। अहं संस्कृत-शास्त्राणाम् अध्ययनार्थं भारतम् आगतवान्। तत्रापि संस्कृतशास्त्राध्ययनाय प्रथमं संस्कृतसम्भाषणं ज्ञातुमिच्छामि। भवती किम् अधीतवती।** मेरे माता पिता अमेरिका देश में है। मैं संस्कृत-शास्त्रों का अध्ययन करने के लिये भारत आया। वहाँ भी संस्कृतशास्त्र अध्ययन के लिये प्रथम संस्कृत सम्भाषण का ज्ञान चाहता हूँ। आपने क्या अध्ययन किया है।

शिल्पा – **अहं संस्कृतसाहित्यम् अधीतवती। संस्कृते स्नातकोत्तरपदवीमपि प्राप्तवती। अधुना शोधकार्यमपि करोमि।** मैं संस्कृत साहित्य पढ़ी। संस्कृत में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए.) प्राप्त किया। इस समय शोधकार्य भी करती हूँ

नरेन्द्रः - **भवती अत्र कति वर्षेभ्य कार्यं करोति ?** आप यहाँ कितने वर्षों से कार्य कर रही है?

शिल्पा - **अहं त्रयोदशवर्षेभ्यः संस्कृतप्रचारकार्यं करोमि।** मैं तेरह वर्षों से संस्कृत प्रचार का कार्य कर रही हूँ।

नरेन्द्रः - **अत्र संस्कृताध्ययनाय बहुभ्यः प्रदेशेभ्यः जनाः आगच्छन्ति किम् ?** यहाँ संस्कृत पढ़ने बहुत से प्रदेशों से लोग आते है क्या?

शिल्पा - **संस्कृताध्ययनाय विदेशेभ्यः अपि प्रतिवर्षम् आगच्छन्ति, तिष्ठन्ति, पठन्ति च।** संस्कृत पढ़ने के लिये प्रतिवर्ष विदेशों से भी आते है, ठहरते है और पढ़ते है।

नरेन्द्रः - **ते अत्र आगत्य कथम् अध्ययनं कुर्वन्ति ?** वे यहां आकर कैसे पढ़ाई करते हैं ?

शिल्पा - **ते अत्र आगत्य पठन्ति। किन्तु मन्दगत्या शिक्षणं भवति। यतः ते शीघ्रम् उचारयितुं न शक्नुवन्ति। किन्तु मासत्रयं मासचतुष्टयं वा स्थित्वा, सम्यक् ज्ञात्वा गच्छन्ति। अत्रत्येन संस्कृतवातावरणेन अत्यन्तं प्रभाविताः भवन्ति।** वे यहाँ आकर पढ़ते है। किन्तु धीमी गति से शिक्षण होता है। क्योंकि वे शीघ्र उच्चारण नहीं कर सकते हैं। किन्तु तीन चार महीने रहकर अच्छी प्रकार समझकर जाते है। यहाँ के संस्कृत वातावरण से अत्यन्त प्रभावित होते है।

नरेन्द्रः - **अहं बहून् विषयान् ज्ञातवान्, धन्यवादः। अहमपि संस्कृतसम्भाषणाभ्यासद्वारा संस्कृतशास्त्रणाम् अध्ययनार्थं परिश्रमं करिष्यामि।** मैने बहुत विषयों को जाना, धन्यवाद। मैं भी संस्कृत सम्भाषण अभ्यास द्वारा संस्कृत शास्त्रों के अध्ययन के लिये परिश्रम करुगाँ।

बेङ्गलूरनगर का अनुभव

सुधीरः - **अभिराम ! भवान् बेङ्गलूरुनगरं गत्वा किं किं दृष्टवान् ?** अभिराम। आपने बङ्गलौर नगर जाकर क्या क्या देखा?

अभिरामः - **अहम् पुस्तकापणं गतवान्। तत्र पुस्तकानि दृष्टवान्। कादम्बरीं क्रीतवान्। उपन्यसान् दृष्टवान्।** मैं पुस्तक दुकान गया। वहाँ पुस्तकों को देखा। कादम्बरी खरीदी। उपन्यासों को देखा।

सुधीरः - **तत्र विश्वविद्यालये प्रबन्धकान् दृष्टवान् किम् ?** वहाँ विश्वविद्यालय में प्रबन्धों को देखा क्या?

अभिरामः - **विश्वविद्यालये न केवलं प्रबन्धकान् अपितु बहून् शोधच्छात्रान् दृष्टवान्। अनेकान् लेखान् सङ्गृहीतवान्।** विश्वविद्यालय में न केवल प्रबन्धों को अपितु बहुत से शोध छात्रों को देखा। अनेक लेखों का संग्रह किया ।

सुधीरः - **तत्र प्रसिद्धम् उद्यानं न गतवान् किम् ?** वहाँ प्रसिद्ध उद्यान नहीं गये क्या?

अभिरामः - **मध्याह्ने वस्तुसंग्रहालयं गतवान्। तत्र अनेकानि वस्तूनि दृष्टवान्। पुरातनानि आयुधानि दृष्टवान्। मार्गदर्शकान् पृष्टवान्। सायम् उद्यानं गतवान्। तत्र वर्णरञ्जितानि पुष्पाणि दृष्टवान्। पुष्पैः शोभमानाः लताः दृष्टवान्। तृणैः निर्मितानि चित्राणि दृष्टवान्।** मध्याह्न में वस्तु संग्रहालय गया। वहाँ बहुत सारी वस्तुओं को देखा। पुराने आयुधों को देखा। मार्ग दर्शकों से पूछा। शाम को उद्यान गया। वहाँ रङ्गविरङ्गे फूलों को देखा। पुष्पों से शोभित लताओं को देखा। तृणों से (घास से) बने चित्रों को देखा।

सुधीरः - **तर्हि बेङ्गलुरुनगरं द्रष्टुं एकं दिनं न पर्याप्तम्। भवान् तत्र कति दिनानि अटितवान्?** तो बङ्गलौर नगर देखने के लिए एक दिन पर्याप्त नहीं। वहाँ आपने कितने दिन भ्रमण किया?

अभिरामः - **दर्शनीयानि स्थानानि बहूनि सन्ति तत्र किन्तु कार्यभारकारणतः अहं शीघ्रम् आगतवान्।** वहाँ देखने योग्य स्थान तो बहुत सारे है। परन्तु कार्याधिक्य के कारण मैं शीघ्र आया।

सुधीरः - **पुनः मिलामि, भवतः अनुभवान् शृणोमि।** फिर मिलते है, आप के अनुभवों को सुनते है।

रम्याप्रदर्शिनी

पुत्रः - **तात ! अद्य प्रदर्शिनीं द्रष्टुं किं नगरं गच्छाम ?** तात ! आज प्रदर्शिनी देखने नगर चलें क्या?

पिता - **प्रदर्शिनी कुत्र आयोजिता अस्ति ? किं भवान् स्थलं जानाति?** प्रदर्शिनी कहाँ आयोजित है? क्या आप स्थान जानते है?

पुत्रः - **प्रदर्शिनिस्थलम् अहं जानामि। गृहजनाः सर्वे गच्छाम।** प्रदर्शिनी स्थान मैं जानता हूँ। घर के सभी लोग चलते है।

पिता - **अहं 5-30 वादने मम कार्यं समापयामि। गच्छाम।** मैं 5.30 बजे अपना काम समाप्त करता हूँ। चलते हैं।

मञ्जुला – **तात ! पश्यतु, प्रदर्शिनी विविधवर्णरञ्जितैः दीपैः अलङ्कृता अस्ति।** पिता ! देखिए प्रदर्शिनी विभिन्न रङ्गविरङ्ग दीपों से सुशोभित है।

पुत्रः – **अन्तः गच्छामः। पश्यतु, दण्डैः विविधविन्यासं कृतवन्तः।** अन्दर चलते है। देखो, दण्डों से विभिन्न विन्यास किया।

माता – **अत्र पश्यतु, शलाकाभिः चित्राणि कृतवन्तः।** यहाँ देखो, शलाकाओं से चित्रों को बनाया है।

पुत्रः – **तत्र गच्छाम। एका पाञ्चालिका तस्याः स्नेहितैः सह क्रीडति। अपरां पश्यतु, सखीभि सह नृत्यति। अन्या बालकैः युद्धयति।** वहाँ चलते है। एक गुड़िया अपने मित्रों के साथ खेलती है दूसरी देखिये सखियों के साथ नाचती है। दूसरी बालकों से युद्ध कर रही है।

पिता – **वत्स ! प्रदर्शिनीदर्शनार्थं वयं यत् आगतवन्तः तत् सार्थकम् अभवत्।** बेटा। प्रदर्शिनी देखने के लिए जो हम लोग आये वह सार्थक हुआ।

माता – **प्रदर्शिनी नूतनोपकरणैः सज्जीकृतवन्तः सन्ति। अस्मिन् वर्षे प्रदर्शिनी समीचीन अस्ति।** प्रदर्शिनी नूतन उपकरणों से सजायी हुई है। इस साल प्रदर्शिनी अच्छी है।

मञ्जुला – **अहो, तत्र पश्यतु अम्ब ! देवीं सम्यक् अलङ्कृतवन्तः सन्ति। ओहो, अपूर्वम्। वर्णोपेतैः दीपै, अनेकाभिः मालाभिः, पुष्पैः फलैः विविधैः शाकैः देव्याः मण्डपः अलङ्कृतः अस्ति। अतः द्रष्टुणां सर्वेषां मनः आकर्षति। प्रथम तत्र गच्छामः।** हे, माँ वहाँ देखों ! देवी को अच्छी प्रकार सजाया है। अहा, बहुत सुन्दर। रङ्गीन दीपों से, अनेक मालाओं से, फूलों, फलों से विभिन्न सागों से देवी का मण्डप अलंकृत है। इसीलिये वह प्रत्येक देखने वाले का मन हर लेती है। पहले वहाँ चलते है।

माता – **सत्यम्, तत्र गच्छाम। कञ्चित्कालं स्थित्वां पश्यामः। पुत्र! भवन्तं प्रदर्शिनीविषयं कः उक्तवान्?** ठीक है, वहाँ चले। कुछ क्षण रुककर देखते है। बेटा ! आपको प्रदर्शिनी के विषय में किसने बताया।

पुत्रः – **मम स्नेहिता सर्वे दृष्टवन्तः। ते माम् उक्तवन्तः।** मेरे सभी मित्रों ने देखा। उन्होने मुझे बताया।

पिता – परश्वः रविवासरः खलु ? यदि इच्छन्ति पुनः इच्छन्ति पुनः आगच्छाम। गच्छाम इदानीम्। परसों रविवार है, यदि इच्छा है तो फिर आते है। इस समय सब चलते है।

छात्र अध्यापक संवाद

मुख्याध्यापकः – **छात्रः ! एका सन्तोषवार्ता अस्ति। यः अस्माकं राज्यस्य मुख्यमन्त्रीं अस्ति तस्य अद्य जन्मदिनम् अस्ति। सः अतीव दयालुः अस्ति उदारः अपि अस्ति।** छात्रों ! एक सन्तोष की बात है। जो हमारे राज्य के मुख्यमंत्री है उनका आज जन्मदिन है। वह अत्यन्त दयालु है उदार भी है।

छात्रः – **श्रीमन् । ध्वनिवर्धकः सम्यक् नास्ति। अन्ते न श्रूयते।** श्रीमन्! ध्वनिवर्धक ठीक नहीं है। पीछे नही सुनाई देता।

मुख्याध्यापकः – **अस्तु, उच्चैः वदामि। किं श्रूयते इदानीम् ?** ठीक है, जोर से बोलता हूँ। क्या अब सुनायी दे रहा है?

छात्रः – **आम्, श्रूयते।** हाँ, सुनाई दे रहा है।

मुख्याध्यापकः – **सः मुख्यमन्त्रिमहाशयः अस्माकं शालायाः शिक्षकेभ्यः अमूल्यानि वस्त्राणि दत्तवान्। शिक्षिकाभ्यः शाटिकाः दत्तवान्। प्रौढशालायाः छात्रेभ्यः समवस्त्राणि दत्तवान्। प्राथमिक-शालाच्छात्रेभ्यः पुस्तकानि दत्तवान्।** उस मुख्यमंत्री महाशय ने हमारे विद्यालय के शिक्षकों को बहुमूल्य वस्त्र दिये। शिक्षिकाओं को साड़ियाँ दी। प्रौढ़शाला के छात्रों को ड्रेस दिया। प्राथमिकशाला के छात्रों को पुस्तकें दीं।

छात्रः – **श्रीमन्। बालेभ्यः सः किं दत्तवान् ?** श्रीमन् ! बच्चों को उसने क्या दिया?

मुख्याध्यापकः – **बालेभ्यः अधिकानि क्रीडासाधनानि दत्तवान् सः। किञ्चित् धनमपि दत्तवान् अस्ति। एतदतिरिच्य अन्यत् किम् अपेक्षितम् इति भवन्तः वदन्तु।** बच्चों को अधिकाधिक खेलने को समान उसने दिया। कुछ धन भी दिया है। इसके अलावा और क्या अपेक्षित है आप लोग बोलें।

प्रौढच्छात्रः – **अस्माकं प्रकोष्ठेभ्यः (कक्ष्याभ्यः)अधिकानि आसनानि आवश्यकानि।** हमारे कमरे के लिए और अधिक आसनों की आवश्यकता है।

शिक्षिका - **बालानां कक्ष्याभ्यः पाठोपकरणानि आवश्यकानि।** बालकों की कक्षा के लिए पाठ उपकरण आवश्यक है।

शिक्षकः - **सर्वेभ्यः बालेभ्यः क्रीडासाधानानि अत्यावश्यकानि।** सभी बच्चों के लिए खेलने की समान की अत्यधिक आवश्यकता है।

मुख्याध्यापकः - **अस्तु, एताः अपेक्षाः सः पूरयिष्यति प्रायः। पुनः अपि किमपि अपेक्षितं चेत् श्वः सुचयन्तु। धन्यवादः।** ठीक है, इन अपेक्षाओं को वह प्रायः पूरा करेगे। और भी कुछ अपेक्षित तो कल सूचित करे। धन्यवाद।

शिल्पकार

पथिकः - **भोः शिलां कुट्टयित्वा कुट्टयित्वा भवान् किंवा करोति ?** हे, पत्थर कूट कूटकर आप क्या कर रहे है?

शिल्पकारः - **अहं गणेशस्य विग्रहं करोमि।** मैं गणेश की मूर्ति करता हूं।

पथिकः - **किमर्थं भवान् शिवस्य विग्रहं न करोति ? किं भवान् गणेशस्य भक्तः ?** आप शिव की मूर्ति क्यों नही बनाते ? क्या आप गणेश के भक्त है?

शिल्पकारः - **शिवस्य विग्रहः लिङ्गरूपः, अतः अहं गणेशस्य विग्रहं करोमि।** शिव का मूर्ति लिङ्गरूप है इसलिये मैं गणेश की मूर्ति करता हूँ।

पथिकः - **भवान् सर्वविधान् विग्रहान् अपि करोति किम् ?** आप सभी प्रकार की मूर्ति करते है क्या?

शिल्पकारः - **भवते कीदृशः विग्रहः आवश्यकः ? देवस्य चेत् कस्य देवस्य ? देव्याः चेत् कस्याः देव्याः? रामस्य लक्ष्म्याः सरस्वत्याः उत कृष्णस्य ? कस्य विग्रहः आवश्यकः ?** आपको किस प्रकार की मूर्ति आवश्यक। देव का तो किस देव का? देवी को तो किस देवी का ? राम का लक्ष्मी का सरस्वती का या कृष्ण का? किसकी मूर्ति आवश्यक।

पथिकः - **नवरात्रसमये पूजां कर्तुं लक्ष्म्याः विग्रहः आवश्यकः। तथैव पार्वत्याः (गौर्याः) विग्रहः अपि आवश्यकः।** नवरात्रि के समय पूजा के लिए लक्ष्मी की मूर्ति आवश्यक। उसी प्रकार पार्वती की मूर्ति भी आवश्यक।

शिल्पकारः - **भवते कदा आवश्यकम् ?** आपको कब चाहिए ?

पथिकः - **मह्यं जुलै-मासस्य 10 दिनाङ्के आवश्यकम्। कृत्वा ददाति किम् ? एकस्य विग्रहस्य कृते कति रूप्यकाणि ?** मुझे जुलाई महीने के 10 दिनाङ्क को आवश्यक है। करके देते है क्या? एक मूर्ति के लिए कितने रूपये?

शिल्पकारः - **देव्याः इति कारणतः कति रूप्यकाणि इति न वदामि। भवानेव चिन्तयित्वा ददातु।** देवी की है इसलिये कितने रूपये यह नहीं बताता। आपही समझकर दे।

पथिकः - **अस्तु जुलै-मासस्य 10 दिनाङ्के आगच्छामि।** ठीक है जुलाई महीने के 10 दिनाङ्क को आता हूँ

मनोविनोद

दिव्या - **माले ! आगच्छति वा ? आपणं गच्छाव।** माला आती हो क्या? बाजार चलते हैं।

माला - **आगच्छामि, गच्छाव। कस्य आपणं गच्छाव ?** आती हूं, चलें। किसकी दुकान चलें ?

दिव्या - **प्रथमं पादरक्षायाः आपणं गच्छाव। अहो.. तत्र एकः आपणः अस्ति।** पहले चप्पल की दुकान चलते हैं। अरे, वहां एक दुकान है।

आपणिकः - **कस्याः कृते पादरक्षा ?** किसके लिए चप्पल ?

दिव्या - **मम कृते एव। तां पीतवर्णां पादरक्षां ददातु। कतिरूप्यकाणि?** मेरे लिए ही। उस पीले रंग की चप्पल को दो। कितने रुपये ?

आपणिकः - **एतस्याः कृते 150 रूप्यकाणि। कृष्णवर्णपादरक्षायाः न्यूनं मूल्यम्।** इसके लिए एक सौ पचास रुपये। काले रंग की चप्पल का मूल्य न्यून है।

दिव्या - **पीतवर्णां पादरक्षां दर्शयतु।** पीले रंग की चप्पल दिखाओ।

माला - **पादरक्षायाः मूल्यम् अधिकम् अस्ति भोः। एषा मास्तु।** अरे ! चप्पल का मूल्य अधिक है। यह नहीं।

दिव्या - **नैव, मम अम्बा पीतवर्णस्य वस्त्रम् आनीतवती। अतः पीतवर्णपादरक्षा आवश्यकी। भवतु आगच्छतु। कङ्कणस्य आपणं गच्छामः।** नहीं, मेरी मां पीले रंग का वस्त्र लायी इसलिए पीले रंग की चप्पल आवश्यक है। ठीक है आओ। कंगन की दुकान चलते हैं।

माला - **आगच्छतु, किं ? कङ्कणानि अपि पीतवर्णयुतानि एव**

आवश्यकानि वा? आओ क्यों ? कंगन भी पीले रंग के आवश्यक हैं क्या ?

दिव्या – **आम् सत्यम्। आगामि अगस्तमासस्य चतुर्थे मम मातुलस्य विवाहः भविष्यति। तदा पीतवर्णस्य वस्त्रं पीतवर्णस्य कङ्कणम्, पीतवर्णस्य तिलकं, पीतवर्णस्य पादरक्षां च धरिष्यामि। सर्वाणि अपि पीतवर्णस्य एव भविष्यन्ति।** हां ठीक है। आने वाले अगस्त मास के चार तारीख को मेरे मामा का विवाह होगा तब पीले रंग का वस्त्र, पीले रंग का कंगन, पीला तिलक, पीले रंग की चप्पल धारण करूंगी। सब कुछ पीले रंग का ही होगा।

माला – **तर्हि अहम् एकम् उपायं वदामि किम् ?** तो फिर मैं एक उपाय बताऊं क्या ?

दिव्या – **वदतु, वदतु ?** बोलो, बोलो

माला – **भवत्याः मातुलस्य विवाहपर्यन्तं दन्तधावनं मा करोतु। तदा भवत्याः दन्ताः अपि पीतवर्णाः भवन्ति।** अपने मामा के विवाह तक दांत की सफाई न करना। तब आपके दांत भी पीले हो जायेंगे।

परीक्षा की तैयारी

शिक्षकः – **छात्राः ! परीक्षा सन्निहिता अस्ति। सम्यक् पठन्तु।** छात्रों ! परीक्षा निकट है अच्छी तरह पढ़ो।

अनन्तः – **परीक्षा कुत्र प्रचलिष्यति ?** परीक्षा कहां होगी ?

शिक्षकः – **सर्वेषु प्रकोष्ठेषु (कक्ष्यासु) क्रमसंख्यां स्थापयामः। परीक्षा अस्माकं विद्यालये एव भविष्यति। इदानीं सर्वे अपि छात्रः बहिः गच्छन्तु।** सभी कमरों में (कक्षाओं में) क्रमसंख्या लगी होगी। परीक्षा हमारे विद्यालय में ही होगी। इस समय सारे के सारे छात्र बाहर जाओ।

अनन्तः – **किमर्थम् आचार्य ! अद्य एव संख्यां स्थापयन्ति किम् ?** किसलिए आचार्य जी ! आज ही संख्या स्थापित होगी क्या ?

शिक्षकः – **इदानीं भवन्तः सर्वेषु प्रकोष्ठेषु स्वच्छतां कुर्वन्तु। उत्पीठिकासु अपि धूलिं मार्जयन्तु। कृष्णफलकेषु अपि धूलिं मार्जयित्वा दिनाङ्कादिकं लिखन्तु।** इस समय आप सब सभी कमरों की सफाई करें। मेज की ऊपर की धूल को साफ करें। श्यामपट पर से धूल साफ कर दिनांक आदि लिखें।

राजीवः - **आचार्य ! सर्वेऽपि कार्य्यं न कुर्वन्ति। केचन बहिः अटन्ति।** आचार्य जी सभी के सभी कार्य नहीं कर रहे हैं। कुछ बाहर टहल रहे हैं।

शिक्षकः - **बालकेषु एकं प्रमुखं करोमि। बालिकासु एकां प्रमुखां करोमि, यदि क्रीडाङ्गणेषु क्रीडन्ति तर्हि दण्डम् आनयामि। केचन द्रोणीषु जलं पूरयित्वा आनयन्तु।** बालकों में से एक को प्रमुख बनाते हैं। बालिकाओं में से एक को प्रमुख बनाते हैं, यदि खेल के मैदान में खेलते हैं तो दण्डा लाता हूँ। कुछ लोग बाल्टी में जल भर के लाओ।

मालती - **मार्जनार्थं वस्त्राणि कुत्र सन्ति ?** सफाई के लिए वस्त्र कहाँ है?

शिक्षकः - **वस्त्राणि वस्तुसङ्ग्रहप्रकोष्ठे सन्ति। तत्र गत्वा आनयन्तु।** वस्त्र वस्तुसंग्रहकक्ष में है वहां जाकर लाओ।

छात्रः - **आचार्य ! वयं गच्छामः। सज्जतां कुर्मः।** आचार्य जी हम सब जाते हैं। सफाई करते हैं।

कार्यकर्ता का घर

मालती - **अद्य शीघ्रम् आगच्छतु। विजयनगरं गच्छावः।** आज जल्दी आओ विजयनगर चलते हैं।

दिलीपः - **विजयनगरे कः विशेषः ?** विजयनगर में क्या विशेष (है) ?

मालती - **अद्य एव खलु सन्ध्यायाः विवाहः ? अतः शीघ्रं गच्छावः।** अरे आज ही संध्या का विवाह ? इसलिए जल्दी चलते हैं।

दिलीपः - **अद्य कार्यालये बहुकार्याणि सन्ति। केशवकृपायां मन्थन-कार्यक्रमः। अतः विवाहगमनं न भवेत्।** आज कार्यालय में बहुत काम है। केशवकृपा में मंथन कार्यक्रम है इसलिए विवाह में जाना न हो सके।

मालती - **भवतः सर्वदा कार्यालये कार्याणि भवन्ति। रविवासरे अपि विरामः नास्ति। कुत्रापि गमनम् एव न भवति।** आपके कार्यालय में हमेशा काम रहता है। रविवार को भी अवकाश नहीं होता। कहीं जाना नहीं हो पाता।

दिलीपः **मालति ! खेदः मास्तु। कार्यालये 10 वादने सीमायाः पाठः अस्ति। अतिथिगृहे दीपकव्यवस्था, सभाङ्गणे कार्यक्रमस्य व्यवस्था, कपाटिकायां पुस्तकानां योजनं, ग्रन्थालये आसन्दानां**

व्यवस्थापनं, पत्रिकां नीतामुद्रणालये दानं तन्मध्ये राजाजिनगरे कार्यकर्तृगोष्ठी-निर्वहणम्-इत्यादीनि कार्याणि सन्ति। अत्र किं कार्यं परित्यजामि। मालती ! दुख न करो। कार्यालय में 10 बजे सीमा का पाठ है। अतिथिघर में दीपक व्यवस्था, सभा में कार्यक्रम की व्यवस्था, अलमारी में पुस्तकों की व्यवस्था, ग्रन्थालय में कुर्सियों की व्यवस्था, पत्रिका को मुद्रणालय में देना, उसी मध्य राजाजीनगर में कार्यकर्ता गोष्ठी का निर्वहन ये सब कामों में इसमें कौन सा काम छोड़ूं।

मालती – **अन्ये कार्यकर्तारः न सन्ति वा ?** अन्य कार्यकर्ता नहीं हैं क्या ?

दिलीपः – **सुरेशः लखनऊ गतवान्, नारायणः कोलकतानगरं गतवान्। ते त्रयः शिविरं गच्छन्ति। पुनः के सन्ति ?** सुरेश लखनऊ गया, नारायण कोलकाता नगर गया। वे तीनों शिविर जाते हैं। और कौन है ?

मालती – **किमपि करोतु।** कुछ तो करो।

स्वादिष्ट भोजन

पुत्रः – **अम्ब ! महती बुभुक्षा भवति। शीघ्रं भोजनं परिवेषयतु।** मां बहुत तेज की भूख है। जल्दी से भोजन लगाओ।

अम्बा – **वत्स ! भोजानार्थं सर्वान् आह्वयतु।** पुत्र ! भोजन के लिए सभी को बुलाओ।

पुत्रः – **सर्वे शीघ्रम् आगच्छतु।** सभी जल्दी आओ।

अम्बा – **अद्य ओदनम्, सूपः , व्यञ्जनं, पर्पटः पायसम् च अस्ति।** आज चावल, दाल, सब्जी, पापड़ और खीर है।

पुत्रः – **अद्य कः विशेषः ?** आज क्या विशेष (है) ?

अम्बा – **अद्य रामनवमी भोः। अतः पायसं कृतवती।** अरे ! आज रामनवमी। इसलिए खीर बनाई।

भगिनी – **अम्ब अद्य व्यञ्जने लवणमेव न योजितवती। लवणं परिवेषयतु।** माँ आज सब्जी में नमक ही नहीं डाली। नमक परोसो।

अम्बा – **अहो विस्मृतवती। स्वीकरोतु लवणम्।** अरे भूल गयी। नमक लो।

पुत्रः – **अम्ब ! सूपः कटुः अस्ति घृतम् आवश्यकम्।** मां दाल कड़वी है घी आवश्यक है

पतिः - **जलजे ! शाकं परिवेषयतु। वृन्ताकस्य खलु शाकम् अतः खण्डाः मा सन्तु।** जलजा ! सब्जी परोसो। अरे बैंगन की सब्जी है इसलिए टुकड़े न करो।

अम्बा - **वत्स ! पायसं कथमस्ति ?** पुत्र ! खीर कैसी है ?

भगिनी - **पायसं रुचिकरं परं तक्रम् आम्लम् अस्ति। मम अवलेहः आवश्यकः।** खीर मधुर है किन्तु मट्ठा खट्टा है। मुझे आचार आवश्यक है।

पतिः - **तथैव जलमपि आवश्यकम्। अद्य व्यञ्जनं कोऽपि न खादति। यतः तत्र लवणमेव नास्ति।** वैसे ही जल भी आवश्यक है। आज कोई भी सब्जी नहीं खाता। क्योंकि उसमें नमक ही नहीं है।

अम्बा - **सावधानं भोजनं कुर्वन्तु। किम् आवश्यकम् ?** सावधान, भोजन करो। क्या आवश्यक है ?

भगिनी - **अद्य भोजनं तावत् सम्यक् नासीत्।** आज भोजन उतना अच्छा नहीं था।

पुत्रः - **नहि अम्ब ! भगिनी असत्यं वदति। भोजनम् स्वादिष्टम् आसीत्।** नहीं मां ! बहन झूठ बोलती है। भोजन स्वादिष्ट था।

परिचय पाठ

आचार्यः - **सर्वेभ्यः स्वागतम्। नमस्काराः। मम नाम शम्भुनाथः। भवतः नाम किम् ?** सभी का स्वागत है। नमस्कार। मेरा नाम शम्भूनाथ (है)। आपका क्या नाम (है) ?

श्रीधरः - **मम नाम श्रीधरः।** मेरा नाम श्रीधर (है)।

आचार्यः - **भवत्याः नाम किम् ?** आपका क्या नाम (है)।

पूनम - **मम नाम पूनम्।** मेरा नाम पूनम (है)।

आचार्यः - **अरविन्द ! भवतः जनकस्य नाम किम् ?** अरविंन्द ! आपके पिता का क्या नाम (है) ?

अरविन्दः - **मम जनकस्य नाम गिरीशः।** मेरे पिता का नाम गिरीश।

आचार्यः - **श्रीधर ! अत्र आगच्छतु ! अहं भवतः नासिका इति वदामि। भवान् मम नासिका इति वदतु। भोः छात्रः भवन्तः श्रीधरस्य नासिका इति वदन्तु।** श्रीधर यहां आओ मैं आपकी नासिका ऐसा बोलता हूँ। आप मेरी नासिका ऐसा बोलो। छात्रों ! तुम सब श्रीधर की नाक ऐसा बोलो।

आचार्यः - **भवतः कर्णः** आपका कान

श्रीधरः - **मम कर्णः** मेरा कान

छात्रः - **श्रीधरस्य कर्णः** श्रीधर का कान

आचार्यः - **भवतः पादः, भवतः हस्तः, भवतः शिरः, भवतः वदनम्.. इत्यादि।** आपका पैर, आपका हाथ, आपका सर, आपका मुख इत्यादि।

श्रीधरः - **मम पादः, मम हस्तः... मम शिरः, .. मम वदनम्..।** मेरा पैर, मेरा हाथ..... मेरा सर.... मेरा मुख...।

छात्राः - **श्रीधरस्य पादः, श्रीधरस्य हस्तः श्रीधरस्य शिरः, श्रीधरस्य वदनम्...।** श्रीधर का पैर, श्रीधर का हाथ, श्रीधर का सर, श्रीधर का मुख।

आचार्यः - **भवत्याः पुस्तकम्... एवमेव।** आपकी पुस्तक....ऐसी ही।

लता - **मम पुस्तकम्।** मेरी पुस्तक।

छात्रः - **लतायाः पुस्तकम् लतायाः लेखनी..।** लता की पुस्तक, लता की लेखनी....।

आचार्यः - **भगिनी-गृहम् इति वदामि, परिष्कारं कुर्वन्तु।** बहन घर ऐसा बोलता हूं, सुधार करो।

छात्रः - **भगिन्या गृहम्।** बहन का घर।

आचार्यः - **गृहं-चित्रम् इति वदामि।** घर चित्र ऐसा बोलता हूं।

छात्रः **गृहस्य चित्रम्।** घर का चित्र।

आचार्यः - **अहम् उत्तराणि वदामि भवन्तः, प्रश्नान् वदन्तु।** मैं उत्तर बोलता हूं आप लोग प्रश्न बोलो।

आचार्यः - **मम नाम गिरीशः।** मेरा नाम गिरीश।

छात्रः - **भवतः नाम किम् ?** आपका नाम क्या ?

आचार्यः - **पुस्तकस्य नाम बालसरिता।** पुस्तक का नाम बाल सरिता।

छात्रः - **पुस्तकस्य नाम किम् ?** पुस्तक का नाम क्या ?

आचार्यः - **श्वः पुनः एतस्य पाठं कुर्मः।** कल फिर इस पाठ को करेंगे।

निश्चिन्त होंगे

शालिनी - **लतिके ! किं करोति गृहे। भवती तु सदा कार्ये मग्ना भवति।** लतिका ! घर पर क्या करती हो ? आपतो सदा कार्य में मग्न रहती हो।

लतिका - **किं करोमि। गृहिण्याः विरामः नास्ति खलु ?** क्या करूं ? घरवालियों को आराम नहीं है ?

शालिनी - **वदतु किं वक्तुम् इच्छति। अद्य कार्यालयस्य विरामः वा ?** बोलो क्या कहना चाहती हो। आज कार्यालय बन्द है क्या ?

लतिका - **अतः एव एवम् आगतवती भवत्याः पुत्र कथं पठति।** इसीलिए ही ऐसे आई। आपका बेटा कैसे पढ़ता है ?

शालिनी - **मम पुत्रः सम्यक् एव पठति। अहं तु तं पाठयामि। स्वयमेव पठति। तं पठतु इत्यपि न वदामि।** मेरा बेटा ठीक ही पढ़ता है। मैं ही उसे पढ़ाती हूं। खुद ही पढ़ता है। उसको पढ़ो यह भी नहीं बोलती हूं।

लतिका - **अहो ! भाग्यशालिनी भवति ! मम पुत्रौ तु न पठतः एव। निरन्तरं क्रीडतः, अहं तु दिने न भवामि। तयोः पाठने मम समयोऽपि नास्ति। ह्यः तयोः शिक्षिका भवतां पुत्रौ अध्ययने रुचिं न दर्शयतः गृहे भवन्तः एतद्विषये समुचितं चिन्तयन्तु पठने रुचिं तयोः उत्पादयन्तु पत्रं प्रषितवती किं करोमि इति महती चिन्ता।** अरे! भाग्यशालिनी हैं आप। मेरे दोनों बेटे तो पढ़ते ही नहीं सदैव खेलते है, मैं तो दिन में होती नहीं उनको पढ़ाने के लिए मेरे पास समय भी नहीं है। कल दोनों की शिक्षिका ने आपके दोनों बेटे अध्ययन में रुचि नहीं दिखाते घर पर इस विषय में आप लोग उचित चिन्तन करें दोनों की पढ़ने में रुचि उत्पादन करें ऐसा पत्र भेजी। क्या करूं बड़ी चिन्ता है।

शालिनी - **लतिके ! चिन्तां न करोतु। भवत्याः पुत्र्योः विषये अहम् उपायं वदामि।** लतिका चिन्ता न करो। आपके दोनों बेटों के विषय में मैं उपाय बताती हूं।

लतिका - **कः उपायः ? शीघ्रं वदतु।** क्या उपाय ? जल्दी बताओ।

शालिनी - **भवती धनं दातुं सिद्धा अस्ति चेत् तौ प्रेषयतु। मम प्रतिवेशिनी उत्तमं पाठयति। परं...** आप धन देने कोतैयार तो भेजो। मेरी पड़ोसन अच्छा पढ़ाती है। किन्तु ...

लतिका - **परं.. किम् ?** किन्तु... क्या ?

शालिनी - **सा प्रति मासं पाठार्थं एकस्य कृते 200 रुप्यकाणि स्वीकरोति। ये प्रथमस्थानं प्राप्नुवन्ति। ते एव अधिकतया तत्र गच्छन्ति।** वह प्रत्येक मास पढ़ाने के लिए दो सौ रुपये लेती है। जो प्रथम स्थान पाते हैं वे ही वहां ज्यादातर जाते हैं।

लतिका – **धनविषये चिन्ता नास्ति। सा अङ्गीकरोति चेत् अद्य आरभ्य एव प्रेषयामि।** धन के विषय में चिन्ता नहीं है। वह स्वीकार करती हैं तो आज से ही भेजती हूं।

शालिनी – **अस्तु। अहं तया सह भाषणं करिष्यामि भवतीं सूचयिष्यामि।** ठीक है मैं उसके साथ बात करूंगी आपको सूचित करूंगी।

लतिका – **धन्यवादः! अहं मम पुत्रयोः पठनविषये निश्चिन्ता भविष्यामि।** धन्यवाद ! मैं अपने दोनों बेटों के पढ़ने के विषय में निश्चिन्त हो जाऊंगी।

प्रथम : अध्याय

वर्णों का उच्चारण

वर्णों का परिचय

माहेश्वरसूत्र -

ऐसी मान्यता है कि चौदह सूत्र भगवान् महादेव के डमरू की ध्वनि से प्रकट हुए। सम्पूर्ण संस्कृत व्याकरण का आधार ये चौदह माहेश्वर सूत्र हैं, वे हैं-

अ इ उण् (1) ऋ लृक् (2) ए ओङ् (3) ऐ औच् (4) ह य व रट् (5) लण् (6) ञ म ङ ण नम् (7) झ भञ् (8) घ ढ धष् (9) ज ब ग ड दश् (10) ख फ छ ठ थ च ट तव् (11) क पय् (12) श ष सर् (13) हल् (14) इन सूत्रों के आधार पर ही 42 प्रत्याहारों का निर्माण होता है। जैसे अण् एक प्रत्याहार है। इसमें अ इ उ वर्ण आते हैं। अक् प्रत्याहार के वर्ण–अ इ उ ऋ लृ। सूत्र के अन्तिम वर्ण की इत्संज्ञा होने के कारण लोप हो जाता है।

वर्णों का उच्चारण स्थान

स्वरवर्ण - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ए ऐ ओ औ अं अः।

व्यञ्जनवर्ण -

क	ख	ग	घ	ङ	-	कवर्ग **(कु)**
च	छ	ज	झ	ञ		चवर्ग **(चु)**
ट	ठ	ड	ढ़	ण	-	टवर्ग **(टु)**
त	थ	द	ध	न	-	तवर्ग **(तु)**
प	फ	ब	भ	म	-	पवर्ग **(पु)**
य	र	ल	व	श		
ष	स	ह				

संस्कृत वर्णों का विभाग

वर्णाः

स्वर		**व्यञ्जन**		
ह्रस्व	*दीर्घस्वर*	*स्पर्श व्यञ्जन*	*अन्तःस्थ व्यञ्जन*	*उष्म व्यंञ्जन*
अ इ उ	आ ई ऊ	क ख ग ध ङ	य	श

ह्रस्व	*दीर्घस्वर*	*स्पर्श व्यञ्जन*	*अन्तःस्थ व्यञ्जन*	*उष्म व्यञ्जन*
ऋ लृ	ॠ ए ऐ	च छ ज झ ञ	र	ष
	ओ औ	ट ढ ड ढ ण	ल	स
		त थ द ध न	व	ह
		प फ ब भ म		

ह्रस्व स्वर = 5, दीर्घस्वर = 8, स्पर्श व्यंञ्जन = 25, अन्तस्थ व्यञ्जन = 4;
उष्म व्यञ्जन = 4 योग = 46

अनुस्वार :- ·   विसर्ग – :

संयुक्त वर्ण

संयुक्त होते हुए भी कुछ वर्ण स्वतन्त्र की ही भाँति दिखते हैं।

क् + ष् = क्ष   त् + र् = त्र   ज् + ञ् = ज्ञ

स्वर वे वर्ण होते हैं जिनका उच्चारण करने के लिए किसी और वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती जैसे–अ आ इ इत्यादि। व्यञ्जन का उच्चारण स्वर के सहित होता है। यथा–

क् + अ = क   ख् + अ = ख

स्वर के तीन भेद है –

1. **ह्रस्व स्वर** – वे स्वर जिनके उच्चारण में कम से कम समय लगे। ये पाँच हैं- अ इ उ ऋ लृ।
2. **दीर्घस्वर** – वे स्वर जिनके उच्चारण में ह्रस्व की तुलना में दुगुना समय लगे। ये आठ हैं आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ औ।
3. **प्लुत स्वर** – वे स्वर जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर की तुलना में लगभग तिगुना समय लगे। इसे प्रकट करने के लिए स्वर के आगे 3का चिह्न लिख दिया जाता है जैसे आ 3, ई 3, ऊ 3 इत्यादि।

☞ *व्यञ्जनों के भेद* – व्यञ्जनों के उच्चारण में अन्तर की दृष्टि से तीन भेद किये गये हैं।

1. **स्पर्श**-स्पर्श वर्णो का उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के किसी न किसी भाग को स्पर्श करती है इसी कारण इसका नाम स्पर्श पड़ा इसकी संख्या 25 है। (क् ख् से .... म् तक)

2. **अन्तस्थ** – अन्तःस्थ का अर्थ है बीच में स्थित। ये ध्वनियां स्पर्शों तथा उष्म वर्णों के बीच में स्थित होता है अतः इन्हें अन्तःस्थ के नाम से पुकारा जाता है। इसकी संख्या 4 है।
3. **उष्म** –उष्म का अर्थ है गर्मी। इनका उच्चारण करते समय सांस मे कुछ गर्मी का अनुभव होता है अतः इन्हें उष्म कहा जाता है। इसकी संख्या 4 है।

☞ **वर्णों के उच्चारण स्थान** – सभी वर्णों के उच्चारण स्थान निश्चित है उसी स्थान विशेष से उच्चरित वर्ण ही शुद्ध उच्चारण की कुंजी है।

वर्णों के उच्चारण स्थान में मुख के आन्तरिक अवयवों की सहायता ली जाती है। मुख के जिस अवयव से जिस वर्ण का उच्चारण किया जाता है वही उसका उच्चारण स्थान कहलाता है –

1. **अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः** अ, आ, कवर्ग (क् ख् ग् घ् ङ्) ह् और विसर्ग (:) का मुख में उच्चारण स्थान कण्ठ है।
2. **इचुयशानां तालु :** इ ई चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) य् और श् का उच्चारण स्थान मुख में तालु है।
3. **ऋटुरषाणां मूर्धा** ऋ ॠ, टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) र् और ष् का उच्चारण स्थान मुख में मूर्धा है।
4. **लृतुलसानां दन्ताः** लृ, तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) ल् और स् का मुख में उच्चारण स्थान दन्त है।
5. **उपूपध्मानीयानामोष्ठौ** उ, ऊ, पवर्ग (प् फ् ब् भ् म्) और उपधमानीय (⌣प ⌣फ) का उच्चारण स्थान मुख में ओष्ठ है।
6. **ञमङणनानां नासिका च** ञ्, म्, ङ्, ण्, न का उच्चारण स्थान् पूर्व कथित स्थान के साथ-साथ नासिका भी होता है जैसे –

   ङ् = कण्ठ नासिका　　ञ = तालु नासिका

   ण् = मूर्धा नासिका　　न = दन्त नासिका

   म् = ओष्ठ नासिका

7. **एदैतोः कण्ठतालुः** ए, ऐ का उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है।
8. **ओदोतो : कण्ठोष्ठम्** ओ, औ का उच्चारण स्थान कण्ठ और ओष्ठ है।
9. **वकारस्य दन्तोष्ठम्** व् का उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ है।
10. **जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्** जिह्वामूलीय (⌣क⌣ ख) का उच्चारण स्थान मुख में जिह्वा का मूल है।
11. **नासिकानुस्वारस्य**–अनुस्वार का उच्चारण स्थान केवल नासिका है।

द्वितीय : अध्याय
वैदिक स्वर सङ्केत तथा वैदिक छन्द परिचय

स्वर

वैदिक स्वर सङ्केत

'स्वर' वैदिक भाषा की सर्वप्रमुख विशेषता है। मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण एवं सही अर्थज्ञान के लिए भी स्वर की उपादेयता है। पाणिनीय शिक्षा में स्वरों की महत्ता के विषय में स्पष्ट कहा गया है-

मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा। मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह ॥

स वाग्वज्रः यजमानं हिनस्ति। यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात् ॥

स्वरों की संख्या-स्वर मूलतः दो प्रकार के हैं (1) *उदात्त* (2) *अनुदात्त*। उदात्त स्वर किसी भी परिस्थिति में अपरिवर्तनीय ही रहता है परन्तु अनुदात्त स्वर उदात्त के बाद आने पर स्वरित में एवं स्वरित के बाद आने पर 'प्रचय' के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। अतः आपाततः स्वर को चार प्रकार का भी कहा जा सकता है। कुछ द्वि-उदात्त पदों को छोड़कर पद में उदात्त एवं स्वरित की संख्या एक-एक ही हो सकती है, जबकि अनुदात्त और प्रचय अनेक भी होते हैं। ये उदात्तादि स्वर अकारादि स्वर वर्णों के ही गुण है, व्यञ्जन तो अपने अङ्गीभूत स्वर-वर्ण के स्वर (Accent) से सस्वर होते हैं।

स्वराङ्कन पद्धति-ऋग्वेद संहिता में अनुदात्त स्वर को स्वरवर्ण के नीचे पड़ी रेखा (–) द्वारा एवं स्वरित स्वर को स्वरवर्ण के ऊपर खड़ी रेखा (।) द्वारा अङ्कित किया गया है। उदाहरणार्थ - 'वी॒र्ये॑र्ण' पद में 'वी' का ईकार स्वर अनुदात्त है तथा 'ण' का अकार स्वर स्वरित है; उदात्त एवं प्रचय दोनों ही अनङ्कित होते हैं। पद-पाठ में जब अनङ्कित स्वर के ठीक पूर्व अनुदाताङ्कित स्वर हो अथवा वह अनङ्कित स्वर किसी पद के आदि में अवस्थित हो तो ऐसा स्वर उदात्त होता है। इसी प्रकार एक ही पद में जिस अनङ्कित स्वर के पूर्व निश्चित रूप से स्वरिताङ्कित स्वर हो वह **प्रचय** कहलाता है। प्रचय स्वर लगातार एक से अधिक भी होते हैं। ऐसी स्थिति में केवल प्रथम प्रचय स्वर के पूर्व ही स्वरित की स्थिति होती है, शेष के पूर्व प्रचय ही होते हैं।

उदाहरणार्थ-'स॑मवर्तत' पद में 'स' का अकार स्वरित है एवं उसके बाद आने वाले चार अकार स्वर प्रचय है।

इनके अतिरिक्त ऋग्वेद संहिता में जब स्वतंत्र स्वरित के ठीक बाद कोई उदात्त स्वर आ जाय तो वह **'कम्प'** कहलाता है तथा उसको 1' या 3' चिह्न से अङ्कित करते हैं। स्वतंत्र स्वरित परं ह्रस्व स्वर होने पर 1' तथा दीर्घ स्वर होने पर 3' चिह्न लगा होता है। जब स्वरित स्वर ह्रस्व होता है तब वह अचिह्नित ही रहता है। जैसे- व्यर्थिनः = व्य 1' र्थिनः। तथा जब स्वरित स्वर दीर्घ होता है, तब वह अनुदात्त स्वर से चिह्नित होता है। ऋग्वेद प्रातिशाख्य पर उव्वट-भाष्य के अनुसार ह्रस्व स्वरित में आधी मात्रा उदात्त एवं आधी मात्रा अनुदात्त होती है। अर्थात् स्वरित स्वर के दो बराबर भागों में एक भाग उदात्त और अवशिष्ट एक भाग अनुदात्त होता है, अतः कम्प को ह्रस्वस्वर पर होने पर 1' से चिह्नित करते हैं। इसी प्रकार दीर्घस्वरित में प्रारम्भ की आधी मात्रा उदात्त तथा अवशिष्ट डेढ़ मात्रा अनुदात्त होती है। अर्थात् 4 बराबर भागों में 1 भाग उदात्त तथा 3 भाग अनुदात्त होता है। अतः कम्प दीर्घ स्वर पर होने पर उसे 3 से चिह्नित किया जाता है।

(1) यजुर्वेद की वाजसनेयि-संहिता में स्वराङ्कन पद्धति निम्नलिखित अपवादों को छोड़कर ऋग्वेद संहिता के समान ही है।

(i) अनुदात्त स्वर के ठीक बाद स्वतन्त्र स्वरित होने पर उसके (स्वरित के) नीचे (-) चिह्न पाया जाता है।

(ii) स्वतन्त्र स्वरित के ठीक बाद उदात्त स्वर आने पर उसके (स्वरित के) नीचे (W) चिह्न प्राप्त होता है। दोनों के उदाहरण क्रमशः यातु-धा न्योऽधराची; नस्तन्वा शन्तामवा ॥

(2) शतपथ ब्राह्मण की स्वराङ्कन पद्धति ऋ. सं. से पूर्णतः भिन्न है। यहाँ पर उदात्त के नीचे पड़ी रेखा मिलती है तथा अनुदात्त और स्वरित अचिह्नत होते है।

(3) तैत्तिरीय संहिता, उसके ब्राह्मण और आरण्यक स्वरांकन में ऋग्वेद संहिता से पूर्णतः समानता रखते हैं, परन्तु स्वतंत्र स्वरित के बाद उदात्त आने पर होने वाला 'कम्प' स्वर यहाँ नहीं प्राप्त होता है।

(4) अथर्ववेद संहिता की स्वराङ्कनपद्धति पूर्णतः ऋग्वेद संहिता की स्वराङ्कन पद्धति जैसी ही है। केवल स्वतंत्र स्वरित को (✓) चिह्न द्वारा प्रदर्शित किया गया है, जब इसके पश्चात् कोई अनुदात्त स्वर आता है। जैसे - दिवी ✓ व चक्षुराततमः हिरण्यपाणिसु क्रतुः कु पात् स्व ✓।

(5) सामवेद संहिता की स्वराङ्कन पद्धति ऋग्वेद संहिता की स्वरांकन पद्धति से पूर्णतः भिन्न है। इसमें स्वरों के ऊपर अङ्कों को निम्नलिखित रूप में दर्शाया गया है -

(i) उदात्त - इसे 1 संख्या द्वारा प्रदर्शित करते हैं, जैसे- य³जा¹य²जा में जा¹

(ii) अनुदात्त - इसे 3 संख्या द्वारा प्रदर्शित करते हैं, जैसे- य³जा¹य²जा में य³

(iii) स्वरित - इसे 2 संख्या द्वारा प्रदर्शित करते है, जैसे- य³जा¹य²जा में य²
(iv) प्रचय - अचिह्नित, जैसे- (जा)।
ऊपर दिये गये सामान्य नियमों के कतिपय अपवाद नीचे दिये जा रहे हैं-
(i) जब उदात्त के ठीक बाद कोई अनुदात्त स्वर हो तो उदात्त को '2' से अंकित किया जाता है।
(ii) जब एक या अनेक उदात्त स्वर पादान्त में आते हैं, तब प्रथम उदात्त '2' से अंकित होता है, शेष अचिह्नित ही रहते हैं।
(iii) यदि किसी पद में लगातार दो उदात्त स्वर हो तथा उसके ठीक बाद में एक अनुदात्त स्वर हो तो प्रथम उदात्त को '²³' से अङ्कित करते हैं तथा द्वितीय उदात्त को अचिह्नित ही छोड़ देते हैं, उदाहरणार्थ- ²³त्वमित्सप्रथा में (²³त्व)।
(iv) जब एक उदात्त स्वर के बाद दूसरा उदात्त स्वर आता है तब प्रथम उदात्त को '1र) से प्रदर्शित करते हैं तथा द्वितीय उदात्त को अनङ्कित छोड़ देते हैं तथा इसके बाद आने वाले स्वरित को '2र) से अङ्कित करते हैं। जैसे-मित्रं न श²र ᳲ शिषम्।
(v) जिस स्वतन्त्र स्वरित के बाद उदात्त न हो, उसे '2र' से अंकित किया जाता है तथा स्वतन्त्र स्वरित के पूर्वस्थित अनुदात्त '3क' से अंकित होता है। जैसे-अभ्येति रैभम्।
(vi) जिस स्वतन्त्र स्वरित के बाद उदात्त स्वर आता है उसे '2' से अङ्कित करते हैं, तथा वह प्लुत रूप मे उच्चरित होता है, जैसे- ³²दूत्या ¹²चरन्।
(vii) जब किसी पद में दो उदात्त स्वरों के मध्य स्वतन्त्र स्वरित आता है तब उसे अनङ्कित ही छोड़ देते हैं। जैसे-विद्धी त्वा3 स्य (त्वा3)।
(viii) जब दो या दो से अधिक अनुदात्त स्वर लगातार आवें तथा उनके बाद एक उदात्त स्वर आवे तो प्रथम अनुदात्त को '3' अङ्कित करते हैं एवं शेष अनुदात्तों को अचिह्नित छोड़ देते हैं। जनिताग्ने (³जनिता)।

वैदिक एवं छन्द परिचय

पणिनीय शिक्षा में छन्द को वेद पुरुष का पादस्थानीय कहा गया है। जिस प्रकार व्यक्ति की गति पैरों से होती है और उनके बिना वह पंगु होता है इसी प्रकार वेदों को गतिशीलता छन्दों के रूप में है। इसलिए वेदों को 'छन्दस्' भी कहा जाता है। वैसे तो वेदों में अनेक छन्दों का प्रयोग किया गया किन्तु निम्नलिखित 7 (सात) छन्द प्रमुख हैं जिन्हें 'सप्त छन्दांसि' नाम से भी निर्दिष्ट किया गया है। इनमें छन्दों की वर्ण संख्या क्रमशः 4-4 बढ़ती जाती है:- (1) गायत्री (2) उष्णिक् (3) अनुष्टुप् (4) बृहती (5) पंक्ति (6) त्रिष्टुप् (7) जगती।

इस प्रकार गायत्री में 24, उष्णिक् में 28, अनुष्टुप् में 32, बृहती में 36, पंक्ति में 40, त्रिष्टुप में 44 तथा जगती में 48 वर्ण होते हैं।

तृतीय : अध्याय

पद्य उच्चारण, काव्य पाठ तथा लौकिक छन्द परिचय

छन्द-काव्य में सङ्गीतात्मकता तथा लयबद्धता लाने के लिए शब्दों की जिस व्यवस्था तथा परिमाप का प्रयोग किया जाता है उसे छन्द् कहते हैं। इसके पूर्व इससे सम्बन्धित कुछ अन्य परिभाषाओं को समझना आवश्यक है।

☞ ***अक्षर*** -शब्द का वह भाग, जो एक ही बार में उच्चारित किया जा सके 'अक्षर' कहलाता है। अर्थात् एक या एक से अधिक व्यञ्जन के सहित या रहित एक स्वरवर्ण अक्षर है। जैसे- 'इन्द्र' में दो अक्षर हैं। 'इ' और 'न्द्र'। अंग्रेजी में इसके लिये Syllable शब्द व्यवहृत होता है।

☞ ***मात्रा***-समय का वह भाग, जो एक ह्रस्व स्वर के उच्चारण में लगता है, मात्रा है।

☞ ***वृत्त***-ये तीन प्रकार के होते हैं–

1. *समवृत्त*-इसमें सभी चरणों की अक्षर संख्या समान होती है।

2. *अर्द्धसमवृत्त*–इसमें प्रथम चरणकी अक्षरसंख्या तृतीयचरण के समान और द्वितीय चरण की अक्षरसंख्या चतुर्थ चरण के समान होती है। जैसे पुष्पिताग्रा, सुन्दरी इत्यादि।

3. *विषमवृत्त*–इसमें अक्षरसंख्या की दृष्टि से चारों चरण एक दूसरे से भिन्न (असमान) होते हैं। जैसे-उद्गता इत्यादि।

इन वृत्तों के निर्धारक 'अक्षर' दो प्रकार के होते हैं –

1. *लघु* - वह अक्षर जिसका स्वर ह्रस्व होता है। जैसे 'राम' में 'म'।

2. *गुरु* - वह अक्षर जिसका स्वर दीर्घ होता है। जैसे 'राम' में 'रा'।

लेकिन कुछ दशाओं में ह्रस्व स्वर भी गुरु हो जाता है जैसे-1. अनुस्वारयुक्त, 2. विसर्गयुक्त, 3. संयोगपूर्वक, 4. पाद के अन्त में स्थित ह्रस्व-स्वर गुरु माना जाता है।

अक्षरों में मात्राओं की गणना में सुविधा के लिये 'गण' की कल्पना की गई है। वृत्त छन्दों में गण तीन-तीन अक्षरों के समूह से और जाति-छन्दों में चार-चार मात्राओं के समूह से बनते हैं।

वृत्तों में प्रयुक्त गण आठ प्रकार के हैं -

यगण	मगण	तगण	रगण	भगण	नगण	सगण
।ऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽ।	ऽ।ऽ	ऽ।।	।।।	।।ऽ

इनके स्वरूपज्ञान के लिए निम्नलिखित सूत्र प्रचलित है :-

☞ **यमाताराजभानसलगाः।**

यति - किसी पद्य का उच्चारण करते समय जहाँ साँस लेने के लिए क्षण भर रुकना पड़ता है, वहाँ पद्य की 'यति' होती है इसे विच्छेद, विराम, विरति आदि भी कहा जाता है।

1. **समवृत्त**

श्लोक (अनुष्टप्) (8 अक्षर)

। ऽ ऽ   । ऽ ।

श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं, सर्वत्र लघुपञ्चमम्।

। ऽ ऽ   । ऽ ।

द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घमन्ययोः ।। (श्रुतबोध)

सामान्यतया इस छन्द के प्रत्येक चरण में छठा अक्षर गुरु और पाँचवा अक्षर लघु होता है। सातवाँ अक्षर दूसरे और चौथे चरण में लघु तथा पहले और तीसरे चरण में गुरु होता है। उदाहरण -

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ।।

2. **इन्द्रवज्रा** - (5 + 6) अक्षर

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः ।

ऽ ऽ ।   ऽ । ।   । ऽ ।   ऽ   ऽ

त   त   ज   ग   ग

अर्थात्-जिस छन्द के सभी चरणों में क्रमशः दो तगण, जगण और दो गुरु होते हैं, उसे इन्द्रवज्रा कहते हैं। इसमें 5 और 6 पर यति होती है। उदाहरण-

गोष्ठे गिरिं सव्यकरेण धृत्वा
रुष्टेन्द्रवज्राहतिमुक्तवृष्टौ
यो गोकुलं गोपकुलं च सुस्थं
चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणिः ।।

3. उपेन्द्रवज्रा – (5 + 6) अक्षर

उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ ।

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

ज त ज ग ग

अथवा - **उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा।**

अर्थात् - उपेन्द्रवज्रा में जगण, तगण, जगण और दो गुरु होते हैं अथवा यदि इन्द्रवज्रा में प्रत्येक चरण का प्रथमाक्षर लघु हो तो उसे उपेन्द्रवज्रा कहते हैं। उदाहरण-

उपेन्द्र ! वज्रादिमणिच्छटाभि विभूषणानां छुरितं वपुस्ते ।

स्मरामि गोपीभिरुपास्यमानम् सुरद्रूमूले मणिमण्डपस्थम् ।।

4. रथोद्धता– (4 + 7) अक्षर या – (3 + 8) अक्षर

रात्परैर्नरलगै रतोद्धता ।

ऽ।ऽ ।।। ऽ।ऽ । ऽ

र न र ल ग

अर्थात् - जिस छन्द के प्रत्येक चरण में र, न, र, लघु और गुरु हों, उसे रथोद्धता कहते हैं। उदाहरण -

राधिका दधिविलोडनस्थिता कृष्णवेणुनिनदैरथोद्धता ।

यामुनं तटनिकुञ्जमलसा सा जगाम सलिलाहृतिच्छलात् ।।

5. वंशस्थ (वंशस्थवृत्त, वंशस्तनित)– (5 + 7) अक्षर

जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ

ज त ज र

अर्थात्- वंशस्थ के प्रत्येक पाद में ज, त, ज, र रहते हैं।

उदाहरण -

श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जग- ज्जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि ।

वसन् ददर्शावतरन्तमम्बरा- द्धिरण्यगर्भाङ्गभुवं मुनिः हरिः ।।

6. तोटक– (4 + 4 + 4) अक्षर

वद तोटकमब्धिसकारयुतम्

।।S ।।S ।।S ।।S

स स स स

अर्थात् - तोटक छन्द के प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं। चार-चार अक्षरों पर विराम होता है। उदाहरण -

यमुनातटमच्युतकेलिकला - लसदङ्घ्रिसरोरुहसङ्गरुचिम् ।
मुदितोऽट कलेरपनेतुमघं यदि चेष्छसि जन्म निजं सफलम् ।।

7. भुजङ्गप्रयात - (6 + 6) अक्षर

भुजङ्गप्रयातं चतुर्भियकारैः ।

।SS ।SS ।SS ।SS

य य य य

अर्थात् - भुजङ्गप्रयात के प्रथम चरण में चार यगण होते हैं। छः छः अक्षरों पर विराम होता है। उदाहरण -

धनैर्निष्कुलीनाः कुलीना भवन्ति धनैरापदं मानवा निस्तरन्ति।
धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम् ।।

8. द्रुतविलम्बित - (4 + 8 अथवा 4 + 4 + 4) अक्षर

द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ

।।। S।। S।। S।S

न भ भ र

द्रुतविलम्बित छन्द के प्रत्येक चरण में नगण, दो भगण और रगण होते हैं। उदाहरण -

नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम् ।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत् स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः।।

9. वसन्ततिलका– (8+ 6) अक्षर

(वसन्ततिलका, उद्धर्षिणी, सिंहोन्नता)

उक्ता वसंततिलका तभजा जगौ गः ।

SSI	SII	ISI	ISI	S	S
त	भ	ज	ज	ग	ग

अर्थात् वसन्ततिलका के प्रत्येक चरण में तगण, भगण, दो जगण और दो गुरु होते हैं। उदाहरण –

वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात् पीताम्बरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात् ।
पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविन्दनेत्रात् कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ।।

10. मालिनी (8 + 7) अक्षर

ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ।

III	III	SSS	ISS	ISS
न	न	म	य	य

अर्थात् मालिनी के प्रत्येक चरण में दो नगण, मगण और दो यगण होते हैं और आठवें तथा फिर सातवें अक्षर के बाद यति होती है।

असितगिरिसमंस्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ।।

11. शिखरिणी (6 + 11) अक्षर

रसैरुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी ।

ISS	SSS	III	ISS	III	I	S
य	म	न	स	भ	ल	ग

अर्थात् – शिखरिणी क प्रत्येक चरण में य, म, न, स, भ, लघु और गुरु होते हैं। विराम 6 और फिर 11 अक्षरों के बाद होता है।

उदाहरण – **पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः**
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।

12. मन्दाक्रान्ता - (4 + 6 + 7) अक्षर

मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मोभनौतौयुग्मम्।

SSS	SII	III	SSI	SSI	S	S
म	भ	न	त	त	ग	ग

अर्थात्-मन्दाक्रान्ता छन्द के प्रत्येक चरण में म, भ, न, त, त, गुरु और गुरु होते हैं। विराम 4, फिर 6 और 7 अक्षरों के बाद होता है। उदाहरण -

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरणं सर्वलोकैकनाथम् ।।

13. शार्दूलविक्रीडित - (12 + 7) अक्षर

सूर्याश्वैमसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।

अथवा

सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शादूर्लविक्रीडितम् ।

SSS	IIS	ISI	IIS	SSI	SSI	S
म	स	ज	स	त	त	ग

अर्थात् - शार्दूलविक्रीडित के प्रत्येक चरण में म, स, ज, स, त, त, गुरु होते हैं। बारहवें और फिर सातवें अक्षर पर यति होती है।

उदाहरण :-

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणा वरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।

14. स्रग्धरा – (7 + 7 + 7) अक्षर

म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् ।

SSS SIS SII III ISS ISS ISS

म र भ न य य य

अर्थात् –स्रग्धरा के प्रत्येक चरण में म, र, भ, न, य, य और य होते हैं और सात–सात अक्षरों पर यति होती है।

उदाहरण –

ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः
पश्चार्द्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम् ।
दर्भैरर्द्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा
पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति ।।

15. सुन्दरी *(वैतालीय या वियोगिनी)*

अयुजोर्यदि सौ जगौ युजोः सभरा ल्गौ यदि सुन्दरी तदा।

IIS IIS ISI S IIS SII SIS I S

स स ज गु स भ र ल गु

अर्थात्–यदि प्रथम और तृतीय चरण में दो सगण, एक जगण और एक गुरु हों एवं द्वितीय और चतुर्थ चरण में सगण, भगण, रगण, एक लघु और एक गुरु हों, तो 'सुन्दरी' छन्द होता है। उदाहरण –

यदवोचत वीक्ष्य मानिनी परितः स्नेहमयेन चक्षुषा ।
अपि वागाधिपस्य दुर्वचं, वचनं तद्विदधीत विस्मयम् ।।

16. आर्या

लक्ष्मैतत्सप्तगणा, गोपेता भवति नेह विषमे जः ।
षष्ठो जश्च नलघु वा, प्रथमेऽर्धे नियतमार्यायाः ।।
षष्ठे द्वितीयलात् परके न्ले मुखलाश्च सयतिपदनियमः ।
चरमेऽर्धे पञ्चमके तस्मादिह भवति षष्ठो लः ।।

आर्या छन्द में प्रथम अर्धभाग में सात गण (चतुर्मात्रात्मक) और एक गुरु होते हैं, लेकिन विषम गणों (प्रथम, तृतीय पञ्चम और सप्तम) में जगण नही होता है और षष्ठ गण जगण होता है अथवा नगण और एक लघु। द्वितीय अर्धभाग में षष्ठ गण केवल लघुवर्णात्मक होता है।

(इस प्रकार आर्या के प्रथमार्थ में 7 × 4 + 2 = 30 मात्रायें और द्वितीयार्थ में 5 × 4 + 1 + 4 + 2= 27 मात्रायें होती हैं।)

षष्ठ गण में (चारों लघुवर्ण होने पर) दूसरे लघु से पूर्व यति होती है और सप्तम गण में चारों (लघुवर्ण होने पर) प्रथम लघु के पूर्व (अर्थात् षष्ठ गण के अन्त में) यति होती है।

उदाहरण –

1. जगणषष्ठा आर्या

अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू
कुसुमिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्।।

2. नलघुषष्ठा आर्या

सुभगसलिलावगाहाः पाटलसंसर्गसुरभिवनवाताः।
प्रच्छायसुलभनिद्रा दिवसाः परिणामरमणीयाः।

श्रुतबोध इत्यादि कुछ पुस्तकों में आर्या छन्द का एक अन्य लक्षण दिया गया है, जो उपर्युक्त लक्षण की अपेक्षा अधिक सुबोध है –

यस्याः पादे प्रथमे, द्वादश मात्रस्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये, चतुर्थके पञ्चदश सार्या।।

अर्थात्-जिस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह-बारह द्वितीय चरण में अठारह और चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्रायें हैं। यह लक्षण उपर्युक्त दोनों उदाहरणों में पूर्ण रूप से घटित होता है।

☞ ***आर्या नौ प्रकार की बतायी गयी है –***

1. पत्थ्या, 2. विपुला, 3. चपला, 4. मुखचपला,
5. जघनचपला, 6. गीति, 7. उपगीति, 8. उद्गीति,
9. आर्या गीति।

चतुर्थ : अध्याय

रस तथा अलङ्कार

रस - **"विभावानुभावव्यभिचारिभावसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।"** - विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारिभाव के संयोग से 'रस' की निष्पत्ति होती है। विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव से अभिव्यक्त सहृदयों के हृदय में विद्यमान 'रति' आदि स्थायी भाव 'रस' के स्वरूप में परिणत होता है। यह विशिष्ट अनुभूति है।

"विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणा तथा।

रसतामेति रत्यादिः स्थायिभावः सचेतसाम्।।" साहित्यदर्पण ।।3।1।।

स्थायि भाव - मानव-हृदय में विद्यमान मानस-संस्कार, या वासना को ही 'भाव' कहते है; जो प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में चित्तवृत्ति के रूप में सुषुप्त्यवस्था में विद्यमान रहते हैं और अनुकूल अवसर मिलने पर जागृत हो उठते हैं। ये संस्कारस्वरूप 'भाव' मानव-हृदय में स्थायी रूप में विद्यमान रहने के कारण ही 'स्थायिभाव' कहे जाते हैं।

साहित्यदर्पणकार ने मानव-मन के असंख्य-संस्कारों (भावों) को कुल नौ वर्गों में वर्गीकृत किया है-

"रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा।

जुगुप्सा विस्मयश्चेत्थमष्टौ प्रोक्ताः शमोऽपि च ।।" *(साहित्यदर्पण ।।3। 175।।)*

अर्थात्, - रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय और निर्वेद या राम नामक कुल नौ 'स्थायिभाव' माने गये हैं। इनके भेद से ही रस के 9 भेद माने गये हैं।

रस भेद

"श्रृंगार-हास्य-करुण-रौद्र-वीर-भयानकाः।

बीभत्सोऽद्भुत इत्यष्टौ रसाः शान्तस्तथा मतः।।" *(साहित्यदर्पण ।।3।182।।)*

अर्थात्, श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत तथा शान्त के भेद से क्रमशः कुल नौ रस पाये जाते हैं।

रस की निष्पत्ति में आधारभूत उपादान कारण के रूप में नायक-नायिका, शुत्र, सिंह आदि तथा इसके उद्दीपन आदि में कारक परिवेश परिवेश, चेष्टाएँ आदि विभाव (क्रमशः आलम्बन विभाव तथा उद्दीपन विभाव) कहे जाते हैं।

रस निष्पति के लक्षण के रूप में तात्कालिक कार्य के रूप में प्रकट प्रभाव शारीरिक लक्षण जैसे-रोमाञ्च, हँसी, रोदन, आवेग आदि अनुभाव कहे जाते हैं।

रस निष्पत्ति के कारण अनुवर्ती/सहायक प्रतिक्रियात्मक चेष्टाऐं जैसे-लज्जा, चपलता, विषाद गर्व आदि संचारीभाव कहे जाते हैं।

1. ***श्रृङ्गार रस*** – इसका स्थायिभाव रति है इसके लक्षण है : **"रतिर्मनोऽनुकूलेऽथ मनसः प्रवणायितम्।"** अर्थात्, प्रिय वस्तु में मन के प्रेमपूर्ण उन्मुखीभाव को 'रति' कहते है। उदाहरण :-

विवृण्वती शैलसुताऽपि भावमङ्गैः स्फुरद्बालकदम्बकल्पैः।
साचीकृता चारुतरेण तस्थौ मुखेन पर्य्यस्तविलोचनेन ।। *(कु. सं. 3/68)*

यहाँ पर भगवान् शिव आलम्बन विभाव है, पूर्व वर्णित वसन्तसुषुमा उद्दीपन विभाव है, रोमाञ्चादि अनुभाव है, लज्जा व्यभिचारी भाव है। इन सबों से अभिव्यक्त पार्वती का अनुराग श्रृंगाररस के रूप में परिणत हो जाता है।

2. ***हास्य रस*** – इसका स्थायिभाव हास है इसके लक्षण है : **"वागादिवैकृतैश्चेतो विकासो हास इष्यते।"** अर्थात् वाणी आदि के विकारों को देखकर चित्त का आह्लादित होना ही 'हास' है। उदाहरण :-

भिक्षो ! मांसनिषेवणं प्रकुरुषे ? किं मद्यं विना ?
मद्यञ्चापि तव प्रियम् ? प्रियमहो ! वाराङ्गनाभिः सह।
तासामर्थरुचिः कुतस्तव धनम् ? द्यूतेन चौर्येण वा,
चौर्यद्यूतपरिग्रहोऽपि भवतः ? नष्टस्य काऽन्या गतिः ।। *(सा. द. 6/257)*

यहाँ विनोदी भिक्षु विभाव है। मांसभक्षण अनुभाव है। (उत्तरोत्तर धर्मविरुद्ध निकृष्ट वस्तु की स्वीकारोक्ति रूपचाञ्चलय व्यभिचारीभााव है) इन सभी से पोषित होकर हास स्थायी हास्यरस बन जाता है।

3. ***करुण रस*** – इसका स्थायिभाव शोक है इसके लक्षण है : **"इष्टनाशादिभिश्चेतो वैक्लव्यं शोकशब्दभाक्।"** अर्थात्, किसी प्रिय वस्तु के विनाश के कारण चित्त की व्याकुलता को ही 'शोक' कहते है। उदाहरण :-

अदृष्टदुःखो धर्मात्मा सर्वभूतप्रियंवदः।
मयि जातो दशरथात् कथमुञ्छेन वर्त्तयेत् ?।।
यस्य भृत्याश्च दासाश्च स्वादून्यन्नानि भुञ्जते।
कथं स भोक्ष्यते रामो वने मूलफलान्ययम् ?।। *(वाल्मीकीयरामायणे 24/2,3)*

यहाँ वनवासी राम आलम्बन विभाव है तथा प्रिय बोलना उद्दीपन विभाव है। विलापयुक्त वचन अनुभाव है। ग्लानि व्यभिचारीभाव है। इन सभी से व्यक्त होकर कौशल्या का शोक करुण रस का रूप धारण कर लेता है।

4. ***रौद्र रस*** – इसका स्थायिभाव क्रोध है इसके लक्षण है : **"प्रतिकूलेषु तैक्ष्ण्यस्यावबोधः क्रोध इष्यते।"** अर्थात्, शत्रुओं के विषय में तीव्रता के

उद्बोध का ही दूसरा नाम 'क्रोध' है। उदाहरण :-

कृतमनुमतं दृष्टं वां यैरिदं गुरुपातकं
मनुजपशुभिर्निर्मर्य्यादैर्भवद्भिरुदायुधैः।
नरकरिपुणा सार्द्धं तेषां सभीमकिरीटिना-
मयमहमसृङ्मेदोमांसैः करोमि दिशां बलिम् ।। *(वे. सं. 3/24)*

यहाँ पाण्डव आलम्बन विभाव है, पितृवध उद्दीपन विभाव है, गर्व तथा अमर्ष व्यभिचारी भाव है। इनसे परिपुष्ट होकर अश्वत्थामा का क्रोध सहृदयों के लिए रौद्र रस का आलम्बन कराता है।

5. ***वीर रस*** – इसका स्थायिभाव उत्साह है इसके लक्षण है : **"कार्यारम्भेशु संरम्भः स्थेयानुत्साह उच्यते।"** अर्थात्, कार्य करने में स्थिरता तथा उत्कट आवेश (संरम्भ) को ही उत्साह कहते है। उदाहरण :-

क्षुद्राः ! सन्त्रासमेते विजहत हरयः ! क्षुण्णशक्रेभकुम्भा
युष्मद्देहेषु लज्जां दधति परममी सायका निष्पतन्तः।
सौमित्रे ! तिष्ठ, पात्रं त्वमसि न हि रुषां, नन्वहं मेघनादः
किञ्चिद् भ्रूभङ्गलीलानियमितजलधिं राममन्वेषयामि।।*(हनुमन्नाटके 12/2)*

यहाँ राम आलम्बन विभाव है, सेतुबन्धन उद्दीपन विभाव है, बलहीनों पर प्रहार न करना और रामान्वेषण अनुभाव है, इन्द्र गजविदारणादि स्मृति व्यभिचारी भाव है। इससे अभिव्यक्त मेघनाद का उत्साह सहृदयों के हृदय में वीर रस का आस्वादन कराता है।

6. ***भयानक रस***-इसका स्थायिभाव भय है इसके लक्षण है : **"रौद्रशक्त्या तु जनितं चित्तवैक्लव्यदं भयम्।"** अर्थात्, किसी रौद्र (सिंहादि) की शक्ति से उत्पन्न, चित्त को व्याकुल कर देने वाला भाव 'भय' कहलाता है। उदाहरण :-

नष्टं वर्षवरैर्मनुष्यगणनाऽभावादपास्य त्रपा-
मन्तः कञ्चुकिकञ्चुकस्य विशति त्रासादयं वामनः।
पर्य्यन्ताऽऽश्रयिभिर्निजस्य सदृशं नाम्नः किरातैः कृतं
कुब्जा नीचतयैव यान्ति शनकैरात्मेक्षणाऽऽशङ्किनः।। *(रत्नावली 2/3)*

यहाँ बन्दर बना विदूषक आलम्बन विभाव है। उसकी विभिन्न चेष्टायें उद्दीपन विभाव है। भय से वर्षवरों का पलायन अनुभाव है। त्रास आदि व्यभिचारी भाव है। इससे पुष्ट होकर भयरूपी स्थायी भाव सहृदय ग्राही भयानक रस बन जाता है।

7. ***वीभत्स रस*** – इसका स्थायिभाव जुगुप्सा है इसके लक्षण है : **"दोषेक्षणादिभिर्गर्हा जुगुप्सा विषयोद्भवा।"** अर्थात्, दोषदर्शनादि के कारण किसी वस्तु में उत्पंन्न घृणा को 'जुगुप्सा' कहते हैं। उदाहरण :-

उत्कृत्योत्कृत्य कृतिं प्रथममथ पृथूच्छोथभूयांसि मांसा-
न्यंसस्फिक्पृष्ठपिण्डावद्यवयसुलभान्युग्रपूतीनि जग्धवा।
आर्तः पर्य्यस्तनेत्रः प्रकटितदशनः प्रेतरङ्कः करङ्का-
दङ्कस्थादस्थिसंस्थं स्थपुटगतमपि क्रव्यमव्यग्रमत्ति ।।*(मालतीमाधवे 5।16)*

यहाँ पर प्रेत आलम्बन-विभाव है, दुर्गन्ध उद्दीपन है। चर्म का उधेड़ना अनुभाव है और हर्ष सञ्चारीभाव है। इनसे पुष्ट होकर जुगुप्सा रूपी स्थायी भाव वीभत्स रस बन जाता है।

8. ***अद्‌भुत रस***-इसका स्थायिभाव विस्मय है इसके लक्षण है : **"विविधेषु पदार्थेषु लोकसीमातिवर्तिषु। विस्फारश्चेतसो यस्तु स विस्मय उदाहृतः।।"** अर्थात्, लोकसीमातिक्रान्त, अलौकिक सामर्थ्य से युक्त किसी वस्तु के दर्शन इत्यादि से उत्पन्न चित्त के विस्तार को 'विस्मय' कहते हैं। उदाहरण :-

मानुषीभ्यः कथं नु स्यादस्यः रूपस्य सम्भवः।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात् ।। *(अभि. शा. 1।25)*

इस प्रकार के लोकोत्तर रूप वाली कन्या की उत्पत्ति मानवी स्त्री से सम्भव नहीं है, क्योंकि पृथ्वी तल से चन्द्रमा का उदय नहीं होता।

9. ***शान्त रस***-इसका स्थायिभाव निर्वेद (शम) है इसके लक्षण है: **"शमो निरीहावस्थायां स्वात्मविश्रामजं सुखम्।"** अर्थात्, निःस्पृहता की अवस्था में, अथवा- सभी प्रकार की इच्छाओं के शान्त हो जाने पर आत्मा के विश्राम से उत्पन्न सुख का ही अपर नाम 'शम' या 'निर्वेद' है। उदाहरण :-

अहो वा हारे वा कुसुमशयने वा दृषदि वा
मणौ वा लोष्ठे वा बलवति रिपौ वा सुहृदि वा।
तृणे वा स्त्रैणे वा मम समदृशौ यान्तु दिवसाः
कचित् पुण्येऽरण्ये शिव ! शिव ! शिवेति प्रलपतः ।। *(वैराग्यशतके 8)*

यहाँ पर किसी विरक्त पुरुष ने अपनी स्थिति का चित्रण किया है। वक्ता का निर्वेद काव्य के चमत्कार से सहृदयों के द्वारा शान्त रस के रूप में आस्वादित होता है। सर्प आदि आलम्बन विभाव, पुण्याश्रम उद्दीपन विभाव, तुच्छत्व दृष्टि अनुभाव तथा रोमाञ्चादि व्यभिचारी भाव है। इनसे परिपुष्ट निर्वेदरूप स्थायी भाव शान्त रस की प्राप्त अनुभूति कराता है। कुछ लोग चमत्कार पूर्ण होने के कारण वत्सल नामक दशवाँ रस भी मानते हैं।

अलङ्कार

शब्द एवं अर्थ के विशेष प्रयोग द्वारा कवि जिस उक्ति वैशिष्ट्य को अपनी काव्य कुशलता के माध्यम से रचता है ऐसा प्रयोग काव्य का आभूषण या अलङ्कार कहा जाता है-

शब्दार्थयोः प्रसिद्ध्या वा कवेः प्रौढिवशेन वा।
हारादिवदलंकारसन्निवेशो मनोहरः।।
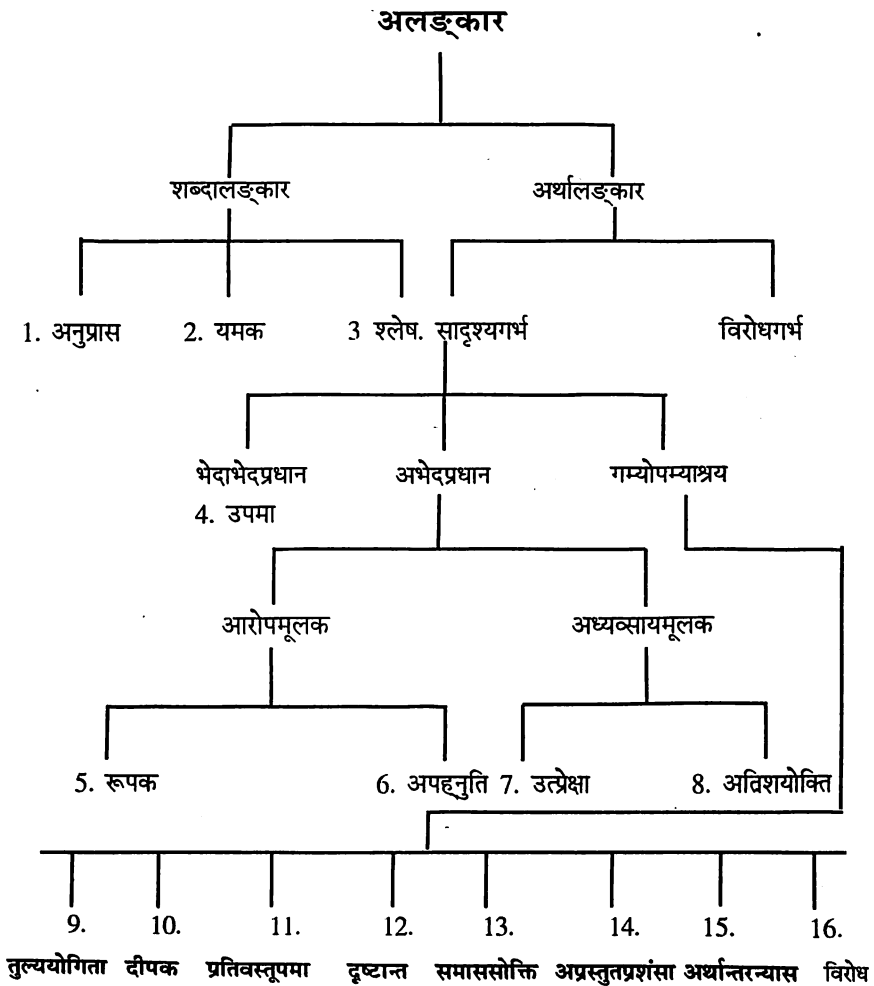
अलङ्कार के मुख्यतः दो भेद हैं :-

अनुप्रास

यह एक शब्दालङ्कार है। इसका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है- "रस, भाव आदि के अनुसार (अनुरूप) (वर्णों का) प्रकृष्ट रूप से न्यास"। इसका लक्षण इस प्रकार है-**"अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।"**

अर्थात् स्वरों में विषमता रहने पर भी शब्दों का साम्य अनुप्रास कहलाता है।

अनुप्रास के पांच भेद हैं - 1. छेक (अनेकस्य सकृत), 2. वृत्ति (एकस्यापि असकृत्), 3. श्रुति, 4. अन्त्य और 5. लाट (शाब्द)। यहाँ वृत्त्यनुप्रास का एक उदाहरण दिया जा रहा है -

उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्याधूतचूतान्कुर-
क्रीडत्कोकिलकाकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः।
नीयन्ते पथिकैः कथं कथमपि ध्यानावधानक्षण-
प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमी वासराः।।

यहां 'रसोल्लासैरमी' में र-स का साम्य है। दूसरे चरण में क-ल की अनेक बार आवृत्ति हुई है। अन्य चरणों में भी शब्दसाम्य स्फुट रूप से द्रष्टव्य है। नीचे एक दूसरा उदाहरण दिया जा रहा है, जिसमें छेकानुप्रास और वृत्त्यनुप्रास दोनों ही है।

निवर्त्य सोऽनुव्रजतः कृतानतीनतीन्द्रियज्ञाननिधिर्नभःसदः ।
समासदत्सवितादैत्यसम्पदः पदं महेन्द्रालयचारु चक्रिणः ।।

यहाँ 'नतीनती' और 'पदः पदम्' में व्यञ्जनद्वय का सकृत्साम्य है। अतः छेकानुप्रास है। शेष अंश में वृत्त्यनुप्रास है। अनुप्रास अलङ्कार में मुख्य रूप से व्यञ्जनसमुदाय की सकृत्त या असकृत् आवृत्ति ही महत्वपूर्ण है।

2. यमक

सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः ।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते ।।

अर्थात् यदि अर्थ हो तो भिन्न अर्थवाले स्वर-व्यञ्जन समुदाय की उसी क्रम से आवृत्ति को यमक कहते हैं। समानार्थक शब्दों की आवृत्ति से यमक अलङ्कार नहीं होता । इस प्रकार यमक के उदाहरण में -

(1) कहीं दोनों (आवृत्त समुदाय) सार्थक होते हैं,
(2) कहीं दोनों निरर्थक और

(3) कहीं एक सार्थक और दूसरा निरर्थक होता है। आवृत्ति 'उसी क्रम से' होनी चाहिए। उदाहरण–

नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपराग-परागतपङ्कजम्।

मृदुल-तान्त-लतान्तमलोकयत्स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः।।

इस श्लोक में आवृत्त स्वर-व्यञ्जन समुदाय 'पलाश-पलाश' और 'सुरभि-सुरभि' सार्थक है, 'लतान्त-लतान्त' में पहला निरर्थक (क्योंकि पहले 'लतान्त' का ल' 'मृदुल' शब्द से गृहीत है। और दूसरा सार्थक है, और 'पराग-पराग' में दूसरा 'पराग' निरर्थक (क्योंकि इसमें अगले 'गत' शब्द का 'ग' गृहीत है) और पहला सार्थक हैं। इस श्लोक के चारों चरणों में यमक अलङ्कार है।

3. श्लेष

श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।

अर्थात् श्लिष्ट पदों से अनेक (एकाधिक) अर्थ का अभिधान होने पर श्लेषालङ्कार होता है।

यह वर्ण, प्रत्यय, लिङ्ग, प्रकृति, पद, विभक्ति, वचन और भाषा के श्लिष्ट होने से आठ प्रकार का होता है। नीचे वर्णश्लेष और पदश्लेष के क्रमशः उदाहरण दिये जा रहे हैं -

प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता।

अवलम्बनाय दिनभर्तृरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि ।।

अर्थ - विधि (दैव) या बिधु (चन्द्रमा) के प्रतिकूल होने पर सब साधन विफल हो जाते हैं। गिरने (अस्त होने) के समय सूर्य के हजार कर (किरण या हाथ) भी उसे सहारा न दे सके।

यहां 'विधौ' पद के 'औ' में श्लेष है, क्योंकि 'विधि' और 'विधु' दोनों के सप्तमी-एकवचन में 'विधौ' रूप बनता है।

पृथुकार्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।

विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्।।

अर्थ-(कोई भिक्षुक किसी राजा से कहता है -) हे देव ! इस समय आपका और मेरा घर एक समान हो रहा है। आपके घर में पृथु (बड़े बड़े) कार्तस्वर (सोने के) पात्र बर्तन है और मेरा घर पृथुक (बालबच्चों) के आर्तस्वर (करुण क्रन्दन) का पात्र (स्थान) है। आपक घर में सभी परिजन भूषित (भूषणों से सुजज्जित) है और मेरे घर में सब भू + उषित भूमि पर पड़े हुए हैं। आपका घर बिलसत् (शोभमान) करेणुओं (हाथियों

से भरा है और मेरा घर बलसल्क (बिल में रहने वाले) चूहों की रेणु (मिट्टी) से भरा है। यहाँ पदों का भिन्न प्रकार से समासविच्छेद करने पर भिन्न अर्थ निकलते हैं।

अर्थालङ्कार

4. उपमा

इसका लक्षण इस प्रकार है-**साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः।**

अर्थात् एक ही वाक्य में दो पदार्थों के वैधर्म्यरहित वाच्यसादृश्य को उपमा कहते हैं।

उपमा के चार तत्व होते है- उपमेय, उपमान, साधारणधर्म और (औपम्य -) वाचक शब्द। चारों का प्रयोग होने पर पूर्णोपमा होती है और किसी एक या अधिक का अनुपादान होने पर लुप्तोपमा होती है। उदाहरण-

वागर्थाविव सम्पृक्तौ, वागर्थप्रतिपत्तये।

जगतः पितरौ बन्दे, पार्वतीपरमेश्वरौ ।।

यहाँ 'वागर्थौ' उपमान, 'पार्वतीपरमेश्वरौ' उपमेय, 'सम्पृक्तौ साधारणधर्म और 'इव' वाचक है, अतः यहाँ पूर्णोपमा है।

मुखमिन्दुर्यथा पाणिः पल्लवेन समः प्रिये।

वाचः सुधा इवोष्ठस्ते विम्बतुल्यो मनोऽश्मवत्।

अर्थ–हे प्रिये ! तुम्हारा मुख चन्द्रमा के समान, हाथ पल्लव के तुल्य, वाणी अमृत-सी, ओष्ठ बिम्बफल के सदृश और मन पत्थर जैसा है। यहाँ सर्वत्र धर्म (सुन्दर, कोमल, मीठी आदि) का अभाव है, इसलिये धर्मलुप्तोपमा है।

5. रूपक

यह एक आरोपमूलक अभेदप्रधान सादृश्यगर्भ अर्थालङ्कार है। इसक लक्षण इस प्रकार है -

रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे

अर्थात् जहाँ उपमान का उपमेय में आरोप हो, लेकिन उपमेय का निषेध (अपह्नव) न हो, वहाँ रूपक अलङ्कार होता है।

लक्षण में 'निरपह्नवे' शब्द अपह्नुति अलङ्कार से पार्थक्य बताने के लिये रखा गया है। *उदाहरण* -

जाज्वल्यमाना जगतः शान्तये समुपेयुषी।

व्यद्योतिष्ठ सभावेघामसौ नरिशिखित्रयी।।

अर्थ– जगत् के कल्याण के लिए एकत्र जलती हुई, मनुष्य (कृष्ण, उद्धव, बलराम) रूपी तीन अग्नियाँ (दक्षिण गार्हपत्य, आह्वनीय) सभारूपी वेदी पर चमकने लगीं। यहाँ सभा में वेदी का और नरत्रय में शिखित्रय का आरोप है। दूसरा उदाहरण –

लावण्यमधुभिः पूर्णमास्यमस्या विकस्वरम् ।

लोकलोचनरोलम्बकदम्बैः कैनं पीयते ।।

यहाँ लावण्य आदि में मधुत्व आदि का शाब्द और मुख में पद्म आदि का आर्थ आरोप है।

6. अपह्नुति

यह भी एक आरोपमूलक अभेदप्रधान सादृश्यगर्भ अर्थालङ्कार है। इसका लक्षण इस प्रकार है–**प्रकृतं प्रतिषिध्यान्यस्थापनं स्यादपह्नुतिः ।**

अर्थात् यदि उपमेय का प्रतिषेध करके उपमान को स्थापित किया जाय तो अपह्नुति होती है। *उदाहरण –*

नेदं नभोमण्डलमम्बुराशिर्नैताश्च तारा नवफेनभङ्गाः।

नायं शशी कुण्डलितः फणीन्द्रो नासौ कलङ्कः शयितो मुरारिः।।

अर्थ– यह आकाशमण्डल नहीं है, समुद्र है। ये तारे नहीं हैं, बल्कि नवीन फेनों के खण्ड हैं। यह चन्द्रमा नहीं है, वरन् कुण्डल मार कर बैठे हुए शेषनाग हैं और यह कलङ्क नहीं है, वरन् शेषनाग पर भगवान् विष्णु सो रहे हैं।

यहाँ आकाश आदि के स्वरूप का निषेध और समुद्रत्व आदि धर्मों का आरोप किया गया है।

7. उत्प्रेक्षा

यह एक अध्यवसायमूलक अभेदप्रधान सादृश्यगर्भ अर्थालङ्कार है। इसका लक्षण निम्न प्रकार है –**भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना ।**

अर्थात् प्रस्तुत (उपमेय) की अप्रस्तुत (उपमान) के रूप में सम्भावना करने को उत्प्रेक्षा कहते हैं।

सम्भावना में एक कोटि प्रबल रहती है और संशय (संदेह) में दोनों या सभी कोटियां समान रहती है। उत्प्रेक्षालङ्कार में उपमान की ही कोटि प्रबल रहती है। *उदाहरण वाच्या –*

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।

असत्पुरुषसेवेव दृष्टिविफलतां गता ।।

अर्थ- ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अन्धकार अङ्गों में लेप लगा रहा है और आकाश काजल की वर्षा कर रहा है। दृष्टि असज्जन की सेवा के समान व्यर्थ हो गई है।

यहाँ प्रथम और द्वितीय में उत्प्रेक्षा है। यहां अन्धकार के प्रसार-रूप प्रकृत में लेपन और वर्षण रूप अप्रस्तुत की सम्भावना की गई है।

प्रतीयमाना -

तन्वङ्ग्याः स्तनयुग्मेन मुखं न प्रकटीकृतम् ।
हाराय गुणिने स्थानं न दत्तमिति लज्जया ।।

अर्थ- मानो इस लज्जा से कि गुणवान् (सूत्रयुक्त) हार के लिए स्थान नहीं दिया तन्वङ्गी के स्तनद्वय ने मुख नहीं प्रकट किया।

यहाँ 'लज्जयेव' न कहकर 'इव' आदि का प्रयोग न होने के कारण यह उत्प्रेक्षा प्रतीयमाना है।

8. अतिशयोक्ति

इसका लक्षण इस प्रकार है - **सिद्धत्वेऽध्यवसायस्यातिशयोक्तिर्निगद्यते।** अर्थात् अध्यवसाय के सिद्ध होने पर अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

विषय (उपमेय) का निगरण करके विषयी (उपमान) के साथ उसके अभेद ज्ञान को अध्यवसाय कहते हैं। उत्प्रेक्षा में उपमान का अनिश्चित रूप से कथन होता है, अतः यहां अध्यवसाय साध्य रहता है और अतिशयोक्ति में उसकी निश्चित रूप से प्रतीति होती है। अतः यहाँ अध्यवसाय सिद्ध होता है।

☞ **अतिशयोक्ति के भेद** -

1- भेद होने पर अभेद वर्णन करना,

2- अभेद होने पर भेद वर्णन करना,

3- सम्बन्ध रहने पर असम्बन्ध का वर्णन करना,

4- असम्बन्ध रहने पर सम्बन्ध का कथन करना और

5- कारण और कार्य के पौर्वापर्यनियम का व्यत्यय करना।

☞ भेद होने पर अभेद-वर्णन का उदाहरण -

कथमुपरि कलापिनः कलापो विलसति तस्य तलेऽष्टमीन्दुखण्डम्।
कुवलययुगलं ततो विलोलं तिलकुसुमं तदधः प्रवालमस्मात् ।।

यहाँ नायिका के केशपाश का मयूरपिच्छ के रूप में, उसके ललाट का लक्ष्मी के चन्द्रमा के रूप में, नेत्रों का कमलद्वय के रूप में, नासिका का तिलपुष्प के रूप में और अधरोष्ठ का मूंगे के रूप में अध्यवसान हुआ है।

9. तुल्ययोगिता

यह एक गम्योपम्यमूलक अलङ्कार है। इसका लक्षण इस प्रकार है -

पदार्थानां प्रस्तुतनामन्येषां वा यदा भवेत् ।

एकधर्माभिसम्बन्धः स्यात्तदा तुल्ययोगिता ।।

अर्थात् केवल प्रकृत या केवल अप्रकृत पदार्थों में एक धर्म के सम्बन्ध का नाम तुल्ययोगिता है। यह धर्म कहीं गुणरूप होता है, कहीं क्रियारूप।

1. *प्रस्तुतों (नियत या प्राकरणिक) का उदाहरण -*

अनुलेपनानि कुसुमान्यबलाः कृतमन्यवः पतिषु दीपदशाः।

समयेन तेन सुचिरं शयितप्रतिबोधतस्मरमबोधिषत।।

अर्थ- उस समय (सन्ध्या) ने बहुत देर तक (दिन भर) सोया हुआ कामदेव जिससे जग उठे इस प्रकार अनुलेपन (चन्दन, कस्तूरी आदि के लेपों), फूलों, पत्तियों पर क्रुद्ध अबलाओं और दीपकों की बत्तियों को प्रतिबोधित किया।

इसमें सन्ध्या का वर्णन प्रस्तुत होने से प्रस्तुत अनुलेपन आदि का बोधनक्रियारूप एक धर्म के साथ सम्बन्ध है।

2. *अप्रस्तुतों (अनियत या अप्राकरणिक) का उदाहरण -*

तदङ्गमार्दवं द्रष्टुः कस्य चित्ते न भासते।

मालतीशशभूल्लेखाकदलीनां कठोरता ।

अर्थ - उस सुन्दरी के अङ्गों की कोमलता को देखने वाले किस मनुष्य के हृदय में मालती के पुष्प, चन्द्रमा की कला, और कदली के कोमल दल भी कठोर नहीं लगते? उसके कोमलतम शरीर को देखकर ये सब कठोर प्रतीत होते हैं।

10. दीपक

यह भी एक गम्यौपम्याश्रय अर्थालङ्कार है। इसका लक्षण इस प्रकार है -

अप्रस्तुतप्रस्तुतयोर्दीपकं तु निगद्यते।

अथ कारकमेकं स्यादनेकासु क्रियासु चेत् ।।

अर्थात् जहाँ अप्रस्तुत और प्रस्तुत पदार्थों में एक धर्म का सम्बन्ध हो अथवा अनेक क्रियाओं का एक ही कारक हो, वहां दीपक अलङ्कार होता है। *उदाहरण* -

1- क्रियादीपक

बलावलेपादधुनापि पूर्ववत् प्रबाच्यते तेन जगज्जिगीषुणा।

सती च योषित्प्रकृतिश्च निश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।।

यहाँ प्रस्तुत निश्चल प्रकृति और अप्रस्तुत सती स्त्री का एक अनुगमनरूप क्रिया के साथ सम्बन्ध वर्णित है।

2- कारकदीपक

दूरं समागतवति त्वयि जीवनाथे, भिन्ना मनोभवशरेण तपस्विनी सा।

उत्तिष्ठति स्वपितिवासगृहं त्वदीय-मायाति याति हसति श्वसिति क्षणेन।।

11. प्रतिवस्तूपमा

प्रतिवस्तूपमा सा स्याद् वाक्ययोर्गम्यसाम्ययोः।

एकोऽपि धर्मः सामान्यो यत्र निर्दिश्यते पृथक्।।

अर्थात् जिन दो वाक्यार्थों में सादृश्य गम्य (वाच्य नहीं) होता है, उनमें यदि एक ही साधारण धर्म को पृथक्-पृथक शब्दों से कहा जाय, तो प्रतिवस्तूपमा अलङ्कार होता है। जैसे -

धन्यामि वैदर्भि गुणैरुदारैर्यया समाकृष्यत नैषधोऽपि।

इतः स्तुतिः का खलु चन्द्रिकाया यदब्धिमप्युत्तरलीकरोति।।

यहाँ आकर्षण और उत्तरलीकरण एक ही पदार्थ है, परन्तु इनका पृथक् शब्दों से निर्देश किया गया है।

यह (प्रतिवस्तूपमा) माला के रूप में भी मिलती है। जैसे -

विमल एव रविविशदः शशी प्रकृतिशोभन एव हि दर्पणः।

शिवगिरः शिवहाससहोदरः सहजसुन्दर एव हि सज्जनः।।

यहाँ चतुर्थ चरण उपमेय वाक्य है और प्रथम तीन पंक्तियों में उपमान वाक्य हैं। विमल', 'विशद', 'प्रकृतिशोभन' और 'सहजसुन्दर' अर्थततः एक ही हैं।

12. दृष्टान्त

दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम्।

अर्थात् दो वाक्यों में धर्मसहित वस्तु अर्थात् उपमान और उपमेय के प्रतिबिम्बन को दृष्टान्तालङ्कार कहते हैं। प्रतिबिम्बन का तात्पर्य है, कि सादृश्य विशेष-अवधान-गम्य होता है।

दृष्टान्तालङ्कार साधर्म्य और वैधर्म्य के भेद से दो प्रकार का होता है।

उदाहरण -

1. **साधर्म्य**

अविदितगुणापि सत्कविभणितिः कर्णेषु वमति मधुधाराम्।
अनधिगतपरिमलापि हि हरति दृशं मालतीमाला।।

यहाँ इस आदि शब्दों के प्रयोग कि बिना भी 'मालतीमाला' के साथ 'सत्कविभणति' का और 'परिमल' के साथ 'गुणों' का सादृश्य प्रतीत होता है।

2. **वैधर्म्य**

त्वयि दृष्टे कुरङ्गाक्ष्याः स्रंसते मदनव्यथा।
दृष्टानुदयभाजीन्दौ ग्लानिः मुकुदसंहतेः।।

यहाँ कामिनी और कुमुदसहति, नायक और चन्द्रमा एवं मदनव्यथा और ग्लानि की समता प्रतीत होती है।

13. समासोक्ति

समासोक्तिः समैर्यत्र कार्यलिङ्गविशेषणैः।
व्यवहारसमारोपः प्रस्तुतेऽन्यस्य वस्तुनः।।

अर्थात् जिस वाक्य में प्रस्तुत और अप्रस्तुत में समान रूप से अन्वित होने वाले कार्य, लिङ्ग और विशेषणों के द्वारा प्रस्तुत में अप्रस्तुत के व्यवहार का आरोप किया जाय, वहाँ समासोक्ति अलङ्कार होता है। उदाहरण -

1. समान कार्य के द्वारा

व्याधूय यद्वसनमम्बुजलोचनाया वक्षोजयोः कनककुम्भविलासभाजोः।
आलिङ्गसि प्रबभमङ्गमशेषमस्या धन्यस्त्वमेव मलयाचलगन्धवाह।।

यहाँ हठकामुक और वायु का कार्य समान है, अतः प्रस्तुत (वायु) में अप्रस्तुत (हठकामुक) के व्यवहार का आरोप है।

2. समान लिङ्ग के द्वारा

असमाप्तजिगीषस्य स्त्रीचिन्ता का मनस्विनः।
अनाक्रम्य जगत्कृत्स्नं नो सन्ध्या भजते रविः।।

यहाँ सन्ध्या के स्त्रीलिङ्ग और सूर्य के पुल्लिङ्ग होने के कारण इनमें नायिका और नायक के व्यवहार का आरोप किया गया है।

3. विशेषणों का साम्य तीन प्रकार से होता है-

(क) श्लिष्ट होने के कारण

(ख) साधारणता (समानरूप से अन्वय) के कारण और

(ग) औपम्यगर्भता के कारण

14. अप्रस्तुतप्रशंसा

अप्रस्तुतप्रशंसा या सा सैव प्रस्तुताश्रया। (का .प्र. 10, 12)

अर्थात् अप्राकरणिक (अप्रस्तुत) के वर्णन से प्राकरणिक (प्रस्तुत) के आक्षेप को अप्रस्तुतप्रशंसा कहते हैं। इसके पांच प्रकार होते हैं –

1. कार्ये प्रस्तुते अप्रस्तुतस्य कारणस्य वचनम् ।
2. निमित्ते " " कार्यस्य " ।
3. सामान्ये " " विशेषस्य " ।
4. विशेषे " " सामान्यस्य " ।
5. तुल्ये " " अन्यस्य तुल्यस्य " ।

तीन सम्बन्ध :-

1. कार्य कारण 2. विशेष-सामान्य और 3. सारूप्य

उदाहरण - *चतुर्थ प्रकार-*

पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वरं रजः।।

यहाँ 'हम लोगों की अपेक्षा धूल भी श्रेष्ठ है', इस विशेष के प्रस्तुत होने पर सामान्य (देही) का अभिधान किया गया है।

उदाहरण - तृतीय प्रकार-

स्रगियं यदि जीवितापहा हृदये किं निहिता न हन्ति माम्।
विषमप्यमृतं क्वचिद् भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया।।

यहाँ ईश्वर की इच्छा से कहीं अहितकर भी हितकर हो जाते हैं और कहीं हितकर भी अहित करने लगते हैं" यह सामान्य प्रस्तुत है, परन्तु विशेष (विष और अमृत) का अभिधान किया गया है। इस प्रकार यहां विशेषमूलक अप्रस्तुतप्रशंसा है।

15. अर्थान्तरन्यास

सामान्यं वा विशेषेष् विशेषस्तेन वा यदि।
कार्यं च कारणेनेदं कार्येण च समर्थ्यते।
साधर्म्येणेतरेणार्थान्तरन्यासोऽष्टधा ततः।।

अर्थात् जहां विशेष के सामान्य का, सामान्य से विशेष का, कारण से कार्य का अथवा कार्य से कारण का साधर्म्य के द्वारा या वैधर्म्य के द्वारा समर्थन किया जाता है, वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है। उदाहरण -

1. साधर्म्य के द्वारा विशेष से सामान्य का समर्थन-

बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति।
सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा।।

यहाँ पूर्वार्ध का अर्थ सामान्य है, उसका समर्थन उत्तरार्ध की विशेष घटना के द्वारा साधर्म्य से किया गया है।

2. साधर्म्य के द्वारा सामान्य से विशेष का समर्थन-

यावदर्थपदां वाचमेवमादाय माधवः।
विरराम महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः।।

अर्थ- जितना अर्थ है, उतने ही शब्दों वाली वाणी कहकर श्रीकृष्ण चुप हो गये। बड़े लोग स्वभाव से ही मितभाषी होते हैं।

यहाँ प्रथम वाक्य विशेष है, उसका समर्थन दूसरे सामान्य वाक्य से किया गया है।

16. विरोध

यह विरोधगर्भ अलङ्कार है। इसका लक्षण इस प्रकार है -

विरोधः सोऽविरोधेऽपि विरुद्धत्वेन यद्वचः। (का. प्र. 12, 24)

अर्थात् वस्तुतः विरोध न होने पर भी जहाँ पर विरुद्ध के समान वर्णन हो, उसे विरोध अलङ्कार कहते हैं। विरोध वास्तविक नहीं होता, आपाततः प्रतीत होता है। यही कारण है कि कुछ आलङ्कारिक (अप्पयदीक्षित आदि) इसे विरोधाभास कहते हैं।

जातिश्चतुर्भिर्जात्याद्यैर्गुणो गुणादिभिस्त्रिभिः।

विरोध

जाति | गुण | क्रिया | द्रव्य
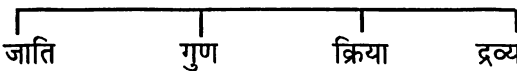
पहले का शेष अगले से विरोध रूप में यह 10 प्रकार का होता है उदाहरण - पञ्चम प्रकार -

सततं मुसलासक्ता बहुतरगृहकर्मघटनया नृपते।

द्विजपत्नीनां कठिनाः सति भवति कराः सरोजसुकुमाराः।।

यहाँ कठिनता और कोमलता रूप गुणों का विरोध भासित होता है। कालभेद का विचार करने से विरोध का परिहार हो जाता है।

17. सन्देह

यह आरोपमूलक अभेदप्रधान अलङ्कार है। इसका लक्षण इस प्रकार है -

सन्देहः प्रकृतेऽन्यस्य संशयः प्रतिभोत्थितः।

अर्थात् प्रकृत (उपमेय) में अप्रकृत (उपमान) के (कवि को) प्रतिमा से उत्पन्न संशय को सन्देहालङ्कार कहते हैं।

पङ्कजं वा सुधांशुर्वेत्यस्माकं तु न निर्णयः।

अर्थ- यह (प्रिया का मुख) कमल है या चन्द्रमा, कोई निर्णय नहीं हो पा रहा है। जो संशय कवि की प्रतिभा से उत्थित नहीं है, वहाँ यह अलङ्कार नहीं होता है। जैसे-**'स्थाणुर्वा पुरुषोवा'**।

18. भ्रान्तिमान्

यह भी एक आरोपमूलक अभेदप्रधान अलङ्कार है। इसका लक्षण इस प्रकार है:-

साम्यादतस्मिंस्तद्बुद्धिर्भ्रान्तिमान् प्रतिभोत्थितः।

अर्थात् सादृश्य के कारण अन्य वस्तु में अन्य वस्तु के ज्ञान को कविप्रतिभोत्थित होने पर भ्रान्तिमान् अलङ्कार कहते हैं। उदाहरण -

मुग्धा दुग्धधिया गवां विदधते कुम्भानघो बल्लवाः,
कर्णे केरवशङ्कया कुवलयं कुर्वन्ति कान्ता अपि।
कर्कन्धूफलमुच्चिनोति शबरी मुक्ताफलाशङ्कया
सान्द्रा चन्द्रमसो न कस्य कुरुते चित्तभ्रमं चन्द्रिका।।

अर्थ-चटकीली चाँदनी किसके चित्त में भ्रम नहीं पैदा करती ? विमुग्ध गोपजन दूध जानकर गायों के (थनों के) नीचे घड़े लगा रहे हैं, कामिनियाँ कुमुद के धोखे से कान में नील कमल पहन रही हैं और शबरों की स्त्रियाँ मोती समझकर बेर के फल चुन रही हैं। कवि-प्रतिभा से उत्थित न होने कारण 'शुक्तिकायां रजतम्' में यह अलङ्कार नहीं है।

19. निदर्शना

यह एक गम्योपम्याश्रय सादृश्यगर्भ अर्थालङ्कार है। इसका लक्षण इस प्रकार है–

संभवन्वस्तुसंबन्धोऽसंभवन्वापि कुत्रचित्।

यत्रे बिम्बानुबिम्बत्वं बोधयेत् सा निदर्शना।।

अर्थात् जहाँ वस्तुओं का परस्पर सम्बन्ध सम्भव (अबाधित) अथवा असम्भव होकर उनके बिम्बप्रतिबिम्बभाव का बोधन करे, वहाँ निदर्शना होती है। असम्भवद्वस्तुनिदर्शना दो प्रकार की होती है - 1. *एकवाक्यगा* 2. *अनेकवाक्यगा।* अनेकवाक्यगा का उदाहरण दिया जा रहा है –

इदं किलाब्याजमनोहरं वपुस्तपःक्षमं साधयितुं य इच्छति।

ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया समिल्लतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति।।

20. व्यतिरेक

आधिक्यमुपमेयस्योपमानान्न्यूनताथवा।

व्यतिरेकः.........................।

अर्थात् उपमान से उपमेय की अधिकता या न्यूनता का वर्णन करने में व्यतिरेक अलंकार होता है।

अकलङ्कं मुखं तस्या न कलङ्की विधुर्यथा।

अर्थ –उसका निष्कलंक मुख सकलंक चन्द्रमा जैसा नहीं है।

यह आधिक्य का उदाहरण है। 'यथा' का प्रयोग होने से यहाँ औपम्य शब्द है।

21. परिसंख्या

प्रश्नपूर्वक या प्रश्न के बिना जहाँ कही हुई वस्तु से अन्य की, शब्द के द्वारा व्यावृत्ति होती है या अर्थतः व्यावृत्ति होती है, वहाँ परिसंख्या अलंकार होता है।

प्रश्नपूर्वक शब्द व्यवच्छेद का उदाहरण–

किं भूषणं सुदृढमत्र यशो न रत्नं, किं कार्यमार्यचरितं सुकृतं न दोषः।

किं चक्षुरप्रतिहतं धिषणा न नेत्रं जानाति कस्त्वदपरः सदसद्विवेकम्।।

22. प्रतीप

इसका लक्षण इस प्रकार है–

प्रसिद्धस्योपमानस्योपमेयत्वप्रकल्पनम्।

निष्फलत्वाभिधानं वा प्रतीपमिति कथ्यते।।

अर्थात् उपमान को उपमेय बनाना या उसको व्यर्थ बताना प्रतीप अलंकार कहलाता है।

त्वल्लोचनसमं पद्मं त्वद्वक्त्रसदृशो विधुः।

अर्थ–(हे सुन्दरि !) कमल तुम्हारे नेत्र के समान है और चन्द्रमा तुम्हारे मुख के समान।

23. विभावना

यह एक विरोधगर्भ अलंकार है। इसका लक्षण इस प्रकार है–

विभावना बिना हेतुं कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते।

अर्थात् हेतु के बिना यदि कार्य की उत्पत्ति का वर्णन हो, तो विभावना अलंकार होता है। इसके दो भेद बताये गये हैं- 1- जिसमें निमित्त उक्त हो और 2- जिसमें निमित्त अनुक्त हो। *उदाहरण* -

अनायासकृशं मध्यमशङ्कतरले दृशौ।
अभूषणमनोहारि वपुर्वयसि सुभ्रुवः।।

अर्थ -युवावस्था में सुन्दर भौंहों वाली (इस नायिका) की कमर बिना श्रम के दुबली हो रही है, नेत्र बिना शङ्का के चञ्चल हैं और शरीर बिना भूषण के रमणीय है।

24. विशेषोक्ति

यह भी विरोधगर्भ है। इसका लक्षण इस प्रकार है –

सति हेतौ फलाभावे विशेषोक्तिस्तथा द्विधा।

अर्थात् हेतु के रहते हुये भी फल के न होने पर विशेषोक्ति अलङ्कार होता है। विभावना की तरह इसके भी दो भेद हैं -1- उक्तनिमित्ता 2- अनुक्तनिमित्ता। उक्तनिमित्ता का उदाहरण दिया जा रहा है –

धनिनोऽपि निरुन्मादा युवानोऽपि न चञ्चलाः।
प्रभवोऽप्यप्रमत्तास्ते महामहिमशालिनः।।

अर्थ-हे महामहिमशाली (पुरुष) धनी होने पर भी उन्माद से रहित हैं, जवान होने पर भी चञ्चल नहीं हैं, प्रभु होने पर भी प्रमादरहित हैं।

प्रथम : अध्याय

शब्द निर्माण प्रक्रिया

शब्द निर्माण के सन्दर्भ में वैयाकरणों के सिद्धान्त को ध्यान में रखना आवश्यक है। सर्वप्रथम वैयाकरणों के मत में शब्द नित्य है। नित्य पदार्थ का निर्माण नहीं होता है। जिसका निर्माण होता है, कालान्तर में वह पदार्थ विनष्ट होता है। 'शब्दों का निर्माण' ऐसा कहने से शब्द में अनित्यत्व दोष आ जायेगा। अत: वैयाकरणों के मत में शब्द निर्माण का तात्पर्य है –

'प्रकृति-प्रत्ययविभागपूर्वकशब्दानामन्वाख्यानम्' इसका अर्थ होता है – वैयाकरण शब्दों के प्रकृति- प्रत्यय को पृथक् करके शब्दों का अर्थबोध करवाता है। महर्षि पतञ्जलि ने अपने 'महाभाष्य' में लिखा है-

'सिद्धस्यैवान्वाख्यानम्' अर्थात् सिद्ध पदों का ही महाभाष्य में अन्वाख्यान त्र व्याख्यान किया गया है। सिद्धपद का तात्पर्य है – अनादिकाल से लोक और वेद में प्रचलित शब्द। यहाँ पर शब्द निर्माण प्रक्रिया का सूत्रपात 'वैयाकरण' शब्द से करते हैं-

व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा: अनेन इति व्याकरणम्।

व्याकरणम् अधीते वेद वा वैयाकरण: इति व्युत्पत्ति:। शब्द निर्माण प्रक्रिया में सर्वप्रथम शब्दों की व्युत्पत्ति की जाती है। व्युत्पत्ति से शब्दों के अर्थ निष्पन्न होते हैं। पुन: प्रकृति प्रत्यय का विभाजन किया जाता है।

वि + आङ् उपसर्गपूर्वक कृ धातु से करण अर्थ में ल्युट् प्रत्यय होता है। प्रत्यय में अनुबन्ध लोप होने पर यु शेष रहता है। यथा-

वि + आङ् + कृ + यु पुन: यु को अन् आदेश कृ में ऋ का गुण वि + आङ् में यण्सन्धि होने पर व्याकरन पुनश्च नकार को णत्व होकर व्याकरण एवं व्याकरण की प्रातिपदिकसंज्ञा होने के बाद नपुंसकलिंङ्ग होने के कारण प्रथमा एकवचन में 'व्याकरणम्' शब्द निष्पन्न होता है। जिसका अर्थ होता है – प्रकृति – प्रत्यय विभाजन पूर्वक शब्दों का प्रतिपादन करने वाला शास्त्र। व्याकरणम् से वैयाकरण शब्द की निष्पत्ति होती है। यथा-

व्याकरण + अण् (तद्धित प्रत्यय) पुनश्च ऐच् आगम होकर वैयाकरण शब्द बनता है। वैयाकरण की प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर प्रथमा एकवचन में विभक्ति कार्य सम्पन्न होकर वैयाकरण: शब्द निष्पन्न होता है। जिसका अर्थ है व्याकरण शास्त्र को पढ़ने या जानने वाला व्यक्ति।

प्रक्रिया सारल्य के कारण यहां सम्बद्ध पाणिनि सूत्रों का नाम्ना निर्देश नहीं किया जा रहा है।

शब्द निर्माण में विशेष रूप से दो प्रक्रियाओं का व्याकरणशास्त्र में विशेष अवदान है। *एक कृदन्त एवं दूसरा तद्धित।* इन्हीं दो प्रक्रियाओं का संक्षेप में दग्दर्शन कराया जा रहा है।

अथ कृदन्तप्रक्रिया

कृत् प्रत्यय धातु से होते हैं, ऐसा **'धातोः'** इस सूत्र द्वारा महर्षि पाणिनि का निर्देश है।

कृत्य एवं कृत् प्रत्ययों में मात्र वैदिक स्वरों का भेद होता है।

धातुः	प्रत्ययः	निष्पन्नरूपम्	अर्थः
एध्	तव्यत्	एधितव्यम्	बढ़ने योग्य अथवा बढ़ना चाहिये

(धातुओं से प्रत्यय होने पर अपेक्षित सन्धि एवं सेट् धातु होने पर इट् का आगम होता है।)

चि + यत्	-	चेयम्	-	चुनने योग्य
दा + यत्	-	देयम्	-	देने योग्य
शास् + क्यप्	-	शिष्यः	-	शासन के योग्य
कृञ् + ण्यत्	-	कार्यम्	-	करने योग्य

उपरोक्त प्रत्यय कृदन्त प्रक्रिया के अन्तर्गत कृत्य प्रत्यय हैं, जो भाव और कर्म अर्थ में होते हैं। इसके बाद में होने वाले प्रत्यय कर्ता कारक के अर्थ में होंगे।

कर्ता के अर्थ में प्रत्यय-

धातुः	-	प्रत्ययः	-	निष्पन्नरूपम्	- अर्थः
कृञ्	-	ण्वुल्	-	कारकः	- करने वाला
कृञ्	-	तृच्	-	कर्ता	- करने वाला

कर्म उपपद अण् प्रत्यय -

कुम्भं करोति इति कुम्भकारः।

कुम्भ + कृञ् + अण् = कुम्भकारः घट बनाने वाला

अधिकरण उपपद ट प्रत्यय -

कुरुषु चरति इति कुरुचरः।

कुरु + चर + ट = कुरुचरः - कुरुदेश में विचरण करने वाला

प्रिय उपपद खच् प्रत्यय -

प्रियं वदति इति प्रियंवदः

प्रिय + वद + खच् = प्रियंवदः - प्रिय बोलने वाला

भूतकालिक क्त प्रत्यय (पुनः भाव एवं कर्म अर्थ में)

स्ना + क्त = स्नातम् - स्नान कर लिया है।

भूतकालिक क्तवतु प्रत्यय (कर्ता अर्थ में)

कृञ् + क्तवतु = कृतवान् - किया।

तुमुन् प्रत्यय (क्रियार्थक क्रिया अर्थ में)

दृश् + तुमुन् = द्रष्टुम् - देखने हेतु

क्तिन् प्रत्यय (स्त्रीलिङ्ग एवं भाव अर्थ में)

कृञ् + क्तिन् = कृतिः - कृति

क्त्वा प्रत्यय (समानकर्तृक पूर्वकालिक)

भुज् + क्त्वा = भुक्त्वा - खाकर

इस प्रकार संक्षेप में कृदन्त प्रक्रिया के अन्तर्गत शब्द निर्माण का दिग्दर्शन कराया गया है।

अथ तद्धित प्रक्रिया

इसके पूर्व कृदन्त प्रत्यय धातु से होते आये हैं। अब तद्धित प्रत्यय प्रातिपादिक से होंगे। महर्षि पाणिनि का निर्देश है- **'समर्थानां प्रथमाद्वा'** अर्थात् तद्धित प्रत्यय अपने अर्थ कथन में समर्थ पदों से ही होंगे।

अण् प्रत्यय (अपत्य अर्थ में)

अश्वपति + अण् = आाश्वपतम् - अश्वपति का सन्तान।

एवं

दिति + अण् = दैत्यः (दिति का पुत्र - दानव)

(तद्धित प्रत्यय होने पर आदिवृद्धि एवं टि का लोप आदि कार्य होता है।)

विशेष तद्धित प्रक्रिया में एक ही प्रत्यय जैसे अण् प्रत्यय अनेक अर्थों में प्रयुक्त होकर शब्द निर्माण करते हैं। जैसे - रज्यते अनेन इति रागः।

रज् + अण् = रागः अर्थात् जिससे रंगा जाये। (करण अर्थ में)

अण् प्रत्यय (समूह अर्थ में)

काक + अण् = काकम्-कौओं का समूह

घ प्रत्यय (जातादि अर्थ में)

राष्ट्र + घ = राष्ट्रियः - राष्ट्र सम्बन्धी

मतुप् प्रत्यय (अस्य अस्मिन् = वाला अर्थ में)

गो + मतुप् = गोमान् - गाय वाला।

इनि प्रत्यय (वाला अर्थ में)

दण्ड + इनि = दण्डी - दण्डवाला

तमप् प्रत्यय (अतिशय अर्थ में)

साधक + तमप् = साधकतमम् - अत्यन्त साधक

मयट् प्रत्यय (प्राचुर्य अर्थ में)

अन्न + मयट् = अन्नमयः - अन्न की पर्याप्तता।

इस प्रकार संक्षेप में कुछ तद्धितशब्दों के निर्माण की प्रक्रिया दर्शायी गयी है। जब प्रातिपदिक से कोई तद्धित प्रत्यय होता है, उसके उपरान्त शब्द की निष्पत्ति तक सन्धि आदि प्रक्रिया होती है। पुनः प्रातिपदिक संज्ञा होकर विभक्ति कार्य भी होते हैं।

द्वितीय : अध्याय
शब्दकोश

(अ)

अंशः (पुं.)	टुकड़ा
अंशुः (पुं.)	किरण
अंशुकम् (नपुं.)	वस्त्र
अंशुमान् (पुं.)	सूरज
अकारान्त (वि.)	'अ' से समाप्त होने वाला (शब्द)
अकृत्रिम (वि.)	सहज
अक्षरम् (नपुं.)	अक्षर
अग्र (वि.)	आगे
अग्रजः (पुं.)	बड़ा भाई
अग्रजा (स्त्री.)	बड़ी बहन
अग्रे (अव्य.)	सामने / आगे
अङ्क्	चिह्नित करना, मोहर लगाना
अङ्कः (पुं.)	गोद, नाटक का अङ्क/चिह्न/संख्या
अङ्कनी (स्त्री.)	पेंसिल
अङ्कुरः (पुं./नपुं.)	कोपल, अंकुर
अङ्ग + कृ (अङ्गीकरोति)	स्वीकार करना
अङ्गुलीयकम्(नपुं.)	अंगूठी
अङ्गुष्ठः (पुं.)	अंगूठा
अचिरात् (अव्य.)	शीघ्र ही
अजगरः (पुं.)	अजगर, बड़ा साँप
अजा (स्त्री)	बकरी
अञ्जनम् (पुं.)	काजल
अञ्जनम् (नपुं.)	काजल
अट् (अटति)	घूमना
अण्डः-डम्(पुं./नपुं.)	अंडा
अतः (अव्य.)	इसलिए
अति (उप.)	अतिशय/परे
अतिक्रान्तः (पुं.)	बीता हुआ
अतिथिः (पुं.)	मेहमान
अतिरमणीय (वि.)	बहुत सुन्दर
अतिशयः (पुं.)	बहुत अधिक
अतिथिसत्कारः(पुं.)	अतिथि सत्कार
अतीव (अव्य.)	बहुत अधिकता से
अत्यन्त (वि.)	बहुत अधिक
अत्याचारः (पुं.)	अत्याचार
अत्र (अव्य.)	यहाँ
अथ (अव्य.)	और भी, इसके बाद
अथवा (अव्य.)	या
अदर्शनम् (नपुं.)	दिखाई न देना
अद्य (अव्य.)	आज
अद्यतन (वि.)	आज का
अद्यप्रभृति (अव्य.)	आज से
अद्यापि (अव्य.)	आज भी
अद्यारभ्य (अव्य.)	आज से
अधः (अव्य.)	नीचे
अधन (वि.)	दरिद्र, गरीब
अधर्मः (पुं.)	अन्याय
अधस्तात् (अव्य.)	नीचे
अधिकम् (वि.)	ज़्यादा

अधिकरणम् (नपुं.)	अधिकरण कारक	अनुशासनम् (नपुं.)	उपदेश, आदेश, अनुशासन
अधिकार: (पुं.)	हक, अधिकार		
अधि + इङ् (अधीते)	पढ़ना	अनुसन्धानम् (नपुं.)	अनुसंधान, खोज
		अनु + सृ (अनुसरति)	अनुसरण करना
अधिपति:	मालिक		
अधीन (वि.)	आश्रित होना	अनृत (वि.)	झूठ, असत्य
अधुना (अव्य.)	अब, इस समय	अनेक (सर्व.)	बहुत
अध्यक्ष: (पुं.)	सभापति, मुखिया	अन्त (वि.)	समाप्ति
अध्ययनम् (नपुं.)	अध्ययन	अन्ध (वि.)	अंधा
अध्यापक: (पुं.)	शिक्षक	अन्धकार: (पुं.)	अंधेरा
अध्यापनम् (नपुं.)	पढ़ाना	अन्नम् (नपुं.)	अनाज, खाद्य पदार्थ
अधि + इङ् णिच् (अध्यापयति)	पढ़ाना	अन्य (सर्व.)	कोई और, दूसरा
		अन्यत्र (अव्य.)	किसी दूसरे स्थान पर
अध्याय: (पुं.)	पाठ		
अध्वर: (पुं.)	यज्ञ	अन्यथा (अव्य.)	नहीं तो
अनन्तरम् (अव्य.)	बाद में, पश्चात	अनु +इष् (अन्विष्यति)	खोजना
अनल: (पुं.)	आग		
अनिल: (पुं.)	वायु	अन्वेषणम् (नपुं.)	खोज
अनुकूल (वि.)	अनुरूप	अपकार: (पुं.)	हानि पहुँचाना
अनुक्रमणी (स्त्री.)	विषय-सूची	अपत्यम् (नपुं.)	संतान
अनुग्रह: (पुं.)	कृपा	अपर (सर्व.)	दूसरा
अनुज: (पुं.)	छोटा भाई	अपराध: (पुं.)	अपराध
अनुजा (स्त्री.)	छोटी बहन	अपर्याप्त (वि.)	अपर्याप्त
अनुत्तीर्ण (त्रि.)	असफल	अपरिचित (त्रि.)	अपरिचित
अनुत्सृज्य (अव्य.)	बिना छोड़े	अपि (अव्य.)	भी
अनु + भू (अनुभवति)	अनुभव करना	अपुत्र (त्रि.)	पुत्र विहीन
		अपूप: (पुं.)	मालपुआ
अनुराग: (पुं.)	प्रेम	अब्द: (पुं.)	वर्ष
अनुरुध् (अनुरुणद्धि)	अनुरोध करना	अभाव: (पुं.)	कमी
		अभि + नन्द् (अभिनन्दति)	अभिनन्दन करना
अनुवाद: (पुं.)	अनुवाद, 'पुन: कथन		
अनुवैद्या (स्त्री.)	नर्स	अभिनय: (पुं.)	भाव पूर्ण चेष्टा, अभिनय

अभिनेत्री (स्त्री.) — अभिनेत्री
अभिलाषः (पुं.) — इच्छा
अभि+वद् (अभिवादयति) — अभिवादन करना
अभिशापः (पुं.) — शाप
अभ्यस्त (त्रि.) — जिसे अभ्यास हो गया हो, आदी
अभ्यासः (पुं.) — बार-बार दोहराना
अम्बा (स्त्री.) — माता
अम्बुजम् (नपुं.) — कमल
अम्ल (वि.) — खट्टा
अरण्यम् (नपुं.) — जंगल
अर्कः (पुं.) — सूर्य
अर्कक्षेत्रम् (नपुं.) — सूर्य का क्षेत्र
अर्च् (अर्चति) — पूजा करना
अर्चक (वि.) — पुजारी
अर्ज् (अर्जति) — अर्जन करना, कमाना
अर्थ् (अर्थयते) — निवेदन करना, प्रार्थना करना
अर्थः — उद्देश्य, प्रयोजन, तात्पर्य, धन
अर्बुदः-दम् (पु./नपुं.) — दस करोड़
अर्भकः (पुं.) — बच्चा
अलम् कृ (अलङ्करोति4) — अलंकृत करना
अलङ्कारः (पुं.) — आभूषण
अल्प (वि.) — थोड़ा, कम
अल्पाहारः — नाश्ता
अवकरिका (स्त्री.) — कूड़ादान
अवकाशः (पुं.) — छुट्टी
अव + गम् (अवगच्छति) — समझना
अवतृ, (अवतरति) — उतरना
अवलोक् (अवलोकत) — देखना
अवयवः (पुं.) — अंग
अवश्यम् (अव्य.) — ज़रूर
अवसरः (पुं.) — मौका, अवसर
अशरीरवाणी (स्त्री.) — आकाशवाणी
अश्वः (पुं.) — घोड़ा
असाध्य (वि.) — असाध्य
असुरः (पुं.) — राक्षस
असूया (स्त्री.) — ईर्ष्या
अस्माकम् (सर्व.) — हमारा
अहम् (सर्व.) — मैं
अहिः (पुं.) — साँप
अहोरात्रः (पुं.) — दिन-रात
अर्ह (वि.) — समर्थ

(आ)

आकरग्रन्थः (पुं.) — मूल ग्रन्थ
आ+कृष् (आकर्षति) — आकृष्ट करना
आकर्षिका (स्त्री.) — आकर्षित करने वाली
आकाशः,-शम् (पुं./नपुं.) — आसमान, आकाश
आकुल (वि.) — व्याकुल, बेचैन
आ + गम् (आगच्छति) — आना
आगमनम् (नपुं.) — आना
आगन्तुक (वि.) — आगन्तुक, अतिथि
आग्रहः (पुं.) — हठ, प्रार्थना

आचरणम् (नपुं.)	चाल-चलन, (क्रिया, व्यवहार	आपणः (पुं.)	दुकान
		आपणिकः (पुं.)	दुकानदार
आचार्यः (पुं.)	गुरु, शिक्षक	आभरणम् (नपुं.)	गहना, आभूषण
आच्छादः (पुं.)	कपड़ा, ढकने का वस्त्र	आभाणकः (पुं.)	लोकोक्ति, कहावत
		आम् (अव्य.)	हाँ
आ +छद् (आच्छादयति)	ढकना	आमन्त्रणम् (नपुं.)	न्योता
		आमलकम् (नपुं.)	आँवले का फल
आज्ञा (स्त्री.)	आज्ञा, आदेश	आम्रः (पुं.)	आम का पेड़
आञ्जनेयः (पुं.)	हनुमान	आम्रम् (नपुं.)	आम का फल
आढ्य (वि.)	धनी, संपन्न	आयः (पुं.)	आमदनी
आतपः (पुं.)	गर्मी, धूप	आयुः (नपुं.)	उम्र
आतिथ्यम् (नपुं.)	अतिथि-सत्कार	आयुधम् (नपुं.)	अस्त्र-शस्त्र
आत्मकथा (स्त्री.)	आत्मकथा	आयोजनम् (नपुं.)	आयोजन
आत्मसमर्पणम्(नपुं.)	आत्मसमर्पण	आरक्षकालयः (पुं.)	थाना
आदरः (पुं.)	सम्मान	आरम्भः (पुं.)	शुरुआत, आरम्भ
आदरणीय (वि.)	सम्मान के योग्य	आराधना (स्त्री.)	पूजा, उपासना
आदानम् (नपुं.)	ग्रहण करना, स्वीकार करना	आरोग्यम् (नपुं.)	स्वास्थ्य, सेहत
		आ + रुह् (आरोहति)	चढ़ना
आदि (वि.)	प्रथम, पहला		
आदिनम् (नपुं.)	दिनभर	आर्थिक (वि)	आर्थिक, वित्त संबंधी
आ+दिश् (आदिशति)	आदेश देना		
		आर्द्र (वि)	गीला
आदेशः (पुं.)	हुक्म, आज्ञा	आर्द्रकम् (नपुं.)	अदरक
आधानम् (नपुं.)	रखना	आर्य (वि)	आदरणीय
आधानिका (स्त्री.)	फूलदानी	आलयः (पुं.)	स्थान, घर
आधारः (पुं.)	आधार, नींव	आलस्यम् (नपुं.)	प्रमाद
आननम् (नपुं.)	चेहरा	आलापः (पुं.)	बातचीत
आनन्दः (पुं.)	प्रसन्नता, खुशी	आलिङ्गनम् (नपुं.)	आलिङ्गन, छाती से लगाना
आ +नी (आनयति)	लाना		
		आलुकम् (नपुं.)	आलू
आन्दोलनम् (नपुं.)	हलचल, आन्दोलन	आलोकः (पुं.)	प्रकाश
आप् (आप्नोति)	प्राप्त करना, व्याप्त करना		

आ +लुड् (आलोडयति)	आलोडन करना
आवश्यक (वि.)	ज़रूरी
आवासः (पुं.)	निवास, रहने का स्थान
आविष्कारः (पुं.)	नयी खोज
आवुत्तः (पुं.)	जीजा (बहनोई)
आवेगः (पुं.)	बेचैनी, उद्विग्नता
आवेदनम् (नपुं.)	प्रार्थना-पत्र
आशयः (पुं.)	अभिप्राय
आशा (स्त्री.)	उम्मीद, दिशा
आशीर्वादः	मंगल कामना, आशीर्वाद
आश्चर्य (वि.)	अद्भुत, आश्चर्यजनक
आश्चर्यम् (नपुं.)	आश्चर्य
आश्रमः (पुं.)	आश्रम
आश्रयः (पुं.)	सहारा, आधार
आ +श्रि (आश्रयति)	आश्रय लेना
आश्रित (त्रि.)	अनुरक्त
आसक्तिः (स्त्री.)	अनुराग, लगाव
आसनम् (नपुं.)	बैठने का स्थान, बैठने का ढंग
आसन्दः (पुं.)	कुर्सी
आस्तिक (वि)	वेद और ईश्वर को मानने वाला
आस्वादः (पुं.)	स्वाद (लेकर खाना)
आहत्य (अव्य.)	कुल मिलाकर
आहारः (पुं.)	भोजन
आहरणम् (नपुं.)	संग्रह
आ +हृ (आहरति)	लाना
आ +ह्वे (आह्वयति)	बुलाना
आह्वानम् (नपुं.)	बुलाना, पुकारना

(इ)

इक्षुः (पुं.)	गन्ना
इङ् (अधीते)	पढ़ना
इच्छति (इष्)	इच्छा करना
इच्छा (स्त्री.)	चाह, कामना
इतः (अव्य.)	यहाँ से
इतर (सर्व.)	दूसरा
इतस्ततः (अव्य.)	इधर-उधर
इति (अव्य.)	इस प्रकार
इतिहासः (पुं.)	इतिहास (पुरानी घटनाओं का वर्णन)
इत्थम् (अव्य.)	इस प्रकार
इदानीम् (अव्य.)	अब
इन्धनम् (नपुं.)	जलाने की सामग्री, ईंधन
इव (अव्य.)	जैसे
इष् (इष्यति)	जाना
इष् (इच्छति)	चाहना
इष्टिका (स्त्री.)	ईंट

(ई)

ईर्ष्य् (ईर्ष्यति)	ईर्ष्या करना
ईक्ष् (ईक्षत)	देखना

ईर्ष्या (स्त्री.)	जलन, ईर्ष्या
ईश्वरः (पुं.)	परमेश्वर, शासक
ईहामृगः (पुं.)	भेड़िया

(उ)

उग्र (वि.)	प्रचंड
उचित (वि.)	ठीक, उचित
उच्चारणम् (नपुं.)	उच्चारण
उच्चैः (अव्य.)	जोर से, ऊँचा
उडुपः (पुं.)	नाव
उड्डयनम् (नपुं.)	उड़ान
उत्कण्ठा (वि.)	उत्सुकता
उत्कीर्ण (वि)	बिखरा हुआ, खुदा हुआ
उत्कोचः (पुं.)	रिश्वत
उत्खननम् (नपुं.)	खुदाई
उत् स्था (उत्तिष्ठति)	उठना
उत्+स्था+णिच् (उत्थापयति)	उठाना, जगाना
उत्पलम् (नपुं.)	कुमुदिनी
उत्पीठिका (स्त्री.)	मेज
उत्सवः (पुं.)	पर्व
उत्साहः (पुं.)	उत्साह
उदकम् (नपुं.)	जल
उदरम् (नपुं.)	पेट
उदार (वि.)	विशाल हृदय वाला
उदाहरणम् (नपुं.)	उदाहरण
उद्घाटनम् (नपुं.)	खोलना
उद्घाटयति (उत्घट्)	उद्घाटित करना
उद्दण्ड (वि.)	अशिष्ट, असभ्य, अभद्र, उद्धव
उद्देश्यम् (नपुं.)	उद्देश्य
उत्+धृ (उद्धरति)	उद्धृत करना, उद्धार करना
उद्यमः (पुं.)	कोशिश
उद्यमशीलः (पुं.)	उद्यमी
उद्यानम् (नपुं.)	बगीचा
उद्यानपालः (पुं.)	माली
उद्योगः (पुं.)	कामधंधा, रोज़गार
उन्नत (त्रि.)	ऊँचा उठा हुआ
उत्नी (उन्नयति)	ऊपर उठाना
उन्मत्त (वि.)	पागल
उपकरणम् (नपुं.)	औजार, उपकरण
उप+कृ (उपकरोति)	उपकृत करना
उपकारः (पुं.)	भलाई
उपग्रहः (पुं.)	उपग्रह (बड़े ग्रह की परिक्रमा करने वाला छोटा ग्रह)
उपचारः (पुं.)	चिकित्सा
उपचारिका (स्त्री.)	नर्स
उपतापः (पुं.)	पीड़ा
उप+दिश् (उपदिशति)	उपदेश देना
उपदेशः (पुं.)	शिक्षा, उपदेश
उपधानम् (नपुं.)	तकिया
उपनेत्रम् (नपुं.)	चश्मा, ऐनक
उपरि (अव्य.)	ऊपर
उपरिष्टात् (अव्य.)	ऊपर
उपलः (पुं.)	पत्थर
उपलब्धिः (स्त्री)	प्राप्ति, उपलब्धि
उप+विश् (उपविशति)	बैठना

उपस्थित (वि)	हाजिर
उपायः (पुं.)	तरीका, उपाय
उपायनम् (नपुं.)	भेंट, उपहार
उप +हस् (उपहसति)	उपहास करना
उपहारः (पुं.)	जलपान
उर्वारुकम् (नपुं.)	खरबूजा
उल्लेखः (पुं.)	चर्चा, उल्लेख
उष्ट्रः (पुं.)	ऊँट
उष्ण (वि)	गर्म
उष्ण +कृ (उष्णीकरोति)	गर्म करना
उष्णीषः (पुं.)	पगड़ी

(ऊ)

ऊरुकम् (नपुं.)	पैंट
ऊर्णा (स्त्री.)	ऊन
ऊर्णनाभिः (पुं.)	मकड़ी

(ऋ)

ऋ (ऋच्छति)	जाना, प्राप्त करना
ऋच्छति (द्र. ऋ)	
ऋणम् (नपुं.)	ऋण/कर्ज़
ऋतुः (पुं.)	मौसम
ऋषभः (पुं.)	बैल
ऋषिः (पुं.)	तत्त्वदष्टा, ऋषि

(ए)

एक (सर्व., वि.)	एक
एकत्र (अव्य.)	एक स्थान पर
एकदा (अव्य.)	एकबार
एकवारम् (अव्य.)	एकबार
एकाकिन् (वि.)	अकेला
एकीकृत (वि.)	इकट्ठा किया हुआ
एकैकशः (अव्य.)	एक-एक करके
एडका (स्त्री.)	भेड़ी (भेड़-स्त्री.)
एतत् (सर्व.)	यह, इस
एतादृश (वि.)	ऐसा
एतावत् (वि.)	इतना
एला (स्त्री.)	इलायची
एव (अव्य.)	ही
एवम् (अव्य.)	इस प्रकार
एषः (सर्व.)	यह (पुं.)
एषा (सर्व-स्त्री.)	यह (स्त्री.)

(ऐ)

ऐतिह्यम् (नपुं.)	इतिहास
ऐन्द्रजालिकः (पुं.)	जादूगर
ऐरावतः (पुं.)	इन्द्र का हाथी
ऐश्वर्यम् (नपुं.)	धन-दौलत

(ओ)

ओदनः-नम् (पुं./नपुं.)	भात (चावल)
ओम् (अव्य.)	हाँ जी
ओष्ठः (पुं.)	होंठ
ओघः (पुं.)	प्रवाह, बाढ़

(औ)

और्णम् (नपुं.)	ऊन का
औषधम् (नपुं.)	दवाई

(क)

कः (सर्व.)	कौन
कक्ष्या (स्त्री.)	कक्षा
कक्षा (स्त्री.)	कक्षा
कटः (पुं.)	चटाई
कटाहः (पुं.)	कड़ाह

कटु (वि.)	कड़ुबा
कठिन (वि.)	मुश्किल
कठोर (वि.)	सख्त, कठोर
कणिका (स्त्री.)	बहुत छोटा भाग
कण्ठः-ठम् (पुं./नपुं.)	गला
कण्डूयनम् (नपुं.)	खुजली
कति (सर्व.)	कितने
कथ (कथयति)	कहना
कथनम् (नपुं.)	कहना, कथन
कथम् (अव्य.)	किस प्रकार, कैसे
कथा (स्त्री.)	कहानी
कदली (स्त्री.)	केला
कदा (अव्य.)	कब
कदा चन-चित् (अव्य.)	कभी
कदापि (अव्य.)	कभी भी
कन्दुकः-कम् (पुं., नपुं.)	गेंद
कन्या (स्त्री.)	लड़की
कपाटिका (स्त्री.)	अलमारी
कपोतः (पुं.)	कबूतर
कपोलः (पुं.)	गाल
कमलम् (नपुं.)	कमल
कम्प् (कम्पते)	कांपना
कम्पनम् (नपुं.)	कांपना
कम्बलः (पुं.)	कंबल
करणम् (नपुं.)	साधन, करना
करुणा (स्त्री.)	दया, रहम
करोति (द्र. कृ)	
कर्णः (पुं.)	कान
कर्त् (कर्तयति)	शिथिल करना, काटना
कर्तनम् (नपुं.)	कुतरना, काटना
कर्त्तव्यम् (नपुं.)	कार्य, काम
कर्षणम् (नपुं.)	खींचना
कलङ्कः (पुं.)	चिह्न, धब्बा
कलशः (पुं.)	घड़ा
कलहः (पुं.)	झगड़ा
कला (स्त्री.)	कला
कलिका (स्त्री.)	कली
कविः (पुं.)	कवि
कविता (स्त्री.)	कविता, कवि की कृति
कशा (स्त्री.)	चाबुक
कषाय (वि.)	कसैला
कष्टम् (नपुं.)	दुःख, पीड़ा
कस् (कसति)	जाना
काकः (पुं.)	कौआ
काङ्क्षा (स्त्री.)	कामना
काचः (पुं.)	काँच
काण्डः-डम् (पुं./नपुं.)	एक खण्ड, एक भाग
कादम्बिनी (स्त्री.)	मेघमाला
कारकम् (नपुं.)	कारक (व्याकरण सम्बन्धी)
कालः (नपुं.)	समय
काव्यम् (नपुं.)	काव्य (कविता)
काश् (काशते)	प्रकाशित होना, चमकना
काष्ठम् (नपुं.)	लकड़ी
कास् कासते)	खासना
किङ्किणी (स्त्री.)	घुंघरू
किञ्चित् (नपुं., वि.)	कुछ
किन्तु (अव्य.)	लेकिन

शब्द	अर्थ
किम् (सर्व.)	क्या
कियत् (वि.)	कितना
किरणः (पुं.)	किरण
कीटः (पुं.)	कीड़ा
कीदृशः (वि)	कैसा
कीर्त्तनम् (नपुं.)	यशोगान, प्रशंसा करना
कुक्कुटः (पुं.)	मुर्गा
कुक्कुटी (स्त्री.)	मुर्गी
कुक्कुरः (पुं.)	कुत्ता
कुञ्चिका (स्त्री.)	चाबी
कुट्टणम् (नपुं.)	कूटना
कुटुम्बम् (नपुं.)	परिवार
कुण्डलम् (नपुं.)	कान का आभूषण
कुतः (अव्य.)	कहाँ से
कुतूहलम् (नपुं.)	जिज्ञासा, जानने की इच्छा
कुत्र (अव्य.)	कहाँ
कुत्रचित् (अव्य.)	कहीं
कुमारः (पुं.)	लड़का, किशोर
कुम्भकारः (पुं.)	कुम्हार
कुलम् (नपुं.)	वंश
कुशल (वि.)	निपुण, चतुर
कुशलिन् (वि.)	स्वस्थ, प्रसन्न
कूष्माण्डः (पुं.)	काशीफल
कूपः (पुं.)	कुँआ
कूर्चः (पुं.)	कूची
कूर्दनम् (नपुं.)	कूदना
कूर्मः (पुं.)	कच्छुआ
कूलम् (नपुं.)	तट
कृ (करोति)	करना
कृत्रिम (वि)	बनावटी
कृपण (वि.)	कंजूस
कृपा (स्त्री.)	कृपा, अनुग्रह
कृश (वि.)	पतला
कृष् (कर्षति)	जोतना, खींचना
कृषकः (पुं.)	किसान
कृष्ण (वि.)	काला
कृष्णफलकम् (नपुं.)	श्याम पट्ट
केशः (पुं.)	बाल
कैवर्तः (पुं.)	मछुआरा
कोकिलः (पुं.)	कोयल (पुं.)
कोणः (पुं.)	कोना, कोण
कोपः (नपुं.)	गुस्सा
कोमल (वि)	नरम
कोलाहलः (पुं.)	शोर
कोषः (पुं.)	खजाना, शब्दकोष
कोष्ठः (पुं.)	कमरा
कौमुदी (स्त्री.)	चाँदनी
कौशेयम् (नपुं.)	रेशम
क्रन्दनम् (नपुं.)	रोना
क्रमशः (अव्य)	बारी-बारी
क्रयणम् (नपुं.)	खरीदना
क्रिया (स्त्री.)	काम, क्रिया
क्री (क्रीणाति)	खरीदना
क्रीडनकम् (नपुं.)	खिलौना
क्रीडा (स्त्री.)	खेल
क्रोधः (पुं.)	गुस्सा
क्लेशः (पुं.)	कष्ट, पीड़ा
क्वथितम् (नपुं.)	साम्बर
क्षणम् (नपुं.)	क्षण भर
क्षमा (स्त्री.)	क्षमा, माफ़ी

क्षाल् (क्षालयति) धोना
क्षुरपत्रम् (नपुं.) ब्लेड, छुरा
क्षेत्रम् (नपुं.) खेत
क्षेमः (पुं.) कल्याण

(ख)

खगः (पुं.) पक्षी
खगः (पुं.) तलवार
खण्डः (पुं.) टुकड़ा
खन् (खनति) खोदना
खननम् (नपुं.) खोदना
खनित्रम् (नपुं.) फावड़ा
खर्वः (पुं.) खरब संख्या
खलः (पुं.) दुष्ट
खलु (अव्य.) निश्चयपूर्वक, वस्तुतः
खल्वाट (वि.) गंजा
खाद् (खादति) खाना, भोजन करना
खिन्न (त्रि.) दुःखी
खेदः (पुं.) शोक, अफ़सोस
खेल् (खेलति) खेलना

(ग)

गगनम् (नपुं.) आकाश, आसमान
गच्छति (द्र. गम) जाता है
गजः (पुं.) हाथी
गण् (गणयति) गिनना
गणः (पुं.) समूह
गदा (स्त्री.) गदा
गन्धः (पुं.) खुशबू
गभीर (वि.) गहरा, गम्भीर
गम् (गच्छति) जाना
गर्ज (गर्जति) गरजना
गर्जनम् (नपुं.) गरजना
गर्तम् (नपुं.) गड्ढा
गर्दभः (पुं.) गधा
गवेषकः (पुं.) अनुसंधान कर्त्ता
गायकः (पुं.) गाने वाला
गायिका (स्त्री.) गाने वाली, गायिका
गीतम् (नपुं.) गीत, गाना
गुम्फनम् (नपुं.) गूंथना
गुल्मः (पुं.) पेड़ों का झुरमुट
गुहा (स्त्री.) गुफा
गृञ्जनकम् (नपुं.) गाजर
गृहम् (नुपं.) घर
गृह गोधिका (स्त्री.) छिपकली
गृहजनः (पुं.) घर का सदस्य
गृह्णाति (द्र. ग्रह) ग्रहण करता है
गै (गायति) गाना
गोपालकः (पुं.) ग्वाला
गोशाला (स्त्री.) गोशाला
ग्रन्थः (पुं.) पुस्तक
ग्रह (ग्राह्लति) लेना, पकड़ना
ग्रामः (पुं.) गाँव
ग्रामीणः (पुं.) देहाती
ग्राहकः, ग्राहिका (पुं./स्त्री.) खरीदने वाला या वाली
ग्रीवा (स्त्री.) गर्दन

(घ)

घटः (पुं.)	घड़ा
घटना (स्त्री.)	वृत्तान्त, होने वाली बात (घटना)
घटी (स्त्री.)	घड़ी
घण्टानादः (पुं.)	घण्टे की आवाज़
घरट्टः (पुं.)	चक्की
घोटकः (पुं.)	घोड़ा
घ्रा (जिघ्रति)	सूंघना

(च)

चक्रम् (नपुं.)	पहिया
चञ्चुः (स्त्री.)	चोंच
चटकः (पुं.)	चिड़िया
चटका (स्त्री.)	चिड़िया
चतुर (वि)	चालाक
चन्दनम् (नपुं.)	चंदन की लकड़ी
चन्द्रः (पुं.)	चाँद, चन्द्रमा
चर् (चरति)	चरन, घूमना
चरित्रम् (नपुं.)	व्यवहार, चाल-चलन
चर्च् (चर्चयति)	चर्चा करना
चर्च् (चर्चयति)	अध्ययन करना
चर्व् (चर्वति)	खाना
चल् (चलति)	चलना
चषकः (पुं.)	प्याला, गिलास
चि (चिनोति)	चुनना
चिकित्सकः (पुं.)	वैद्य
चिकित्सा ((स्त्री.)	इलाज
चित्रम् (नपुं.)	तस्वीर
चित्रकारः (पुं.)	चित्रकार
चित्राङ्कनम् (नपुं.)	चित्रकारी
चिन्त् (चिन्तयति)	स्मारण करना, चिन्तन करना
चिन्तनम् (नपुं.)	विचार, सोचना
चिन्ता (स्त्री.)	उलझन, फ़िक्र
चिन्ह म् (नपुं.)	निशान
चुर् (चोरयति)	चुराना
चीत् ..... कृ (चीत्करोति4)	चीत्कार करना
चुल्लिः (स्त्री.)	चूल्हा
चूर्णम् (नुपं.)	चूर्ण
चोरः (पुं.)	चोर

(छ)

छत्रम् (नपुं.)	छाता
छद् (छादयति)	ढकना
छात्रः (पुं.)	छात्र
छात्रा (स्त्री.)	छात्रा
छात्रावासः (पुं.)	छात्रावास
छाया (स्त्री.)	छाया
छिद् (छिनति)	छेद करना, काटना
छुरिका (स्त्री.)	छुरी, चाकू

(ज)

जटा (स्त्री.)	जटा
जन् (जायत)	पैदा होना
जनः (पुं.)	व्यक्ति, मनुष्य
जनकः (पुं.)	पिता
जननी (स्त्री.)	माता
जन्तुशाला (स्त्री.)	चिड़ियाघर

जप् (जपति)	जप करना
जपः (पुं.)	जाप
जम्बीरम् (नपुं.)	नींबू
जलम् (नपुं.)	पानी
जल्प् (जल्पति)	बोलना, गपशप करना, बकवास करना
जल्पनम् (नपुं.)	बकवास करना
जलाशयः (पुं)	तालाब
जवनिका (स्त्री.)	परदा
जागरूकः (स्त्री.)	जागरूक, सजग
जायते (द्र. जन्)	हो रहा है
जानाति (द्र. ज्ञा)	जानता है
जानु (नपुं.)	घुटना
जालम् (नपुं.)	जाल
जिघ्रति (द्र. घ्रा)	सूँघता है
जिज्ञासा (स्त्री.)	जानने की इच्छा
जिह्वा (स्त्री.)	जीभ
जीव् (जीवति)	जीवित रहना
ज्ञा (जानति)	जानना
ज्ञानम् (नुपं.)	ज्ञान
ज्येष्ठ (वि)	सबसे बड़ा
ज्योतिषम् (नपुं.)	ज्योतिष
ज्वरः (पुं.)	बुखार

(झ)

झटिति (अव्य.)	जल्दी से
झषः (पुं.)	मछली

(ट)

टङ्कः (पुं.)	कुल्हाड़ा
टङ्ककः (पुं.)	टाइप करने वाला

(ड)

डमरुः (पुं.)	डमरू, डुग-डुगी

(ढ)

ढक्का (स्त्री.)	बड़ा ढ़ोल

(त)

तक्षकः (पुं.)	बढ़ई
तड् (ताडयति)	प्रताडित करना
तडागः (पुं.)	तालाब, जलाशय
तण्डुलः (पुं.)	चावल
ततः (अव्य.)	वहाँ से
तत्र (अव्य.)	वहाँ
तथा (अव्य.)	उसी प्रकार
तथैव (अव्य.)	उसी प्रकार
तद् (अव्य.)	वह
तदा(अव्य.)	तब
तन्तुवायः (पुं.)	बुनकर, जुलाहा
तन्त्रज्ञः (पुं.)	तंत्र को जानने वाला
तरति (द्र. तॄ)	
तरुण (वि.)	जवान
तरुणी (स्त्री.)	युवती
तर्ज् (तर्जति)	डराना, धमकाना
तर्जनम् (नपुं.)	धमकी, तर्जना
ताडनम् (नपुं.)	पिटाई
तालकम् (नपुं.)	ताला
तावत् (अव्य)	तब तक
तिक्त (वि.)	तीखा
तिष्ठति (द्र. स्था)	
तीरम् (नपुं.)	तट, किनारा
तीर्थम् (नपुं.)	पुण्य तीर्थ

तुला (स्त्री.)	तराजू
तुल् (तोलयति)	तौलना
तूष्णीम् (अव्य)	मौन
तृ (तरति)	तैरना
तृणम् (नपुं.)	तिनका, घास
तृषित (त्रि.)	प्यासा
त्यज् (त्यजति)	त्याग करना
त्यागः (पुं.)	छोड़ना
त्वरा (स्त्री.)	शीघ्रता, जल्दबाजी

(द)

दंश् (दशति)	काटना, डंक मारना
दण्ड् (दण्डयति)	दण्ड देना, जुर्माना करना
दण्डः (पुं.)	डंडा
ददाति	देता है
दधि (नपुं.)	दही
दन्तः (पुं.)	दाँत
दम्पती (स्त्री.)	दंपती
दया (स्त्री.)	दया, सहानुभूति
दरिद्र (वि.)	गरीब
दर्पः (पुं.)	घमण्ड
दर्पणः (पुं.)	देखने का शीशा
दर्वी (स्त्री.)	कलछी, कड़छी
दर्शनम् (नपुं.)	देखना
दर्शननीय (वि.)	देखने योग्य
दशति (द्र. दंश)	
दह् (दहति)	जलना
दा (ददाति)	देना
दा (यच्छति)	देना
दाडिमम् (नपुं.)	अनार (एक फल)
दाता (पुं.)	देने वाला
दानम् (नपुं.)	देने की क्रिया, दान
दिनम् (नपुं.)	दिन
दिश् (दिशति)	देना, आदेश देना, कहना
दीक्षा (स्त्री.)	किसी व्रत को लेना
दीपः (पुं.)	दीपक
दुग्धम् (नपुं.)	दूध
दुर्गः (पुं.)	किला
दुर्लभ (वि.)	कठिनाई से प्राप्त होने वाला
दुःस्वप्नः (पुं.)	बुरा सपना
दूरम् (अव्य.)	दूर
दूरात् (अव्य.)	दूर, से
दूरे (अव्य.)	दूर
दृश् (पश्यति)	देखना
दृश्यम् (नपुं.)	दृश्य, दिखाई देने वाला
दृष्टिः (स्त्री.)	दृष्टि, नज़र
देवः (पुं.)	देवता
देवरः (पुं.)	पति को छोटा भाई
द्रव्यम् (नपुं.)	वस्तु, धन
द्राक्षा (स्त्री.)	अंगूर
द्रुह् (द्रुह्यति)	द्रोह करना
द्रोणी (स्त्री.)	बाल्टी
द्वयम् (नपुं.)	दो का समूह, जोड़ा
द्वारम् (नपुं.)	दरवाज़ा

(ध)

धनम् (नपुं.)	रुपया-पैसा, धन
धनिकः (पुं.)	धनी
धन्याकम् (नपुं.)	धनिया

धरति	धारण करता है	नमनम् (पुं.)	नमस्कार
धर्मः (पुं.)	कर्त्तव्य	नमस् कृ नमस्करोति,	नमस्कार करना
धातुः (पुं.)	धातु	नमः (अव्यय)	नमस्कार
धात्री (स्त्री.)	दाई	नम्र (वि.)	विनयशील
धान्यम् (नपुं.)	धान	नयनम् (नपुं.)	नेतृत्व करना, आँख
धारा (स्त्री.)	जलधारा	नरः (पुं.)	पुरुष
धाव् (धावति)	दौड़ना, शुद्ध करना	नर्त्तकः (पुं.)	नाचने वाला
		नर्त्तकी (स्त्री.)	नाचने वाली
धावकः (पुं.)	दौड़ने वाला	नश् (नश्यति)	नष्ट होना
धाविका (स्त्री.)	दौड़ने वाली		
धीवरः (पुं.)	मछुवारा	नाणकम् (नपुं.)	सिक्का
धृ (धरति)	धारण करना, रखना	नायकः (पुं.)	नेता
	उद्धृत करना,	नापितः (पुं.)	नाई
	उद्धार करना	नायिका (स्त्री.)	नेतृत्व करने वाली
धेनुः (स्त्री.)	गाय	नाविकः (पुं.)	नाविक
धैर्यम् (नपुं.)	धीरता	नारिकेलः (पुं.)	नारियल
ध्यानम् (नपुं.)	ध्यान	नासिका (स्त्री.)	नाक
ध्यायति	ध्यान करता है	निद्रा (स्त्री.)	नींद
ध्यै (ध्यायति)	ध्यान करना	नि + द्रा (निद्राति)	सोना
(न)		निन्द् (निन्दति)	निन्दा करना
न (अव्य)	नहीं	निन्दनम् (नपुं.)	निंदा करना
नकुलः (पुं.)	नेवला	निमेषः (पुं.)	आँख झपकने का समय
नक्षत्रम् (नपुं.)	तारा		
नखरञ्जनी (स्त्री.)	नेलपालिश	निर्+आ+कृ (निराकरोति)	निराकरण करना
नदी (स्त्री.)	नदी		
ननान्दा (स्त्री.)	ननद	निर्+गम् (निर्गच्छति)	निकलना, बाहर जाना
ननु (अव्य)	निश्चय से		
नन्द् (नन्दति)	प्रसन्न होना		
नम् (नमति)	नमन करना, शब्द करना	निर् +दिश् (निर्दिशति)	निर्देश देना

निर्माणम् (नपुं.)	बनाना, रचना
निर्वापनम् (नपुं.)	बुझाना
निवासः (पुं.)	निवास
निवेदनम् (नपुं.)	प्रार्थना करना
निविद (निवेदयत्)	निवेदन करना
निवस् (निवसति)	वास करना
निःशक्तिः (स्त्री.)	दुर्बलता
निश्चल (वि.)	स्थिर, गतिहीन
निश्चिन्ता (स्त्री.)	पक्का, दृढ़ता
निष्कासनम् (नपुं.)	निकालना
निस् + कस् + णिच् (निष्काषयति)	निकालना
निस्थानम् (नपुं.)	स्टेशन
नी (नयति)	ले जाना
नील (वि.)	नीला
नूतन (वि.)	नया
नूनम् (अव्य.)	अवश्य
नृत् (नृत्यति)	नाचना
नृत्यम् (नपुं.)	नाच
नृपः (पुं.)	राजा
नेत्रम् (नपुं.)	आँख
नैव (अव्य.)	कभी नहीं
नो चेत् (अव्य.)	नहीं तो, अन्यथा
निरीक्षा	ध्यान रखना, निरीक्षण करना
पक्षः (पुं.)	पंख, एक खण्ड
पङ्कः (पुं.)	कीचड़
पङ्क्तिः (स्त्री.)	पंक्ति
पच् (पयति)	पकाना
पठ् (पठति)	पढ़ना

पठनम् (नपुं.)	पढ़ना, वाचन
पञ्जरम् (नपुं.)	पिंजरा
पञ्जिका (स्त्री.)	रजिस्टर
पण्डित (वि.)	बुद्धिमान्
पत् (पतति)	गिरना
पत्रम् (नपुं.)	पत्ता, चिट्ठी
पत्रभारः (पुं.)	पेपरवेट
पत्रवाहः (पुं.)	डाकिया
पत्रिका (स्त्री.)	पत्रिका
पथिकः (पुं.)	यात्री
पद् (पद्यत)	जाना
पदम् (नपुं.)	कदम, स्थान, पद
पद्मम् (नपुं.)	कमल
पद्यम् (नंपु.) एक भेद),	पद्य (काव्य का पद
पनसम् (नपुं.)	कटहल का फल
परम्परा (स्त्री.)	परम्परा
परस्परम् (अव्य.)	आपस में
पराक्रमः (पुं.)	वीरता, बहादुरी
परिचयः (पुं.)	पहचान
परिचारिकाः (स्त्री.)	नौकरानी
परि + नी (परिणयति)	विवाह करना
परिणामः (पुं.)	नतीजा
परितः (अव्य.)	चारों ओर
परि + त्यज् (परित्यजति)	परित्याग करना
परिमार्जनम् (नपुं.)	सफाई
परिवर्तः (पुं.)	तबदीली, बदलाव, रेज़गारी
परिवारः (पुं.)	कुटुम्ब, परिवार
परि+विष +णिच् (परिवेषयति)	परोसना

परि+शील् (परिशीलयति)	परिशीलन करना	पितामहः (पुं.)	दादा
		पितामही (स्त्री.)	दादी
परि+कृ (परिष्करोति)	परिष्कार करना	पितृव्यः (पुं.)	चाचा
		पिपीलिका (स्त्री.)	चींटी
पर्वतः (पुं.)	पहाड़	पिबति (पा)	पीता है
पलाण्डुः (पुं.)	प्याज	पीड् (पीडयति)	पीडित करना
पलायनम् (नपुं.)	भाग जाना		
पल्लवित (वि.)	खूब हरा-भरा, फैला हुआ	पुत्रः (पुं.)	पुत्र, बेटा
		पुत्री (स्त्री.)	पुत्री, बेटी
पवनः (पुं.)	वायु, हवा	पुनः (अव्य.)	फिर
पवित्र (वि.)	शुद्ध	पुरम् (नपुं.)	नगर
पश्यति	देखता है	पुरतः (अव्य.)	आगे, पहले
पा (पिबति)	पीना	पुरुषः (पुं.)	आदमी
पाकः (पुं.)	पकना, पका हुआ	पुरोहितः (पुं.)	पुजारी
पाकशाला (स्त्री.)	रसोईघर	पुष्पम् (नपुं.)	फूल
पाचकः (पुं.)	रसोइया	पुस्तकम् (नपुं.)	क़िताब
पाटलः (वि.)	गुलाबी, गुलाब	पूज् (पूजयति)	पूजा करना
पाठः (पुं.)	पढ़ाई, पाठ		
पाठनम् (नपुं.)	पढ़ाना	पूर् (पूरयति)	पूरा करना
पाठशाला (स्त्री.)	स्कूल, विद्यालय	पृच्छति (द्र. प्रच्छ)	
पात्रम् (नपुं.)	बर्तन	पृष्ठतः (अव्य.)	पीछे की ओर
पाथेयम् (नपुं.)	यात्रा के लिए खाद्य पदार्थ	पेटिका (स्त्री.)	पेटी
		प्रकोष्ठः (पुं.)	कमरा
पादः (पुं.)	पैर, चौथाई हिस्सा	प्रचारः (पुं.)	प्रचार
पादत्राणम् (नपुं.)	जूता	प्रच्छ् (पृच्छति)	पूछना
पानीयम् (नपुं.)	पीने योग्य पेय, पानी		
पायसम् (नपुं.)	खीर	प्रणामः (पुं.)	प्रणाम, नमस्कार
पारितोषिकम् (नपुं.)	इनाम	प्रति + गम् (प्रतिगच्छति)	लौटना
पाल् (पालयति)	रक्षा करना, पालन करना		
		प्रतिवेशिनी (स्त्री.)	पड़ोसन
पावकः (पुं.)	आग	प्रति+स्था+णिच् (प्रतिष्ठापयति)	प्रतिष्ठित करना
पिकः (पुं.)	कोयल		

प्रति+ईक्ष् (प्रतीक्षते)	प्रतीक्षा करना
प्रतीक्षा (स्त्री.)	इन्तज़ार
प्रकाशः (पुं.)	रोशनी
प्र+क्षाल् (प्रक्षालयति)	
प्र+चल्+णिच् (प्रचालयति)	चलाना
प्र+नम् (प्रणमति)	नमस्कार करना
प्रत्ययः (पुं.)	विश्वास शब्दों के बाद जुड़ने वाला शब्दांश (प्रत्यय)
प्रथमा (स्त्री.)	पहली
प्रदक्षिणा (स्त्री.)	परिक्रमा
प्रदर्शनम् (नपुं.)	दिखावा
प्रदर्शनी (स्त्री.)	नुमाईश
प्रदेशः (पुं.)	जगह
प्रदोषः (पुं.)	रात्रि का पहला प्रहर
प्रबन्धः (पुं.)	व्यवस्था
प्रभातम् (नपुं.)	ब्राह्ममुहूर्त, सवेरा
प्रभावः (पुं.)	असर
प्रयत्नः (पुं.)	कोशिश
प्रयाणम् (नपुं.)	यात्रा
प्रयोगः (पुं.)	इस्तेमाल, प्रयोग
प्रयोजनम् (नपुं.)	उद्देश्य
प्रवासः (पुं.)	यात्रा
प्रवाहः (पुं.)	बहाव
प्र+विश् (प्रविशति)	प्रवेश करना
प्रवीण (वि.)	चतुर, निपुण
प्रवेशः (पुं.)	दाखिला, प्रवेश

प्रशंसा (स्त्री.)	स्तुति
प्रशासनम् (नपुं.)	प्रबन्ध, व्यवस्था
प्रश्नः (पुं.)	सवाल
प्रसङ्गः (पुं.)	प्रकरण
प्रसन्न (त्रि)	खुश
प्र+साध्+णिच् (प्रसाधयति)	प्रसाधन करना
प्र+स+णिच् (प्रसारयति)	फैलाना
प्रसिद्ध (वि.)	विख्यात
प्र+सद् (प्रसीदति)	प्रसन्न होना
प्रस्तरः (पुं.)	पत्थर
प्रस्थानम् (नपुं.)	चल पड़ना, विदा होना
प्र+हृ (प्रहरति)	प्रहार करना
प्राक् (अव्य.)	पहले
प्राकारः (पुं.)	परकोटा
प्राचीन (वि.)	पुराना
प्रातः (अव्य.)	सवेरा
प्र+आप् (प्राप्नोति)	प्राप्त करना
प्रायशः (अव्य.)	अधिकतर
प्रारम्भः (पुं.)	आरम्भ
प्रिय (वि.)	प्यारा
प्रीतिः (स्त्री.)	प्रेम
प्रेरणा (स्त्री.)	प्रवृत्त करना
प्रेषयति	भेजना
प्रेषणम् (नपुं.)	भेजना
प्लु (प्लवत)	

(फ)

फणा : (स्त्री.)	फन

फल् (फलति)	फलना
फलम् (नपुं.)	फल
फलकम् (नपुं.)	पट्ट

(ब)

बकः (पुं.)	बगुला
बधिर (वि.)	बहरा
बध्नाति : (द्र. बध्)	
बध् (बध्नाति)	बंधना
बलम् : (नपुं.)	शक्ति
बहिः (अव्य.)	बाहर
बहिष् + कृ (बहिष्करोति)	बहिष्कार करना
बहु (वि.)	बहुत, अनेक
बहुशः (अव्य.)	प्रायः
बाणः (पुं.)	तीर
बालकः (पुं.)	लड़का
बालिका (स्त्री.)	लड़की
बिडालः (पुं.)	बिलाव
बिन्दुः (पुं.)	बूंद
बिभेति (द्र. भी)	
बीजम् (नपुं.)	बीज
बुक्क्	भौंकना
बुभुक्षा (स्त्री.)	खाने की इच्छा
बुधः	जानना, समझना
बृहत् (वि.)	बड़ा
ब्रगूः (ब्रवीति)	बोलना

(भ)

भक्त (वि.)	पूजा करने वाला
भक्षणम् (नपुं)	भोजन
भज् (भजति 4)	सेवा करना, पूजा करना
भटः (पुं.)	योद्धा
भयम् (नपुं.)	डर
भर्जनम् (नपुं.)	भूनना
भल्लूकः (पुं.)	भालू
भवान्	आप
भवती	आप (स्त्री.)
भवनम् (नपुं.)	भवन
भष् (भषति)	भोंकना, निन्दा करना
भास्करः (पुं.)	सूर्य
भागः (पुं.)	हिस्सा
भागिनेयः (पुं.)	भांजा
भाग्यम् (नपुं.)	किस्मत
भाण्डम् (नपुं.)	बर्तन
भारः (पुं.)	वजन
भारवाहकः (पुं.)	कुली
भिक्षुकः (पुं.)	भिखारी
भिषक् (पुं)	वैद्य
भी (विभेति.)	डरना, भयभीत होना
भुज् (भुङ्क्ते)	खाना
भू (भवति)	होना
भृज् (भर्जते)	भूनना
भृत्य (पुं.)	नौकर
भोगः (पुं.)	भोग, आनंद लेना
भोजनम् (नपुं.)	आहर
भोः (अव्य.)	हे! अरे !
भ्रम् (भ्रमति)	भ्रमण करना
भ्रमणम् (नपुं.)	घूमना
भ्रमरः (पुं.)	भौंरा

(म)

मकरः (पुं.)	मगरमच्छ
मक्षिका (स्त्री.)	मक्खी
मङ्गलम् (नपुं.)	कल्याण
मज्जनम् (नपुं.)	स्नान, डूबना
मञ्चः (पुं.)	ऊँचा बैठने का स्थान
मण्डपः (पुं.)	शामियाना
मण्डलम् (नपुं.)	गोलाकार
मण्डूकः (पुं.)	मेंढक
मत्कुणः (पुं.)	खटमल
मत्स्यः (पुं.)	मछली
मदः (पुं.)	अभियान
मधुर (वि.)	मधुर, मीठा
मन् (मन्यते)	मानना
मनुष्यः (पुं.)	आदमी
मन्त्रः (पुं.)	सलाह, वैदिकपद्य
मन्दिरम् (नपुं.)	देवालय
ममता (स्त्री.)	अपनापन, स्नेह
मयूरः (पुं.)	मोर
मरणम् (नपुं.)	मृत्यु
मरीचम् (नपुं.)	कालीमिर्च
मर्कटः (पुं.)	बन्दर
मशकः (पुं.)	मच्छर
मसी (स्त्री.)	स्याही
महिला (स्त्री.)	नारी, स्त्री
महिषी (स्त्री.)	भैंस
मांसम् (नपुं.)	मांस
मा (अव्य.)	नहीं, मत
मा (माति)	मानना
मातामहः (पुं.)	नाना
मातामही (स्त्री.)	नानी
मातुलः (पुं.)	मामा
मात्रम् (नपुं.)	केवल, मात्र
मार्गः (पुं.)	रास्ता, राह
माला (स्त्री.)	हार
मालाकारः (पुं.)	माली
मित्रम् (नपुं.)	दोस्त
मिल् (मिलति)	मिलना
मिलनम् (नपुं.)	मिलना
मिश्रणम् (नपुं.)	मिलाना
मीनः (पुं.)	मछली
मुखम् (नपुं.)	मुंह
मुख्य (वि.)	बड़ा, मुखिया
मूलम् (नपुं.)	जड़
मूलकम् (नपुं.)	मूली
मूल्यम् (नपुं.)	कीमत
मूषकः (पुं.)	चूहा
मृ (म्रियते)	मरना
मृगः (पुं.)	हरिण
मृज् (मार्जयति)	स्वच्छ करना
मृत्युः (पुं.)	मौत
मृद् (मृदनति)	मर्दन करना, मलना रगड़ना
मेघः (पुं.)	बादल
मेलनम् (नपुं.)	मिलाना
मोदकः कम् (पुं. नपुं.)	लड्डू
म्रियते (मृ)	

(य)

यच्छति	देता है
यजमानः (पुं.)	यज्ञ करने वाला
	यज्ञ करता हुआ

यत् (अव्य.)	जो कि
यतः (अव्य.)	क्योंकि, जहां से
यत्र (अव्य.)	जहाँ
यथा (अव्य.)	जैसे
यदा (अव्य)	जब
यदि (अव्य.)	अगर
यद्यपि (अव्य.)	चाहे, भले ही
यन्त्रम् (नपुं.)	मशीन
या (याति)	जाना, प्राप्त करना
चाव् (याचते)	याचना करना, भीख मांगना
याचकः (पुं.)	भिक्षुक, मांगने वाला
यात्र (स्त्री.)	सफर
यानम् (नपुं.)	गाड़ी
यावत् (वि.)	जब तक जितना जितने
युज् (योजयति)	लग्राना, संयोजित करना, संयमित करना
युद्धम् (नपुं.)	लड़ाई
युवती (स्त्री.)	जवान स्त्री
योजयति (द्र. युज्)	

(र)

रक्षकः (पुं.)	रक्षा करने वाला
रक्षा (स्त्री.)	बचाव, रक्षा
रच् (रचयति)	व्यवस्थित करना, रचना
रजकः (पुं.)	धोबी
रजनी (स्त्री.)	रात
रज्जुः (स्त्री.)	रस्सी
रथः (पुं.)	रथ
रन्ध्रिका (स्त्री.)	पंचिंग मशीन
रभ् (रभते)	शीघ्रता करना आरम्भ करना
रम् (रमते)	क्रीडा करना
रहस्यम् (नपुं.)	छिपी बात, रहस्य
राक्षसः (पुं.)	राक्षस
रागः (पुं.)	रंग
रुच्	अच्छा लगना
रुद्	रोना
रुध् (रुणाद्धि)	रोकना
रुह् (रोहति)	चढ़ना
रूप्यकम् (नपुं.)	रुपया
रोदनम् (नपुं.)	रोना

(ल)

लक्ष्यम् (नपुं.)	उद्देश्य.
लघु (वि.)	छोटा, हलक
लङ्घनम् (नपुं.)	लांघना
लज्जा (स्त्री.)	लज्जा
लता (स्त्री.)	बेल
लतिका (स्त्री.)	छोटी बेल
लब्ध (त्रि.)	प्राप्त
ललाटम् (नपुं.)	मस्तक
लवणम् (नपुं.)	नमक
लवित्रम् (नपुं.)	दरांता, हंसिया
लाभः (पुं.)	फायदा, लाभ
लिख् (लिखति)	लिखना
लीला (स्त्री.)	विनोद
लृङ् (लोडति)	मथना
लुण्ठाकः (पुं.)	लुटेरा
लुण्ठनम् (नपुं.)	लूट, डकैती
लुण्ठाकः	लुटेरा
लू (लुनाति)	छेदना, काटना

लेखः (पुं.)	लेख
लेखकः (पुं.)	लिखने वाला
लेखनम् (नपुं.)	लिखने का काम
लेखनी (स्त्री.)	कलम
लेशः (पुं.)	अंश
लेह (पुं.)	चटनी
लोक् (लोकते)	देखना
लोकः (पु.)	संसार, दुनिया लोग
लोपः (पु.)	गायब होना, लुप्त होना

(व)

वचनम् (नपुं.)	कथन, कहना
वज्रम् (नपुं.)	बिजली, इन्द्र का शस्त्र
वञ्चकः (पु.)	ठग
वत्सः/त्सा (पु./स्त्री.)	बच्चा
वत्सरः (पुं.)	वर्ष, साल
वद् (वदति)	कहना
वदनम् (नपुं.)	बोलना, मुख चेहरा
वधः (पुं.)	हत्या
वनम् (नपुं.)	जंगल
वनिता (स्त्री.)	नारी
वन्दनीय (वि.)	प्रणाम करने योग्य
वपनम् (नपुं.)	बोने का काम, मुण्डन
वमनम् (नपुं.)	उलटी करना
वयनम् (नपुं.)	बुनना
वयस्य (वि.)	मित्र
वरुणः (पुं.)	वरुण देवता
वर्णः (पुं.)	रंग, अक्षर
वर्तिका (स्त्री.)	बत्ती
वर्धनम् (नपुं.)	बढ़ना
वर्धापनम् (नपुं.)	बधाई
वर्षम् (स्त्री.)	बरसना, वर्षा ऋतु
वस् (वसति)	रहना
वस्तु (नपुं.)	चीज़
वस्तुतः (अव्य.)	दरअसल, वास्तव में
वस्त्रम् (नपुं.)	कपड़ा
वह् (वहति)	ले जाना, ढोना, बहना
वाक्यम् (नपुं.)	वाक्य
वाटिका (स्त्री.)	छोटा बगीचा
वाणी (स्त्री.)	आवाज़/वाणी
वातायनम् (नपुं.)	खिड़की
वादः (पुं.)	चर्चा
वादनम् (नपुं.)	बजे
वाद्यम् (नपुं.)	बाजा
वानरः (पुं.)	बन्दर
वासरः (पुं.)	दिन
वाहनम् (नपुं.)	वाहन
वि कस् (विकसति)	विकसित होना
विकासः (पुं.)	उन्नति, खिलना
वि क्री (विक्रीणते)	बेचना
विघ्नः (पुं.)	रुकावट
वि चर् (विचरति)	विचरण करना
विचारः (पुं.)	विचार
विच्छेदः (पुं.)	अलगाव
विजयः (पुं.)	जीत
विद् (वेदयते)	अनुभव करना
वि + ज्ञा (विजानाति)	जानना
विदूषकः (पुं.)	हंसाने वाला
विद्योतिनी (स्त्री.)	चमकने वाली
विना (अव्य.)	बगैर
विनोदकणिका	चुटकला

शब्द	अर्थ
विपणिः/विपणी (स्त्री.)	बाजार
वियोगः (पुं.)	विछोह, अलग होना
विलम्बः (पुं.)	देरी
विलिख् (विलिखति)	लिखना
विश् (विशति)	प्रवेश करना
विश्वासः (पुं.)	विश्वास, यकीन
विषादः (पुं.)	दुःख
विस्तरः (पुं.)	फैलाव
विस्मयः (पुं.)	आश्चर्य
विस्मरणम् (नपुं.)	भूल जाना
वि+स्मृ (विस्मरति)	भूलना
वि+हृ (विहरति)	विहार करना
वि+हस् (विहसति)	हंसना
वृकः (पुं.)	भेड़िया
वृक्षः (पुं.)	पेड़
वृद्धः (वि.)	वृद्ध
वृश्चिकः (पुं.)	बिच्छू
वृषभः (पुं.)	बैल, सांड
वेगः (पुं.)	गति
वेणी (स्त्री.)	स्त्री की चोटी
वेदना (स्त्री.)	पीड़ा
व्यजनम् (नपुं.)	व्यञ्जन
व्ययः (पुं.)	खर्च
व्यवस्था (स्त्री.)	प्रबन्ध
व्यवहारः (पुं.)	व्यवहार
व्याकुल (वि.)	भ्रान्त, व्याकुल
व्याघ्रः (पुं.)	बाघ
व्याधः (पुं.)	शिकारी

(श)

शब्द	अर्थ
शकटः-टम् (पुं/नपुं.)	वाहन, गाड़ी भार ढोने की गाड़ी
शक्तिः (स्त्री.)	ऊर्जा, बल
शङ्का (स्त्री.)	संदेह
शतम् (नपुं.)	सौ की संख्या
शत्रुः (पुं.)	दुश्मन
शनैः (अव्य.)	यथाक्रम, क्रमशः
शपथः (पुं.)	शपथ, कसम
शब्दः (पुं.)	ध्वनि, आवाज, शोर
शय्या (स्त्री.)	बिस्तरा
शरणम् (नपुं.)	सहायता, आश्रय
शरीरम् (नपुं.)	देह, काया
शर्करा (स्त्री.)	चीनी
शलाका (स्त्री.)	सलाई
शशकः (पुं.)	खरगोश
शस्त्रम् (नपुं.)	हथियार
शाकः, कम् (पुं/नपुं.)	सब्जी
शाखा (स्त्री.)	पेड़ की टहनी
शाटिका (स्त्री.)	साड़ी
शान्तिः (स्त्री.)	आराम, शान्ति
शापः (पुं.)	अभिशाप
शिक्षक (पुं.)	पढ़ाने वाला (अध्यापक)
शिक्षिका (स्त्री.)	पढ़ाने वाली (अध्यापिका)
शिक्षणम् (नपुं.)	सिखाना, पढ़ाना
शिक्षितः (पुं.)	पढ़ा-लिखा
शिखरः (पुं.)	चोटी (पहाड़ की)
शिखा (स्त्री.)	सिर की चोटी पर बालों का गुच्छा, कलगी.
शिरः (नपुं.)	सिर
शिला (पुं.)	पत्थर, चट्टान
शिष्यः (पुं..)	विद्यार्थी

शीघ्रम् (अव्य.)	जल्दी से
शी (शेत)	सोना
शीर्षकम् (नपुं.)	सिर, चोटी
शीतकः (पुं.)	कोई ठंडी वस्तु, फ्रीज
शील् (शीलयति)	अभ्यास करना
शीतल + कृ (शीतलीकरोति)	ठण्डा करना
शीलः लम् (पुं/नपुं.)	स्वभाव, प्रकृति
शुकः (पुं.)	तोता
शुभः (वि.)	भला, कल्याण
शुनकः (पुं.)	कुत्ता
शुल्कः (पुं.)	महसूल, शुल्क
शुष् (शुष्यति)	सूखना
शूर (वि.)	बहादुर, वीर
शूर्पः (पुं.)	सूप, छाज
शूकरः (पुं.)	सुअर
शृगालः (पुं.)	गीदड़
शृणोति	सुनता है
शेखरः (पुं.)	चोटी
शेष (वि.)	बचा हुआ
शैलः (पुं.)	पहाड़
शोकः (पुं.)	दुःख कष्ट
शोधनी (स्त्री.)	झाड़ू
शोभा (स्त्री.)	कान्ति, दीप्ति
श्मश्रु (नपुं.)	दाढ़ी, मूंछ
श्यालः (पुं.)	साला
श्रद्धा (स्त्री.)	आस्था, निष्ठा
श्रमः (पुं.)	मेहनत
श्रान्त (वि.)	थका हुआ
श्रि (श्रयति)	सेवा करना
श्रु (शृणोति)	सुनना
श्लाघ् (वि.)	प्रंशसा करना
श्लोकः (पुं.)	पद्य रचना
श्वस् (श्वसिति)	श्वास लेना
श्वसुरः (पुं.)	ससुर
सम् ग्रह् (संगृह्णाति)	संग्रह करना
सम् दिश् (संदिशति)	सन्देश देना
संयमः (पुं.)	नियन्त्रण
संयोजनम् (नपुं.)	एक साथ जोड़ना
संलग्नः (पुं.)	सटा हुआ, लगा हुआ
संवत्सरः (पुं.)	वर्ष
संवादः (पुं.)	बातचीत, वार्तालाप
संशोधक (वि.)	त्रुटि दूर करने वाला शुद्ध करने वाला
संसर्गः (पुं.)	साहचर्य, सम्पर्क
संसारः (पुं.)	संसार
संस्कारः (पुं.)	संस्कार
सम् + स्था +णिच् (संस्थापयति)	संस्थापित करना
सम् + स्मृ (संस्मरति)	स्मरण करना
सम् +हृ	संहार करना
सकल (वि.)	समस्त, सब
सकृत् (अव्य.)	एक बार
सङ्कट (वि.)	खतरा, कठिनाई मुसीबत
सङ्करः (पुं.)	मिलावट,अन्तर्मिश्रण
सङ्कल्पः (पुं.)	इच्छाशक्ति,मानसिक दृढ़ता संकल्प
सङ्केतः (पुं.)	इशारा, संकेत
संख्या (स्त्री.)	संख्या
सङ्गः (पुं.)	साथ मिलना, मैत्री

संग्रहः (पुं.)	इकट्ठा करना	समुद्रः (पुं.)	सागर, महासागर
सचिवः (पुं.)	सचिव, परामर्शदाता	सम्पर्कः (पुं.)	संबंध
सज्ज (वि.)	तैयार, तत्पर	सम् +पद् +णिच्	सम्पादित करना
सज्जा (स्त्री.)	सुसज्जा, सजावट	(सम्पादयति)	
सत् कृ (सत्करोति)	सत्कार करना	सम्प्रति (अव्य.)	अब, इस समय
सत्य (वि.)	सच्चा	सम्बन्धिन् (वि.)	सम्बद्ध
सत्वरम् (अव्य.)	जल्दी से	सम् + प्रेष +णिच	पहुंचाना
सद् (सीदति)	बैठना, खिन्न होना	(सम्प्रेषयति)	
सदा (अव्य.)	हमेशा	सम्बोधनम् (नपुं.)	संबोधित करना
सन्तापः (पुं.)	दुःख	सम्मर्दः (पुं.)	भीड़ भाड़, जमघट
सन्तोषः (पुं.)	सन्तोष, संतुष्टि	सम्मार्जनी (स्त्री.)	झाड़ू
सन्दंशः (पु.)	चिमटा, सन्डासी	सम्मेलनम् (नपुं.)	सभा, उत्सव
सन्देशः (पुं.)	समाचार, संदेश	सर्व (नि. वि.)	सब, प्रत्येक
सन्ध्या (स्त्री.)	प्रातः एवं सायं	सर्पः (पुं.)	साँप
	काल की संधि बेला	सर्वतः (अव्य.)	सब ओर से
सन्नहः (पुं.)	तैयारी	सर्वत्र (अव्य.)	सब जगहों पर
सन्निहितः (पुं.)	निकटस्थ	सर्वथा (अव्य.)	सब प्रकार से
सपाद (वि.)	एक चौथाई	सर्वदा (अव्य.)	हमेशा
सफल (वि.)	उत्तीर्ण	सर्षपः (पुं.)	सरसों
सभा (स्त्री.)	परिषद्, सभा	सस्यम् (नपुं.)	अनाज
सभाजनम् (नपुं.)	सम्मान करना,	सह् (साहयति,)	सहन करना
	अभिवादन करना	सह (अव्य.)	साथ
समर्थ (वि.)	शक्तिशाली	सहसा (अव्य.)	अचानक, बिना
समर्पणम् (वि.)	सौंपना	सोचे विचारे	
समस्या (स्त्री.)	कठिनाई, समस्या	साकम् (अव्य.)	साथ
समाचारः (पुं.)	समाचार	साध् (साध्नोति)	पूर्ण करना
समाधानम् (नपुं.)	प्रश्न का उत्तर देना	साधनम् (नपुं.)	उपकरण
समान (वि.)	तुल्य	सायम् (अव्य.)	शाम का समय
समापनम् (नपुं.)	पूर्ति करना	सारः (पुं.)	सार, असलीयत
सम् आप् (समाप्नोति)		सारिका (स्त्री.)	मैना
समारोहः (पुं.)	समारोह	सिंहः (पुं.)	शेर
समीचीन (वि.)	अच्छा, उचित	सिकता (स्त्री.)	रेत
समीप (वि.)	निकट, नजदीक	सिच् (सिञ्चति)	सींचना

सिव् (सीव्यति)	सिलना
सुखम् (नपुं.)	प्रसन्नता, सुख
सुधाखण्डः (पुं.)	चाक का टुकड़ा
सूच् (सूचयति)	निर्देश देना, इंगित करना
सूत्रम् (नपुं.)	धागा
सूपः (पुं.)	पकी दाल
सूर्यः (पुं.)	सरज, सूर्य
सृ (सरति)	जाना
सेना (स्त्री.)	फौज, सेना
सेवकः (पुं.)	नौकर
सैनिकः (पुं.)	सिपाही
सोदरः (पुं.)	सगा भाई
सोपानम् (नपुं.)	सीढ़ी
सौचिकः (पुं.)	दर्ज़ी
सौदामिनी (स्त्री.)	बिजली
स्तबकः (पुं.)	गुच्छा
स्था (तिष्ठति)	ठहरना
स्थानम्	जगह
स्थानकम्	स्टेशन
स्थूल (वि.)	मोटा
स्नानम् (नपुं.)	जगह
स्निह (स्निह्यति)	स्नेह करना
स्नेहः (पुं.)	प्यार, प्रेम
स्पर्धा (स्त्री.)	प्रतियोगिता (मुकाबला उर्दू शब्द है)
स्पर्शः (पुं.)	छूना
स्पश् (स्पृशति)	स्फुरित होना
स्म (अव्य.)	था, थे, थी
स्मरणम् (नपुं.)	याद
स्मृ (स्मरति)	स्मरण करना
स्यूतः (पुं.)	बैग, थैला
स्वप् (स्वपिति)	सोना
स्वर्णकारः (पुं.)	सुनार
स्वादिष्ठम् (नपुं.)	अधिक स्वादु
स्वास्थ्यम् (नपुं.)	सेहत
स्वकृ (स्वीकरोति)	स्वीकार करना
स्वेदः (पुं.)	पसीना
स्वेदकम् (नपुं.)	स्वेटर

(ह)

हंसः (पुं.)	हंस
हननम् (नपुं.)	हत्या
हन् (हन्ति)	मारना, जाना
हरणम् (नपुं.)	चुराना
हरिणः (पुं.)	हिरण
हरित (वि.)	हरा
हरिद्रा (स्त्री.)	हल्दी
हर्षः (पुं.)	खुशी
हलम् (नपुं.)	हल
हस् (हसति)	हंसना
हस्तः (पुं.)	हाथ
हस्तिपकः	महावत
हा ! (अव्य.)	हाय !
हा (जहाति)	छोड़ना
हारः (पुं.)	माला
हासः (पुं.)	हंसी
हि (अव्य.)	निश्चय से
हितम् (नपुं.)	भलाई
हिमम् (नपुं.)	बर्फ
हृ (हरति)	ले जाना, हरण करना, चुराना
हृदयम् (नपुं.)	दिल
होमः (पुं.)	होम, हवन
ह्यः (अव्य.)	बीता हुआ दिन
ह्रस्व (वि.)	छोटा, अल्प
ह्वयति (द्र. ह्वे)	
ह्वे (ह्वयति)	बुलाना, पुकारना, ललकारना

तृतीय : अध्याय
परिशिष्ट

फलवर्ग

अखरोट	=	अक्षोटम् (पुं. नपुं)	जामुन	=	जम्बुः, ज़म्बुफलम्
अङ्गूर	=	द्राक्षा	तरबूजा	=	तारबूजम्, कालिन्दम्
अञ्जीर	=	अञ्जीरम्	नारियल	=	नारिकेलम्
अनार	=	दाडिमम्	नाशपाती	=	आटतफलम्, रूचिफला
अमरूद	=	पेरूकम्	पपीता	=	एरण्डफलम्
आम	=	आम्रम्	फूट	=	स्फुटः, स्फुटी
आँवड़ा	=	आम्रातकम्	बड़हल	=	क्षुद्रपनसः, लकुचम्
इमली	=	अम्लिका	बेर	=	बदरीफलम्, कर्कन्धुः
ककड़ी	=	कर्कटिका	बेल	=	विल्वम्
कटहल	=	पनसः	मखाना	=	मखन्नम्
कदम	=	कदम्बः	मुनक्का	=	मधुरिका
नींबू	=	जम्बीरम्, निम्बूकम्	महुआ	=	मधूकम्
काजू	=	काजवम्	मुसम्मी	=	मातुलङ्गः
किशमिश	=	शुष्कद्राक्षा	मूँगफली	=	कलायः
केला	=	कदलीफलम्	मेवा	=	शुष्कफलम्
खजूर	=	खर्जूरम्	लीची	=	लीचिका
खरबूजा	=	खर्बजम्, दशाङ्गुलम्	सन्तरा	=	नारङ्गम्
खीरा	=	चर्मटिः, त्रपुषम्	शरीफा	=	सीताफलम्
गूलर	=	उदुम्बरम्	सिंघाड़ा	=	श्रङ्गाटकम्
चिरौञ्जी	=	प्रियालम्	छुहारा	=	क्षुधहरम्, शुष्कखर्जुरम्

शाक वर्ग

अरबी (घूइयाँ)	=	आलुकी	लौकी	=	अलाबु
आलू	=	आलुः, आलुकम्	बथुआ	=	वास्तुकम्
ककड़ी	=	कर्कटी, कर्कटिका	शकरकन्द	=	शक्रकन्दः
करैला	=	कारवेल्लम्	शलगम	=	श्वेतकन्दः
कुन्दरू	=	कुन्दरूः	शाक	=	शाकम्
कुम्हड़ा	=	कुष्माण्ड्म् कुण्माण्ड	सूरन	=	शूरणः
गाजर	=	गृञ्जनम्	सेम	=	सिम्बा
धेवड़ा	=	महाकोशातकी	टमाटर	=	रक्ताङ्गः वृन्ताकम्
तरोई	=	कोशातकी	परवल	=	पटोलः, पटोलकम्
पालक	=	पालकी, पालक्या	प्याज	=	पलाण्डुः, सुकन्दकः
बण्डा	=	पिण्डालुः	बैगन	=	वृन्ताकम्, भण्टाकी
भिण्डी	=	भिण्डकः	मटर	=	कलायः
मूली	=	मूलकम्, हरिपर्णम्	रामतरोई	=	राजकोशातकी

उपस्कर (मसाला) वर्ग

लहसुन	=	लशुनः	अजवाइन	=	यवानी
अदरख	=	आर्द्रकम्	इलायची	=	एला
कालानमक	=	कृष्णलवणम्	कालीमिर्च	=	कृष्णमास्विम्
जीरा	=	जीरकम्	तेजपात	=	तेजपत्रम्
दालचीनी	=	दारुत्वचम्	धनिया	=	धन्या, धान्यकम्, पितुयकम्, छत्र
पान	=	ताम्बूलम्	पोदीना	=	पुदिनः, अजगन्धः
मसाला	=	उपस्करः, वेशवारः	मेथी	=	मेथिका
लौंग	=	लवङ्गम्	सुपारी	=	पूंगीफलम्, पूगफलम्
सोंठ	=	शुण्ठी, नागरम्	सौंफ	=	शतपुष्पा, मधुरा
हल्दी	=	हरिद्रा, काञ्चनी, वरदर्णिनी, पीता	हीङ्ग	=	हिङ्गुः, जतुकम्

अङ्गों के नाम

अंग	=	अवयवः	चूतड़	=	नितम्ब
अण्डकोष	=	वृषणः	छाती	=	वक्षः, वक्षस्थलम्
अंगुली	=	अंगुलिः	जाँघ	=	उरू
अंगूठा	=	अङ्गुष्ठ	जीभ	=	जिह्वा, रसना
आँख	=	नेत्रम्	जूड़ा	=	वेणिः
आँख की पुतली	=	कनीनिका	ढोड़ी	=	चिबुकम्
एड़ी	=	पार्ष्णिः, पार्श्वनी	डाढ़ी मूँछ	=	श्मश्रू (नपुं.)
कन्धा	=	स्कन्धः	ढोडी के बीच का गड्ढा	=	आसिकम्
कमर	=	कटिः, श्रोणिः	प्रोंद	=	तुन्दम्
कलाई	=	मणिबन्धः	दाँत	=	दन्तः
कान	=	कर्णः, श्रोत्रम्	नस	=	शिरा
कुल्हा	=	कटिप्रोथः	नाक	=	नासिका, घ्राणम्
कोहनी	=	कफणिः	नाखून	=	नखः
खोपड़ी	=	कपालः	नाभी	=	नाभिः
गर्दन	=	ग्रीवा	नीचे को ओठ	=	अधरः
गला	=	कण्ठः गलः	ऊपर को ओठ	=	ओष्ठ
गुदा	=	अपानम्, मलद्वारम्	पलक	=	पक्ष्म, नेत्ररोम
गोद	=	कोडः	पीठ	=	पृष्ठम्
घुटना	=	जानुः पुं.	पेट	=	उदरम्
घुघराले बाल	=	अलकः, चूर्णकुन्तलः	पैर	=	पादः, चरणः
चर्बी	=	वसा	पैर के मुराये की निकली हुई गाठ	=	गुल्फ
खून	=	रक्तम्, रून्धिरम्	बाँह	=	बाहुः
भौं	=	भ्रूः	मन	=	मनः, चित्तम्
माँग	=	सीमन्तः	माथा	=	मस्तकम्, ललाटम्
मुख	=	मुखम्	मुट्ठी	=	मुष्टिका, मुष्टिः

सिर की चोटी	=	शिखा, चूडा	सिर के सफेद बाल	=	केशः, मूर्धजः
हाथ	=	हस्तः, करः, पाणिः	हथेली	=	करतलः
हृदय	=	हृदयम्	हड्डी	=	अस्थि (नपुं)
स्तन	=	स्तनः, कुचः	रोमों की कतार	=	रोमावली, रोमलता

कुछ पशु पक्षियों की ध्वनियाँ

कुत्ते भौंकते हैं	–	कुक्कुराः बुक्कन्ति
कौवे काँव–काँव करते हैं	–	काका कायन्ति
गधे रेकते हैं।	–	गर्दयाः रासन्ते
गीदड़ चीखते हैं।	–	क्रोष्टरः क्रोशन्ति।
गौवें रम्भाती हैं	–	गावः रभन्ते।
घोड़े हिनहिनाते हैं	–	घोटकाः हषन्ति।
चिड़ियों चीं ची करती है।	–	पक्षिणः कूजन्ते
बादल गरजते है।	–	मेघाः गर्जन्ति।
बिल्लियाँ म्याऊँ म्याऊँ करती हैं	-	विडालाः षावन्ति।
भेड़ियें गुरति हैं।	–	वृक्षाः रसन्ति।
भैंसें रम्भाती है	–	महिष्यः रमन्ते।
मेढ़क टर्राते हैं	–	ढर्दुराः रूवन्ति।
शेर दहाड़ते है	–	सिंहाः गर्णन्ति, नदन्ति वा
सवेरे मुर्गे बोलते हैं	–	प्रातः कुक्कुटाः सम्प्रवदन्ति।
साँप फुफकारते हैं	–	सर्पाः फुत्कुर्वन्ति।
हाथी चिग्घाड़ मारते हैं	–	गजाः वृंहन्ति।

कुछ विशेष अंग्रेजी शब्दों के संस्कृत

अपाइण्टमैण्ट	=	नियुक्ति	अपील	=	पुनर्वादः, पुनरावेदनम्
ऑडिट	=	लेखा परीक्षा, गणनापरीक्षा	ऑडिटर	=	लेखापरीखकः, गणनापरीक्षकः
आनरेरी	=	अवैतनिकः, सम्मानितः	आर्डिनेन्स	=	अध्यादेशः

आलपिन	=	लघूसूचिका, लघूसूचि	इण्ड्री	=	निविष्टिः
इन्क्वाइटी	=	परिप्रश्नः	एअर टाइट	=	पवनरोधकः, वातरोधकः
एजूकेशन कोड	=	शिक्षासंहिता	एजेन्सी	=	अभिकरणम्
एजेण्ट	=	अभिकर्त्ता	ऐक्ट	=	अधिनियमः
ऐग्रीमैण्ट	=	अनुबन्धः	कलैण्डर	=	तिथिपत्रम्, पञ्चाङ्गम्
कस्टडी	=	अभिरक्षा, परिरक्षा	कापी	=	प्रतिलिपिः
केस	=	काण्डम्, काण्डः	कोटा	=	यथांशः
गवाह	=	साक्षीदाता	गवाही	=	साक्ष्यम्
चार्जशीट	=	आरोपपत्रम्	चैक	=	देयादेशः
टिकट	=	चिटिका	टैक्स	=	करः
ट्रेडमार्क	=	व्यापारचिह्नम्	ट्रेडयूनियन	=	कार्मिकसंघः
ड्राफ्ट	=	धनादेशः	प्रोवीजन	=	उपबन्धः
प्रोवीजनल	=	अन्तकालीनम्	फाइल	=	सञ्चिका
बिल	=	प्राप्यकम्	बालिग	=	वयस्कः
बैलेन्ससीट	=	देयादेयफलकम्	बोनस	=	अधिलाभः, अधिलाभांशः
मार्जिन	=	उपरान्तः	मैमो	=	ज्ञापः
मनीआर्डर	=	धनादेशः, द्रव्यादेशः	रिव्यू	=	पुनर्विलोकनम्
रैफरेश	=	अभिदेशः	लाइसेन्स	=	अनुज्ञप्तिः
रिर्पोट	=	प्रतिवेदनम्, विवरणम्	लाउडस्पीकर	=	ध्वनिविस्तारयन्त्रम्
सम्मन	=	आह्वानम्	सप्लाई	=	समायोगः
सप्लायर	=	समायोजकः	सर्वे	=	पर्यवलोकनम्
स्टाम्प	=	अङ्कपत्रम्	स्टोव	=	मृन्तैलचुल्ली
हड़ताल	=	हड़तालम्	हाजिर जवाब	=	प्रत्युत्पन्नमतिः।

वेश-भूषा

उरूकम्	पैन्ट	स्वेदकम्	स्वेटर	निचोल: कञ्चुकी	ब्लाऊज
युतकम्	कमीज	तलिका	रजाई	शटिका	साड़ी
अन्तर्युतकम्	गंजी	प्रोवारकम्	बन्डी	अर्न्तवस्त्रम्	अन्दर के कपड़े
अर्धोरूकम्	हाफ पैन्ट	प्रोञ्छः	तौलिया	उतरीयम्	दुपट्टा
कराङ्शुकम्	कुर्ता	वेष्टि:	धोती	उष्णीयकम्	पगड़ी
पदाङ्शुकम्	पैजामा	चित्रवेष्टि:	लुंगी	टोपिका	टोपी
पादकोश:	मोजा	गलपट:	टाई	हस्तकोष:	गलब्स
राङ्कवम्	शाल				

वाहनों की सूची

लोकयानम्	बस	द्विचक्रिका	साईकिल
रेलयानम्	रेलगाड़ी	त्रिचक्रिका	रिक्शा
वायुयानम्	हवाई जहाज	रुग्नावाहनम्	एम्बुलेंस
बृषभयानम्	बैलगाड़ी	जलयानम्	स्टीमर
एकाश्वयानम्	एक्का	भारवाहनम्	इक
स्कूटरयानम्	स्कूटर	टेम्पोयानम्	टेम्पो
कारयानम्	कार	मोटरयानम्	मोटरगाड़ी

(समयशिक्षणम्) वादनम् - बजे

सपाद – पादेन सहितं (वादनम्) सपादम्।

सार्धम् – अर्धेन सहितम् सार्धम्।

पादोन – पादेन ऊनम् - पादोनम्

पञ्चोन – पञ्चभि: निमिषै: ऊनम् - पञ्चोनम्।

पञ्चाधिकपञ्चभि: निमिषै: अधिकम् दशाधिक दशभि: निमिषै: अधिकम्

एकवादनम्	एक बजे	सप्तवादनम्	सात बजे
द्विवादनम्	दो बजे	अष्टवादनम्	आठ बजे
त्रिवादनम्	तीन बजे	नववादनम्	नौ बजे
चतुर्वादनम्	चार बजे	दशवादनम्	दश बजे
पञ्चवादनम्	पाँच बजे	एकादशवादनम्	ग्यारह बजे
षड्वादनम्	छह बजे	द्वादशवादनम्	बारह बजे

कतिघण्टा: कतिवादने इति न प्रयोक्तव्यम्।

वर्णवाचक शब्दाः

पुं0 श्वेतः	पुं0 कृष्णः	पुं0 रक्त
पुं0 नीलः	पु0 पीतः	पुं0 हरितः
पुं0 कषायः		

☞ इन वर्णों का प्रयोग विशेषण भाव सहित भी होता है।

आकाशः नीलः = आकाश नील लेखनी नीला = लेखनी नीला
वस्त्रं नीलम् = कपड़े नीले।

रूचिवाचकशब्दाः

मधुरंः	=	संयावस्य रूचिः मधुरः।	हलुआ का स्वाद मीठा
कटुः	=	मरीचिकायाः रूचिः कटुः।	मरीचिका का स्वाद कटु।
तिक्तः	=	काखेलस्य रूचिः तिक्तः।	करैले का स्वाद तीता।
कषायः	=	आम्लकस्य रूचिः कषायः।	आँवले का स्वाद कषाय।
लवणः	=	लवणस्य रूचिः लवणः।	नमक का स्वाद नमकीन।
आम्लः	=	तक्रस्य रूचिः आम्लः।	मट्ठा का स्वाद खट्टा।

सम्बन्धवाचक शब्दाः

पितामहः	दादा	श्यालः	साला
पितामही	दादी	श्याली	साली
मातामहः	नाना	पितृव्या	चाचा
मातामही	नानी	पितृव्या	चाची
मातुलः	मामा	पितृभगिनी	बुआ
मातुलानी	मामी	मातृभगिनी	मौसी
भ्रातृजाया	भाभी	आवुत्तः	जीजा
देवरः	देवर	जामाता	दामाद
ननान्दा	ननद	पौत्रः	पोता
श्वसुरः	श्वसुर	दौहित्रः	नाती
श्वश्रू	सास	भागिनेयः	भाँजा
स्नुषा	नातिन		

चतुर्थ : अध्याय

शब्द रूप

(1) बालक (बालक) अकारान्त पुं.

एकव.	द्विव.	बहुव.	
बालकः	बालकौ	बालकाः	**प्र.**
बालकम्	बालकौ	बालकान्	**द्वि.**
बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः	**तृ.**
बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः	**च.**
बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः	**पं.**
बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्	**ष.**
बालके	बालकयोः	बालकेषु	**स.**
हे बालक !	हे बालको!	हे बालकाः!	**सं.**

(2) हरि (विष्णु) इकारान्त पुं.

एकव.	द्विव.	बहुव.
हरिः	हरी	हरयः
हरिम्	हरी	हरीन्
हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
हरेः	हर्योः	हरीणाम्
हरौ	हर्योः	हरिषु
हे हरे !	हे हरी !	हे हरयः !

(3) सखि (मित्र) इकारान्त पुं.

सखा	सखायौ	सखायः	**प्र.**
सखायम्	सखायौ	सखीन्	**द्वि.**
सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः	**तृ.**
सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः	**च.**
सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः	**पं.**
सख्युः	सख्योः	सखीनाम्	**ष.**
सख्यौ	सख्योः	सखिषु	**स.**
हे सखे !	हे सखायौ !	हे सखायः!	**सं.**

(4) गुरु (गुरु) उकारान्त पुं.

गुरुः	गुरू	गुरवः
गुरुम्	गुरू	गुरून्
गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
हे गुरो !	हे गुरू !	हे गुरवः !

(5) पितृ (पिता) ऋकारान्त पुं.

पिता	पितरौ	पितरः	**प्र.**
पितरम्	पितरौ	पितॄन्	**द्वि.**
पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः	**तृ**
पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः	**च.**

(6) बालिका (बालिका) आकारान्त स्त्री.

बालिका	बालिके	बालिकाः
बालिकाम्	बालिके	बालिकाः
बालिकया	बालिकाभ्याम्	बालिकाभिः
बालिकायै	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः

एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः	**पं.**	बालिकायाः	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
पितुः	पित्रोः	पितृणाम्	**ष.**	बालिकायाः	बालिकयोः	बालिकानाम्
पितरि	पित्रोः	पितृषु	**स.**	बालिकायाम्	बालिकयोः	बालिकासु
हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः	**सं.**	हे बालिके	हे बालिके	हे बालिकाः

(7) मति (बुद्धि) इकारान्त स्त्री. — **(8) नदी** (नदी) ईकारान्त स्त्री.

(7) एकव.	द्विव.	बहुव.		(8) एकव.	द्विव.	बहुव.
मतिः	मती	मतयः	**प्र.**	नदी	नद्यौ	नद्यः
मतिम्	मती	मतीः	**द्वि.**	नदीम्	नद्यौ	नदीः
मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः	**तृ.**	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः	**च.**	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः	**पं.**	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्	**ष.**	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु	**स.**	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
हे मते	हे मती	हे मतयः	**सं.**	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

(9) धेनु (गाय) उकारान्त स्त्री. — **(10) वधू** (बहू) ऊकारान्त स्त्री.

(9) एकव.	द्विव.	बहुव.		(10) एकव.	द्विव.	बहुव.
धेनुः	धेनू	धेनवः	**प्र.**	वधूः	वध्वौ	वध्वः
धेनुम्	धेनू	धेनूः	**द्वि.**	वधूम्	वध्वौ	वधूः
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः	**तृ.**	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः	**च.**	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः	**पं.**	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्	**ष.**	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु	**स.**	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः	**सं.**	हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः

(11) मातृ (माता) ऋकारान्त स्त्री. — **(12) फल** (फल) अकारान्त नपुं.

(11) एकव.	द्विव.	बहुव.		(12) एकव.	द्विव.	बहुव.
माता	मातरौ	मातरः	**प्र.**	फलम्	फले	फलानि
मातरम्	मातरौ	मातॄः	**द्वि.**	फलम्	फले	फलानि
मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः	**तृ.**	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः	**च.**	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः

एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः	पं.	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
मातुः	मात्रोः	मातृणाम्	ष.	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
मातरि	मात्रोः	मातृषु	स.	फले	फलयोः	फलेषु
हे मातः	हे मातरौ	हे मातरः	सं.	हे फल	हे फल	हे फलानि

(13) वारि (जल) इकारान्त नपुं. **(14) मधु** (शहद) उकारान्त नपुं.

वारि	वारिणी	वारीणि	प्र.	मधु	मधुनी	मधूनि
वारि	वारिणी	वारीणि	द्वि.	मधु	मधुनी	मधूनि
वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः	तृ.	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः	च.	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः	पं.	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्	ष.	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
वारिणि	वारिणोः	वारिषु	स.	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
हे वारि, वारे	हे वारिणी	हे वारीणि	सं.	हे मधु, हे मधो	हे मधुनी	हे मधूनि

शब्दरूप

1. राजन् (राजा) **2. महत्** (बड़ा)

एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
राजा	राजानौ	राजानः	प्र.	महान्	महान्तौ	महान्तः
राजानम्	राजानौ	राज्ञः	द्वि.	महान्तम्	महान्तौ	महतः
राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः	तृ.	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः	च.	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः	पं.	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्	ष.	महतः	महतोः	महताम्
राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु	स.	महति	महतोः	महत्सु
हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः	सं.	हे महन्	हे महान्तौ	हे महान्तः

☞ स्त्रीलिंग में नदी शब्द की भाँति महती, महत्यौ, महत्यः आदि रूप चलते है। नपुंसकलिंग की प्रथमा और द्वितीया में महत्, महती, महान्ति रूप होते हैं और शेष विभक्तियों के रूप पुंल्लिंग की भाँति होते है।

इसी प्रकार, **धीमत्** (बुद्धिमान), **श्रीमत्, बुद्धिमत्, बलवत्, विद्यावत्, धनुमत्, सानुमत्,** (पहाड़), **भास्वत्** (सूर्य), **मघवत्** (इन्द्र), **सरस्वत्** (समुद्र), **ज्ञानवत्, गतवत्** आदि।

3. भगवत् (देवता, विष्णु)

प्र.	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
द्वि.	भगवन्तम्	भगवन्तौ	भगवतः
तृ.	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
च.	भगवते	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
पं.	भगवतः	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
ष.	भगवतः	भगवतोः	भगवताम्
स.	भगवति	भगवतोः	भगवत्सु
सं.	हे भगवन्	हे भगवन्तौ	हे भगवन्तः

4. आत्मन् (आत्मा) — **5. पठत्** (पढ़ता हुआ)

एकव.	**द्विव.**	**बहुव.**		**एकव.**	**द्विव.**	**बहुव.**
आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः	**प्र.**	पठन्	पठन्तौ	पठन्तः
आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः	**द्वि.**	पठन्तम्	पठन्तौ	पठतः
आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः	**तृ.**	पठता	पठद्भ्याम्	पठद्भिः
आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः	**च.**	पठते	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः	**पं.**	पठतः	पद्भ्याम्	पठद्भ्यः
आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्	**ष.**	पठतः	पठतोः	पठताम्
आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु	**स.**	पठति	पठतोः	पठत्सु
हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः	**सं.**	हे पठन्	हे पठन्तो	हे पठन्तः

☞ स्त्रीलिंग में नदी की तरह पठन्ती, पठन्त्यौ, पठन्त्यः आदि रूप और नपुं. लिंग की प्र., द्वि. में पठत्, पठन्ती पठन्ति और शेष विभक्तियों के रूप पुल्लिंग की भांति होते हैं। पठत् शब्द की भांति- **पश्यत्** (देखता हुआ), **गच्छत्** (जाता हुआ), **वसत्** (वास करता हुआ), **पिबत्** (पीता हुआ), **पृच्छत्** (पूछता हुआ), **खादत्** (खाता हुआ), **चोरयत्** (चोरी करता हुआ)।

6. श्वन् (कुत्ता) — **7. युवन्** (जवान आदमी)

एकव.	**द्विव.**	**बहुव.**		**एकव.**	**द्विव.**	**बहुव.**
श्वा	श्वानौ	श्वानः	**प्र.**	युवा	युवानौ	युवानः
श्वानम्	श्वानौ	शुनः	**द्वि.**	युवानम्	युवानौ	यूनः
शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः	**तृ.**	यूना	युवभ्याम्	युवभिः

एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः	**च.**	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
शुनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः	**पं.**	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
शुनः	शुनोः	शुनाम्	**ष.**	यूनः	यूनोः	यूनाम्
शुनि	शुनोः	श्वसु	**स.**	यूनि	यूनोः	युवसु
हे श्वन्	हे श्वानौ	हे श्वानः	**सं.**	हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः

☞ **मघवन्** (इन्द्र) का रूप सभी विभक्तियां में **युवन्** की तरह होती हैं।

8. पथिन् (मार्ग) — **9. विद्वस्** (विद्वान्)

एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः	**प्र.**	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
पन्थानम्	पन्थानौ	पथः	**द्वि.**	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः	**तृ.**	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्विद्भिः
पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः	**च.**	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः	**पं.**	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पथः	पथोः	पथाम्	**ष.**	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
पथि	पथोः	पथिषु	**ष.**	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
हे पन्थाः	हे पन्थानौ	हे पन्थानः	**स.**	हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः

☞ इसी भांति - **श्रेयस्** (अच्छा), **कनीयस्** (छोटा) **ज्यायस्** (बड़ा) **प्रेयस्** (प्रियतर)।

10. चन्द्रमस् (चन्द्रमा) — **11. करिन्** (हाथी)

एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः	**प्र.**	करी	करिणौ	करिणः
चन्द्रमसम्	चन्दमसौ	चन्द्रमसः	**द्वि.**	करिणम्	करिणौ	करिणः
चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः	**तृ.**	करिणा	करिभ्याम्	करिभिः
चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः	**च.**	करिणे	करिभ्याम्	करिभ्यः
चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः	**पं.**	करिणः	करिभ्याम्	करिभ्यः
चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्	**ष.**	करिणः	करिणोः	करिणाम्
चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमस्सु	**स.**	करिणि	करिणोः	करिषु
हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमसः	**सं.**	हे करिन्	हे करिणौ	हे करिणः

☞ चन्द्रमस् की तरह-**वनौकस्** (वनवासी)। **वेधस्** (ब्रह्मा)। **दिवौकस्** (देवता)। **दुर्वासस्** (दुर्वासा ऋषि)।

☞ **करिन्** की भाँति (गुणिन गुणवाला), **शशिन्** (चन्द्रमा), **दण्डिन्** (दण्डधारी), **कुशलिन्** (सखी), **पक्षिन्** (पक्षी), **स्वामिन्** (स्वामी), **शिखरिन्** (पर्वत), **मन्त्रिन्** (मन्त्री)।

12. पुंस् (पुरुष) — **13- तादृश्** (उस जैसा)

एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः	**प्र.**	तादृक्	तादृशौ	तादशः
पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः	**द्वि.**	तादृशम्	तादृशा	तादृशौः
पुंसा	पुम्भ्याम्	पुम्भिः	**तृ.**	तादशा	तादृभ्याम्	तादृग्भ्यः
पुंसे	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः	**च.**	तादृशे	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
पुंसः	पुम्भ्यान्	पुम्भ्यः	**पं.**	तादृशः	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्	**ष.**	तादृशः	तादृशौः	तादृशाम्
पंसि	पुंसोः	पुंसु	**स.**	तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु
हे पुमन्	हे पुमांसौ	हे पुमांसः	**सं.**	हे तादृक्	हे तादृशौ	हे तादृशः

☞ **तादृश्** की भांति- **इदृश्** (ऐसा), **कीदृश्** (कैसा), **वादृश्** (जैसा), **त्वादृश्** (तुझ जैसा), **भवादृश्** (आप जैसा), **मादृश्** (मुझ जैसा) इत्यादि।

स्त्रीलिंग शब्द

1. वाक् (वाणी) — **2. सरित्** (नदी)

एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
वाक्-ग्	वाचौ	वाचः	**प्र.**	सरित्	सरितौ	सरितः
वाचम्	वाचौ	वाचः	**द्वि.**	सरितम्	सरितौ	सरितः
वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः	**तृ.**	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः	**च.**	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः	**पं.**	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
वाचः	वाचोः	वाचाम्	**ष.**	सरितः	सरितोः	सरिताम्
वाचि	वाचोः	वाक्षु	**स.**	सरिति	सरितोः	सरित्सु
हे वाक्	हे वाचौ	हे वाचः	**सं.**	हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः

☞ **वाक्** शब्द की भांति- **शुच्** (शोक), **त्वच्** (छाल), **रुच्** (कान्ति) आदि।
सरित् शब्द की भांति- **हरित्** (दिशा), **योषित्** (स्त्री), **तडित्** (बिजली)।

3. **विपद्** (विपत्ति) — 4. **गिर्** (वाणी)

एकव.	**द्विव.**	**बहुव.**		**एकव.**	**द्विव.**	**बहुव.**
विपत्	विपदौ	विपदः	**प्र.**	गीः	गिरौ	गिरः
विपदम्	विपदौ	विपदः	**द्वि.**	गिरम्	गिरौ	गिरः
विपदा	विपद्भ्याम्	विपद्भिः	**तृ.**	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
विपदे	विपद्भ्याम्	विपद्भ्यः	**च.**	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
विपदः	विपद्भ्याम्	विपद्भ्यः	**पं.**	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
विपदः	विपदोः	विपदाम्	**ष.**	गिरः	गिरोः	गिराम्
विपदि	विपदोः	विपत्सु	**स.**	गिरि	गिरोः	गीर्षु
हे विपत्	हे विपदौ	हे विपदः	**सं.**	हे गीः	हे गिरौ	हे गिरः

5. **दिश्** (दिशा) — 6 **पुर्** (नगर)

एकव.	**द्विव.**	**बहुव.**		**एकव.**	**द्विव.**	**बहुव.**
दिक्-दिग्	दिशौ	दिशः	**प्र.**	पूः	पुरौ	पुरः
दिशम्	दिशौ	दिशः	**द्वि.**	पुरम्	पुरौ	पुरः
दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः	**तृ.**	पुरा	पूर्भ्याम्	पूर्भिः
दशे	दिग्भ्याम	दिग्भ्यः	**च.**	पुरे	पूर्भ्याम्	पूर्भ्यः
दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः	**पं.**	पुरः	पूर्भ्याम्	पूर्भ्यः
दिशः	दिशोः	दिशाम्	**ष.**	पुरः	पुरोः	पुराम्
दिशि	दिशोः	दिक्षु	**स.**	पुरि	पुरोः	पूर्षु
हे दिक्	हे दिशौ	हे दिशः	**सं.**	हे पूः	हे पुरौ	पुरः

7. **अप्** (जल-केवल बहुवचन में)

एकव.	**द्विव.**	**बहुव.**		**एकव.**	**द्विव.**	**बहुव.**
आपः	**तृ.**	अद्भिः	**पं.**	अद्भ्यः	**स.**	अप्सु
अपः	**च.**	अद्भ्यः	**ष.**	अपाम्	**सं.**	हे आपः

नपुंसकलिङ्ग शब्द

1. जगत् | **2. नामन्**

एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
जगत्	जगती	जगन्ति	प्र.	नाम	नाम्नी-नामनी	नामानि
जगत्	जगती	जगन्ति	द्वि.	नाम	नाम्नी-नामनी	नामानि
जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भि:	तृ.	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभि:
जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भय:	च.	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्य:
जगत:	जगद्भयाम्	जगद्भय:	पं.	नाम्न:	नामभ्याम्	नामभ्य:
जगत:	जगतो	जगताम्	ष.	नाम्न:	नाम्नो:	नाम्नाम्
जगति	जगतो:	जगत्सु	स.	नाम्नि,	नामनि नाम्नो:	नामसु
हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति	सं.	हे नाम	हे नाम्नी, हे नामनी	हे नामानि

☞ **नामन्** की भाँति **हेमन्** (सोना), **दामन्** (रस्सी)। **प्रेमन्** (प्यार)। **लोमन् (रोम)**। **धामन्,** घर, तेज।

3. शर्मन् (कल्याण) | **4- ब्रह्मन्**

शर्म	शर्मणी	शर्माणि	प्र.	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि
शर्म	शर्मणी	शर्माणि	द्वि.	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि
शर्मणा	शर्मभ्याम्	शर्मभि:	तृ.	ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभि:
शर्मणे	शर्मभ्याम्	शर्मभ्य:	च.	ब्रह्मणे	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्य:
शर्मण:	शर्मभ्याम्	शर्मभ्य:	पं.	ब्रह्मण:	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्य:
शर्मण:	शर्मणो:	शर्मणाम्	ष.	ब्रह्मण:	ब्रह्मणो:	ब्रह्मणाम्
शर्मणि	शर्मणो:	शर्मसु	स.	ब्रह्मणि	ब्रह्मणो:	ब्रह्मसु
हे शर्मन्, हे शर्म	हे शर्मणी	हे शर्माणि	सं.	हे ब्रह्मन्, हे ब्रह्म	हे ब्रह्मणी	हे ब्रह्माणि

5. मनस् (मन) | **6- पयस्** (पानी या दूध)

मन:	मनसी	मनांसि	प्र.	पय:	पयसी	पयांसि
मन:	मनसी	मनांसि	द्वि.	पय:	पयसी	पयांसि
मनसा	मनोभ्याम्	मनोभि:	तृ.	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभि:
मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्य:	च.	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्य:
मनस:	मनोभ्याम्	मनोभ्य:	पं.	पयस:	पयोभ्याम्	पयोभ्य:
मनस:	मनसो:	मनसाम्	ष.	पयस:	पयसो:	पयसाम्
मनसि	मनसो:	मनस्सु	स.	पयसि	पयसो:	पयस्सु
हे मन:	हे मनसी	हे मनांसि	सं.	हे पय:	हे पयसी	हे पयांसि

☞ **मनस्** की भांति-**तमस्** (अन्धकार)। **तेजस्** (दीप्ति)। **चक्षुष्** (नेत्र)। **तपस्** (तप)। **रजस्** (धूलि)। **वचस्** (वचन)। **वयस्** (उम्र)। **शिरस्** (सिर)। **वासस्** (कपड़ा)। **सरस्** (तालाब)। **नभस्** (आकाश)। **यशस्** (कीर्ति)। **रक्षस्** (राक्षस) आदि।

7. धनुष् (धनुष्)

प्र.	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वि.	धनुः	धनुषी	धनूंषि
तृ.	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
च.	धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
पं.	धनुषः	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
ष.	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
स.	धनुषि	धनुषोः	धनुष्षु
सं.	हे धनुः	हे धनुषी	हे धनूंषि

धनुष् की भांति आयुष्, हविष्, सर्पिष् (घी) आदि।

8. तादृश

प्र.	तादृक्	तादृशी	तादृंशि
द्वि.	तादृक्	तादृशी	तादृंशि

(शेष पुल्लिंङ्ग की तरह)।

9. महत् (बड़ा)

प्र.	महत्	महती	महान्ति
द्वि.	महत्	महती	महान्ति

(शेष पुल्लिंङ्ग की तरह)।

10. मनोहारिन् (सुन्दर)

प्र.	मनोहारि	मनोहारिणी	मनोहारीणि
द्वि.	मनोहारि	मनोहारिणी	मनोहारीणि

(शेष पुल्लिङ्ग की तरह)।

पञ्चम : अध्याय

धातु रूप

लृट्, लङ्, लोट् और विधिलिङ् में संक्षिप्त रूप ये हैं-

परस्मैपद				आत्मनेपद		
लट्						लट्
एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
अति	अन्तः	अन्ति	प्र.	अते	एते	अन्ते
असि	अथः	अथ	म.	असे	एथे	अध्वे
आमि	आवः	आमः	उ.	ए	आवहे	आमहे
लङ्				लङ्		
अत्	अताम्	अन्	प्र.	अत	एताम्	अन्त
अः	अतम्	अत	म.	अथाः	एथाम्	अध्वम्
अम्	आव	आम	उ.	ए	आवहि	आमहि
लोट्				लोट्		
अतु	अताम्	अन्तु	प्र.	अताम्	एताम्	अन्ताम्
अ	अतम्	अत	म.	अस्व	एथाम्	अध्वम्.
आनि	आव	आम	उ.	ऐ	आवहे	आमहे
विधिलिङ्				विधिलिङ्		
एत्	एताम्	एयुः	प्र.	एत	एताम्	एरन्
एः	एतम्	एत	म.	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
एयम्	एव	एम	उ.	एय	एवहि	एमहि

भ्वादिगण

(1) भू (होना) परस्मैपदी

(भ्वादिगण भू धातु से आरम्भ होता है अतएव धातु-पाठ में पहली धातु भू रखी गई है। इनके दस लकारों के रूप इस प्रकार हैं -

वर्तमान-लट्				*आशीर्लिङ्*		
एकव.	**द्विव.**	**बहुव.**		**एकव.**	**द्विव.**	**बहुव.**
भवति	भवतः	भवन्ति	**प्र**	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
भवसि	भवथः	भवथ	**म**	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
भवामि	भवावः	भवामः	**उ.**	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म
सामान्य भविष्य-लृट्				**परोक्षभूत-लिट्**		
भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	**प्र.**	बभूव	बभूवतुः	बभवुः
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	**म**	बभूविथा	बभूवथुः	बभूव
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	**उ.**	बभूब	बभूविव	बभूविम
अनद्यतनभूत-लङ्				**अनद्यतन भविष्य-लुट्**		
अभवत्	अभवताम्	अभवन्	**प्र.**	भविता	भवितारौ	भवितारः
अभवः	अभवतम्	अभवत	**म.**	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थः
अभवम्	अभवाव	अभवाम	**उ.**	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः
आज्ञा-लोट्				**सामान्यभूत लुङ्**		
भवतु	भवताम्	भवन्तु	**प्र.**	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
भव	भवतम्	भवत	**म.**	अभूमः	अभूतम्	अभूत
भवानि	भवाव	भवाम	**उ.**	अभूवम्	अभूव	अभूम
विधिलिङ्				**क्रियातिपत्ति लृङ्**		
भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	**प्र.**	अभवष्यित्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
भवेः	भेवतम्	भवेत	**म.**	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
भवेयम्	भवेव	भवेम	**उ.**	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

(2) अस् (होना) परस्मैपदी (भ्वादिगण)

लट्				**लोट्**		
एकव.	**द्विव.**	**बहुव.**		**एकव.**	**द्विव.**	**बहुव.**
अस्ति	स्तः	सन्ति	**प्र.**	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
असि	स्थः	स्थ	**म.**	एधि	स्तम्	स्त
अस्मि	स्वः	स्मः	**उ.**	असानि	असाव	असाम

लृट्				लिट्		
भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र.	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म.	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ.	बभूव	बभूविव	बभूविम

लङ्				लुट्		
आसीत्	आस्ताम्	आसन्	प्र.	भविता	भवितारौ	भवितारः
आसीः	आस्तम्	आस्त	म.	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थः
आसम्	आस्व	आस्म	उ.	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

विधिलिङ्				लुङ्		
स्यात्	स्याताम्	स्युः	प्र.	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
स्याः	स्यातम्	स्यात	म.	अभूः	अभूतम्	अभूत
स्याम्	स्याव	स्याम्	उ.	अभूवम्	अभूव	अभूम

आशीर्लिङ्				लृङ्		
भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः	प्र.	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त	म.	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म	उ.	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

उभयपदी

(1) कृ (करना) परस्मैपद (तनादि गण)

लट्				लोट्		
एकव.	**द्विव.**	**बहुव.**		**एकव.**	**द्विव.**	**बहुव.**
करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	प्र.	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
करोषि	कुरुथः	कुरुथ	म.	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
करोमि	कुर्वः	कुर्मः	उ.	करवाणि	करवाव	करवाम

लृट्				विधिलिङ्		
करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति	प्र.	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ	म.	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः	उ.	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लङ्				आशीर्लिङ्		
अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	प्र.	क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः
अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	म.	क्रियाः	क्रियास्तम्	क्रियास्त
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	उ.	क्रियासम्	क्रियास्व	क्रियास्म
लिट्				**लुङ्**		
चकार	चक्रतुः	चक्रुः	प्र.	अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः
चकर्थ	चक्रथुः	चक्र	म.	अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
चकार,चकर	चकृव	चकृम	उ.	अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म
लुट्				**लृङ्**		
कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	प्र.	अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्
कर्तासि	कर्तास्थः	कर्तास्थ	म.	अकरिष्यः	अकरिष्यतम्	अकरिष्यत
कर्तास्मि	कर्तास्वः	कर्तास्मः	उ.	अकरिष्यम्	अकरिष्याव	अकरिष्याम

कृ करना (आत्मनेपद)

लट्				आशीर्लिङ्		
एकव.	**द्विव.**	**बहुव.**		**एकव.**	**द्विव.**	**बहुव.**
कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते	प्र.	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्
कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे	म.	कृषीष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीढ्वम्
कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे	उ.	कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि
लृट्				**लिट्**		
करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते	प्र.	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे	म.	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे	उ.	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे
लङ्				**लुट्**		
अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत	प्र.	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्	म.	कर्तासे	कर्तासाथे	कर्ताध्वे
अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि	उ.	कर्ताहे	कर्तास्वहे	कर्तास्महे

लोट्				लुङ्		
कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्	प्र.	अकृत	अकृषाताम्	अकृषत
कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्	म.	अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृढ्वम्
करवै	करवावहै	करवामहै	उ.	अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि

विधिलिङ्				लृङ्		
कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्	प्र.	अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	अकरिष्यन्त
कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्	म.	अकरिष्यथाः	अकरिष्येथाम्	अकरिष्यध्वम्
कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि	उ.	अकरिष्ये	अकरिष्यावहि	अकरिष्यामहि

दृश् (पश्य्) देखना- परस्मैपदी (भ्वादिगण)

वर्तमानकाल-लट्				आज्ञा-लोट्		
पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति	प्र.	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ	म.	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः	उ.	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

सामान्य भविष्य-लृट्				विधिलिङ्		
द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति	प्र.	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ	म.	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः	उ.	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

अनद्यतन-लङ्			
अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्	प्र.
अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत	म.
अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम	उ.

2. अदादिगण

अद् (खाना) **परस्मैपदी**

एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
	लङ्				**आशीर्लिङ्**	
अत्ति	अत्तः	अदन्ति	**प्र.**	अद्यात्	अद्यास्ताम्	अद्यासुः
अत्सि	अत्थः	अत्थ	**म.**	अद्याः	अद्यास्तम्	अद्यास्त
अद्मि	अद्वः	अद्मः	**उ.**	अद्यासम्	अद्यास्व	अद्यास्म
	लृट्				**लिट्***	
अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति	**प्र.**	आद	आदतुः	आदुः
अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ	**म.**	आदिथ	आदथुः	आद
अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः	**उ.**	आद	आदिव	आदिम
	लङ्				**लुट्**	
आदत्	आत्ताम्	आदन्, आदुः	**प्र.**	अत्ता	अत्तारौ	अत्तारः
आदः	आत्तम्	आत्त	**म.**	अत्तासि	अत्तास्थः	अत्तास्थ
आदम्	आद्व	आद्म	**उ.**	अत्तास्मि	अत्तास्वः	अत्तास्मः
	लोट्				**लुङ्**	
अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु	**प्र.**	अघसत्	अघसताम्	अघसन्
अद्धि	अत्तम्	अत्त	**म.**	अघसः	अघसतम्	अघसत
अदानि	अदाव	अदाम	**उ.**	अघसम्	अघसाव	अघसाम
	विधिलिङ्				**लृङ्**	
अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः	**प्र.**	आत्स्यद्	आत्स्यताम्	आत्स्यन्
अद्याः	अद्यातम्	अद्यात	**म.**	आत्स्यः	आत्स्यतम्	आत्स्यत
अद्याम्	अद्याव	अद्याम	**उ.**	आत्स्यम्	आत्स्याव	आत्स्याम

*(अद् को घस्) **जघास, जक्षतुः, जक्षुः** आदि रूप भी होते हैं। इसी प्रकार **अस्** (होना) परस्मैपद, **आस** (बैठना) आत्मनेपद, **दुह्** (दुहना) परस्मैपद, **ब्रू** (कहना) परस्मैपद/आत्मनेपद, **रुद्** (रोना) परस्मैपद, **शास्** (शासन करना) परस्मैपद, **स्ना** (स्नान करना) परस्मैपद, **स्वप्** (सोना) परस्मैपद, **श्वस्** (सांस लेना) और **हन्** (मारना) परस्मैपद आदि प्रमुख अदादिगण में 72 धातुयें हैं।

3. जुहोत्यादिगण

हु (हवन करना, खाना, लेना) **परस्मैपदी**

	लट्				**आशीर्लिङ्**	
जुहोति	जुहतः	जुह्वति	**प्र.**	हूयात्	हूयास्ताम्	हूयासुः
जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ	**म.**	हूयाः	हूयास्तम्	हूयास्त
जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः	**उ.**	हूयासम्	हूयास्व	हूयास्म

लृट्				लिट्		
एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति	प्र.	जुहाव	जुहुवतुः	जुहुवुः
होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ	म.	जुहविथ,जुहोथ	जुहुवथुः	जुहुव
होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः	उ.	जुहाव, जुहव	जुहुविव	जुहुविम
लङ्				लुट्		
अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः	प्र.	होता	होतारौ	होतारः
अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत	म.	होतासि	होतास्थः	होतास्थ
अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम	उ.	होतास्मि	होतास्वः	होतास्मः
लोट्				लुङ्		
जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु	प्र.	अहौषीत्	अहौष्टाम्	अहौषुः
जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत	म.	अहौषीः	अहौष्टम्	अहौष्ट
जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम	उ.	अहौषम्	अहौष्व	अहौष्म
विधिलिङ्				लृङ्		
जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः	प्र.	अहोष्यत्	अहोष्यताम्	अहोष्यन्
जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात	म.	अहोष्यः	अहोष्यतम्	अहोष्यत
जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम	उ.	अहोष्यम्	अहोष्याव	अहोष्याम

उभयपदी-दा (देना), **धा** (धारण करना, पोषण करना), **भी** (डरना) परस्मैपद, **हा** (छोड़ना) परस्मैपद तथा **भृ** (धारण करना) परस्मैपद अदि प्रमुख 24 धातुयें इस गण में आती हैं।

4. दिवादिगण

दिव् (जुवा खेलना, चमकना आदि) परस्मैपद

लट्				आशीर्लिङ्		
एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति	प्र.	दीव्यात्	दीव्यास्ताम्	दीव्यासुः
दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ	म.	दीव्याः	दीव्यास्तम्	दीव्यास्त
दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः	उ.	दीव्यासम्	दीव्यास्व	दीव्यास्म
लृट्				लिट्		
देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति	प्र.	दिदेव	दिदिवतुः	दिदवुः
देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ	म.	दिदेविथ	दिदिवथुः	दिदिव
देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः	उ.	दिदेव	दिदिविव	दिदिविम

लङ्				लुट्		
एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्	प्र.	देविता	देवितारौ	देवितारः
अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत	म.	देवितासि	देवितास्थः	.देवितास्थ
अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम	उ.	देवितास्मि	देवितास्वः	देवितास्मः

लोट्				लुङ्		
दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु	प्र.	अदेवीत्	अदेविष्टाम्	अदेविषुः
दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत	म.	अदेवीः	अदेविष्टम्	अदेविष्ट
दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम	उ.	अदेविषम्	अदेविष्व	अदेविष्म

विधिलिङ्				लृङ्		
दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः	प्र.	अदेविष्यत्	अदेविष्यताम्	अदेविष्यन
दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत	म.	अदेविष्यः	अदविष्यतम्	अदेविष्यत
दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम	उ.	अदेविष्यम्	अदेविष्याव	अदेविष्याम

इस गण के अन्तर्गत **कुप्** (क्रोध करना) परस्मैपद, **जन** (उत्पन्न होना) आत्मनेपद, **विद्** (होना) आत्मनेपद, **नश्** (नष्ट होना) परस्मैपद, **नृत्** (नाचना) परस्मैपद, **पद्** (जाना) आत्मनेपद, **बुध्** (जानना) आत्मनेपद, **भ्रम्** (घूमना) परस्मैपद, **युध्** (लड़ाई करना) आत्मनेपद, आदि प्रमुख 140 धातुयें हैं।

5. स्वादिगण

उभयपदी **सु** (रस निकालना) परस्मैपद

लट्				आर्शीर्लिङ्		
एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति	प्र.	सूयात्	सूयास्ताम्	सूयोसुः
सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ	म.	सूयाः	सूयास्तम्	सूयास्त
सुनोमि	सुनुवः-न्वः	सुनुमः-न्मः	उ.	सूयासम्	सूयास्व	सूयास्म

लृट्				लिट्		
सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति	प्र.	सुषाव	सुषुवतुः	सुषुवुः
सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ	म.	सुषविथ-सुषोथ	सुषुवथुः	सुषुव
सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः	उ.	सुषाव-सुषव	सुषुविव	सुषुविम

लङ्				लुट्		
असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्	प्र.	सोता	सोतारौ	सोतारः
असुनोः	असुनुतम्	असुनुत	म.	सोतासि	सोतास्थः	सोतास्थ
असुनवम्	असुनुव-न्व	असुनुम-न्म	उ.	सोतास्मि	सोतास्वः	सोतास्मः

लोट्				लुङ्		
एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु	प्र.	असावीत्	असाविष्टाम्	असाविषुः
सुनु	सुनुतम्	सुनुत	म.	असावीः	असाविष्टम्	असाविष्ट
सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम	उ.	असाविषम्	असाविष्व	आसविष्म
विधिलिङ्				लृङ्		
सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः	प्र.	असोष्यत्	असोष्यताम्	असोष्यन्
सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात	म.	असोष्यः	असोष्यतम्	असोष्यत
सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम	उ.	असोष्यम्	असोष्याव	असोष्याम

इसी प्रकार **सु** (रस निकालना) आत्मनेपद, **आप्** (प्राप्त करना) परस्मैपद, **चि** (चुनना, इकट्ठा करना) परस्मैपद, **शक्** (सकना) परस्मैपद आदि 35 धातुयें हैं।

6. तुदादिगण

उभयपदी **तुद्** (दुःख देना) परस्मैपद

लट्				आशीर्लिङ्		
एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
तुदति	तुदतः	तुदन्ति	प्र.	तुद्यात्	तुद्यास्ताम्	तुद्यासुः
तुदसि	तुदथः	तुदथ	म.	तुद्याः	तुद्यास्तम्	तुद्यास्त
तुदामि	तुदावः	तुदामः	उ.	तुद्यासम्	तुद्यास्व	तुद्यास्म
लृट्				लिट		
तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति	प्र.	तुतोद	तुतुदतुः	तुतुदुः
तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ	म.	तुतोदिथ	तुतुदथुः	तुतुद
तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः	उ.	तुतोद	तुतुदिव	तुतुदिम
लङ्				लुट्		
अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्	प्र.	तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तारः
अतुदः	अतुदतम्	अतुदत	म.	तोत्तासि	तोत्तास्थः	तोत्तास्थ
अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम	उ.	तोत्तास्मि	तोत्तास्वः	तोत्तास्मः
लोट्				लुङ्		
तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु	प्र.	अतौत्सीत्	अतौत्ताम्	अतौत्सुः
तुद	तुदतम्	तुदत	म.	अतौत्सीः	अतौत्तम्	अतौत्त
तुदानि	तुदाव	तुदाम	उ.	अतौत्सम्	अतौत्स्व	अतौत्स्म

विधिलिङ्				लृङ्		
एकव.	द्विव.	बहुव.		एकव.	द्विव.	बहुव.
तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयु:	प्र.	अतोत्स्यत्	अतोत्स्यताम्	अतोत्स्यन्
तुदे:	तुदेतम्	तुदेत	म.	अतोत्स्य:	अतोत्स्यतम्	अतोत्स्यत
तुदेयम्	तुदेव	तुदेम	उ.	अतोत्स्यम्	अतोत्स्याव	अतोत्स्याम

इसके अतिरिक्त इस गण में **तुद्** (व्यथा पहुंचाना, दु:ख देना) आत्मनेपद, **इष्** (इच्छा करना) परस्मैपद, **गृ** (निगलना) परस्मैपद, **कृष्** (भूमि जोतना) परस्मैपद/आत्मनेपद, **स्पृश्** (छूना) परस्मैपद, **मृ** (मरना) आत्मनेपद, **लिख्** (लिखना) परस्मैपद आदि 157 धातुयें आती हैं।

7. रुधादिगण

उभयपदी-**रुध्** (रोकना) परस्मैपद

लट्				आशीर्लिङ्		
रुणद्धि	रुन्द्ध:	रुन्धन्ति	प्र.	रुध्यात्	रुध्यास्ताम्	रुध्यासु:
रुणत्सि	रुन्द्ध:	रुन्द्ध	म.	रुध्या:	रुध्यास्तम्	रुध्यास्त
रुणध्मि	रुन्ध्व:	रुन्ध्म:	उ.	रुध्यासम्	रुध्यास्व	रुध्यास्म
लृट्				**लिट्**		
रोत्स्यति	रोत्स्यत:	रोत्स्यन्ति	प्र.	रुरोध	रुरुधतु:	रुरुधु:
रोत्स्यसि	रोत्स्यथ:	रोत्स्यथ	म.	रुरोधिथ	रुरुधथु:	रुरुध
रोत्स्यामि	रोत्स्याव:	रोत्स्याम:	उ.	रुरोध	रुरुधिव	रुरुधिम
लङ्				**लुट्**		
अरुणत्	अरुन्द्धाम्	अरुन्धन्	प्र.	रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धार:
अरुण:	अरुन्द्धम्	अरुन्द्ध	म.	रोद्धासि	रोद्धास्थ:	रोद्धास्थ
अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म	उ.	रोद्धास्मि	रोद्धास्व:	रोद्धास्म:
लोट्				**अथवा**		
रुणद्धु	रुन्द्धाम्	रुन्धन्तु	प्र.	अरुधत्	अरुधताम्	अरुधन्
रुन्द्धि	रुन्द्धम्	रुन्द्ध	म.	अरुध:	अरुधतम्	अरुधत
रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	उ.	अरुधम्	अरुधाव	अरुधाम
विधिलिङ्				**लृङ्**		
रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्यु:	प्र.	अरोत्स्यत्	अरोत्स्यताम्	अरोत्स्यन्
रुन्ध्या:	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात	म.	अरोत्स्य:	अरोत्स्यतम्	अरोत्स्यत
रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम	उ.	अरोत्स्यम्	अरोत्स्याव	अरोत्स्याम

इसके अतिरिक्त इस गण में **रुध्** (आवरण करना, रोकना) आत्मनेपद उभयपदी **छिद्** (काटना) **भञ्ज्** (तोड़ना) परस्मैपद, उभयपदी, **भुज्** (पालन करना, खाना) उभयपद, **युज्** (मिलना, लगना) आदि प्रमुख 25 धातुयें हैं।

8. तनादिगण

इस गण की **कृ** (करना) महत्वपूर्ण है। जिनका उभयपदी धातु का परस्मैपद एवं आत्मनेपद रूप पूर्व पृष्ठ 246 एवं 247 पर दिया जा चुका है। इसी के अनुसार **तन्** (फैलाना) आदि 10 मुख्य धातुओं के रूप चलेंगें।

9. क्रयादिगण

उभयपदी **क्री** (मोल लेना) परस्मैपद

	लट्				आशीर्लिङ्	
एकव.	**द्विव.**	**बहुव.**		**एकव.**	**द्विव.**	**बहुव.**
क्रीणाति	क्रीणीत:	क्रीणन्ति	**प्र.**	क्रीयात्	क्रीयास्ताम्	क्रीयासु:
क्रीणासि	क्रीणीथ:	क्रणीथ	**म.**	क्रीयात्	क्रीयास्तम्	क्रीयास्त
क्रीणामि	क्रीणीव:	क्रीणीम:	**उ.**	क्रीयासम्	क्रीयास्व	क्रीयास्म
	लृट्				**लिट्**	
क्रेष्यति	क्रेष्यत:	क्रेष्यन्ति	**प्र.**	चिक्राय	चिक्रियतु:	चिक्रयु:
क्रेष्यसि	क्रेष्यथ:	क्रेष्यथ	**म.**	चिक्रयिथ,चिक्रेथ	चिक्रियथु:	चिक्रिय
क्रेष्यामि	क्रेष्याव:	क्रेष्याम:	**उ.**	चिक्राय, चिक्रय	चिक्रियिव	चिक्रियिम
	लङ्				**लुट्**	
अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्	**प्र.**	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतार:
अक्रीणा:	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत	**म.**	क्रेतासि	क्रेतास्थ:	क्रेतास्थ
अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम	**उ.**	क्रेतास्मि	क्रेतास्व:	क्रेतास्म:
	लोट्				**लुङ्**	
क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु	**प्र.**	अक्रैषीत्	अक्रैष्टाम्	अक्रैषु:
क्रीणीह	क्रीणीतम्	क्रीणीत	**म.**	अक्रैषी:	अक्रैष्टम्	अक्रैष्ट
क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम	**उ.**	अक्रैषम्	अक्रैष्व	अक्रैष्म
	विधिलिङ्				**लृङ्**	
क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयु:	**प्र.**	अक्रेष्यत्	अक्रेष्यताम्	अक्रेष्यन्
क्रीणीया:	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात	**म.**	अक्रेष्य:	अक्रेष्यतम्	अक्रेष्यत
क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम	**उ.**	अक्रेष्यम्	अक्रेष्याव	अक्रेष्याम

इस गण में उभयपदी **गृह्** (पकड़ना, लेना), उभयपदी **ज्ञा** (जानना), **बन्ध्** (बँधना) परस्मैपद, **मन्थ** (मथना) परस्मैपद आदि 61 धातुयें हैं।

10. चुरादिगण

उभयपदी **चुर्** (चुराना) परस्मैपद

लट्				**विधिलिङ्**		
एकव.	**द्विव.**	**बहुव.**		**एकव.**	**द्विव.**	**बहुव.**
चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति	**प्र.**	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ	**म.**	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः	**उ.**	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम
लोट्				**आशीर्लिङ्**		
चोरयिषति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति	**प्र.**	चोर्यात्	चोर्यास्ताम्	चोर्यासुः
चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्य	**म.**	चोर्याः	चोर्यास्तम्	चोर्यास्त
चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः	**उ.**	चोर्यासम्	चोर्यास्व	चोर्यास्म
लङ्				**लिट्**		
अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्	**प्र.**	चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चकतुः	चोरयाञ्चक्रुः
अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत	**म.**	चोरयाञ्चकर्थ	चोरयाञ्चक्रथुः	चोरयाञ्चक्र
अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम	**उ.**	चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चकृव	चोरयाञ्चकृम
लोट्				**लुट्**		
चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु	**प्र.**	चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः
चोरय	चोरयतम्	चोरयत	**म.**	चोरयितासि	चोरयितास्थः	चोरयितास्थ
चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम	**उ.**	चोरयितास्मि	चोरयितास्व	चोरयितास्म
लुङ्				**लृङ्**		
अचूचुरत्	अचूचुरताम्	अचूचुरन्	**प्र.**	अचोरयिष्यत्	अचोरयिष्यताम्	अचोरयिष्यन्
अचूचुरः	अचूचुरतम्	अचूचुरत	**म.**	अचोरयिष्यः	अचोरयिष्यतम्	अचोरयिष्यष्त
अचूचुरम्	अचूचुराव	अचूचुराम	**उ.**	अचोरयिष्यम्	अचोरयिष्याव	अचोरयिष्याम

इस भाग में उपयपदी **चिन्त्** (सोचना), उभयपदी, **भक्ष्** (खाना), उभयपदी **कथ** (कहना) एवं उभयपदी **गण्** (गिनना) आदि 411 धातुयें प्रमुख हैं।

सामान्य निर्देश

लिङ्ग-संस्कृत में 3 लिङ्ग होते हैं। इनके नाम और संक्षिप्त रूप ये हैं -

(क) पुंल्लिङ्ग (पुं.), (ख) स्त्रीलिङ्ग (स्त्री.), (ग) नपुंसकलिङ्ग (नपुं.)

वचन-संस्कृत में वचन 3 होते हैं। इनके नाम और संक्षिप्त रूप ये हैं-

(क) एकवचन - (एक) (ख) द्विवचन - (द्वि) (ग) बहुवचन - (बहुं.)

पुरुष-संस्कृत में 3 पुरुष होते हैं -

(क) प्रथमपुरुष - (प्र.पु.), (ख) मध्यमपुरुष - (म.पु.) (ग) उत्तमपुरुष - (उ.पु.)।

लकार-संस्कृत में 10 लकार हैं किन्तु जिन पाँच लकारों का सर्वाधिक होता है वे अधोलिखित हैं -

लट् लकार (वर्तमान काल)

लोट् लकार (आज्ञा अर्थ)

लङ् लकार (भूतकाल)

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ में)

लृट् लकार (भविष्यत्काल)

धातु प्रकार संस्कृत में धातुयें तीन प्रकार की है अतः धातु रूप भी तीन प्रकार से चलते हैं।

परस्मैपदी - (प. ति तः अन्ति आदि)

आत्मनेपदी (आ. ते एते अन्ते आदि)

उभयपदी (उ. इसमें उक्त दोनों प्रकार से रूप चलते हैं।)

विभक्तियां संस्कृत में 7 विभक्तियाँ है जो कारक से जुड़ी है -

प्रथमा से सप्तमी तक जिसमें सम्बोधन अतिरिक्त है।

प्रथमा (प्र.), द्वितीया (द्वि.), तृतीया (तृ.), चतुर्थी (च.), पञ्चमी (पं.), षष्ठी (ष.), सप्तमी (स.) सम्बोधन (सम्बो.)

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम् द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची

क्र	पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
१.	संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास (अट्ठारह खण्ड)	प्रधान सम्पादक पद्मभूषण आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय	
२.	स्तुतिमणि माला (प्रथम द्वितीय)	संपादक आचार्य करुणापति त्रिपाठी	४०.००
३.	कालिदास-ग्रन्थावली	सम्पादक-आचार्य सीताराम चतुर्वेदी	२००.००
४.	सरल संस्कृतम्	श्री प्रयाग दत्त चतुर्वेदी	३०.००
५.	कथामन्दाकिनी	डॉ. ओम प्रकाश ठाकुर	६०.००
६.	बालकथा कौमुदी	सम्पादक-डॉ. विश्वास	५०.००
७.	बाल वाटिका	सम्पादक-डॉ. विश्वास	३०.००
८.	पौरौहित्यकर्मप्रशिक्षक	सम्पादक-डॉ. सच्चिदानन्द पाठक	१००.००
९.	भारतीयसंस्कृति की वैज्ञानिकता	सम्पादक-डॉ. उमारमण झा	१००.००
१०.	श्रीमद्वाल्मीकि रामायण (चार खण्डों में)		

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला, न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्द्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते, क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।